फलित राजेन्द्र

30 दिनों में ज्योतिष् सिखाने वाला अनुपम ग्रन्थ

ब्रजेश पाठक 'ज्यौतिषाचार्य'
लब्धस्वर्णपदक

फलित-राजेन्द्र

तीस दिनों में ज्योतिष् सिखाने वाला अनुपम ग्रन्थ

ग्रन्थकार

पण्डित ब्रजेश पाठक 'ज्यौतिषाचार्य'

[लब्धस्वर्णपदक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय]

Notion Press

India. Singapore. Malaysia

ISBN xxx-x-xxxxx-xx-x

First Edition – 2020

Second Edition - 2021

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the author. **No part of this book shall be used**, **reproduced in any manner** whatsoever without written permission from the author ["Brajesh Pathak"], except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews. The Author of this book is solely responsible and liable for its content including but not limited to the views, representations, descriptions, statements, information, opinions and references ["Content"]. The Content of this book shall not constitute or be construed or deemed to reflect the opinion or expression of the Publisher or Editor.

Neither the Publisher nor Editor endorse or approve the Content of this book or guarantee the reliability, accuracy or completeness of the Content published herein and do not make any representations or warranties of any kind, express or implied, including but not limited to the implied warranties of merchantability, fitness for a particular purpose. The Publisher and Editor shall not be liable whatsoever for any errors, omissions, whether such errors or omissions result from negligence, accident, or any other cause or claims for loss or damages of any kind, including without limitation, indirect or consequential loss or damage arising out of use, inability to use, or about the reliability, accuracy or sufficiency of the information contained in this book.

फलित-राजेन्द्र

तीस दिनों में ज्योतिष् सिखाने वाला अनुपम ग्रन्थ

ग्रन्थकार

पण्डित ब्रजेश पाठक 'ज्यौतिषाचार्य'

[लब्धस्वर्णपदक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय]

फलित शास्त्र के कठिन एवं गूढ रहस्यों, यथा ग्रहगति द्वारा फलादेश, वक्री ग्रह का फलादेश, नीच ग्रह का फल निर्णय आदि का तात्त्विक तथा सरल स्पष्टीकरण इस ग्रन्थ की प्रमुख विशेषता है | मुझे विश्वास है कि इस ग्रन्थ को ज्योतिष् के विद्वान् एवं जिज्ञासु विद्यार्थी सहर्ष स्वीकार करेंगे |

• सरल • सुगम • संग्रहणीय

विषय-सूची

क्रमांक	**विषय**	**पाठ्यदिवस**	**पृष्ठ**
1.	प्राक्कथन	-	7
2.	मंगलाचरण	-	9
3.	ज्योतिष् शास्त्र का परिचय	-	10
4.	कालमान	01	15
5.	पञ्चाङ्ग प्रकरण	02	22
6.	ग्रहशील	03 - 07	33
7.	राशिशील	08 - 10	57
8.	भावशील	11 - 18	83
9.	योगशील	19 -23	147
10.	दशाशील	24 - 27	174
11.	गोचरशील	28	198
12.	व्यवहारशील	29 -30	202

***

All Rights Reserved.

© Author

सर्वाधिकार सुरक्षित

© लेखक

www.grahrasi.com

brajeshpathak2.bkp@gmail.com

प्राक्कथन

मेरे फलादेशों से प्रभावित होकर कई लोगों ने मुझसे अनेकों बार आग्रह किया कि वे भी ज्योतिष-शास्त्र में रुचि रखते हैं अतएव मैं उन्हें ज्योतिष-शास्त्र का सामान्य परिचय करा दूँ, ताकि वे अपने ज्ञान को आगे बढ़ा सकें, ज्योतिष सीखने की इच्छा को पूरा कर सकें, ज्योतिष-शास्त्र की भाषा को समझ सकें | मैंने कई लोगों को प्रत्यक्ष रूप में एवं कई लोगों को मोबाइल फोन के माध्यम से पढ़ाया भी, परन्तु प्रत्येक व्यक्ति को अलग-अलग पढ़ाना सम्भव नहीं था | प्रतिदिन नवीन सम्पर्क बढ़ने से नए जिज्ञासु भी मिलते रहते हैं | इन्हीं सभी बातों को ध्यान में रखते हुए मैंने **30 Days Astrology Programme** तैयार करना प्रारम्भ किया | ग्रन्थ लिखने की पहली प्रेरणा मुझे अपने मामाजी (डॉ. दाताराम पाठक जी) से मिली | ग्रन्थ का यह स्वरूप मित्र पीयूष कुमार की प्रेरणा से तैयार हुआ |

इस ग्रंथरत्न को तैयार करने में मुझे अपने गुरुजनों, आदरणीय डॉ. विन्ध्येश्वर पाण्डेय गुरुजी, डॉ. अशोक थपलियाल गुरुजी और श्री वैद्यनाथ मिश्र गुरुजी का भरपूर सहयोग व आशीर्वाद मिला | इस ग्रन्थ को लिखते समय माता-पिता के द्वारा समय समायोजन में भरपूर सहायता मिली | टाइपिंग के समय छोटे भाई बहन, आशुतोष, रानी व राधिका ने अच्छा सहयोग किया | मैं अपने सभी गुरुजनों का, पारिवारिक सदस्यों का और मित्रों का कोटि कोटि आभार प्रकट करता हूँ | यहाँ पर मेरी आराध्या भगवती शाकम्भरी देवी का वात्सल्य और मेरे स्व. दादाजी श्री हरिहर पाठक जी का आशीर्वाद सदैव ही मेरा सम्बल सिद्ध हुआ है |

मेरे कुछ ऐसे भी मित्र हैं जिन्होंने मेरी इतनी सहायता की है जिसका वर्णन शब्दों में सम्भव नहीं है | मैं उनके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता अभिव्यक्त करता हूँ, उनके ही निवेदन पर यहाँ उनका नामोल्लेख नहीं किया जा रहा है | ग्रन्थ के टंकण-संशोधन, वर्तनी-समायोजन में तथा अन्यान्य समस्याओं के समाधान में श्रीभागवतानंद गुरुजी (श्रीनिग्रहाचार्य) का भरपूर सहयोग यथासमय मिलता रहा | उनके प्रति अपना स्नेह व्यक्त करता हूँ | यह ग्रन्थ मैंने अपने आदरणीय पिताजी को समर्पित किया है, ग्रन्थ का नाम उनके ही नाम पर 'फलित राजेन्द्र' रखा गया है |

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर ही यह ग्रन्थ स्थित है | जब मैं इसका लेखन कर रहा था, बार बार मुझे उलझनें हो रही थीं | इतना विशाल कलेवर जिस शास्त्र का हो उस शास्त्र को मैं 30 दिनों में कैसे पढ़ा दूँ ? सम्भव ही नहीं है | इस काम को छोड़ देना चाहिए | लिखते समय भी निर्णय करना मुश्किल था कि किस बात को छोड़ दूँ और किस बात को पढ़ा दूँ ? अस्तु, मैंने बहुत साहस करके अन्ततः यह धृष्टता कर ही दी | बहुत उहापोह के बाद, दो महीने के अथक परिश्रम का परिणाम आपके हाथों में हैं, मुझे इस बात की कितनी प्रसन्नता है, उसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता |

इस पाठ्यक्रम को प्रारम्भ करने से पूर्व आप इन बिन्दुओं को अच्छे से समझ लें -

- यह पाठ्यक्रम ३० दिनों का है, इसका तात्पर्य है कि आप इसे प्रारम्भ करने के बाद अपने जीवन के ३० दिन केवल ज्योतिष-शास्त्र को ही समर्पित करेंगें |
- ज्योतिष-शास्त्र का कलेवर बहुत विशाल है, इसे ३० दिनों में सम्पूर्णता से पढ़ लेना कभी सम्भव नहीं है | आप इस पाठ्यक्रम में केवल ज्योतिष शास्त्र का सामान्य परिचय प्राप्त करेंगे एवं कुण्डली का अध्ययन करना सीखेंगे |
- जिनको कुण्डली बनाना सीखना हो या जिनको ज्योतिष शास्त्र के अन्य विधाओं का ज्ञान करना हो, वे लोग शास्त्रीय ग्रन्थों एवं परम्परागत गुरुजनों का आश्रय लें |
- आजकल कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के द्वारा कुण्डली बनाना सरल ही है- आप हिन्दू कैलंडर, वेब ज्योतिषी, दुर्लभ जैन, पाराशर लाइट आदि के सॉफ्टवेयर का प्रयोग करके सही कुण्डली बना सकते हैं |
- एक सफल ज्योतिषी बनने के लिए इस पाठ्यक्रम को कंठस्थ कर लेना होगा एवं बारम्बार अभ्यास के द्वारा अपने व्यवहार में उतारना होगा |
- इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद आपको ज्योतिष का कोई शास्त्रीय ग्रन्थ जैसे- बृहत्पाराशर होराशास्त्र, वृहज्जातकम्, जातक-पारिजात, फलदीपिका, सारावली आदि का भी अध्ययन करते रहना चाहिये |
- आपको शास्त्र के प्रति समर्पण और सेवा भाव रखना चाहिये | पूरी निष्ठा और तन्मयता से शास्त्र का अध्ययन करना चाहिये | शास्त्र को कभी भी व्यापार का माध्यम नहीं बनाना चाहिए |
- अशास्त्रीय बाह्य आडम्बरों के प्रारूप में बिकने वाली, यथा- लाल किताब, काली किताब, सुनहरी किताब, यूनानी विद्या, प्रचारित भृगु संहिता, रावण संहिता, अरुण संहिता आदि के भ्रमजाल में कभी नहीं पड़ना चाहिए |
- यह पुस्तक आपको ज्योतिषी बनाने का प्रमाणपत्र या दावा प्रस्तुत नहीं करती है, मात्र आपका परिश्रम और बौद्धिक सामर्थ्य ही इस विद्या में आपको सफल बना सकता है |

आपका शास्त्रज्ञान पुष्ट हो, यही लेखक की सद्कामना है |

आपका कल्याणकामी,

पण्डित ब्रजेश पाठक 'ज्यौतिषाचार्य'

मंगलाचरणम्

तस्मै नमः परमवेगवतेऽक्षराय,

व्यालोत्कटाय गगनध्वजप्राणधाम्ने।

सृष्टिस्थितिप्रलयहेतुधराय तुभ्यं,

घोराय कालपुरुषाय महेश्वराय॥

अत्यंत गतिशील, अविनाशी,

सर्प के समान विकट,

सूर्यादि ग्रहों की स्थिति के आधार,

सृष्टि-स्थिति-प्रलय के निमित्त,

उस महान् कालपुरुषसंज्ञक ईश्वर के लिए प्रणाम है|

ज्योतिष् शास्त्र का परिचय

ज्योतिष् शास्त्र, वेद का वह अंग है, जिसके द्वारा ग्रह, नक्षत्र एवं तारा आदि की स्थितियों को समझ करके संसार में घट रही, घट चुकी या घटने वाली घटनाओं का अध्ययन किया जाता है | इस ब्रह्माण्ड की समस्त जड़ सृष्टि कहीं न कहीं ग्रह, राशि अथवा नक्षत्रों से जुड़ी हुई है | जिन पञ्चमहाभूतों को सृष्टि का प्रधान कारण माना जाता है, उनकी उत्पत्ति के मूल में ग्रह ही हेतु हैं –

अग्निभूमिनभस्तोयवायवः क्रमतो द्विज|
भौमादीनां ग्रहाणाञ्च तत्त्वानीति यथाक्रमम्॥

- वृ. पा. अ.२ श्लो.२०

हमारे शरीर में जो सप्त धातु हैं, उनके हेतु भी तो ग्रह ही हैं -

अस्थिरक्तस्तथा मज्जा त्वग्वसा वीर्यमेव च|
स्नायुरेषामधीशाश्च क्रमात् सूर्यादयो द्विज॥

- वृ. पा. अ.२ श्लो.३१

त्रिगुणों को ही देख लीजिये –

जीवसूर्येन्दवः सत्त्वं बुधशुक्रौ रजस्तथा|
सूर्यपुत्रधरापुत्रौ तमःप्रकृतिकौ द्विज॥

- वृ. पा. अ.२ श्लो. २२

ऐसे अनेकों उदाहरण तथा सिद्धान्त, ज्योतिष्-शास्त्र में उपलब्ध हैं, जिनको जानकर, समझकर हम प्रकृति में स्थित जड़ या चेतन के गुण-अवगुणों को न केवल समझ सकते हैं अपितु भूतकाल में घटित घटनाओं या भविष्य में घटने वाली घटनाओं का आकलन तथा पूर्वानुमान भी कर सकते हैं | शास्त्र में बहुत अच्छी गति रहने पर हम सटीक भविष्यवाणी भी कर सकते हैं, वह भी पूरे आत्मविश्वास के साथ | हम आपका परिचय उसी अद्भुत ज्योतिष् शास्त्र से कराने जा रहे हैं ! तो आईये, प्रारम्भ करते हैं ...

ज्योतिष् शास्त्र एक वेदांग है ?

यह प्रश्न क्यों उत्पन्न होता है ? क्योंकि शास्त्रोक्त अधिकारियों के लिए कहा गया है, *स्वाध्यायोऽध्येतव्यः* अर्थात् पढना है तो वेद पढो | अब हम पढने जा रहे हैं ज्योतिष्, तो हमें यह तो समझना ही होगा कि ज्योतिष् का सम्बन्ध वेद से है या नहीं ?

इसके लिए आपको भास्कराचार्य द्वितीय की पुस्तक सिद्धान्त शिरोमणि में उल्लिखित इन पंक्तियों को देखना चाहिए –

शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी, श्रोत्रमुक्तं निरुक्तञ्च कल्पः करौ|
या तु शिक्षाऽस्य वेदस्य सा नासिका, पादपद्मद्वयं छन्द-आद्यैर्बुधैः||
वेदचक्षुः किलेदं स्मृतं ज्यौतिषं, मुख्यता चाङ्गमध्येऽस्य तेनोच्यते|
संयुतोऽपीतरैः कर्णनासादिभिश्चक्षुषाऽङ्गेन हीनो न किंचित् करः||

अर्थात्- वेदपुरुष के मुख्य छः अंगों में व्याकरणशास्त्र वेद का मुख, ज्योतिष् शास्त्र नेत्र, निरुक्त शास्त्र कान, कल्प शास्त्र हाथ, शिक्षा शास्त्र वेद की नासिका और छन्द शास्त्र वेद पुरुष के पैर कहे गये हैं| वेदपुरुष का ज्योतिष् शास्त्र नेत्र स्थानीय होने से ज्योतिष् शास्त्र ही वेद का मुख्य अंग हो जाता है| हाथ पैर कान आदि इन्द्रियों की सही स्थिति के होने पर भी नेत्र स्थानीय ज्योतिष्शास्त्र से अनभिज्ञ, कुछ न कर सकने से वह असमर्थ ही रह जाता है |

ज्योतिष्-शास्त्र की शाखाएँ

सिद्धान्तसंहिताहोरारूपस्कन्धत्रयात्मकम् |
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम् ||
ज्योतिष् शास्त्र में निहित जो विद्यादेवी हैं वह तीन धाराओ में बह रही हैं | इसलिए उन्हें त्रिपथगा भी कहा जाता है | इन तीन धाराओं को ज्योतिष् शास्त्र में हम स्कंधत्रयी के नाम से जानते हैं[1] | ज्योतिष् के वे तीन स्कंध हैं-

सिद्धान्त - काल गणना में सूक्ष्म माप त्रुटि से लेकर प्रलय तक के कालों का आकलन, उनका मान, उनका भेद, उनका चार (चलन), आकाश में ग्रहों की गति आदि के साथ साथ दोनों प्रकार के गणित (बीजगणित व पाटीगणित), उनके प्रश्न तथा उत्तर जिसमें निहित हों , साथ ही, पृथ्वी और आकाश के मध्य स्थित ग्रहों का जिसमें कथन और उनको जानने, उनका वेध करने के यन्त्र आदि का जिसमें ज्ञान निहित हो, उस शाखा को विद्वानों ने सिद्धान्त शाखा कहा है|

* पंचांग निर्माण व ज्योतिषीय सांख्यिकी डाटा संग्रहण इस शाखा का मुख्य कार्य है |

प्रमुख सिद्धान्त ग्रन्थ- सूर्य-सिद्धान्त, वशिष्ठ-सिद्धान्त, ब्रह्म-सिद्धान्त, रोमक-सिद्धान्त, पौलिश-सिद्धान्त, ब्रह्मस्फुट-सिद्धान्त, पितामह-सिद्धान्त आदि |

प्रमुख विद्वान - मय, वराहमिहिर, ब्रह्म, लल्ल, श्रीपति आदि |

---

[1] **जानन् जातकसंहिताः सगणितस्कन्धैकदेशा अपि** (भास्कराचार्य)

संहिता - ग्रहों की चाल, वर्ष के लक्षण, तिथि-वार-नक्षत्र-योग-करण-मुहूर्त-चन्द्रबल, ताराबल, सभी प्रकार के संस्कार, पशु-पक्षियों की चेष्टा का ज्ञान, शकुन विचार, रत्न-विद्या, प्रकृति की असामान्य चेष्टाओं का चिन्तन संहिता विभाग का विषय है|

* भारत तथा विश्व का समष्टिगत फल कथन इस शाखा का मुख्य कार्य है |

प्रमुख संहिता ग्रन्थ - बृहत्संहिता, नारद संहिता, गर्ग संहिता, भद्रबाहु संहिता, कश्यप संहिता, मुहूर्त चिन्तामणि इत्यादि |

प्रमुख विद्वान - नारद, वशिष्ठ, वृहस्पति, गर्ग, महर्षि भृगु, वराहमिहिराचार्य आदि |

फलित - राशि, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, चलित, द्वादशभाव, षोडश वर्ग, ग्रहों के दिग्बल, कालबल, चेष्टाबल, ग्रहों के धातु, द्रव्य, कारकत्व, योगायोग, अष्टकवर्ग, दृष्टिबल, आयु योग, विवाह योग, नाम संयोग, अनिष्ट योग, दशाफल तथा प्रश्नविद्या आदि के होराशास्त्रीय नियमों के आधार पर व्यक्तिगत फलादेश करना |

* जन्मपत्रिका निर्माण व उसका फलादेश इस शाखा का मुख्य कार्य है |
प्रमुख ग्रन्थ- वृहद-पाराशर-होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, वृहज्जातक, जातकाभरण, चमत्कार चिन्तामणि, ज्योतिष् कल्पद्रुम, जातकालंकार, जातकतत्वम् इत्यादि |
प्रमुख विद्वान्- पाराशर, मानसागर, कल्याणवर्मा, रामदैवज्ञ, गणेश आदि |

'फलित' ज्यौतिष का तीसरा स्कंध है| यह मूल रूप से चार भागों में विभक्त है -

1. **जातक** - इसके अन्तर्गत किसी व्यक्ति की जन्म-तिथि, जन्मसमय और जन्म-स्थान के आधार पर जन्मकुण्डली बनाकर आवश्यकतानुसार उसका विस्तार करके फलादेश किया जाता है| इस सन्दर्भ में वृहत्पाराशर होराशास्त्र, वृहज्जातकम, सारावली, जातक-पारिजात, फलदीपिका आदि कई महत्वपूर्ण ग्रन्थ उपलब्ध हैं|
2. **मुहूर्त** - इसके अन्तर्गत किसी कार्य विशेष जैसे कि विवाहादि षोडश संस्कार, व्यापार, कृषि, यात्रा, गृहप्रवेशादि के लिए शुभ ग्रहस्थिति के आधार पर शुभ दिन की गवेषणा की जाती है| मुहूर्त चिन्तामणि, मुहूर्त मार्तण्ड, मुहूर्त गणपति, पूर्व-कालामृत आदि कई मुहूर्त सम्बन्धी अद्भुत ग्रन्थ उपलब्ध मिलते हैं|
3. **ताजिक** - इसके अन्तर्गत वर्षप्रवेश के आधार पर गोचर ग्रहस्थिति का अध्ययन करके व्यक्ति का वार्षिक फलादेश किया जाता है|

ताजिक नीलकण्ठी इस सन्दर्भ में प्राचीन, प्रामाणिक सबसे उत्तम ग्रन्थ है|

4. **प्रश्न –** व्यक्ति जिस समय प्रश्न करता है उसी समय की प्रश्न कुण्डली जातक विधि से बनाकर, तब उस प्रश्न के सन्दर्भ में शुभाशुभ फल का विचार इस शाखा के अंतर्गत किया जाता है| ताजिक नीलकण्ठी का प्रश्न-प्रकरण, दैवज्ञ-वल्लभा, षट्पञ्चाशिका, प्रश्नमार्ग आदि कई प्रश्नशास्त्र के उपलब्ध प्रामाणिक ग्रन्थ हैं|

ज्योतिष्-शास्त्र के प्रवर्तक

वेद किसी एक शास्त्र या विद्या विशेष के ग्रन्थ नहीं हैं, अतः वहाँ किसी शास्त्र विशेष का एकत्र सांगोपांग अध्ययन नहीं मिलता | कालक्रम से ज्योतिष् शास्त्र के प्रवर्तन का श्रेय अठारह प्रमुख आचार्यों को दिया जाता है | कश्यप संहिता के अनुसार -

सूर्यः पितामहो व्यासो वशिष्ठोऽत्रि: पराशरः |
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुरंगिराः ||
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः |
शौनकोऽष्टादशाश्चैते ज्योतिःशास्त्रप्रवर्तकाः||

अर्थात्- सूर्य, ब्रह्मा, व्यास, वशिष्ठ, अत्रि, पराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अंगिरा, लोमश, पौलिश, च्यवन, यवन, भृगु तथा शौनक ये अठ्ठारह ज्योतिष् शास्त्र के प्रवर्तकाचार्य हैं |

|| शुभमस्तु ||

पहला दिन

कालमान

ज्योतिष्- शास्त्र को कालविधान शास्त्र कहा गया है, अर्थात् ऐसा शास्त्र जो काल (समय) का ज्ञान कराता हो | ज्योतिष् शास्त्र में नव प्रकार के कालमानों का वर्णन प्राप्त होता है-

ब्राह्मं दिव्यं तथा पित्र्यं प्राजापत्यञ्च गौरवम् |
सौरञ्च सावनं चान्द्रमार्क्षे मानानि वै नव ||

अर्थात्- नव प्रकार के कालमान होते हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं-

1. **ब्राह्ममान**- - 4 अरब 32 करोड (सौर अथवा मानव वर्षों) में ब्रह्मा जी का एक दिन होता है, और इतने ही समय की उनकी रात्रि होती है | अर्थात् ब्रह्मा जी का एक दिनरात 8 अरब 64 करोड़ सालों का होता है | इसी मान के अनुसार उनका 30 दिनों का एक माह और 360 दिनों का एक वर्ष होता है, और इसी मान के अनुसार ब्रह्मा जी की आयु 100 वर्षों की कही गई है | पूजन के समय में हम जो संकल्प पढ़ते हैं उसमें इस मान का उच्चारण किया जाता है ब्रह्मणोह्नि द्वितीयपरार्धे अर्थात् ब्रह्मा जी के दूसरे परार्ध में, और उसमें भी 51वें वर्ष में | इसे ही **ब्राह्ममान** कहा जाता है |
2. **दिव्यमान** - देवताओं और राक्षसों का दिन रात 6--6 मानव महीनों का होता है, अर्थात् हमारे एक सौर वर्ष में उनका एक दिन रात होता है | इसी मान से 30 दिनों का मास और 360 दिनों का वर्ष होता है | अर्थात् 360 सौर वर्षों में देवताओं का एक वर्ष होता है | हम उत्तरायण और दक्षिणायन के रूप में इनका प्रयोग अपने दैनिक व्यवहार में करते हैं | इसे ही **दिव्यमान** कहा जाता है |
3. **पितृमान** - चान्द्रमास में 15-15 दिनों के कृष्णपक्ष (कृष्ण प्रतिपदा से अमावस्या) और शुक्लपक्ष (शुक्ल प्रतिपदा से पूर्णिमा) होते हैं | कृष्णपक्ष पितरों का दिन तथा शुक्लपक्ष पितरों की रात्रि मानी जाती है | दैनिक व्यवहार में हम इनका व्यापक प्रयोग करते हैं, इसे ही **पितृमान** कहा जाता है |
4. **प्राजापत्यमान** - 43 लाख 20 हज़ार वर्षों का एक चतुर्युग (सतयुग-त्रेतायुग-द्वापरयुग-कलियुग) होता है, इसी मान से 71 चतुर्युगों का एक मन्वन्तर होता है | मन्वन्तरों की कुल संख्या 14 बताई गई है, वर्तमान में **वैवस्वत** नामक 7वां मन्वंतर चल रहा है | पूजन के संकल्प में ही इस मन्वन्तर का भी नामोल्लेख होता है | इसे ही **प्राजापत्यमान** कहते हैं |

5. **गौरवमान** - गुरु से सम्बन्धित मान को गौरवमान कह जाता है | औसत रूप से 12 सौर वर्षों का एक गौरववर्ष होता है | वेदांग ज्योतिष् के पंचवर्षीय युग व्यवस्था के अनुसार 5 गौरव वर्षों का एक युग होता है, जिसमें हमारे 12 X 5 = 60 वर्ष व्यतीत हो जाते हैं, इसका प्रयोग हम संवत्सर के रूप में करते हैं | उत्तर भारत में संवत्सर की गणना प्रभव संवत्सर से शुरू होती है जबकि दक्षिण भारत में संवत्सर की गणना विजय नामक संवत्सर से की जाती है | इसका प्रयोग वैश्विक वर्षफल तथा व्यक्तिगत फलादेश दोनों के लिए किया जाता है | पूजन संकल्प में भी इसका नामोल्लेख किया जाता है, इसे ही **गौरव मान** कहते हैं |*संवत्सर के सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए पढ़ें मेरा लेख *"संवत्सर मीमांसा" अथवा "संवत्सरप्रवृत्तिः"*| **६० संवत्सरों के नाम** -

1	प्रभव	21	सर्वजित्	41	प्लवङ्ग
2	विभव	22	सर्वधारी	42	कीलक
3	शुक्ल	23	विरोधी	43	सौम्य
4	प्रमोद	24	विकृत्	44	साधारण
5	प्रजापति	25	खर	45	विरोधकृत्
6	अङ्गिरा	26	नन्दन	46	परिधावी
7	श्रीमुख	27	विजय	47	प्रमादी
8	भाव	28	जय	48	आनन्द
9	युवा	29	मन्मथ	49	राक्षस
10	धाता	30	दुर्मुख	50	नल
11	ईश्वर	31	हेमलम्ब	51	पिङ्गल
12	बहुधान्य	32	विलम्ब	52	कालयुक्
13	प्रमाथी	33	विकारी	53	सिद्धार्थी
14	विक्रम	34	शर्वरी	54	रौद्र
15	वृष	35	प्लव	55	दुर्मति
16	चित्रभानु	36	सुकृत्	56	दुन्दुभि
17	सुभानु	37	शोभन	57	रुधिरोद्गारी
18	तारण	38	क्रोधी	58	रक्ताक्ष
19	पार्थिव	39	विश्वावसु	59	क्रोधन
20	व्यय	40	पराभव	60	क्षय

6. सौरमान - 12 राशियों का संपूर्ण अंशात्मक मान 360° अंश होता है | सभी ग्रह इन्हीं 360° अंशो में भ्रमण करते हैं | सूर्य (पृथ्वी) भी इन्हीं 360° अंशों की परिक्रमा करती है, जितने समय में वह 1° अंश चलती है (इसमें 24 घंटे से ज्यादा समय लगता है) उसे ही एक **सौर दिन** कहा जाता है | ऐसे ही 30° अंश(एक राशि) चलने में जितना समय लगता है उसे एक सौर मास यानी **संक्रान्ति** और 360° अंशों का भोग करने में लगने वाले समय को एक **सौर वर्ष** कहते हैं | यही मान **सौरमान** कहलाता है |

- अंग्रेजी मास के नाम से जो जनवरी, फरवरी आदि प्रचारित किया गया है वह सौर मास पर ही आधारित है | मानव अपनी आयु, अपनी डिग्री, अपनी पढाई लिखाई व सारे सरकारी व गैर सरकारी कार्य सौर मान के आधार पर करते हैं |इस विषय में अधिक जानकारी के लिए पढ़ें मेरा लेख - *घडी की कहानी, सौरमास व चान्द्रमास, जन्मदिन या पुण्यतिथि सौरमत से मानें या चान्द्रमत से*|

7. सावनमान- - यह महीने के नाम वाला अर्थात श्रावण-भादो वाला सावन नहीं है, एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक के समय को एक सावन दिन कहते हैं | एक सौर वर्ष में 365.25 बार सूर्योदय होते हैं | अर्थात् 360 सौर दिन = 365.25 सावन दिन | यही मान **सावनमान** कहलाता है | हम अपने दैनिक व्यवहार में दिन व मास के लिए सावन दिन व सावन मास का प्रयोग करते हैं, लेकिन 'वर्ष' के लिए हम सौर वर्ष का व्यवहार करते हैं |

8. चान्द्रमान- - अपने दैनिक व्यवहार में हम जो तिथि और पक्ष का प्रयोग करते हैं, चैत्र, वैशाख आदि मासों का प्रयोग करते हैं, यही **चान्द्रमान** कहलाता है | एक चान्द्रमास औसतन 29 दिन 8 घंटे 44 मिनट का होता है | एक चांद्रवर्ष में लगभग 354 सावनदिन होते हैं | कहीं कहीं चान्द्रमासों की गणना शुक्ल प्रतिपदा से (अमावस्यांत) और कहीं कहीं कृष्ण प्रतिपदा से (पूर्णिमान्त) की जाती है |

चान्द्रमासों के नाम

1	चैत्र	5	श्रावण	9	मार्गशीर्ष
2	वैशाख	6	भाद्रपद	10	पौष
३	ज्येष्ठ	7	आश्विन	11	माघ
4	आषाढ	8	कार्तिक	12	फाल्गुन

9. नाक्षत्रमान- - नक्षत्र के एक उदय से लेकर दूसरे उदय तक का समय एक नाक्षत्र दिन कहलाता है| इसे ही **नाक्षत्रमान** कहते हैं | इसका प्रयोग आकाशीय गणनाओं के लिए होता है| साथ ही जिन क्षेत्रों में सूर्योदय कई कई महीने बाद होता है उन क्षेत्रों में इसी के आधार पर दैनिक समय की गणना की जाती है |

अयन, गोल तथा ऋतुएं

अयन का शाब्दिक अर्थ है, गमन | ज्योतिष्-शास्त्र में भी प्रायः अयन शब्द का यही अर्थ होता है | एक सौर वर्ष में दो अयन होते हैं - उत्तरायण एवं दक्षिणायन |

उत्तरायण - आप सभी जानते हैं कि पृथ्वी अपने अक्ष पर 23.5° झुकी हुई है | पृथ्वी के द्वारा अपने अक्ष में भ्रमण के मध्य दो स्थितियां बनती हैं, एक स्थिति में पृथ्वी का दक्षिणी ध्रुव सूर्य के ठीक सम्मुख होता है और पृथ्वी का उत्तरी ध्रुव सूर्य की तरफ खिसकना शुरू करता है और धीरे धीरे खिसकते खिसकते पृथ्वी का उत्तरी ध्रुव सूर्य के सम्मुख हो जाता है, जो इसकी दूसरी स्थिति है| इस पूरी प्रक्रिया में 6 महीने का समय लगता है, इसे ही **उत्तरायण** कहा जाता है | सूर्य के मकर संक्रान्ति से लेकर मिथुन राशिस्थिति पर्यंत **उत्तरायण** रहता है |

दक्षिणायन - इसी प्रकार जब पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव का पूरा झुकाव सूर्य के सम्मुख हो जाता है, तो दक्षिणी ध्रुव सूर्य की और खिसकना शुरू करता है, इसे ही **दक्षिणायन** कहते हैं | सूर्य की कर्क संक्रान्ति से लेकर धनु राशि स्थितिपर्यंत **दक्षिणायन** बना रहता है |

गोल - पृथ्वी को अगर भूमध्य रेखा से गोलाकार आकृति में काटा जाये तो ये दो गोलाकार भागों में बंटेगा, उत्तरी ध्रुव वाले भाग को **उत्तरी गोल** तथा दक्षिणी ध्रुव वाले भाग को **दक्षिणी गोल** कहते हैं |

उत्तरी गोल - उपर्युक्त अयन वाले सिद्धान्त के अनुसार ही जब तक सूर्य का प्रकाश पृथ्वी के उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्रों में पड़ता रहता है तो इस छः मासीय स्थिति को ही उत्तर गोल कहते हैं | इस दौरान सूर्य की स्थिति मेष राशि से कन्या राशि के बीच रहती है |

दक्षिणी गोल - ऐसे ही जब तक सूर्य का प्रकाश पृथ्वी के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्रों में पड़ता रहता है तो इस छः मासीय स्थिति को दक्षिणी गोल कहते हैं | इस दौरान सूर्य की स्थिति तुला राशि से मीन राशि के बीच रहती है |

ऋतुएँ - पृथ्वी के अक्ष झुकाव तथा दीर्घवृत्ताकार कक्ष भ्रमण के कारण पृथ्वी में वर्षभर एक ही जैसा मौसम नहीं रहता है, बल्कि समय समय पर मौसम बदलता रहता है जिसके कारण ऋतुओं का परिवर्तन होता है | पृथ्वी में कुल मिलाकर छः ऋतुएँ आती हैं, जिनको हम सूर्य की राशिस्थिति के अनुसार जान सकते हैं | सूर्य के किस किस राशि में रहने पर कौन कौन सी ऋतु रहती है, इसे तालिका द्वारा समझा जा सकता है | ऋतुओं के ज्ञान के लिए तालिका प्रस्तुत है -

क्रम	सूर्य की राशि	ऋतु
1	मीन, मेष	वसन्त
2	वृष, मिथुन	ग्रीष्म
3	कर्क, सिंह,	वर्षा
4	कन्या, तुला	शरद
5	वृश्चिक, धनु	हेमन्त
6	मकर, कुम्भ	शिशिर

अधिमास व क्षयमास – एक सौर वर्ष में सावन दिनों की संख्या 365 होती है | जबकि चान्द्र वर्ष में 354 सावन दिन होते हैं | इस प्रकार सौर और चान्द्र वर्षों में लगभग 11 दिनों का अंतर होता है | तीन वर्षों में ये अंतर बढ़ते बढ़ते 33 दिनों का हो जाता है | सौर और चान्द्र वर्ष के इसी अंतर को व्यवस्थित करने के लिए हर तीन वर्षों में एक अधिमास और 19 वर्षों या 141 वर्षों के अंतराल से क्षयमास हुआ करते हैं | क्योंकि अगर ऐसा न किया गया तो हमारे व्रत त्यौहार अपने मास का अतिक्रमण करके पूरे साल की परिक्रमा करते रहेंगे |

अधिमास - हर चान्द्रमास में सूर्य की एक संक्रान्ति अवश्य होती है, जिस चान्द्रमास में सूर्य-संक्रांति नहीं होती ऐसे संक्रान्तिरहित चान्द्रमास को **अधिमास** कहते हैं | हर तीन वर्षों के अंतराल से अधिमास हुआ करते हैं |

क्षयमास - जिस चान्द्रमास में दो सूर्य संक्रांति का समावेश हो जाय, वह मास **क्षयमास** कहलाता है| क्षयमास केवल कार्तिक, मार्गशीर्ष व पौष मासों में ही होता है| जिस वर्ष क्षय-मास पड़ता है, उस वर्ष क्षयमास से पहले और बाद में एक एक अधिमास भी अवश्य होते हैं | परन्तु यह स्थिति 19 वर्षों या 141 वर्षों पश्चात् आती है| जैसे विक्रमी संवत् 2020, 2039 एवं 2058 में क्षयमासों का आगमन हुआ तथा भविष्य में संवत् 2150 में क्षयमास पड़ने की संभावना है|

तिथिः करणमुद्वाहः क्षौरं सर्वक्रियास्तथा | व्रतोपवासयात्राणां क्रिया चान्द्रेण गृह्यते ||
(सूर्यसिद्धान्त)
प्रतिपदादि तिथियाँ, बवादि करण, विवाह, क्षौरकर्म, जातकर्मादि सकल क्रियाएं, व्रत-उपवास एवं यात्रा चान्द्रमान से स्वीकार किए जाते हैं|

दैनिक व्यवहारोपयोगी लघु समय मानक

<u>आधुनिक मानक</u>

1 दिनरात = 24 घंटे

1 घंटा = 60 मिनट

1 मिनट = 60 सेकेण्ड

<u>प्राचीन मानक</u>

1 दिनरात = 60 घटी

1 घटी = 60 पल

1 पल = 60 विपल

<u>समन्वित व्यवस्था</u>

1 दिनरात = 24 घंटा = 60 घटी

24 घंटा = 60 घटी

1 घंटा = 2.5 घटी

1 मिनट = 2.5 पल

इसी प्रकार 1 घटी = 24 मिनट एवं 1पल = 24 सेकेण्ड

• इसके अतिरिक्त आपको खरमास के बारे में भी अवश्य पढना चाहिए, इसके लिए आप मेरा लेख *खरमास रहस्य* पढ़ सकते हैं |

• आपको ग्रहण के बारे में भी अवश्य पढना चाहिए, इसके लिए आप मेरा लेख *ग्रहण क्या है ?* पढ़ सकते हैं |

• ग्रहकक्षाक्रम के संशय के निवारण के लिए आपको मेरे लेख *भारतीय ज्योतिष् में पृथ्वी स्थिर और सूर्य गतिमान कैसे ?* का अध्ययन अवश्य करना चाहिए |

|| शुभमस्तु ||

पुस्तक में जितने लेखों की चर्चा की गयी है, वे सभी लेख ग्रन्थकार की वेबसाइट (www.grahrasi.com) पर, लेखक के अन्य ग्रन्थों में अथवा फेसबुक पेज (@ptbrajesh) पर उपलब्ध हैं |

दूसरा दिन

पञ्चाङ्ग प्रकरण

जब ज्योतिष् का अध्ययन करना है, तो पञ्चांग की जानकारी के बिना तो ये संभव ही नहीं है क्योंकि इसी के द्वारा हमलोग ज्योतिष् का प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करते हैं | चाहे आज की तिथि का ज्ञान करना हो या नक्षत्र का ज्ञान करना हो, अथवा आज का वार ही क्यों न जानना हो, हमें पंचांग ही तो देखना पड़ता है | यहाँ स्पष्ट कर दूँ कि जब कभी हम पञ्चांग शब्द का उल्लेख करते हैं तो हमारा भाव दृक्सिद्ध पंचांग से ही होता है | दुर्भाग्यवश, कुछ लोगों की हठधर्मिता के कारण भारत जैसे देश में दृक्सिद्ध पञ्चांग और अदृक्सिद्ध पञ्चांग विवाद का विषय बन गया है | दृक्सिद्ध पञ्चांग की विशेषता को जानने-समझने के लिए पढ़ें मेरा लेख *दृक्सिद्ध पञ्चांग की अनिवार्यता*|

पञ्चाङ्ग क्या है ?

पञ्चाङ्ग में दो शब्द हैं, पञ्च+अंग अर्थात् पञ्च अंगों का समूह ! कौन हैं वे पांच अंग ?

1. तिथि
2. वार
3. नक्षत्र
4. योग
5. करण

आईये, क्रमशः इनको जानते हैं -

तिथि क्या है ?

हम सबने इसका नाम तो अवश्य सुना है, बहुत से पर्व-त्यौहार तो सीधे-सीधे तिथियों के ही नाम से प्रचलित हैं, जैसे- राम'नवमी', विजया'दशमी', गणेश'चतुर्थी', अक्षय'तृतीया', मौनी 'अमावस्या' आदि | मैंने कहा था न, आपने इनका नाम अवश्य सुना है| सूर्य व चन्द्रमा के परस्पर 12°-12° अंशों के कोणीय अन्तर को ही तिथि कहते हैं | अर्थात् जब चन्द्रमा सूर्य से 1°-12° अंश आगे निकलता जाता है तो प्रतिपदा तिथि होती है, उसी प्रकार 24° अंश के अन्तर तक द्वितीया, 36° के अन्तर तक तृतीया, 48° के अन्तर तक चतुर्थी और इसी प्रकार 180° के अन्तर पर पूर्णिमा व 360° के अन्तर पर अमावस्या तिथि होती है |

तिथियां, कुल 16 नामों से हमें प्राप्त होती हैं, जिनके नाम एवं स्वामी इस प्रकार हैं -

क्रम	तिथि के नाम	तिथि के स्वामी
1	प्रतिपदा	अग्नि
2	द्वितीया	ब्रह्मा
3	तृतीया	गौरी
4	चतुर्थी	गणेश
5	पञ्चमी	नाग
6	षष्ठी	कार्तिकेय
7	सप्तमी	सूर्य
8	अष्टमी	शिव
9	नवमी	दुर्गा
10	दशमी	यम
11	एकादशी	विश्वेदेव
12	द्वादशी	विष्णु
13	त्रयोदशी	कामदेव
14	चतुर्दशी	शिव
15	पूर्णिमा	चन्द्रमा
16	अमावस्या	पितृगण

<u>तिथिक्षय और तिथिवृद्धि</u> - जिस प्रकार अधिमास और क्षयमास होते हैं, उसी प्रकार चन्द्रमा की तीव्र और असमान गति के कारण तिथिक्षय और तिथिवृद्धि भी हुआ करते हैं| इसे ऐसे समझते हैं - ग्रहों का जो भ्रमण पथ है वो वृत्ताकार नहीं है बल्कि दीर्घ-वृत्ताकार है| चंद्रमा का भ्रमण पथ भी दीर्घवृत्ताकार है इसलिए चंद्रमा और पृथ्वी की दूरी दीर्घवृत्त के सभी बिन्दुओं पर समान नहीं रहती है| जिन बिन्दुओं पर चंद्रमा पृथ्वी के समीप होता है वहां चन्द्रमा की गति तेज होती है इसलिए उसे 12° चलने में अपेक्षाकृत कम समय लगता है| ज्यों ज्यों चंद्रमा पृथ्वी से दूर होता जाता है उसकी गति कम होती जाती है और इस दौरान उसे 12° चलने में अपेक्षाकृत अधिक समय लगता है| चंद्रमा की इस प्रकार गति कम या ज्यादा होने के कारण तिथियों के मान में घट-बढ़ होती है| कभी 12 डिग्री चलने में उसे 24 घंटा लगता है कभी 23 घंटा लगता है तो कभी कभी 30 घंटा तक लग जाता है | इसी आधार से पंचांग में तिथिवृद्धि और तिथिक्षय दर्शाया रहता है| जो तिथि दो सूर्योदयों का स्पर्श करे, उसकी वृद्धि मानी जाती है तथा जो तिथि एक भी सूर्योदय का स्पर्श न कर पाये, उसका क्षय माना जाता है | इस विषय पर अधिक ज्ञान के लिये आप मेरे लेख *तिथिक्षय और तिथिवृद्धि* का अध्ययन कर सकते हैं |

तिथियों का वर्गीकरण

क्रम	वर्गीकृत नाम	तिथियाँ	सिद्धा
1	नन्दा	1, 6, 11	शुक्रवार
2	भद्रा	2, 7, 12	बुधवार
3	जया	3, 8, 13	मंगलवार
4	रिक्ता	4, 9, 14	शनिवार
5	पूर्णा	5, 10,15	गुरुवार

वार क्या है ?

सूर्योदय के समय जिस ग्रह की होरा होती है, उसी होरापति ग्रह के नाम पर उस वार का नाम रखा जाता है | कोई भी वार अपने सूर्योदय से लेकर अगले सूर्योदय से पहले तक रहता है | रात्रि 12 बजे के बाद केवल अंग्रेजी तारीख बदलती है, वार नहीं बदलता है | इस विषय में सम्पूर्ण जानकारी के लिए आपको मेरा लेख *वारक्रम का आधार* पढना चाहिए |

नक्षत्र क्या है ?

जिसका क्षरण न हो उसे नक्षत्र कहते हैं, अर्थात् जो गतिमान् न हों, जो हमें स्थिर नजर आयें | अनन्त आकाश में स्थित नक्षत्र हमें स्थिर नजर आते हैं और इन्हीं के सापेक्ष हम ग्रहों का अध्ययन करते हैं | अब आप पूछेंगे कि नक्षत्र हैं कितने ? इस अनन्त आकाश में अनेकों नक्षत्र विद्यमान हैं ! लेकिन ज्योतिष् शास्त्र के अध्ययन के उद्देश्य से 27/28 नक्षत्रों को ही स्वीकार किया गया है |

अनेक नक्षत्रों में से 27/28 नक्षत्र ही क्यों ? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए मैं आपको कल्पना के माध्यम से एक अन्धे कुएँ में ले चलता हूँ | मान लीजिये, आप उस कुएँ में गिर गए, वहाँ पानी नहीं है किन्तु कुवाँ थोडा गहरा है | अब आप ऊपर की ओर देखिये और कल्पना कर के बताइए कि आप आकाश का कितना बड़ा क्षेत्र देख पाएंगे ? अरे वाह !! आप ने उचित अनुमान लगाया !! आप उस कुवें के अन्दर से आकाश का उतना ही बड़ा क्षेत्र देख पाएंगे जितनी बड़ी उस कुवें की परिधि होगी |

तो मेरे प्रिय अध्येताओं ! ये धरती भी एक विशाल कूपतल ही तो है | इस पर स्थित होकर हम उतना ही बड़ा आकाश देख पाते हैं जितनी बड़ी इसकी परिधि है, यह वर्ष भर में घूमते हुए आकाश के अलग अलग 27 हिस्सों को दिखाती है, अर्थात् पृथ्वी के परिक्रमण मार्ग में इन्हीं 27 नक्षत्रों से हमारा दृष्टिसम्पर्क होता है | पृथ्वी में रहने के कारण हमारे पास आकाश के कुल-मिलाकर 27 ही पृष्ठदृश्य (Backgrounds) विद्यमान हैं, इसलिये पृथ्वी से देखने पर अन्य ग्रह भी हमें इनमे से ही किसी पृष्ठदृश्य (Backgrounds) पर नज़र आयेंगे | अतः फल विचार के दृष्टिकोण से हम पृथ्वीवासियों के लिए इन्हीं नक्षत्रों का सबसे अधिक महत्त्व है, जो ज्योतिष् शास्त्र में स्वीकृत हैं |

<u>नक्षत्रों की संख्या</u> 27 **<u>या</u>** 28 **<u>?</u>**

मुख्यरूप से 27 ही नक्षत्र फल विचार के दृष्टिकोण से स्वीकार्य किए गए हैं, 28वाँ अभिजित् नक्षत्र हमारे परिक्रमा मार्ग में नहीं आता पर पृथ्वी के अपने अक्ष पर 23.5° झुकी होने के कारण यह किञ्चित् अभिजित् नक्षत्र का स्पर्श मात्र कर लेती है, इसलिए विकल्प से कहीं कहीं फलविचार के क्रम में अभिजित् नक्षत्र को भी स्थान दिया गया है |

<u>अभिजित् नक्षत्र की आकाशीय स्थिति</u> -

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का चतुर्थ चरण और श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण की चार घटी मिलाने पर अभिजित् नक्षत्र का मान प्राप्त होत्ता है | इस तरह औसत रूप में अभिजित् नक्षत्र का मान 19 घटी (7 घंटा 36 मिनट) माना गया है | अभिजित् नक्षत्र को मिलाने पर नक्षत्रों की संख्या 28 हो जाती है | यहाँ यह ध्यान रहे कि प्रतिदिन दोपहर के समय 48 मिनट के लिए आने वाला अभिजित् मुहूर्त और अभिजित् नक्षत्र दोनों ही अलग अलग हैं, यहाँ संशय नहीं करना चाहिए |

नक्षत्रों के नाम एवं उनके स्वामी

क्रम	नक्षत्रों के नाम	नक्षत्रों के स्वामी
1	अश्विनी	अश्विनीकुमार
2	भरणी	यम
3	कृत्तिका	अग्नि
4	रोहिणी	ब्रह्मा
5	मृगशिरा	चन्द्रमा
6	आर्द्रा	रूद्र
7	पुनर्वसु	अदिति
8	पुष्य	गुरु
9	अश्लेषा	सर्प
10	मघा	पितृगण
11	पूर्वाफाल्गुनी	भग
12	उत्तराफाल्गुनी	अर्यमा
13	हस्त	सूर्य
14	चित्रा	त्वष्टा
15	स्वाती	वायु
16	विशाखा	इन्द्राग्नी
17	अनुराधा	मित्र
18	ज्येष्ठा	इन्द्र
19	मूल	राक्षस

20	पूर्वाषाढ़ा	जल
21	उत्तराषाढ़ा	विश्वेदेव
22	अभिजित्	ब्रह्मा
23	श्रवण	विष्णु
24	धनिष्ठा	वसु
25	शतभिषा	वरुण
26	पूर्वाभाद्रपद	अजपाद
27	उत्तराभाद्रपद	अहिर्बुध्न्य
28	रेवती	पूषा

नक्षत्र का गणितीय स्वरूप

पहले ही बता चुके हैं कि पृथ्वी के भ्रमण मार्ग से हमें वर्षभर में आकाश के 27 नक्षत्र दृष्टिगोचर होते हैं | पृथ्वी के भ्रमण मार्ग को ज्योतिष् शास्त्र में क्रान्तिवृत्त कहा गया है | हम सरल भाषा में कहें तो ये कह सकते हैं कि क्रान्तिवृत्त में 27 नक्षत्र हैं | सभी नक्षत्रों को पुनः गहन अध्ययन के उद्देश्य से चार-चार भागों में बाँटा गया है, जिन्हें नक्षत्र चरण कहा जाता है |

क्रान्तिवृत्त एक गोलाकार पथ है, आप सभी जानते है कि किसी भी वृत्त या गोल का कोणीय मान 360° होता है |

अतः 360° ÷ 27 = 13°20′ या 800 कला
∴ 1 नक्षत्र का मान = 13°20′
इसी प्रकार, 13°20′ ÷ 4 = 3°20′
∴ 1 नक्षत्र चरण का मान = 3°20′
चन्द्रमा औसतन एक दिन में एक नक्षत्र का भोग करता है |

• ज्योतिष् में नक्षत्रफल का बहुत महत्व है, इसे जानने के लिए पढ़ें मेरा लेख *जन्मनक्षत्र फल*|
• फलादेश में त्रिविध गण्डान्त का बहुत महत्व है, इसके बारे में जानने के लिए पढ़ें मेरा लेख *त्रिविध गण्डान्त*|

जन्मनक्षत्र - जन्म के समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र में होता है, वही प्रचलित जन्मनक्षत्र कहलाता है | सभी नक्षत्रों को शतपद चक्र में चार-चार वर्ण प्राप्त हैं, जन्म समय के चन्द्रमा के नक्षत्र-चरण के अनुसार शतपद चक्र से अक्षर का चयन कर के राशिनाम रखने की परम्परा है|

किस नक्षत्र में कौन-कौन से अक्षर आते हैं, ये आप निम्नलिखित सारणी के माध्यम से सीखेंगे -

अश्विनी	भरणी	कृत्तिका
चू, चे, चो, ला	*ली, लू, ले, लो*	*आ, ई, ऊ, ए*
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
ओ, वा, वी, वू	*वे, वो, का, की*	*कू, घ, ङ, छ*
पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा
के, को, हा, ही	*हू, हे, हो, डा*	*डी, डू, डे, डो*
मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उत्तराफाल्गुनी
मा, मी, मू, मे	*मो, टा, टी, टू*	*टे, टो, पा, पी*
हस्त	चित्रा	स्वाती
पू, ष, ण, ठ	*पे, पो, रा, री*	*रू, रे, रो, ता*
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
ती, तू, ते, तो	*ना, नी, नू, ने*	*नो, या, यी, यू*
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
ये, यो, भा, भी	*भू, धा, फा, ढा*	*भे, भो, जा, जी*
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
खी, खू, खे, खो	*गा, गी, गू, गे*	*गो, सा, सी, सू*
पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती
से, सो, दा, दी	*दू, थ, झ, ण*	*दे, दो, चा, ची*

योग क्या है ?

योग से तात्पर्य है- जुड़ाव, जुड़ना, संयोग या मिलन | सूर्य व चन्द्रमा के नक्षत्रों के परस्पर जुड़ाव के आधार पर हम विष्कुम्भादि योगों का निर्धारण करते हैं, अतः इस प्रकरण में योग शब्द सार्थक सिद्ध होता है |

गर्ग ऋषि ने कहा है कि योग दो तरह के होते हैं-

नित्य, सदा एक क्रम में आने वाले विष्कुम्भादि 27 योग
तथा
बिना क्रम के आने वाले आनन्दादि 28 योग

दोनों का फल उनके नाम के अर्थ के अनुसार व्यक्ति को मिलता है |

मूल वचन है - **स्वनामफलदाः स्मृताः** |

विष्कुम्भादि 27 योग

पहले तो 27 योगों को उनके नाम व क्रम संख्या के अनुसार याद कर लें, तत्पश्चात् पञ्चांग में देखकर सूर्य के नक्षत्र की क्रमसंख्या में चन्द्रनक्षत्र की क्रमसंख्या जोड लें | फिर 1 घटाकर 27 से भाग देने पर शेष संख्या तुल्य वर्त्तमान योग की क्रम संख्या प्राप्त होगी | इस प्रकार बहुत ही सरलता से प्रतिदिन के विष्कुम्भादि योगों का ज्ञान किया जा सकता है | विष्कुम्भादि योगों के नाम, क्रमसंख्या एवं अर्थ तालिका में प्रस्तुत हैं -

क्रम	योगों के नाम	नाम का अर्थ
1	विष्कुम्भ *	विषैला
2	प्रीति	स्नेह
3	आयुष्मान्	दीर्घजीवी
4	सौभाग्य	भाग्यशाली
5	शोभन	शुभ या सुन्दर
6	अतिगण्ड *	बड़ी बाधा
7	सुकर्मा	अच्छे कर्मों वाला
8	धृति	धीरज
9	शूल *	दर्द
10	गण्ड *	बाधा
11	वृद्धि	उन्नति
12	ध्रुव	अटल
13	व्याघात *	गहरी चोट
14	हर्षण	प्रसन्नता
15	वज्र *	आसमानी बिजली
16	सिद्धि	सफलता
17	व्यतिपात *	विपत्ति
18	वरीयान्	श्रेष्ठ
19	परिघ *	डंडा
20	शिव	कल्याण
21	सिद्ध	सफल
22	साध्य	लक्ष्य
23	शुभ	अच्छा
24	शुक्ल	उज्जवल
25	ब्रह्म	ज्ञान विज्ञान
26	ऐन्द्र	राजसी
27	वैधृति *	कहीं कहीं धैर्य

- तारांकित (*) योग बहुत अशुभ माने गए हैं | आजकल शुभ, शुक्ल, गण्ड और वृद्धि योगों के दौरान कभी कभी क्रान्तिसाम्य रहा करता है, क्रान्तिसाम्य में जन्म होना बहुत अशुभ माना गया है |

आनन्दादि 28 **योग**

जिस प्रकार वारों का क्रम सूर्योदय कालीन होरापति के आधार पर तय किया जाता है, उसी प्रकार आनन्दादि योगों का ज्ञान सूर्योदयकालीन नक्षत्रघटी से किया जाता है |

सैद्धान्तिक गणना से `सृष्टि के आदि में रविवार एवं अश्विनी नक्षत्र था | अतः आनन्दादि योगों में प्रत्येक रविवार को अश्विनी से प्रातः काल उपस्थित नक्षत्र तक गिनकर आनन्दादि योग तय हुए हैं | सृष्ट्यादि अहर्गण के अनुसार चलने पर प्रतिदिन 56वीं घड़ी में अभिजित् सहित 28 नक्षत्रों की दो बार आवृत्ति पूरी होती है| बाद में 57वीं घड़ी में फिर पहला, 58वीं में दूसरा, 59वीं में तीसरा और 60वीं घड़ी में चौथा नक्षत्र, अतः अगले सूर्योदय के समय 61वीं घड़ी में पांचवें नक्षत्र का स्वामी ही उस घड़ी का अधिपति माना गया है | अतएव प्रतिदिन पांचवां नक्षत्र अगले-अगले वारों में गणना के लिए लिया गया है |

स्पष्ट देखिये, रविवार को अश्विनी से | सोमवार को उससे पंचम मृगशिरा से | मंगलवार को उससे पंचम अश्लेषा से | बुधवार को उससे पंचम हस्त से | गुरूवार को उससे पंचम अनुराधा से | शुक्रवार को उससे पंचम उत्तराषाढा से | शनिवार को उससे पंचम अभिजित् सहित शतभिषा से दिन नक्षत्र तक गिनकर आनन्दादि योग निकालते हैं | आनन्दादि योगों के नाम, क्रमसंख्या एवं अर्थ तालिका में प्रस्तुत हैं -

क्रम	योगों के नाम	नाम का अर्थ
1	आनन्द	अपार प्रसन्नता
2	कालदण्ड *	मृत्यु का डंडा
3	धूम्र *	धुवां
4	प्रजापति	रचनाकार
5	सौम्य	शुभ एवं शान्त
6	ध्वांक्ष *	कौवा
7	ध्वज	झंडा
8	श्रीवत्स	लक्ष्मी का चिह्न
9	वज्र *	आसमानी बिजली
10	मुद्गर *	युद्ध एवं व्यायाम उपकरण
11	छत्र	राजसी छतरी
12	मित्र	सूर्य
13	मानस	मानसरोवर
14	पद्म	कमल
15	लुम्बक *	हथियार
16	उत्पात *	उपद्रव

17	मृत्यु *	विनाश
18	काण *	एकाक्ष नेत्ररोगी
19	सिद्धि	सफलता
20	शुभ	शुभ
21	अमृत	अमृत
22	मूसल *	कूटने का शस्त्र
23	गद *	रोग
24	मातंग	हाथी
25	राक्षस *	राक्षस
26	चर	चंचल
27	स्थिर	दृढ़, मजबूत
28	वर्धमान	बढ़ता हुआ

- तारांकित (*) योग बहुत अशुभ माने गए हैं | सभी पंचांगों में दोनों ही योगों का आरम्भ और अंत समय दिया रहता है, आप इनका दैनिक ज्ञान किसी भी पञ्चांग से प्राप्त कर सकते हैं |

करण क्या है ?

तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं | अर्थात् एक तिथि में दो करण होते हैं | सूर्य से चन्द्रमा के 6 अंश का अंतर ही एक करण बनता है | अतः चान्द्रमास के अनुसार 1 महीने में 60 करण होते हैं | कुल 11 करण हैं | जिसमें 7 करण चर संज्ञक है तथा 4 करण स्थिर संज्ञक है | इन 11 करणों के नाम इस प्रकार हैं - बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि, शकुनि, चतुष्पद, नाग और किंस्तुघ्न | बव से विष्टि तक चर करण एवं शकुनि से किंस्तुघ्न तक स्थिर करण हैं |

चर करण का प्रारम्भ शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के उत्तरार्ध से होता है | जैसे - शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के उत्तरार्ध में बव-करण द्वितीया के पूर्वार्ध में बालव करण द्वितिया के उत्तरार्ध में कौलव-करण इसी प्रकार सातों करण क्रमश: आते हैं | एक मास में इनकी आठ आवृतियाँ होती हैं | कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्ध में स्थिर करण आरंभ होता हैं | जैसे कृष्णपक्ष चतुर्दशी के उत्तरार्ध में शकुनि , अमावस्या के पूर्वार्ध मे चतुष्पद उत्तरार्ध में नाग और शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के पूर्वार्ध में किंस्तुघ्न करण होता है |

भद्रा या विष्टि करण

ग्यारह करणों में से सातवें (चर) करण विष्टि को ही भद्रा कहा जाता है | यह शुक्लपक्ष में अष्टमी एवं पूर्णिमा तिथि के पूर्वार्ध में और चतुर्थी एवं एकादशी तिथि के उत्तरार्ध में रहा करती है | इसी प्रकार कृष्णपक्ष में यह सप्तमी एवं चतुर्दशी तिथि के पूर्वार्ध में और तृतीया एवं दशमी तिथि के उत्तरार्ध में रहा करती है |

वैसे तो सभी शुभ कार्यों में इसे वर्जित किया जाता है परन्तु श्रावणी उपाकर्म और होलिकादहन इसमें विशेष रूप से निषिद्ध हैं |

• भद्रा के विषय में सम्पूर्ण जानकारी के लिए आपको मेरा लेख *भद्रा पर सम्पूर्ण विवेचन* पढ़ना चाहिए |

|| शुभमस्तु ||

कुम्भकर्कद्वये मर्त्ये स्वर्गेऽब्जेजात्लयेऽलिगे | स्त्रीधनुर्जूकनक्रेऽधो भद्रा तत्रैव तत्फलम् ||

(मुहूर्त चिन्तामणि)

कुम्भ, मीन, कर्क और सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो भद्रा मर्त्य (पृथ्वी) में रहती है | मेष, वृष, मिथुन, और वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो भद्रा स्वर्ग में रहती है | कन्या, धनु, तुला और मकर में चन्द्रमा हो तो पाताल में भद्रा का वास होता है | भद्रा का जहाँ वास हो, वहीं उसका फल समझना चाहिए |

तुङ्गस्था बलिनोऽखिलाश्च शशिनः श्लाघ्यं हि पक्षोद्भवं
भानोर्दिग्बलमाह वक्रगमने ताराग्रहाणां बलम् |
कर्क्युक्षाजघटालिगोहिरबलान्त्योक्षाश्विपाश्चात्यगः
केतुस्तत्परिवेषधन्वसु बली चेन्द्रर्कयोगो निशि ||

(फलदीपिका)

सभी ग्रह उच्च होने पर बलवान् माने जाते हैं | चन्द्रमा के लिए पक्षबल का विशेष महत्त्व है | सूर्य के लिए दिग्बली होना मुख्य है | अन्य ताराग्रहों (मंगल से शनि पर्यन्त) के लिए वक्रबल प्रधान है | राहु – मेष, वृष, कर्क, वृश्चिक और कुम्भ में, तथा केतु – वृष, कन्या, मीन तथा धनु के उत्तरार्द्ध में बली माने जाते हैं | केतु परिवेष एवं इन्द्रचाप नामक उपग्रहों के साथ भी बलवान् माना जाता है | यदि रात्रि में जन्म हो एवं सूर्य-चन्द्रमा की युति हो तो यह योग प्रबल हो जाता है |

वैश्वान्त्यपादश्रवस्तिथ्यंशस्त्वभिजित् |

(मुहूर्त मार्तण्ड, यात्राप्रकरण, श्लोक – ०४)

उत्तराषाढ़ा का चतुर्थ चरण (15 घटी के लगभग) और श्रवण का 15वां भाग (चार घटी के लगभग) मिलाकर अभिजित् नक्षत्र (19 घटी के आसन्न) का मान होता है |

तीसरा दिन

ग्रह की शास्त्रीय परिभाषा

किसी भी शब्द का अर्थ यदि एक ही लिया जा सके तो अन्य अर्थ न लिए जाएँ ! ज्योतिष् शास्त्र में सूर्यादि (सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु) नवग्रह माने गए हैं| **ग्रह उपादाने** धातु से ग्रह शब्द बनता है, इसका अर्थ होता है लेना, पकड़ना, अपने अधीन रखना, समझना, न भूलना इत्यादि| ये सारे अर्थ एक ही माने जाएँगे क्योंकि एक ग्रह धातु के ये सभी अर्थ हैं| सूर्य आदि ग्रह प्रकृति मण्ड़ल से क्या क्या लेते हैं और क्या क्या अपने वश में रखते हैं, यह हम बहुत कम जानते हैं| हमें इस विषय में ज्ञान विकसित करना चाहिए, इसी ज्ञान को विकसित करने में ज्यौतिष शास्त्र हमारी सहायता करता है |

वेद कहते हैं, *सूर्य आत्माजगतस्तस्थुषश्च*| आत्मा का अर्थ होता है धारक, आधार, मूल-तत्व आदि, इस वेदवाक्य की वैज्ञानिक व्याख्या यह होगी कि विश्व में जितने प्राणी जी रहे हैं, उनका जीवन सूर्य पर निर्भर करता है| सूर्य ही सबको हिसाब से आयु देते हैं, इतना ही नहीं कोई तिनका अथवा एक छोटा पत्ता भी सूर्य से ही अनुप्राणित है| जो सूर्य प्राणीमात्र को जीवन दे रहा है उसका प्रभाव किसी जातक पर या विश्व पर या समस्त प्रकृति पर कैसा पड़ रहा है इसी का चिन्तन ज्यौतिष शास्त्र करता है| जैसे सूर्य हैं, वैसे ही अन्य ग्रहों को भी समझना चाहिए| राहु भी एक ग्रह है, इसे हम बौद्धों के शून्यवाद का प्रतीक मान सकते हैं| क्योंकि यह हर बात में नकारात्मक होता है| शून्य का विजयध्वज केतु कहलाता है| जहाँ केतु दिखाई पड़ता है, वह राहु का ही झण्ड़ा होता है अर्थात् विनाशकाल, प्रदर्शन, मिलता जुलता प्रभाव दोनों का है|

वर्त्तमान में उपलब्ध ज्योतिष् ग्रन्थों में ज्योतिष् प्रवर्तक आचार्यों द्वारा उद्धृत ग्रह सम्बन्धी कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं मिलती, सीधे सीधे नवग्रहों के नाम प्राप्त होते हैं| ज्योतिष् प्रवर्तकों द्वारा रचित ग्रन्थों को पढ़कर उनके मन्तव्यों को समझकर अन्यान्य ज्योतिष् आचार्यों द्वारा कुछ परिभाषाएँ बनाई गईं | *गृह्णाति फलदातृत्वेन जीवान् इति ग्रहः* इस परिभाषा से सूर्य व चन्द्रमा ग्रह सिद्ध होते हैं | *गृह्णाति गतिविशेषान् वक्रनुवक्राकुटिलेति प्रभृतीन् इति ग्रहः* इस परिभाषा से मङ्गल आदि पञ्चताराग्रह (मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि) की ग्रहत्व सिद्धि होती है | *फलप्रदाने समर्थो ग्रहः* परिभाषा से अदृश्यमान् राहु-केतु तथा अप्रकाश ग्रहों की भी ग्रहत्व सिद्धि होती है |

ज्योतिष् शास्त्र के अध्ययन से यह समझ में आता है कि किसी दृश्य आकाशीय पिण्ड के लिए ग्रह होने की अनिवार्य योग्यता ये है कि वह सूर्य की परिक्रमा करता हो | इसी आधार पर ही यूरेनस (हर्षल), नेपच्यून (अरुण) और प्लूटो (वरुण) को भी आधुनिक ज्योतिर्विदों ने ग्रह माना है| किसी भी पिण्ड के लिए भारतीय ज्यौतिष के अनुसार ग्रह बनना आसान नहीं है! उसे कई सालों तक लगातार परीक्षणों से गुजरना पड़ता है ग्रह-मानक नियमों पर खरा उतरना पड़ता है| अब आईये, कुण्डली के फलादेश में परम उपयोगी ग्रह सम्बन्धी मूलभूत जानकारियों से अवगत हों | यदि आप कुण्डली फलादेश में कुशल बनना चाहते हैं तो आपको ग्रहशील कंठस्थ कर लेना चाहिए |

ग्रहस्वामी, दिशा, लिंग, और तत्व

क्रम	ग्रह	स्वामी	दिशा	लिंग	तत्व
1	सूर्य	अग्नि	पूर्व	पुरुष	अग्नि
2	चन्द्रमा	जल	वायुकोण	स्त्री	जल
3	मंगल	कार्तिकेय	दक्षिण	पुरुष	अग्नि
4	बुध	विष्णु	उत्तर	नपुंसक	पृथ्वी
5	गुरु	इन्द्र	ईशानकोण	पुरुष	आकाश
6	शुक्र	इन्द्राणी	अग्निकोण	स्त्री	जल
7	शनि	ब्रह्मा	पश्चिम	नपुंसक	वायु
8	राहु / केतु	शिव	नैर्ऋत्यकोण	नपुंसक	वायु

ग्रहों के शुभाशुभत्व एवं उच्चादि

ग्रह	पाप/शुभ	स्वगृही	उच्च	नीच	मूलत्रिकोण
सूर्य	पाप/क्रूर	सिंह 21° से 30°	मेष परमोच्च अंश 10°	तुला परमनीच अंश 10°	सिंह 0° से 20°
चन्द्रमा	शुभ/पाप	कर्क	वृष (0° से 04°) परमोच्च अंश 03°	वृश्चिक परमनीच अंश 03°	वृष 05° से 30°
मंगल	पाप	मेष एवं वृश्चिक मेष 13° से 30°	मकर परमोच्च अंश 28°	कर्क परमनीच अंश 28°	मेष 0° से 12°
बुध	शुभ/पाप	मिथुन एवं कन्या कन्या 21° से 30°	कन्या (0° से 15°) परमोच्च अंश 15°	मीन परमनीच अंश 15°	कन्या 16° से 20°
गुरु	शुभ	धनु एवं मीन धनु 11° से 30°	कर्क परमोच्च अंश 05°	मकर परमनीच अंश 05°	धनु 0° से 10°
शुक्र	शुभ	वृष एवं तुला तुला 16° से 30°	मीन परमोच्च अंश 27°	कन्या परमनीच अंश 27°	तुला 0° से 15°
शनि	पाप	मकर एवं कुम्भ कुम्भ 21° 30 °	तुला परमोच्च अंश 20°	मेष परमनीच अंश 20°	कुम्भ 0° से 20°
राहु	पाप	कन्या	मिथुन	धनु	कुम्भ
केतु	पाप	मीन	धनु	मिथुन	सिंह

Ø चन्द्रमा कृष्ण षष्ठी से शुक्ल दशमी तक क्षीण रहता है, क्षीण चन्द्रमा पापग्रह माना जाता है | शुक्ल एकादशी से कृष्ण पञ्चमी तक चन्द्रमा पक्षबली होता है, पक्षबली चन्द्रमा शुभग्रह माना जाता है |

Ø बुध को शुभग्रह के साथ रहने पर शुभग्रह तथा पापग्रह के साथ रहने पर पापग्रह माना जाता है | अकेला बुध शुभ ही माना गया है |

ग्रहों की शीर्षोदयादि संज्ञा

शीर्षोदय	पृष्ठोदय	उभयोदय
शुक्र, चन्द्र, बुध	सूर्य, मंगल, शनि, राहु	बृहस्पति

ग्रहों के रंग

सूर्य	रक्तश्याम / मैरून
चन्द्र	गौर वर्ण
मंगल	रक्त गौर
बुध	श्वेत दूर्वा के समान हल्का पीलापन
गुरु	पीत गौर
शुक्र	श्यामल गौर, देदीप्यमान
शनि	काला

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः |

जीवो मीनधनुस्स्वामी कर्कस्य पति चन्द्रमा ||

सिंहस्याधिपतिः सूर्यः शनि मकरकुम्भयोः |

बुध कन्यामिथुनयोः भवन्तीह च स्वामिनः ||

मेष और वृश्चिक का स्वामी मङ्गल है, शुक्र वृष एवं तुला का स्वामी होता है | बृहस्पति मीन एवं धनु का स्वामी है तथा कर्क का स्वामी चन्द्रमा है | सिंह राशि का अधिपति सूर्य है | शनि मकर एवं कुम्भ का स्वामी है | बुध कन्या मिथुन का स्वामी है |

आत्मादिविभाग / राजादिविभाग

क्रम	ग्रह	**आत्मादिविभाग**	**राजादिविभाग**
1	सूर्य	आत्मा	राजा
2	चन्द्रमा	मन	रानी
3	मंगल	सत्व	सेनापति
4	बुध	वाणी	राजकुमार
5	गुरु	पारलौकिक ज्ञान एवं सुख	मन्त्री
6	शुक्र	लौकिक ज्ञान, सुख एवं कामशक्ति	मन्त्री
7	शनि	दुःख-कष्ट	सेवक

ग्रहों के पर्यायवाची नाम

सूर्य	हेलि, दिनकर, तपन, भानु, पूषा, अरुण, अर्क, तरणी, कलिन्द, मिहिर, भास्कर
चन्द्रमा	सोम, इन्दु, शशांक, मृगांक, शशि, शीतरश्मि, सितद्युति, निशाकर, उडुपति, ग्लौ
मंगल	आर, वक्र, भौम, क्रूरदृक्, आवनेय, क्षितिज, रुधिर, अंगारक
बुध	हेम्ना, ज्ञ, वित्/विद्, इन्दुपुत्र, बोधन, सौम्य, तारातनय,
गुरु	जीव, आंगिरस, मन्त्री, सुरगुरु, वाचस्पति, इज्य
शुक्र	भार्गव, भृगुसुत, एकाक्ष, सित, दानवेज्य, दैत्यगुरु, आस्फुजित, काव्य, अच्छ
शनि	कोण, मन्द, सूर्यपुत्र, असित, छायासूनु, आर्की
राहु	तम, अगु, असुर, सर्प, दानवमन्त्री, सैंहिकेय, फणि
केतु	ध्वज, शिखी

ग्रहों के ब्राह्मणादि वर्ण, नीति, मज्जादि - चतुष्पदादि तथा रत्न

ग्रह	वर्ण	नीति	चतुष्पदादि	मज्जादि	रत्न
सूर्य	क्षत्रिय	दण्ड	चतुष्पद	अस्थि	माणिक्य
चन्द्र	वैश्य	दाम	सरीसृप	रक्त	मोती
मंगल	क्षत्रिय	दण्ड	चतुष्पद	मज्जा	मूंगा
बुध	शूद्र	भेद	पक्षी	त्वचा	पन्ना
गुरु	ब्राह्मण	साम	द्विपद	वसा	पुखराज
शुक्र	ब्राह्मण	साम	द्विपद	वीर्य	हीरा
शनि	अन्त्यज	भेद	पक्षी	रोम	नीलम
राहु	अन्त्यज	भेद	पक्षी	---	गोमेद

ग्रहों के द्रव्य, ऋतु , स्वभाव , गुण तथा त्रिदोष

ग्रह	द्रव्य	ऋतु	स्वभाव	गुण	त्रिदोष
सूर्य	ताम्बा	---	उग्र	सत्व	पित्त
चन्द्र	मणि	वर्षा	तपस्वी	सत्व	कफ
मंगल	सोना	ग्रीष्म	गम्भीर	तम	पित्त
बुध	सीप / सोना	शरद	तेजस्वी	रज	कफ
गुरु	चांदी	हेमंत	ज्ञानी	सत्व	पित्त
शुक्र	मोती	वसंत	व्यावहारिक	रज	कफ
शनि	लोहा	शिशिर	क्रूर	तम	वात
राहु	शीशा	---	उद्दण्ड	तम	वात

॥ शुभमस्तु ॥

चौथा दिन

नैसर्गिक ग्रहमैत्री

ग्रह	मित्र	शत्रु	सम
सूर्य	चन्द्र, मंगल, गुरु	शुक्र, शनि	बुध
चन्द्र	सूर्य, बुध	---	मंगल, गुरु, शुक्र, शनि
मंगल	सूर्य, चन्द्र, गुरु	बुध	शुक्र, शनि
बुध	सूर्य, शुक्र	चन्द्र	मंगल, गुरु, शनि
गुरु	सूर्य, चन्द्र, मंगल	बुध, शुक्र	शनि
शुक्र	बुध, शनि	सूर्य, चन्द्र	मंगल, गुरु
शनि	बुध, शुक्र	सूर्य, चन्द्र, मंगल	गुरु

पंचधामैत्री विचार

1. ग्रह अपनी अधिष्ठित राशि से 2, 3, 4, 10, 11, 12 राशियों में स्थित ग्रहों से तात्कालिक मित्रता रखता है|
2. ग्रह अपनी अधिष्ठित राशि में बैठे ग्रहों तथा 5, 6, 7, 8, 9 राशियों में स्थित ग्रहों से तात्कालिक शत्रुता रखता है|

इस प्रकार तात्कालिक मैत्री तथा नैसर्गिक मैत्री के आधार पर निम्नलिखित नियमों से पंचधामैत्री जानें -

- तात्कालिक मित्र + नैसर्गिक मित्र = अधिमित्र
- तात्कालिक मित्र + नैसर्गिक सम = मित्र
- तात्कालिक शत्रु + नैसर्गिक सम = शत्रु
- तात्कालिक शत्रु + नैसर्गिक शत्रु = अधिशत्रु
- तात्कालिक मित्र + नैसर्गिक शत्रु = सम

ग्रहों के राशिभोग

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
१ माह	२.२५ दिन	४५ दिन	२२ दिन	१३ माह	२६ दिन	३० माह	१८ माह	१८ माह

Ø सभी ग्रह 12 राशियों में ही घूमते रहते हैं, सभी ग्रहों की गति अलग-अलग होती है, इसलिए राशिचक्र की परिक्रमा करने में सबको अलग-अलग समय लगता है | किसी ग्रह को एक राशि चलने में कितना समय लगता है, इसकी जानकारी उपर्युक्त सारणी से हो जाएगी, ध्यान रहे सारणी में औसत समय दिया गया है |

ग्रहों का बल

ग्रह विचार में सबसे महत्वपूर्ण होता है ग्रहबल ! चूंकि बली ग्रह ही अपने सम्पूर्ण शुभफलों को देने में सक्षम होता है और अपने अशुभ फलों को कमतर कर सकता है | इसके लिए ग्रहों का षड्बल देखना चाहिए |

- जब ग्रह उच्च, मूलत्रिकोणी, स्वगृही, मित्रगृही या अपने नवमांश में स्थित हो तो वह *स्थानबली* होता है|
- बुध व गुरु लग्न में सूर्य मंगल दशम में, शनि सप्तम में, तथा शुक्र एवं चंद्रमा चतुर्थभाव में *दिग्बली* होते हैं |
- किसी ग्रह से दृष्ट होने पर ग्रह को दृग्बल प्राप्त होता है | शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो *दृग्बली ग्रह* अपने शुभ प्रभावों को बढ़ाता है, पापग्रह की दृष्टि हो तो ग्रह अशुभ फलों की वृद्धि करता है |
- सूर्य व चन्द्रमा उत्तरायण में *चेष्टाबली* होते हैं, तथा मंगल, बुध गुरु, शुक्र, शनि वक्री रहने पर या चन्द्रमा के साथ रहने पर *चेष्टाबली* होते हैं | अधिक रश्मि वाले, तथा ग्रहयुद्ध में उत्तर शर वाले ग्रह भी *चेष्टाबली* होते हैं |
- चन्द्रमा, मंगल व शनि रात्रि में, सूर्य गुरु शुक्र दिन में, तथा बुध दोनों ही समय *कालबली* होते हैं | एक नियम यह भी है कि कृष्णपक्ष में पापग्रहों को तथा शुक्लपक्ष में शुभग्रहों को कालबल मिलता है | अपने वर्ष, मास, वार अथवा होरा में भी ग्रहों को कालबल मिलता है |
- शनि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्रमा एवं सूर्य क्रमशः उत्तरोत्तर अधिक *निसर्गबली* होते हैं |

अस्त-ग्रह

ग्रह	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
कालांश	12°	17°	13°	11°	09°	05°

अस्त ग्रह के विचार के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सूत्र

- सूर्य के समीप (आगे, पीछे या साथ) आने पर ग्रह अस्त हो जाते हैं, अस्त होने के लिए सभी ग्रहों को अपने निश्चित कालांशों में सूर्य से अन्तरित होना होता है | सभी ग्रहों के अस्त कालांशों का ज्ञान उपर्युक्त सारणी से किया जा सकता है | जैसे मंगल यदि सूर्य से 17° आगे या पीछे हो तो अस्त हो जाता है | इसके लिए सबसे सरल उपाय है, ग्रहस्पष्ट में सूर्यस्पष्ट घटा लिया जाए और प्राप्त अंतरफल का उक्त सारणी से मिलान कर लिया जाए |
- सूर्य से 7° आगे-पीछे रहने पर ग्रह परम अस्त हो जाते हैं |
- अस्त ग्रह अपने शुभफल देने की क्षमता खो देते हैं और उनकी अशुभ फल देने की क्षमता सूर्य के नजदीक होने के तुलनानुसार अपेक्षाकृत

बढती जाती है | अस्त ग्रह अपने शुभ कारकों को भूल कर केवल अशुभ कारकों का ही फल देने लगते हैं |

- कुण्डली में जितने अधिक ग्रह अस्त होंगे कुण्डली उतनी ही दुर्बल हो जाती है, जीवनस्तर उतना ही ज्यादा निम्न होता जाता है |
- कुण्डली में जो ग्रह अस्त हो जाते हैं, उसके कारकत्व सम्बन्धी शुभफलों का सुख जातक अपने जीवन में कभी नहीं प्राप्त कर पाता, लेकिन ग्रह के कारकत्व सम्बन्धी अशुभ फलों को अवश्य भोगता है |
- ऐसे भी फल प्राप्त होते हैं कि तीन या तीन से ज्यादा ग्रहों के अस्त रहने पर व्यक्ति जडवत् हो जाता है |
- अस्त ग्रह बलहीन हो जाते हैं अर्थात् शुभफल देने की क्षमता खो बैठते हैं |
- अस्त होने का सबसे अधिक दोष चन्द्रमा को और सबसे कम दोष बुध को लगता है |
- अस्त ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा भी बहुत कष्टकारक होती है, अस्त ग्रह की दशा में ग्रह के कारकत्व सम्बन्धी रोग जातक को अवश्य ही होते हैं |

|| शुभमस्तु ||

उदये सौख्यदा ज्ञेया वक्रे देशान्तरप्रदाः | मार्गे ह्यारोग्यकर्तारश्चान्ये मानार्थहानिदाः ||
(ज्योतिष्तत्वप्रकाश)

उदित ग्रह को सुख देने वाला समझना चाहिए और वक्री ग्रह स्थान परिवर्तन कराते हैं | मार्गी ग्रह आरोग्य देते हैं एवं अस्त ग्रह से सम्मान एवं धन की हानि होती है ||

विलग्नपातालवधूनभोगा बुधामरेज्यौ भृगुसूनुचन्द्रौ |
मन्दो धरासूनुदिवाकरौ चेत्क्रमेण ते दिग्बलशालिनः स्युः || (जातकपारिजात)
बुध और बृहस्पति लग्न में, शुक्र एवं चन्द्रमा चतुर्थ भाव में, शनि सप्तम भाव में तथा सूर्य एवं मंगल दशम भाव में दिग्बली होते हैं |

यद्भावनाथो रिपुरन्ध्ररिःफे दुःस्थानपो यद्भवनस्थितो वा |
तद्भावनाशं कथयन्ति तज्ज्ञाः शुभेक्षितस्तद्भवनस्य सौख्यम् || (फलदीपिका)

जिन भावों के स्वामी षष्ठ, अष्टम तथा द्वादश स्थानों में स्थित हों, उस भाव का नाश करते हैं | जिन भावों में अशुभ स्थानों के स्वामी बैठे हों, उस भाव का भी नाश होता है | किन्तु जिन भावों पर शुभग्रहों की दृष्टि होती है, जातक उन भावों के शुभफलों को प्राप्त करता है | इस तीसरे नियम को इस श्लोक के उपर्युक्त दो नियमों का अपवाद भी माना जा सकता है |

पांचवां दिन

ग्रहों की दृष्टि

ग्रह	एकपाद	द्विपाद	त्रिपाद	पूर्ण
सूर्य	3, 10	5, 9	4, 8	7
चन्द्र	3, 10	5, 9	4, 8	7
मंगल	3, 10	5, 9	---	4, 7, 8
बुध	3, 10	5, 9	4, 8	7
गुरु	3, 10	---	4, 8	5, 7, 9
शुक्र	3, 10	5, 9	4, 8	7
शनि	---	5, 9	4, 8	3, 7, 10

ग्रहों की अवस्थाएँ

दीप्तादि अवस्थाएँ –

ग्रहों की 9 दीप्तादि अवस्थाएँ शास्त्रों में बताई गयी हैं, वे हैं- दीप्त , स्वस्थ, मुदित, शान्त, दीन, दुःखी, विकल, खल एवं कोपी | ग्रह अपने उच्च में हो तो दीप्त, स्वराशि में हो तो स्वस्थ, अतिमित्र के घर में हो तो मुदित, मित्र के घर में शान्त, सम घर में दीन, होता है | ग्रह शत्रुक्षेत्र में हो तो दुःखी, पापग्रह से युक्त हो तो विकल, पाप ग्रह की राशि में हो तो खल और सूर्य के साथ हो तो कोपी होता है | ग्रह दीप्त, स्वस्थ व मुदित इन तीन अवस्थाओं में पूर्ण फल, शान्त और दीन अवस्थाओं में मध्य फल तथा शेष अवस्थाओं में साधारण फल प्रदान करता है |

बालादि अवस्थाएँ –

ग्रहों की 5 बालादि अवस्थाएँ शास्त्रों में बताई गईं हैं, वे हैं बाल, कुमार, युवा, वृद्ध एवं मृत | 30° की एक राशि में पांच बराबर भाग करने से 6° की एक अवस्था होती है | विषम राशियों (1,3,5,7,9,11) में ये अवस्थाएँ बालादि क्रम से ही आती हैं किन्तु सम राशियों (2,4,6,8,10,12) में ये अवस्थाएँ विपरीत क्रम से अर्थात मृतादि क्रम से आती हैं | बालावस्था वाला ग्रह चौथाई फल, कुमारावस्था वाला ग्रह आधा फल, युवावस्था वाला ग्रह पूरा फल, वृद्धावस्था में नगण्य सामान्य फल और मृतावस्था वाला ग्रह शून्यफल प्रदान करता है |

जाग्रतादि अवस्थाएँ -

उच्च तथा स्वनवांशगत ग्रह जाग्रतावस्था में, मित्र नवांशगत ग्रह स्वप्नावस्था में एवं नीच तथा शत्रु नवांशगत ग्रह सुप्तावस्था में होता है | ग्रह जाग्रतावस्था में पूर्ण फलप्रदाता, स्वप्नावस्था में मध्यम फलप्रदाता और सुषुप्तावस्था में निष्फल होता है |

• इसके अतिरिक्त ग्रहों की और भी अवस्थाएँ होती हैं, जिज्ञासुजन उसे अन्यान्य ग्रन्थों से पढ़ें |

स्थिर कारक विचार

- **सूर्य** - पिता
- **चन्द्रमा** - माता
- **मंगल** - सहोदर भाई-बहन तथा पत्नी के भाई
- **बुध** - मौसी, चाची, बुआ, ताई एवं मामा आदि
- **गुरु** - दादा-दादी आदि
- **शुक्र** - पति/पत्नी, सास ससुर, नाना-नानी आदि
- **शनि** - पुत्र-पुत्री सन्तान

|| शुभमस्तु ||

स्वोच्चे शुभे बलं पूर्णं त्रिकोणे पादवर्जितम् |
स्वर्क्षे दलं मित्रगेहे पादमात्रं प्रकीर्तितम् ||
पादार्द्धं समभे प्रोक्तं व्यर्थनीचास्तशत्रुगे |
तद्वद्दुष्टफलं ब्रूयाद्यत्ययेन विचक्षणः || (ज्योतिष् तत्वप्रकाश)

यदि शुभग्रह अपने उच्चराशि का हो तो पूर्ण बली (100%), अपने मूलत्रिकोण में त्रिपादबली (70%), अपने घर में अर्द्धबली (50%) तथा मित्र के घर में चौथाई बली (25%), सम ग्रह में अष्टमांशबली (12.5 %) तथा नीच, शत्रुगृही अथवा अस्त रहने पर हीनबली होता है | ग्रहों का फल उनके बल के अनुसार ही जानना चाहिए | उपरोक्त प्रकार से ग्रहों के अशुभ फल की न्यूनाधिकता भी समझनी चाहिए |

नीचे तिष्ठति यस्तदाश्रितगृहाधीशो विलग्नाद्यदा
चन्द्राद्वा यदि नीचगस्य विहगस्योच्चर्क्षनाथोऽथवा |
केन्द्रे तिष्ठति चेत्प्रपूर्णविभवः स्याच्चक्रवर्ती नृपो
धर्मिष्ठोऽन्यमहीशवन्दितपदस्तेजोयशोभाग्यवान् || (फलदीपिका)
यदि कोई ग्रह नीच राशि में हो, और उसका राशि स्वामी अथवा उस ग्रह की उच्च राशि का स्वामी, इन दोनों में से एक भी, यदि जन्म लग्न या चन्द्र लग्न से केन्द्र में हो तो नीचभंग राजयोग होता है |

छठा दिन

ग्रहों की गतियाँ

वक्राऽतिवक्रा कुटिला मन्दामन्दतरा समा |
तथाशीघ्रतराशीघ्रा ग्रहाणां अष्टधा गतिः ||

सूर्य सिद्धांत, स्पष्टाधिकार

सूर्य सिद्धांत में ग्रहों की ये आठ गतियाँ बताई गई हैं | लग्न कुण्डली देख कर भी ग्रहों की गति का ज्ञान किया जा सकता है | इसके लिए निम्नलिखित सूत्र स्मरण करें -

- उदया गति- सूर्य के साथ लेकिन अंशात्मक रूप से सूर्य से आगे रहने पर
- शीघ्रा गति- सूर्य से अगले भाव में या सूर्य से ग्यारहवें भाव में रहने पर
- समा गति- सूर्य से तीसरे भाव में रहने पर
- मन्दा या मन्दतरा गति- सूर्य से चौथे भाव में रहने पर
- वक्रा गति- सूर्य से पांचवें या छठे भाव में रहने पर
- अतिवक्रा गति- सूर्य से सातवें या आठवें भाव में रहने पर
- कुटिला गति- सूर्य से नवें या दसवें भाव में रहने पर
- अतिशीघ्रा गति- सूर्य से बारहवें भाव में रहने पर
- अस्ता गति- सूर्य से पिछले भाव में या साथ में रहने पर

इन गतियों का प्रयोग चेष्टाबल जानने के क्रम में किया जाता है | वक्री ग्रह 100% चेष्टाबली, अतिवक्री और समा गतिक ग्रह 50% चेष्टाबली, कुटिल (विकला) और मन्द गतिक ग्रह 25% चेष्टाबली, शीघ्र एवं चर गतिक ग्रह 75% चेष्टाबली, अतिशीघ्रा तथा अतिचारी गतिक ग्रह 50% चेष्टाबली होता है |

ग्रहगति के अनुसार फलकथन में सहायक अनमोल मोती –

- अतिचारी ग्रह का फल शास्त्रों में बहुत अशुभ बताया गया है |
- कोई भी ग्रह चाहे वह वक्री ही क्यों न हो यदि अस्त हो जाए तो बलहीन ही समझा जाता है |
- पाप ग्रह वक्री हों तो अतिपापी, शुभग्रह वक्री हों तो अतिशुभ हो जाते हैं | वक्रा गतिक ग्रह परदेश वास (स्थानान्तरण) व भटकाव तथा चिन्ता व रोग अवश्य प्रदान करते हैं |
- समा गतिक ग्रह अपना सहज नैसर्गिक सामान्य फल प्रदान करते हैं |
- मन्द और कुटिल गतिक ग्रह भी समा गतिक ग्रह की तरह ही फल करते हैं, कुटिल गतिक ग्रह कभी कभी अचानक ही कोई बड़ा बुरा फल दे जाता है |

- मन्द गतिक ग्रह ज्यादातर तटस्थ बने रहते हैं, मन्द गतिक ग्रह व्यक्ति को आशावान् बनाये रखता है, किन्तु आशाएँ पूरी नहीं होतीं|
- कुटिल गतिक ग्रह का ज्यादा झुकाव अशुभ फलों की तरफ ही होता है|
- शीघ्र गतिक शुभग्रह पापफलप्रद, शीघ्र गतिक पापग्रह शुभफलप्रद हो जाते हैं|
- उदय गतिक ग्रह सुख प्रदान करते हैं|
- अस्त गतिक ग्रह मान-सम्मान, धन और कार्य का नाश करता है|
- मार्गी ग्रह आरोग्य प्रदान करते हैं, वक्री के अलावा अन्य सभी गतियाँ मार्गी हैं|
- वक्री ग्रह अपनी राशि से पिछली राशि में स्थित ग्रह को बल प्रदान करता है|
- मार्गी ग्रह अपनी राशि से अगली राशि में स्थित ग्रह को बल प्रदान करता है|
- यहाँ बल से तात्पर्य ग्रहों के शुभ फल देने की क्षमता से है| कोई ग्रह यदि मन्द गतिक है तो वह 25% चेष्टाबली होगा इसका भाव यही है कि ग्रह अपनी अपनी क्षमता का 25% शुभ फल और 75% अशुभ फल प्रदान करेगा |उर्जा संरक्षण का सिद्धान्त आप सब जानते ही हैं|
- यहाँ सीधे ग्रह गति देख कर फलादेश नहीं करना चाहिए, बल्कि फलादेश से पूर्व बृहत् पाराशरीय या लघुपाराशरीय नियमों के अनुसार ग्रहों के शुभाशुभत्व का निर्णय अवश्य कर लेना चाहिए|

• वक्री ग्रह के सम्बन्ध में अधिक ज्ञानप्राप्ति के लिए आप मेरा लेख *वक्री ग्रह रहस्य* पढ़ सकते हैं|

• श्रेष्ठ फलादेश के इच्छुक लोगों को अन्यान्य ग्रन्थों से पढ़कर षड्बल पर अपना अभ्यास बढ़ाना चाहिए|

ग्रहों की शुभपञ्चक व अशुभपञ्चक स्थितियाँ

शुभपञ्चक	*शुभफल %*	*अशुभफल %*	अशुभपञ्चक	*शुभफल %*	*अशुभफल %*
उच्च	100.00%	0.00%	समराशि	12.50%	87.50%
मूलत्रिकोण	75.00%	25.00%	शत्रुराशि	6.25%	93.75%
स्वराशि	50.00%	50.00%	अधिशत्रु राशि	3.12%	96.87%
अधिमित्र गृही	37.50%	62.50%	नीचराशि	0.00%	100.00%
मित्रगृही	25.00%	75.00%	अस्त	0.00%	100.00%

• फलादेश के समय ग्रहबल के त्वरित अनुमान में यह सारणी बहुत उपयोगी सिद्ध होती है |

ग्रहों के चतुर्विध सम्बन्ध

प्रथमः स्थान सम्बन्धो दृष्टिजस्तु द्वितीयकः|

तृतीयस्त्वेकतो दृष्टिः स्थित्येकत्र चतुर्थकः ||

(बृहत्पाराशर होराशास्त्र)

1. राशि विनिमय सम्बन्ध (स्थान सम्बन्ध)- जो ग्रह परस्पर एक दूसरे की राशि में स्थित हों उनमें राशि विनिमय सम्बन्ध होता है |

2. दृष्टि सम्बन्ध - एक दूसरे को पूर्ण दृष्टि से देखने वाले ग्रहों में दृष्टि सम्बन्ध होता है |

3. एकदृष्टि सम्बन्ध - कोई ग्रह किसी ग्रह या भाव को देखे पर स्वयं उससे दृष्ट ना हो तो एकदृष्टि सम्बन्ध होता है |

4. युति सम्बन्ध- जो ग्रह समान राशि में स्थित हों उनमें परस्पर युति सम्बन्ध होता है |

ग्रहों के फल कथन में उपयोगी महत्वपूर्ण सूत्र

- सूर्य और चन्द्रमा सदैव मार्गी रहते हैं | सूर्य के साथ रहने पर क्षीण चन्द्र निष्फल होता है |
- राहु और केतु सदैव वक्री रहते हैं | राहु-केतु सदैव एक दूसरे से सातवीं राशि में रहते हैं |
- चतुर्थ भाव में बुध, पंचम में गुरु, द्वितीय में मंगल, षष्ठ में शुक्र और सप्तम में शनि निष्फल होता है |
- भाव सन्धि में स्थित ग्रह भी निष्फल हो जाता है |
- केन्द्र तथा त्रिकोण भावों में स्थित ग्रह विशेष बलवान होते हैं |
- सूर्य से पूर्वषटक में अर्थात् सूर्यस्थित राशि से 1, 2, 3, 10, 11, 12 राशियों में स्थित ग्रह अधोमुख होने से अपना उत्कट फल नहीं दे पाते | सूर्य से अपरार्ध में अर्थात् 4, 5, 6, 7, 8, 9 भावों में स्थित ऊर्ध्वमुख ग्रह विशेष प्रकाशित होने से प्रत्यक्ष एवं शीघ्र फलदायी होते हैं |
- चन्द्रमा के लिए पक्षबल, सूर्य के लिए दिग्बल और मंगल आदि पञ्चतारा ग्रहों के लिए चेष्टाबल विशेष महत्वपूर्ण होता है |
- सभी ग्रह अपने उच्च, मूलत्रिकोण, स्वराशि, अधिमित्र एवं मित्र की राशि या नवांश में बली माने जाते हैं |
- समराशि, शत्रुराशि, अधिशत्रुराशि, नीचराशि में होने पर या अस्त होने पर ग्रह बलहीन हो जाते हैं |
- सभी ग्रहों को अपने अपने वार में विशेष बल प्राप्त होते हैं |

- सूर्य तथा मंगल को दशम भाव में विशेष बल प्राप्त होता है, मंगल तो दशम भाव में नीच होने पर भी सुख ही देता है | मंगल 12, 11, 10, 8 राशियों में होने पर विशेष फल देता है |
- गुरु अपनी स्वराशि व उच्च राशि के अतिरिक्त वृश्चिक राशि में भी बहुत श्रेष्ठ फल प्रदान करता है | 1, 4, 10 भावों में नीचगत गुरु भी बलवान और धनदायक होता है |
- शुक्र 3, 4, 6, 12 भावों में वर्ग या राशिबली होकर रहने या चन्द्रमा के साथ रहने पर विशेष फलदायी होता है |
- राहु 1, 8, 11, 6, 2, 4 राशियों और दशम भाव में विशेष बली होता है | केतु 12, 2, 9, 6 राशियों में विशेष बली होता है |
- सभी ग्रह 6, 8, 12 भावों में अशुभ फल देते हैं, किन्तु शनि अष्टम भाव में आयुष्यवर्धक भी होता है |
- सूर्य, चन्द्रमा (चेष्टाबली होने से), बुध और गुरु उत्तरायण में शुभफलदायी माने जाते हैं |चन्द्रमा (अयनबली होने से) व शनि दक्षिणायन में शुभफलदायी माने जाते हैं |
- मंगल, शुक्र तथा शनि वक्री होने पर बुध एवं गुरु की अपेक्षा अधिक शुभफल करते हैं |
- चतुर्थ में बुध, पंचम में गुरु, सप्तम में शुक्र अकेला हो तो भाव को बुरी तरह बिगाड़ता है |
- *ग्रहयुति में परस्पर बलप्रदाता ग्रह* - सूर्य के साथ रहने पर शनि का, शनि के साथ रहने पर मंगल का, मंगल के साथ रहने पर गुरु का, गुरु के साथ रहने पर चन्द्रमा का, चन्द्रमा के साथ रहने पर शुक्र का, शुक्र के साथ रहने पर बुध का और बुध के साथ रहने पर चन्द्रमा का बल बढ़ता है |
- किसी भी ग्रह का बल कभी भी नष्ट या कम नहीं होता, ऊर्जा संरक्षण का सिद्धान्त आप सब लोग जानते ही हैं | ग्रहों का बल शुभ या अशुभ फल देने की क्षमता में रूपांतरित हो जाता है, बस | जब हम किसी ग्रह को बली कहते हैं तो इसका तात्पर्य है कि वह अपने कारकत्व के अनुसार शुभ फल प्रदान करेगा | ऐसे ही जब हम किसी ग्रह को निर्बल कहते हैं, तो उसका भाव यही है कि वह अपने कारकत्व के अनुसार अशुभ फल प्रदान करेगा | इसी प्रकार, जब हम किसी ग्रह को 25% बली कहते हैं तो इसका भाव यही है कि ग्रह अपनी अपनी क्षमता का 25% शुभ फल और 75% अशुभ फल प्रदान करेगा | इस तथ्य को अच्छी प्रकार से समझ कर मन मस्तिष्क में स्थापित कर लेना चाहिए, उसके बाद ही फलादेश में प्रवृत्त होना चाहिए |
- उच्च ग्रह शुभ फल ही देते हैं, नीच ग्रह अशुभ फल ही देते हैं, इसी प्रकार पापग्रह अशुभ फल ही देंगे, शुभ ग्रह केवल शुभ फल करेंगे, ऐसे दुराग्रह में **कभी नहीं** पड़ना चाहिए |
- वक्री-ग्रहों के बारे में फलादेश के लिए भले प्रकार से अभ्यास बनाना चाहिए,

उसके बाद ही फल कहना चाहिए | वैसे वक्री ग्रह अपनी दशा में रोग, चिन्ता, संकट, स्थानांतरण, भटकाव आदि फल अवश्य देते हैं यह प्रत्यक्ष अनुभवों से बहुधा सिद्ध है |

- बारहवें भाव में शनि हो तो पैर में बार बार चोट अवश्य लगती है |
- बुध के साथ दो या अधिक ग्रह जिस भाव या राशि में हों, उस अंग में तिल का निशान निश्चय ही होता है |
- कोई भी ग्रह लग्न कुंडली में जिस राशि में है, यदि वही ग्रह नवमांश कुंडली में भी उसी राशि में रहे तो वह वर्गोत्तमी कहलाता है| जैसे यदि मंगल लग्न कुंडली में मिथुन राशि में है और नवमांश कुंडली में भी मिथुन राशि में रहे तो मंगल को वर्गोत्तमी कहेंगे| वर्गोत्तमी ग्रह शुभ फल प्रदान करता है, विशेषकर वर्गोत्तमी गुरु बहुत शुभफल देता है | रुद्रभट्ट ने इनका उच्च जैसा फल बताया है| सत्याचार्य कहते है कि, ग्रह के वर्गोत्तमी रहने पर जातक अपने कुल में मुख्य (कुलगौरव) होता है |

|| शुभमस्तु ||

सदैव वक्रिणौ दैत्यौ सूर्येन्दू शीघ्रगौ यतः | सूर्यमुक्ता उदीयन्ते शीघ्राः खेटाः धने रवेः ||
तृतीये च समाः प्रोक्ताश्चतुर्थे मन्दगामिनः | भानोः खेटाः पञ्चमे च वक्राश्चाष्टमसप्तमे ||
अतिवक्राः स्मृताः धर्मे दशमे मार्गगामिनः | लाभे द्वादशके शीघ्रा यदा वक्री भवेद्ग्रहः ||
(ज्योतिष् तत्त्वप्रकाश)

राहु एवं केतु सदा वक्री रहते हैं, सूर्य एवं चन्द्रमा सदा शीघ्रगति (मार्गी) से चलने वाले होते हैं | जब ग्रह सूर्य से पृथक हो जाते हैं तब उनका उदय हो जाता है | सूर्य से दूसरे भाव में ग्रह शीघ्रगामी हो जाते हैं | सूर्य से तीसरे भाव में समगति वाले रहते हैं | सूर्य से चौथे भाव में ग्रहों की गति मन्द हो जाती है | सूर्य से सातवें एवं आठवें भाव में ग्रह वक्री हो जाते हैं और नवें स्थान में अतिवक्री हो जाते हैं | सूर्य से दसवें भाव में मार्गी होते हैं तथा ग्यारहवें एवं बारहवें भाव में शीघ्र गति वाले हो जाते हैं |

सौम्योऽतिसौम्यश्चोग्रोऽति पापः शीघ्रः स्वभाववत् | (ज्योतिष् तत्त्वप्रकाश)
सौम्य ग्रह वक्री होने पर अतिसौम्य हो जाते हैं| क्रूर ग्रह वक्री होने पर अतिक्रूर फल देते हैं| शीघ्रगतिक ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार ही फल प्रदान करते हैं |

आत्मा रविः शीतकरस्तु चेतः सत्वं धराजः शशिजोऽथ वाणी |
ज्ञानं सुखं चेन्द्रगुरुर्मदश्च शुक्रः शनिः कालनरस्य दुःखम् || (लघुजातकम्)
कालपुरुष की आत्मा सूर्य है, चन्द्रमा उसका मन है, मङ्गल उसका बल हैं तथा बुध उसकी वाणी है, उसका ज्ञान एवं सुख बृहस्पति है, शुक्र कामशक्ति हैं, एवं शनि दुःख है |
इस श्लोक का तात्पर्य यह है कि सूर्यादि ग्रहों से उक्त बातों का विचार जातक की कुण्डली से करना चाहिए |

सातवाँ दिन

आजीविका या अध्ययन हेतु ग्रहों के सम्बद्ध विषय

1. सूर्य से सम्बद्ध विषय-

ऊर्जा संसाधन, परमाणु संबंधी क्षेत्र, औषधि विज्ञान, अस्थि चिकित्सा, नेत्र चिकित्सा, मस्तिष्क चिकित्सा, पशु चिकित्सा, मनोविज्ञान, वनस्पति-शास्त्र, जीव-विज्ञान, वन्य-विज्ञान, जल-जन्तु विज्ञान, वस्त्र उद्योग, वस्त्र विन्यास (फेब्रिक डिज़ाइनिंग), सरकारी सेवा, पत्थर विशेषज्ञता, पर्वतारोहण, उच्च अधिकार देने वाले क्षेत्र तथा आकाशीय उपग्रह आदि |

2. चंद्रमा से सम्बद्ध विषय-

चिकित्सा विज्ञान (मनोरोग, वाक्-चिकित्सा, हृदय रोग, तंत्रिका विज्ञान आदि), अध्यापन, काव्य, गायन, स्त्री सम्बन्धी विषय या रोग, जलीय विषय, वाग्मिता, दंत–विशेषज्ञता, कृषि विज्ञान, औषधि निर्माण, विदेश सेवा, नृत्य, वाद्य, ललित कलाएं, अभिनय आदि |

3. मंगल से सम्बद्ध विषय-

प्रशासनिक क्षेत्र (नागरिक प्रशासन, सैन्य प्रशासन, वैधानिक प्रशासन), वकालत, विधिवेत्ता, भवन निर्माण, कृषि कर्म, खनिज विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, भूगोल, युद्धकौशल, क्रीड़ा, चिकित्सा (सर्जरी, कैंसर, रक्त-चाप, उदर-रोग, रति-रोग आदि), पशुपालन, वाहन विशेषज्ञता, शस्त्र निर्माण, पुलिस सेवा, आभूषण निर्माण, अश्वारोहण, वास्तुकला, स्थापत्य कला, प्राचीन कलाकृति विशेषज्ञता, भू-उत्खनन, इत्यादि |

4. बुध से सम्बद्ध विषय-

कवित्व, काव्यशास्त्र, व्यापार, पुस्तक लेखन, संशोधन, सम्पादन, विशेषज्ञता, चिकित्सा विज्ञान (धमनी, हृदय, छाती के रोग, त्वचा रोग, नपुंसकता आदि), गणित, बैंक, जीवन बीमा आदि के क्षेत्र, कोशरक्षा, लेखापरीक्षक (चार्टर्ड अकाउन्टेंट आदि), मुनीमगिरी, कर्मकाण्ड, ज्योतिष्, पौरोहित्य, टाइप, शॉर्टहैन्ड, नेतृत्व, भाषणकला, जनसम्पर्क अधिकारी, आभूषण विक्रय व निर्माण, हलवाई, होटल प्रबंध, पाककला, अभिनय, गायन, वाद्य, संगीत, नृत्य, तंत्र-मंत्र, अध्यापन, भक्ति, पुराण, व्याकरण, वेद, साहित्य, आदि |

5. बृहस्पति से सम्बद्ध विषय-

व्याकरण, वेद-वेदांग, अध्यापन, कुलपतित्व, तर्क, मीमांसा, न्याय, वेदान्त आदि

लगभग सभी प्राचीन शास्त्रीय विषय, भाषा विज्ञान, ज्योतिष्, राजमान्य कार्य, धर्मोपदेश, भाषाणकला, मंत्र प्रयोग, पूजा पाठ, काव्य शास्त्र, ऊंचे पदाधिकारी, शिक्षण संस्थाओं का प्रबंध, दंडाधिकारी, आयकर अधिकारी या आयकर संग्रहकर्ता आदि |

6. शुक्र से सम्बद्ध विषय-

वाक्चातुर्य, कवित्व, अभिनय, नृत्य, ललित-कलाएं, व्यापार, वस्त्र-निर्माण, वाटिका विज्ञान, चिकित्सा (रतिजन्य रोग, स्त्री रोग, बाल रोग आदि), व्यापार, लेखन, पुस्तक व्यवसाय, पत्र पत्रिका, पत्रकारिता, वाद्ययंत्र का निर्माण व विशेषज्ञता, विदूषकता, हास्य-व्यंग्य, गंधपूर्ण वस्तुओं का निर्माण व व्यापार, फैशन की वस्तुओं का निर्माण, तैराकी, पानी के अन्य खेल, गोताखोरी, समुद्र यात्राएं, मणि व्यापार, डाकघर, बैंक आदि का कार्य, छापाखाना, केशविन्यास आदि |

7. शनि से सम्बद्ध विषय-

कारीगरी, हस्तकला, दासकर्म, दौड़ना, लोहे के यंत्र, यंत्रनिर्माण, भट्ठियों का काम, ताप बिजली, प्लास्टिक उद्योग, रबर उद्योग, जूट-ऊन आदि के उद्योग, कालीन निर्माण, वस्त्र बुनने की छोटी मशीनें, ड्राइविंग, चिकित्सा (पादरोग, अस्थिरोग, हृदयरोग, वायुप्रकोप, कैंसर, टीबी तथा सभी संक्रामक रोग), शल्य चिकित्सा, पुस्तकालय विज्ञान, जिल्दसाजी, कागज उद्योग, भवन निर्माण सामग्री का निर्माण और व्यवसाय, ट्रांसपोर्ट, सामान का भेजना, कुली, सेवक, जेल के अधिकारी, शस्त्र निर्माण, शीशा, रांगा, एल्युमिनियम आदि विविध धातु की वस्तुओं का निर्माण, कंप्यूटर विज्ञान (हार्डवेयर का ज्ञान, इलेक्ट्रोनिक सामानों की मरम्मत), भैंस, बकरी, पशुपालन, मद्य निर्माण, शिकार, वन-जंतु रक्षा आदि |

8. राहु से सम्बद्ध विषय-

मनोविज्ञान, विविध भाषा, दलाली, लाटरी उद्योग, पदयात्रा, सर्प पालना या उनसे जीविका चलाना, जन्तु पालन, मांस विक्रय, कबाड़ी का कार्य, गणित, हिसाब-किताब की विद्या, मद्यनिर्माण व व्यवसाय, श्मशान रक्षक, अस्पतालों में मुर्दाघरों का अधिकारी, अवैदिक विशेषतया उर्दू, अरबी, फारसी, आदि भाषाएं, तंत्र-मंत्र, ज्योतिष्, जादुई कार्य, कंप्यूटर विज्ञान सम्बन्धी कार्य (ऐप डेवलपर, प्रोग्रामर, सॉफ्टवेर इंजनीयर, हैकर), बिजली के कार्य, शीशा उद्योग, विष सम्बन्धी कार्य, नवीन शोध, आधुनिक अस्त्र-शस्त्र का ज्ञान (मिसाइल, परमाणु हथियार, जैविक हथियार), भौतिक विकास सम्बन्धी चीजें तथा ठेकेदारी आदि |

9. केतु से सम्बद्ध विषय-

गणित, सन्यास , धर्मशास्त्र, मनोविज्ञान, चिकित्सा (क्षयरोग, मियादी बुखार, पशुओं के जहर की चिकित्सा, बेहोशी आदि), शिकार, पाषाणकला, सींगों वाले पशुओं का

व्यापार, दलाली, सम्पत्ति का आदान-प्रदान आदि |

ग्रहों के सम्बन्ध वाले रोग

सूर्य के रोग

सूर्य से अग्निभय, पेट में अम्ल-पित्तता, लू-लगना, धूप से उत्पन्न परेशानियां ,ज्वर, पाचन रोग, यक्ष्मा (टी.बी) या अन्य घातक शरीर नाशक रोग, दस्त लगना, कई रोगों का एक साथ आक्रमण आदि होते हैं | अथवा राजा, नौकर, देवता या ब्राह्मणों के कारण मन में परेशानी होती है |

चन्द्रमा के रोग

चन्द्रमा से पीलिया, पानी से उत्पन्न रोग, तथा हैजा आदि रोग हो सकते हैं | साथ ही सर्दी जुकाम, सायनस की समस्या, एलर्जी, स्त्री संसर्ग से उत्पन्न रोग, महाकाली साधना जनित पीड़ा या राक्षस आदि से कष्ट होता है |

मंगल के रोग

मंगल से अंडकोष के दोष ,कफ दोष ,शस्त्र की चोट, अग्निभय या सूर्य सन्दर्भ में प्रोक्त अग्निदोष, शरीर के भीतर अनपेक्षित वृद्धि (रसौली, ट्यूमर आदि), घाव, गरीबी की परेशानियां, कुपोषण तथा शिवजी के गणों या हनुमानजी, एवं भैरव आदि से सम्बन्धित पीड़ा होती है |

बुध के रोग

बुध से गुप्तांगों में परेशानी, पेट में कष्ट, भीतरी वात रोग, नसों या मांसपेशियों की परेशानी, त्वचा विकार, कुष्ठ, कमजोर पाचन, हृदयशूल, उदरशूल, सिर में शूल संग्रहणी आदि रोग तथा विद्वानों, हिसाब–किताब करने वालों या विष्णुभक्तों आदि के कारण मानसिक कष्ट प्राप्त होता है |

गुरु के रोग

बृहस्पति से देव-गुरु-ब्राह्मण आदि के शाप से पीड़ा, भीतरी टयूमर आदि से या भीतरी सूजन से पीड़ा व शोक अथवा पित्त से कष्ट या लीवर, प्लीहा, तिल्ली सम्बन्धी रोगों से कष्ट प्राप्त होता है |

शुक्र के रोग

शुक्र से स्त्रीजनित रोग, भौतिक सुख-साधन सम्बन्धी कष्ट, प्रमेह रोग या परिजनों के कारण, प्रिया स्त्री के कारण अथवा देवताओं आदि से पीड़ा होती है |

शनि के रोग

शनि से दरिद्रता या अपमान से कष्ट, अपने कार्यों में त्रुटियों के परिणाम से पीड़ा,

पिशाच, चोर, डकैत आदि से कष्ट व जोड़ो में पीड़ा होती है |

राहु के रोग

राहु से मिर्गी, खसरा, हथकड़ी या रस्सी आदि से बंधन, जेल या मुकदमा आदि से कष्ट, भूख की पीड़ा, कीटाणु संक्रमण, प्रेत पिशाच आदि से पीड़ा, फाँसी लगना, अरुचि, कुष्ठरोग आदि से विशेष पीड़ा होती है |

केतु के रोग

केतु से खुजली, खसरा, शत्रु पीड़ा, अपने दुष्कर्मो से पीड़ा, या आचारहीन क्षुद्र जातियों से पीड़ा होती है |

ग्रहों का कारकत्व

सूर्य का कारकत्व - सूर्य से आत्मा, शरीर, आत्मबल, उच्च विचार, पिता, अपना प्रभाव (शौर्य), दबंगपन, पराक्रम, निरोगता, प्रभाव-शक्ति (रुतबा) एवं लक्ष्मी शोभा (श्री) का विचार करना चाहिए |

चन्द्रमा का कारकत्व - चन्द्र से चित्त, मन, बुद्धि, राजा की प्रसन्नता, माता और सम्पत्ति का विचार करना चाहिए |

मंगल का कारकत्व - मंगल से सत्व, धैर्य, मानसिक संतुलन, रोग, गुण, छोटे भाई-बहन, पृथ्वी, भूमि, पुत्र, ज्ञाति (बिरादरी कुनबा, दीर्घतर सम्बन्ध वाले परिवार जन) का विचार करना चाहिए |

बुध का कारकत्व - बुध से विद्या, बन्धु -बान्धव (रिश्तेदार), विवेक, बुद्धि, मामा, मित्र, त्वचा और कार्य कुशलता का विचार करना चाहिए |

गुरु का कारकत्व - गुरु से बुद्धि, धन, समृद्धि, शरीर की पुष्टि, राजनीतिक भविष्य, गौरव, कीर्ति, पुत्र व ज्ञान आदि का विचार करना चाहिए |

शुक्र का कारकत्व - शुक्र से पत्नी, वाहन, आभूषण, काम-क्रीडा तथा लौकिक सुख का विचार करना चाहिए |

शनि का कारकत्व - शनि से आयु, जीवन, मृत्यु का कारण, विपत्ति, विपत्तियों का अभाव, स्वाभिमान, गरीब, निम्न या मध्यम वर्गीय लोगों के समर्थन एवं प्रतिष्ठा आदि का विचार करना चाहिए |

राहु-केतु का कारकत्व - राहु से दादा, अचानक आने वाली विपत्ति, बाहुबल, अभिचार आदि प्रयोग एवं केतु से नाना-नानी, तीर्थाटन, कुल की उन्नति, मोक्ष आदि का विचार करना चाहिए |

|| शुभमस्तु ||

आठवां दिन

राशिशील

यह हमारा दूसरा सबसे महत्वपूर्ण अध्याय है, सभी ग्रहों या भावों के फल का मुख्य आधार 12 राशियाँ ही होती हैं | अतः राशियों के गुण, दोष, प्रकृति आदि को ठीक से समझना और कंठस्थ कर लेना परम आवश्यक है |

राशियों का गणितीय स्वरूप

राशि का अर्थ होता है समूह ! किसका समूह ? नक्षत्रों का समूह | 27 नक्षत्रों के समूह से ही 12 राशियां बनती हैं, राशि कोई अलग पदार्थ नहीं है बल्कि एक निश्चित नक्षत्रों का समूह ही राशियां कहलाती हैं अर्थात् 27 नक्षत्र ही 12 राशियां हैं |

आईये, इसको समझते हैं -
एक नक्षत्र में 4 चरण तो 27 नक्षत्रों में कितने चरण ?
27 × 4 = 108 चरण

∵ 12 राशि = 27 नक्षत्र

⇨ 12 राशि = 108 नक्षत्र चरण ; तो, 1 राशि में कितने नक्षत्र चरण ?

∴ 1 राशि = 108(नक्षत्र चरण) ÷ 12(राशि) = 9 नक्षत्र चरण

⇨ 1 राशि = 2.25 नक्षत्र (∵ 1 नक्षत्र = 4 चरण, ∴ 9÷4=2.25)

12 राशियाँ क्रान्तिवृत्त के गोलाकार पथ में ही हैं, और गोल का कोणीय मान 360° होता है |

अतः 360° ÷ 12 = 30°

∴ 1 राशि का मान = 30° |

राशियों के स्वामी, लिंग, स्वभाव, प्रकृति एवं दिशा

राशि	राशिस्वामी	पु./स्त्री.	क्रूर/सौम्य	स्वभाव	दिशा	सम/विषम
मेष	मंगल	पु.	क्रूर	चर	पूर्व	विषम
वृष	शुक्र	स्त्री.	सौम्य	स्थिर	दक्षिण	सम
मिथुन	बुध	पु.	क्रूर	द्विस्वभाव	पश्चिम	विषम
कर्क	चन्द्र	स्त्री.	सौम्य	चर	उत्तर	सम
सिंह	सूर्य	पु.	क्रूर	स्थिर	पूर्व	विषम
कन्या	बुध	स्त्री.	सौम्य	द्विस्वभाव	दक्षिण	सम
तुला	शुक्र	पु.	क्रूर	चर	पश्चिम	विषम
वृश्चिक	मंगल	स्त्री.	सौम्य	स्थिर	उत्तर	सम

धनु	गुरु	पु.	क्रूर	द्विस्वभाव	पूर्व	विषम
मकर	शनि	स्त्री.	सौम्य	चर	दक्षिण	सम
कुम्भ	शनि	पु.	क्रूर	स्थिर	पश्चिम	विषम
मीन	गुरु	स्त्री.	सौम्य	द्विस्वभाव	उत्तर	सम

राशियों के आकार

क्र. सं.	**राशि**	**आकार**
1	मेष	भेड़ की सींग
2	वृष	बैल की मुखाकृति
3	मिथुन	आलिंगनबद्ध दम्पति
4	कर्क	केकड़ा
5	सिंह	शेर की पूंछ
6	कन्या	स्त्री,जिसके हाथो में अन्न है
7	तुला	तराजू लिए पुरुष
8	वृश्चिक	बिच्छू
9	धनु	कमर से ऊपर धनुर्धर, कमर से नीचे घोड़ा
10	मकर	हिरण के समान मुख वाला मगरमच्छ
11	कुम्भ	घड़े से जल गिराता हुआ पुरुष
12	मीन	मछली का जोड़ा

पृष्ठोदयादि संज्ञा

शीर्षोदय राशि	**पृष्ठोदय राशि**	**उभयोदय राशि**
मिथुन	मेष	मीन
सिंह	वृष	-
कन्या	कर्क	-
तुला	धनु	-
वृश्चिक	मकर	-
कुम्भ	-	-

राशियों के पर्यायवाची नाम

क्रिय – मेष
ताबुरि – वृष
जितुम – मिथुन
कुलीर – कर्क
लेय – सिंह
पाथोन – कन्या
जूक – तुला
कौर्पि – वृश्चिक
तौक्षिक – धनु
आकोकेर – मकर
हृद्रोग – कुम्भ
अन्त्य – मीन

राशियों की द्विपदादि संज्ञा

द्विपद	कीट	जलचर	चतुष्पद
1. मिथुन 2. कन्या 3. तुला 4. कुम्भ 5. धनु का पूर्वार्द्ध	वृश्चिक	1. कर्क 2. मीन 3. मकर का उत्तरार्द्ध	1. मेष 2. वृष 3. सिंह 4. धनु का उत्तरार्द्ध 5. मकर का पूर्वार्द्ध

राशियों के रंग, कद, तत्व व निवास-स्थान

क्र. सं.	राशि	रंग	कद	निवास-स्थान	तत्व
1.	मेष	लाल	छोटा	जंगल	अग्नि
2.	वृष	सफेद	छोटा	खेत या मैदान	पृथ्वी
3.	मिथुन	तोते के समान हरा	मध्यम	गाँव तथा शयनकक्ष	आकाश
4.	कर्क	पाटल (मेहरून)	मध्यम	तालाब, झील	जल
5.	सिंह	धूम्रपांडु (स्लेटी)	लम्बा	पर्वत व गुफा	अग्नि
6.	कन्या	रंग – बिरंगा	लम्बा	हरियाली	पृथ्वी
7.	तुला	काला सुनहरी	लम्बा	बाजार	आकाश
8.	वृश्चिक	सोने सा पीला	लम्बा	बिल	जल
9.	धनु	पिंगल	मध्यम	रणभूमि	अग्नि
10.	मकर	चितकबरा	मध्यम	जलीय वनक्षेत्र	पृथ्वी
11.	कुम्भ	भूरा (बभ्रु)	छोटा	मिट्टी वाले क्षेत्र	आकाश
12.	मीन	मछली की तरह चमकीला	मध्यम	जल	जल

यदि लग्न के नवमांश के आधार पर कद जानना हो तो मेष, वृष, सिंह एवं मकर राशि-नवमांशों को लम्बा कद, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु, कुम्भ एवं मीन को मध्यम कद तथा वृश्चिक को छोटा कद कल्पित करें |

द्वादशमण्डलभगणस्तस्यार्द्धे सिंहतो रविर्नाथः |
कर्कटकात् प्रतिलोमं शशी तथान्येऽपि तत्स्थानात् ||
भानोरर्द्धे विहगैः शूरास्तेजस्विनश्च साहसिकाः |
शशिनो मृदवः सौम्याः सौभाग्ययुताः प्रजायन्ते || (सारावली)
बारह राशियों के चक्र में सिंह से मकर राशि तक के चक्रार्ध के स्वामी सूर्य हैं तथा कुम्भ से कर्क राशि तक के चक्रार्ध के स्वामी चन्द्रमा हैं | जन्मकुंडली में सूर्य के चक्रार्ध में अधिक ग्रह हों तो मनुष्य शूरवीर, तेजस्वी एवं साहसी होते हैं | चन्द्रमा के भगणार्ध में अधिक ग्रह रहने से जातक सौम्य एवं सरल स्वभाव वाले, सौभाग्यशाली, सरलता से सब काम सम्पादित करने वाले होते हैं |

- इस सूत्र से व्यक्तित्व की मौलिक विशेषता का आधारभूत-तत्व जानकर व्यक्तित्व विश्लेषण किया जा सकता है जो अधिकतर सटीक रहता है |

मित्रारिगेहो पगतैर्न भोगैस्ततस्तदर्थः परिकल्पनीयः |
तुङ्गे पतङ्गे स्वगृहे त्रिकोणे स्यादर्थसिद्धिर्निजबाहुवीर्यात् || (जातकाभरण)

मित्रगृह में स्थित ग्रह मित्रों से तथा शत्रुगृह में स्थित ग्रह शत्रुओं से धनलाभ कराते हैं | जो ग्रह उच्च में, मूलत्रिकोण में अथवा स्वस्थान में हों, वे जातक को (अपने कारकानुसार) बाहुबल से ही अर्थ की सिद्धि (धनागम) कराते हैं |

कालपुरुष अंगविभाग

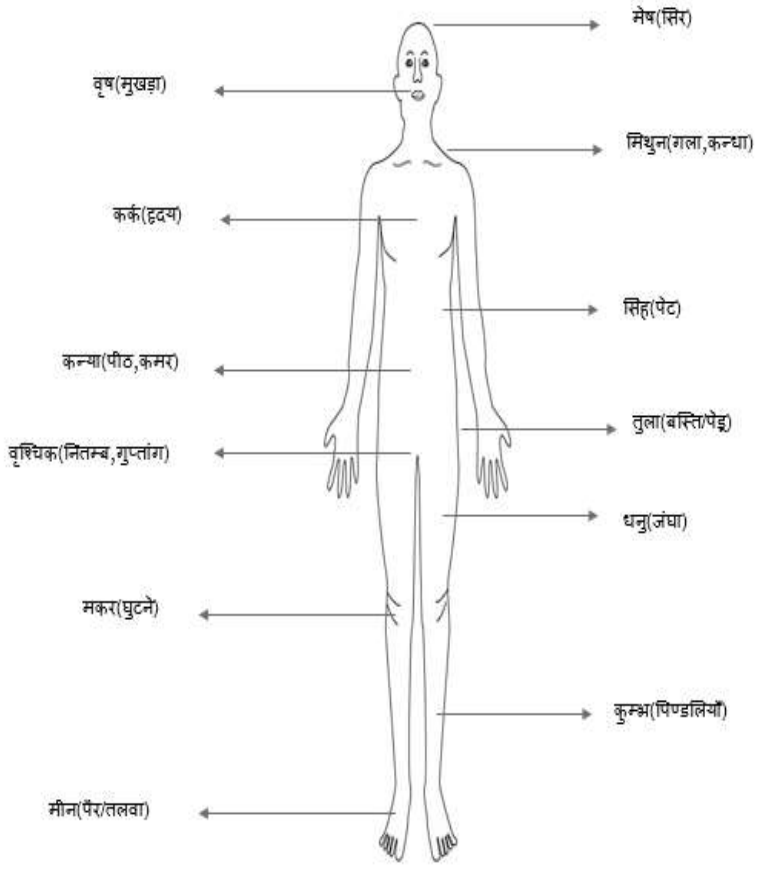
मेष(सिर)
वृष(मुखड़ा)
मिथुन(गला,कन्धा)
कर्क(हृदय)
सिंह(पेट)
कन्या(पीठ,कमर)
तुला(बस्ति/पेडू)
वृश्चिक(नितम्ब,गुप्तांग)
धनु(जंघा)
मकर(घुटने)
कुम्भ(पिण्डलियाँ)
मीन(पैर/तलवा)

नवां दिन

चन्द्रमा का राशिफल

चन्द्रमा की राशि ही जन्मराशि कहलाती है, जन्मराशि का फलादेश में बहुत महत्त्व होता है, अतः चन्द्रराशि का विस्तृत फल प्रस्तुत किया जा रहा है, योग्य ज्योतिषी बनने के लिए इस राशिफल को बार बार पढ़कर स्मरण कर लेना चाहिए और सदैव ध्यान में रखना चाहिए | चन्द्रमा के बली होने पर ही अन्य ग्रह बली समझे जाते हैं, कोई भी ग्रह चन्द्रमा के विपरीत फल नहीं कर पाते, इसी से ज्ञात होता है कि चन्द्रमा के राशिफल का कितना महत्त्व है | इसके उपरान्त अन्य ग्रहों का संक्षिप्त राशिफल प्रस्तुत करेंगे |

1. मेष राशि के चंद्रमा का फल -

मेष राशि का चंद्रमा हो तो जातक की रक्त वर्ण की गोल आँखें होती हैं | गरम गरम शाक भाजी एवं भोजन करने का स्वभाव होता है | शीघ्र प्रसन्नता हो जाती है | यात्रा-प्रिय, कामी, दुर्बल घुटनों वाला, चल-सम्पत्ति और युद्ध-प्रिय, स्त्रियों का प्रिय होते हुए सेवा कार्य में पटु, अभद्र नाखून युक्त, शिर में व्रण-घाव आदि चिह्न, ज्ञान सम्पन्न, सहोदर भाइयों में सबसे बड़ा (या सबसे अधिक कर्तव्य निभाने वाला), हाथ में शक्ति का चिन्ह, चंचल स्वभाव का होते हुए जल से भयभीत भी रहता है |

2. वृष राशि के चंद्रमा का फल :-

वृष राशि का चंद्रमा हो तो जातक विशाल मुखमंडल व दर्शनीय रूपवाला, सविलास, गमन-प्रिय, मुख-पीठ व पार्श्व आदि में तिल-मशकादि शुभ चिह्न वाला, दान-प्रिय, कटु, सहिष्णु, समृद्ध, ऊंचे कंधे, कन्या-संतान युक्त, कफ प्रकृति, बन्धु एवं धन सन्तान से हीन, भाग्यवान्, क्षमाशील, प्रबल जठराग्नि से युक्त, स्त्री समाज का प्रिय, स्थिर मैत्री वाला तथा युवा व वृद्धावस्था में सुखी होता है |

3. मिथुन राशि के चंद्रमा का फल :-

मिथुन राशि का चंद्रमा हो तो जातक कामशास्त्र में कुशल, शास्त्रवेत्ता, दूत कर्म करने वाला, घुँघराले बालों एवं तीक्ष्ण- बुद्धि से युक्त, समाज के लिए विनीत, अन्य लोगों के मनोगत भावों को आँकने में समर्थ, सुन्दर शरीर, बहु-भोजन प्रिय, नृत्य-गीत प्रिय, और उन्नत नासिका से युक्त होता है |

4. <u>कर्क राशि के चंद्रमा का फल :-</u>

कर्क राशि का चंद्रमा हो तो जातक तेज गति से चलने वाला, ऊंची-कमर, वशीभूत स्त्री, मित्र व सम्पत्ति से युक्त, ज्यौतिषशास्त्र का पण्डित, अनेक भवनों का निर्माता, चंद्रमा के क्षय और कलावृद्धि की तरह कभी उन्नति तो कभी अवनति पाने वाला, शरीर से नाटा होते हुए गरदन से स्थूल, स्नेहाभिभूत होकर ही वश में आने वाला, मित्रों का आदर करने वाला, जलाशयों, उद्यानों एवं बाग बगीचों में रुचि रखने वाले स्वभाव का होता है |

5. <u>सिंह राशि के चंद्रमा का फल :-</u>

सिंह राशि का चंद्रमा हो तो जातक तेजस्वी, रोष भरे स्वभाव वाला, बड़े मुखमंडल-कपोल व आँखों वाला, अल्प पुत्र युक्त, स्त्री-द्वेषी, मांस-पर्वत-वन में रुचि रखने वाला, अकारण ही क्रोध से युक्त रहने वाला, तृषा, क्षुधा, उदर रोग एवं मानसिक रोग से पीड़ित, दान-प्रिय, अभिमान से युक्त तथा मातृ पितृ भक्ति से सम्पन्न होता है |

6. <u>कन्या राशि के चंद्रमा का फल :-</u>

कन्या राशि का चंद्रमा हो तो जातक लज्जा तथा आलस्य से युक्त, सुन्दर दृष्टि वाला, यात्राशील, शिथिल बाहु और कंधों से युक्त, सुखी, कोमल शरीर वाला, सत्यवक्ता, कला व विद्या निपुण, शास्त्रतत्त्वार्थज्ञाता, धर्माचरण में रत, बुद्धि सम्पन्न, स्त्रीरति प्रिय, अन्य लोगों के धन और घर से युक्त , प्रवास अथवा विदेश प्रिय, प्रियवचन वक्ता, अधिक संख्यक कन्या एवं अल्प संख्यक पुत्र संतान सम्पन्न होता है |

7. <u>तुला राशि के चंद्रमा का फल :-</u>

तुला राशि का चंद्रमा हो तो जातक देव, ब्राह्मण तथा संत समाज की सेवा में रत, स्त्री के वशीभूत, सुगंधित शरीर वाला, ऊंची नासिका तथा दुर्बल व शिथिल अंगों से युक्त, भ्रमण-प्रिय, धनवान, अंगहीन, क्रय विक्रय में चतुर, रुग्ण शरीर वाला होता है | यह जातक अपने संबंधी जनों का उपकार करते हुए अपने ही संबंधित पारिवारिकों से अपमानित भी होता है |

8. <u>वृश्चिक राशि के चंद्रमा का फल :-</u>

वृश्चिक राशि का चंद्रमा हो तो जातक के नेत्र और वक्ष:स्थल विशाल होते हैं, जंघा एवं जानुभाग गोल होते हैं | वह मातृ-पितृ-गुरु से रहित, बाल्य जीवन में रोगी, राजवंशों से पूज्य, वर्ण से कपिल, स्वभाव से कुटिल होता है | उसके हाथ या पैर में मत्स्य के चिन्ह होते हैं, वह वज्र और पक्षी के आकार की रेखाओं का हाथ होते हुए भी गुप्त रूप से पापाचरण करने वाला होता है |

9. <u>धनु राशि के चंद्रमा का फल :-</u>

धनु राशि का चंद्रमा हो तो जातक लम्बे मुख एवं गले वाला, कान, ओष्ठ और दांतों में स्थूलता, पैतृक धन सम्पन्न, दान-प्रिय, काव्य रचना में कुशल, बलशाली, अच्छा वक्ता, कार्यकुशल, सुशील, चित्रकलादि का ज्ञाता, प्रगल्भ, धर्मज्ञ, बन्धुद्वेषी और सद्भाव के वशीभूत होता है |

10. <u>मकर राशि के चंद्रमा का फल :-</u>

मकर राशि का चंद्रमा हो तो जातक नित्य ही अपनी स्त्री, संतान तथा परिवार के पोषण में संलग्न, धर्माचरण में आडंबरकर्ता, नेत्रों में सौन्दर्य, कमर का आकार क्षीण, वचन का परिपालक, आलसी, भाग्यशाली, शीत से भयभीत, यात्राप्रिय, बलवान, काव्य शास्त्र का रचयिता, स्वभाव से लोभी, अगम्या गमन करने वाला, वृद्ध स्त्री का प्रेमी, निर्लज्ज और निर्दयी होता है |

11. <u>कुम्भ राशि के चंद्रमा का फल :-</u>

कुम्भ राशि का चंद्रमा हो तो जातक ऊंट के सदृश पतले और लम्बे गर्दन वाला होता है | उसका शरीर ऐसा होता है जिसमे नसें दिखाई देती हैं और वह चर्म आदि किसी रूखे रोग आदि से युक्त होता है | उसके पैर लंबे होते हैं, वह मूर्खतापूर्ण व्यवहार करता है तथा परस्त्री में रत रहता है | उसके जीवन में धन सम्पत्ति के ह्रास एवं वृद्धि का क्रम चलता रहता है | वह मित्रों का प्रेमी और यात्रा प्रिय होता है |

12. <u>मीन राशि के चंद्रमा का फल :-</u>

मीन राशि का चंद्रमा हो तो जातक मोती, शंख, रत्न आदि समुद्री धन का उपयोग करता है | वह दूसरों के धन का उपभोग करने वाला, स्त्री एवं वस्त्रों का अनुरागी, मध्यम कद का शरीर, उद्दण्ड स्वभाव, बडा मस्तक, लंबी नाक, शत्रुजेता, भूमिगत निधि का उपभोगी होते हुए शास्त्रज्ञ होता है | ऐसे जातक की समझ (विवेक) कम होती है और ये अनायास ही अर्थ-लाभ या अर्थ-हानि प्राप्त करते हैं |

जन्मनक्षत्र फल

1. **अश्विनी**- अश्वनी नक्षत्र में जन्म होने से जातक धनी, हंसमुख, सुंदर, बुद्धिमान, अच्छी पोशाक तथा आभूषण पहनने के शौक़ीन, जनप्रिय और गठीले शरीर वाले होंगे| ऐसे जातक प्रत्येक कार्य में चतुर, परोपकारी, यशस्वी, वाहन एवं नौकर से युक्त होकर उनका सुख प्राप्त करेंगे| इनका भाग्योदय 20 वर्ष बाद होगा तथा ये यशस्वी, ऐश्वर्य-संपन्न, विनम्र, स्पष्ट-वक्ता और अस्थिर चरित्र वाले रहेंगे | इनमें स्वार्थ प्रवृत्ति की अधिकता रह सकती है|

2. भरणी- भरणी नक्षत्र में जन्म होने से जातक सत्यवादी होंगे, उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, बीमार कम रहेंगे, सदा सन्मार्ग पर चलेंगे| सुखी स्त्रियों में आसक्ति रहेगी, अस्थिर मनोवृत्ति तथा अस्थिर विचार होगा| विदेश गमन की इच्छा होगी| ऐसे जातक दीर्घायु होंगे तथा अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे| नक्षत्र में अशुभ प्रभाव रहने पर चोट लगकर अंग-भंग होने की संभावना रहती है | ये कम बोलने वाले, क्रूर तथा कृतघ्न होंगे, नीच कर्मों में रति बढ़ेगी| नक्षत्र ज्योतिष् के अनुसार इनका भाग्योदय आयु के 25 वर्ष पूर्ण होने के बाद होगा|

3. कृत्तिका- कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाले कामी, चरित्रहीन, कंजूस और कृतघ्न होंगे| अपने मित्रों एवं सम्बन्धियों से अच्छा संबंध नहीं रख पायेंगे | किन्तु, जिस कार्य में संलग्न होंगे, उसे पूरा करके ही मानेंगे| ये अच्छे भोजन आदि के शौक़ीन होंगे, साथ ही स्त्रियों से मित्रता बढाने में सिद्धहस्त भी होंगे| ये अपनी रुचि के किसी विशेष विषय में पूर्णतः दक्ष होंगे| स्वेच्छानुसार कार्य करने वाले, बुद्धिमान, लोभी, तेजस्वी, आशावादी, आकर्षक बाह्य व्यक्तित्व से सम्पन्न, विद्वान तथा देखने में भव्य होंगे | आप मुकदमेबाजी में रूचि रखने वाले, कानून के विशेष जानकार तथा चालाक व्यक्ति होंगे| आपका भाग्योदय जन्म के 29 वर्ष बाद होगा|

4. रोहिणी- रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाले सुंदर, आकर्षक व्यक्तित्व, सत्य एवं मधुरभाषी, जनप्रिय, कार्यपटु, कलाकार, सांसारिक कार्यबुद्धि से संपन्न तथा दृढ प्रतिज्ञ होंगे | ऐसे जातक वाहन निर्माण, भागदौड़ वाले कार्य, खेल-कूद आदि प्रतियोगिता वाले कार्य, प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षा तथा निर्माणात्मक कार्यों में विशेष रुचि रखते हैं | इनमें उन्नति करने और जीवनस्तर को ऊँचा रखने की विशेष ललक होती है | मामापक्ष से कम तालमेल, रोमांस एवं आधुनिक कपड़ों का शौक, कोमल वचन, महत्वाकांक्षाएं, कार्यकुशल, दुनियादारी के तौर तरीकों में निपुण, घर में खुशहाली के लिये प्रयत्नशील रहते हैं | ऐसे जातक इन्द्रियों को नियंत्रण में रखने वाले, धनी, धीरज

रखने वाले, मस्तानी चाल, सारगर्भित वाणी से युक्त, मन से कोमल, शब्दों के खिलाडी तथा कृषि या पशुपालन आदि कार्यों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष जुडाव रखने वाले होते हैं | इनका भाग्योदय 30 वर्ष की अवस्था के पश्चात् होगा | भगवान् श्रीकृष्ण एवं भीमसेन का जन्म रोहिणी नक्षत्र में हुआ था |

5. मृगशिरा- मृगशिरा नक्षत्र में जन्म होने से आप स्वाभिमानी स्वभाव वाले, स्त्रियों से मित्रता रखने वाले, तीव्र गति से चलने वाले जातक होंगे| कुछ लोग आपके गंभीर स्वभाव के कारण आपको घमंडी कह सकते हैं| आप छोटी छोटी बात पर बिगड़ने वाले, क्रोधी,और चालाक स्वभाव के होंगे लेकिन अपना काम निकालने में निपुण भी होंगे | आप लड़ाई झगडे से दूर रहना पसंद करेंगे किन्तु जहाँ सत्य और न्याय की बात होगी वहाँ आप बिना भय के, युद्ध का सहर्ष सामना करेंगे| प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान देना आपको स्वीकार्य नहीं होगा| जो सम्मान के योग्य हैं ऐसे चयनित व्यक्ति ही आपसे सम्मान पा सकते हैं| आप विवेकशील, यात्रा में रूचि रखने वाले, धन संतान व मित्रों से युक्त, विद्वान होते हुए भी चंचल प्रवृत्ति वाले होंगे| आपके अन्दर अभिमान की मात्रा विशेष रहेगी | आप अपने आत्मसम्मान के लिए कुछ भी कर गुजरने को तत्पर रहेंगे | आपका भाग्योदय आयु के 28 वर्ष पश्चात् होगा|

6. आर्द्रा- आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले नम्र स्वभाव, मजबूत हृदय, कष्ट से नहीं घबराने वाले, खर्चीले स्वभाव वाले, अन्नादि का भी संग्रह न करने वाले तथा धन दौलत के सुख से वंचित रहेंगे | आपको अच्छे कामों में रूचि होगी किन्तु आप विचलित मन मस्तिष्क वाले, बलवान्, क्षुद्र अथवा ओछे विचार से युक्त, कम शिक्षित, आडम्बरी, धार्मिक कार्यों में व्यर्थ प्रदर्शन करने वाले स्वभाव के होंगे | संभवतः फोरमैन, इंजिनीयर इत्यादि से सम्बन्धित आजीविका हो सकती है | आपका भाग्योदय 25 वर्ष के बाद होगा |

7. पुनर्वसु- पुनर्वसु नक्षत्र में जन्म लेने से आप बुद्धिमान्, शीतल स्वभाव, बहुत मित्रों वाले, सन्तान सुख से युक्त, श्वेत वस्तुओं में रुचि रखने वाले, बहुत यात्रा करने वाले व्यक्ति होंगे| आप काव्य प्रेमी माता-पिता के भक्त, आनन्दमय जीवनयापन करने वाले, अपने कार्यों मे प्रसिद्धि प्राप्त करने वाले तथा परोपकारी होते हुए भी स्वार्थ में कमी नहीं आने देने वाले व्यक्ति होंगे| आप खूब पानी पीने वाले, अहंकारी, दुष्टप्रकृति और परिजन को दुःख एवं कष्ट देने वाले होंगे| आपका भाग्योदय 24 वर्ष के पश्चात् होगा |

8. पुष्य- पुष्य नक्षत्र में जन्म होने से जातक बुद्धिमान, सुशील, होशियार व धर्म में आस्था रखने वाले होंगे| आप स्वभाव से कामी, अन्य व्यक्तियों के कार्य को संवारने का प्रयत्न करने वाले, जो मिले उसमें सन्तुष्ट रहने वाले, दूसरों की बात शीघ्र समझने वाले, चतुर, कार्य-दक्ष, सुन्दर, मेधावी, सत्यवादी, कुटुम्ब-प्रेमी, विशाल हृदय तथा

ईश्वर-भक्त होंगे, आपको राज्य-पक्ष से सम्मानित भी किया जाएगा| आप वाक्पटु, कार्यकुशल, देव-गुरु-अतिथि से प्रेम रखने वाले, दृढ़व्रती तथा करुणापूर्ण मन वाले होंगे| आप प्रशासनिक कार्यों में दक्ष तथा वस्त्राभूषण, नौकर एवं वाहन से युक्त रहेंगे| आपका भाग्योदय आयु के 35 वर्ष पश्चात् होगा |

9. श्लेषा- अश्लेषा नक्षत्र में जन्म होने से आप शुभ कर्म करने वाले लोगों के सद्गुणों की नकल करने वाले होंगे| आपका कुटुंब बड़ा होगा, आप साधु-संतों की सेवा करेंगे| इसके अतिरिक्त सदैव अपनी अकड में रहने वाले, अपनी योग्यता के सामने किसी को भी महत्व नहीं देने वाले होंगे | सदैव अपना लाभ सोचने वाले, किन्तु हानि की परवाह नहीं करने वाले होंगे| आपका अपने सम्बन्धियों से कटु सम्बन्ध होगा, तामसिक भोजन आदि में आपकी अधिक रुचि रहेगी| आपके अन्दर कुछ दुर्गुण भी होंगे जैसे झूठ बोलना, कृतघ्न, धूर्त, अत्यंत क्रोधी, दुराचारी आदि| इन दुर्गुणों से बचने के लिए स्वप्रज्ञा एवं विवेक का प्रयोग करना चाहिए| अश्लेषा नक्षत्र के प्रभाव से आप शत्रु के ऊपर विजयी होंगे, औषधि के व्यापार से लाभ प्राप्त करेंगे, आपका भाग्योदय 30 वर्ष पश्चात् होगा|

10. मघा- मघा नक्षत्र में जन्म लेने वाले घमण्डी स्वभाव के किन्तु पुण्यकर्मों में रत रहने वाले, स्वाभिमानी, धनी और स्त्री के वश में रहने वाले होते हैं| ये जातक माता-पिता के भक्त, स्पष्टवादी, समाजसेवी, श्रेष्ठ बुद्धि वाले तथा शत्रुओं का नाश करने वाले होते हैं| ये लोग अपनी परम्परा को जीवित रखते हैं, आजीविका के निमित्त विश्वविद्यालयों, सामाजिक संस्थानों आदि में कार्य करते हैं | ये प्रसन्नचित्त, चतुर, व्यवहार कुशल, व्यापार करें तो व्यापार में लाभ कमाने वाले तथा अत्यंत साहसी होते हैं| इनका स्वास्थ्य निर्बल रहता है, किन्तु ये परिश्रमी होते हैं | ये लोग अपने अहं-पूर्ति के लिए कुछ भी करने वाले तथा किसी भी बात की जड़ तक पहुँचने की क्षमता रखने वाले होते हैं| इनका भाग्योदय आयु के 25 वर्ष के बाद होता है |

11. पूर्वाफाल्गुनी- पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म होने से आप शत्रु-विजयी, चतुर, प्रत्येक कार्य में निपुण, मृदुभाषी, प्रसन्नचित्त और बड़े लोगों से सम्बन्ध रखने वाले होंगे | आप स्त्रियों के लिये आकर्षक, विद्वान्, किसी सरकारी काम से सम्बन्ध रखने वाले एवं राजकीय सम्मान पाने वाले होंगे | आप यात्राओं के शौक़ीन एवं दानी प्रवृत्ति के होंगे | आप वस्त्राभूषणों से युक्त, वाहनों के प्रति रुचि रखने वाले, धनवान् एवं सन्तान से युक्त होंगे | आपको नृत्य, संगीत आदि कलाओं से बहुत प्रेम होगा | आप हास्य विनोद एवं चाटुकारिता (चापलूसी) करने में निपुण होंगे | अपने अच्छे तथा सरल स्वभाव के कारण आपके बहुत मित्र होंगे, साथ ही आप सुंदर सुगठित शरीर वाले, उग्र स्वभाव वाले, नेतृत्व प्रधान जीवन जीने वाले जातक होंगे | आपका भाग्योदय 28-32 वर्ष के बीच में होगा |

12. उत्तराफाल्गुनी- उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म होने से आप धनी, विलासी एवं पहलवानी का शौक रखने वाले होंगे | साथ ही आप कुशाग्र बुद्धि वाले, मृदुभाषी एवं सत्य बोलने वाले होंगे | आप दूसरों का कार्य पूरे मनोयोग से करने वाले, अधिक संतान वाले होंगे | आप अपने परिश्रम के बल पर धनी बनेंगे, आपको दाम्पत्य जीवन का सुख कम होने से, पत्नी से मनमुटाव एवं घर में क्लेश से चिन्तित रहना पड़ सकता है| गृहस्थ जीवन में आपका भाग्योदय 30-32 वर्ष की उम्र में होगा |

13. हस्त- हस्त नक्षत्र में जन्म होने से आप अपने समाज में या क्षेत्र में मुखिया बन सकते हैं | आप विरोधियों से बिना भयभीत हुए उनका सामना करेंगे तथा प्रपञ्च से युक्त होंगे| परिस्थितिवश भाई बन्धुओं से दूरी रहेगी | आपको अस्थिर प्रकृति, क्रोधी स्वभाव व कुसंग के कारण कलंक का सामना करना पड़ सकता है | आप भाग्यशाली, सम्मानित व सुखी होंगे| आप स्वभाव से निर्दयी प्रकृति के होंगे | आपका भाग्योदय 30-32 वर्ष की आयु में होगा |

14. चित्रा- चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाला साहसी, धनवान्, दानी, सुशील, पुष्ट शरीर, सुन्दर स्त्री व संतान का सुख पाने वाला होता है | यह जातक धर्म में आस्था रखने वाला एवं आयुर्वेद को जानने वाला होता है| चित्रा नक्षत्रोत्पन्न जातक भवन निर्माण में रूचि रखने वाला होता है | वह सौंदर्य प्रसाधन प्रेमी, चित्रकला एवं अभिनय का विशेषज्ञ, बहुमूल्य वस्तुओं का व्यापार करने वाला तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है| यह जातक गायन, गणित एवं औषधियों तथा लेखनकला से धनोपार्जन करने वाला होता है | चित्रा नक्षत्रोत्पन्न जातक का भाग्योदय 33-38 वर्ष में होता है |

15. स्वाति- स्वाति नक्षत्र में जन्म होने से आप विवेकशील, शीतल स्वभाव, मित्रवत्, होशियार व व्यापार में निपुण होंगे | आप कुशल व्यवसायी, व्यापार तथा बौद्धिक कार्यों द्वारा इच्छानुसार लाभ अर्जित करने वाले एवं यश प्राप्त करने वाले होंगे | आपकी शिक्षा में व्यवधान हो सकता है और शिक्षा अधूरी भी छोड़नी पड़ सकती है किन्तु आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं ऐश्वर्यशाली होंगे | आप अपने समाज में पूर्ण सम्मान प्राप्त करेंगे | आप अभियन्ता एवं यांत्रिकी से सम्बन्धित कार्य करेंगे साथ ही परोपकारी होने से साधु संतों की सेवा करने वाले होंगे | आपका भाग्योदय 30 से 36 वर्ष में होगा |

16. विशाखा- विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने से आप सुंदर, धनवान् किन्तु खोटे कामों में रुचि रखने वाले एवं कलहप्रिय होंगे| आप कृपण, वाक्पटु, सामान्य बुद्धि वाले, क्रोधी स्वभाव, कामासक्त, स्त्री के वशीभूत होने वाले, पाप पुण्य के विचार से दूर रहने वाले, अचानक धन प्राप्त करने वाले और शत्रु-विजयी होंगे | आपका भाग्योदय 21वें तथा 28-34 वर्ष में होगा |

17. अनुराधा- अनुराधा नक्षत्र में जन्म होने से आप शक्तिशाली एवं स्थूल शरीर वाले होंगे| आप धनी होंगे, मान-सम्मान पाने वाले, अनेक कलाओं एवं काम धंधे में निपुण होंगे| आप अधिक यात्रा करने वाले होंगे | साथ ही, आपकी मनोवृत्ति अस्थिर रहेगी| आप साहसी, पराक्रमी, मिलनसार, यशस्वी, स्वावलम्बी, रौबीले व सुन्दर व्यक्तित्व के धनी होंगे| आप भोजन के शौकीन, धार्मिक, अध्ययनशील, एकांतप्रिय, दानी तथा सहिष्णु होंगे | इस नक्षत्र में जन्म होने से आप सरकारी नौकरी प्राप्त कर सकते हैं| आप स्वार्थपूर्ति हेतु छल प्रपंच करने में संकोच नहीं करेंगे| आप मृदुभाषी, स्त्रियों के हृदय में स्थान प्राप्त करने वाले होंगे | आपका भाग्योदय 39 वर्ष की उम्र के बाद होगा |

18. ज्येष्ठा- ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्म होने से आप चतुर, सभी कार्यों में कुशल, बहुत से मित्रों वाले, संतोषी, शीतल स्वभाव, कला के शौक़ीन, क्रोधी, धर्म के अनुरूप चलने वाले, पराई स्त्री पर आसक्त होने वाले, सम्पूर्ण विद्याओं का ज्ञान प्राप्त करने वाले, सुन्दर व्यक्तित्व वाले, अपने कार्य में दक्ष, अच्छी संतान प्राप्त करने वाले, गृहस्थ जीवन का आधा अधूरा सुख प्राप्त करने वाले व्यक्ति होंगे| आप कवि, लेखक, पत्रकार, साहित्यकार, प्रशासक, निरीक्षक, वकील, चार्टर्ड एकाउंटेंट आदि के रुप में अपनी आजीविका कर सकते हैं | उम्र के 27, 31, 49वें वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से अनुकूल नहीं रहेंगे |

19. मूल- मूल नक्षत्र में जन्म होने से आप विशाल-हृदय, दानी, गंभीर, धनी, अपने समाज में सम्मान पाने वाले, कमजोर स्वास्थ्य, प्रायः बीमार रहने वाले, वाक्पटु, चतुर, कृतघ्न, दुष्ट, धूर्त, विश्वासघाती, स्वार्थी, वाचाल, लोकप्रिय, हिंसक तथा क्रोध करने वाले होंगे| आपके जीवन में बार–बार दुर्घटनाएँ हो सकती हैं | इनका भाग्योदय 27 या 31वें वर्ष में होता है |

20. पूर्वाषाढ़ा- पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म होने से आप उपकारी, सबके मित्र, सभी कार्यों में निपुण, संतान के प्रति सुखी, उदार, स्वाभिमानी, शत्रुहंता, श्रेष्ठ मित्रों वाले जातक होंगे| अधिक धन नहीं होने पर भी आपका कोई कार्य बाधित नहीं होगा| साथ ही आप भाग्यशाली, कार्य कुशल और यशस्वी होंगे| आपको पत्नी का भी पूर्ण सुख प्राप्त होगा | आपका भाग्योदय २८ वें वर्ष में होगा |

21. उत्तराषाढ़ा- उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में जन्म होने से आप परोपकारी स्वभाव वाले, मान सम्मान पाने वाले, चतुर, साहसी, संगीत-प्रेमी, विनम्र, शांत स्वभाव वाले, धार्मिक, सुखी, सर्वप्रिय, विद्वान्, परिश्रमी एवं धनी होंगे किन्तु आपको बुरी संगति से बहुत सावधान रहना चाहिए| आपको लॉटरी इत्यादि के माध्यम से जीवन में अनायास ही धन की प्राप्ति हो सकती है | आपका भाग्योदय उम्र के 31वें वर्ष में होगा |

22. श्रवण- श्रवण नक्षत्र में जन्म होने से आप धनी, वाक्पटु, गंभीर, साहसी और सुविख्यात होंगे | समाज आपके अच्छे व्यवहार और परोपकारी कार्यों के कारण आपका सम्मान करेगा| आपकी पत्नी अच्छी और सुन्दर होंगी | आपको संगीत, गणित, अध्यात्म और ज्योतिष् में विशेष लगाव रहेगा| आप अपनी व्यवहार कुशलता के बल पर असंकुचित विचार अन्य व्यक्तियों के मन से भेद पाएँगे| आपके जीवन का 19 से 24 वर्ष संघर्षपूर्ण व्यतीत होगा | आप बहुत विवेकी, उच्च विचार, धार्मिक, शोभायमान व्यक्तित्व से सम्पन्न होंगे | आप आजीविका के क्षेत्र में उच्च-पद पर आसीन होंगे |

23. धनिष्ठा - धनिष्ठा नक्षत्र में जन्म होने से आप संगीत में रुचि रखने वाले होंगे | भाई बंधुओं से बहुत स्नेह करेंगे | धनी, साहसी, अच्छे काम करने वाले एवं जीवनसाथी के प्रिय होंगे | आपका सरकारी कार्य से सम्बन्ध रहेगा तथा आप लोगों में प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान प्राप्त करेंगे | आपकी आयु के 15, 19 व 23वें वर्ष शुभ नहीं होंगे | आप धर्म-कर्म में लिप्त रहने वाले, ऐश्वर्य संपन्न, उदार तथा समाज में सम्मान पाने वाले होंगे | आपको अपने कार्य पर नियन्त्रण रखना होगा| आपको क्रूर ग्रह की महादशा में, गुरु, बुध तथा शुक्र की अंतर्दशा में शत्रु कष्ट एवं चोरी का भय हो सकता है |

24. शतभिषा- शतभिषा नक्षत्र में जन्म होने से आप धनी, सत्यवादी, दानी, अच्छे काम करने वाले, चतुर, सफल, शत्रु विजेता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले होंगे | साथ ही आप सरकार से सम्मान प्राप्त करने वाले, दूसरी स्त्री से लगाव रखने वाले होंगे| आपका 28वाँ वर्ष विशेष महत्वपूर्ण हो सकता है | आप सत्यभाषी होंगे किन्तु कभी कभी बुरी संगति के कारण जुआरी, व्यसनी, सट्टेबाजी आदि खराब गुणों से भी युक्त हो सकते हैं| आप साहसी और शांत स्वभाव के होंगे| आपके स्वभाव में कठोरता और निडरता रहेगी | आप ज्योतिष् प्रेमी होंगे, आपके पास धन का संग्रह साधारण होगा, आपके मन में कभी कभी दूसरे के धन को हड़पने की इच्छा भी बन सकती है |

25. पूर्वाभाद्रपद- पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में जन्म लेने से आप धनी, सुंदर, बहुत बोलने वाले, कलापूर्ण, कुशल, अधिक सोने वाले, जीवनसाथी के सुख में कमी से ग्रस्त, संतान से सुख प्राप्त करने वाले, छोटी छोटी बातों में गुस्सा होने वाले होंगे| आपका भाग्योदय 19 से 21 वर्ष में होगा | आप अपने कार्य में दक्ष, चतुर किन्तु स्वभाव से धूर्त व डरपोक होंगे | पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में ये दोष है कि इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति धनवान होते हुए भी निर्धन हो जाते हैं, उनमें सहन शक्ति कम होती है, वे विचारों में कामुकता प्रधान होते हैं, ऐसे लोग प्रेम में बहुत धोखा खाते हैं| इनके जीवनसाथी स्वभाव से चंचल एवं उग्र होते हैं| इनका गृहस्थ जीवन सामान्य रहेगा |

दाम्पत्य जीवन का सुख कम ही प्राप्त होता है| इन्हें क्रूर ग्रह की महादशा में एवं बुध, शुक्र, चन्द्र की अन्तर्दशा में शत्रु कष्ट व चोरी का भय रहता है |

26. उत्तराभाद्रपद- उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में जन्म होने से आप सुन्दर, पराक्रमी, साहसी, बुद्धिमान्, गौर वर्ण, वाचाल, दानी, शत्रु-विजेता, धर्मात्मा और धनवान् होंगे | आप उदार, परोपकारी, सुखी, धन-धान्य एवं संतान युक्त जीवन व्यतीत करेंगे | आप अध्ययनशील, शास्त्रों के ज्ञाता, वाक्पटु, जिम्मेदारी निभाने वाले, लेखक, पत्रकार, संगीतज्ञ, सफल गृहस्थ और मृदुभाषी पत्नी वाले होंगे | आपका भाग्योदय 27 से 31 वर्ष की उम्र के बीच संभव है | आपको क्रूर ग्रह की महादशा में तथा केतु, सूर्य, मंगल की अन्तर्दशा में शत्रु कष्ट एवं चोरी का भय रहेगा |

27. रेवती- रेवती नक्षत्र में जन्म होने से आप माता-पिता की सेवा करने वाले, बुद्धिमान्, साधु स्वभाव, तेज वाणी, एवं मित्रों के साथ प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति हैं | इसके साथ ही आपका शरीर पुष्ट और काया निरोगी रहेगी| आप साहसी एवं सर्वप्रिय होंगे| अपने परिश्रम से धनवान् बनेंगे| आप सुपुत्रवान्, सुन्दर, चतुर, मेधावी, परामर्श देने में कुशल,अच्छे व्यापारी, कवि व लेखक आदि के गुणों से परिपूर्ण होंगे | आपका स्वभाव सौम्य होगा, आप दृढ निश्चय वाले, प्रतिभाशाली, सर्वगुण सम्पन्न, सुन्दर पत्नी वाले, चरित्रवान्, गृह कार्य में दक्ष तथा मधुर भाषी होंगे | आपके जीवन के 17वें, 21वें, 24वें वर्ष प्रतिकूल व्यतीत होंगे |

||शुभमस्तु||

स्वत्रिकोण गृहं केचित् स्वोच्चं याताः स्वमन्दिरम् |
अतिनीचे रविश्चैको न तेषां फलसम्भवः || (सारावली)
सभी ग्रह उच्च, मूलत्रिकोण या स्वगृही हों और अकेला सूर्य ही परमनीच (तुला राशि के 10 अंश पर) हो जाए तो अन्य किसी भी शुभ योग का फल जातक को प्राप्त नहीं होता है |

दसवाँ दिन

ग्रहों के राशिफल

सूर्य का राशिफल

राशि	सूर्य का राशिफल
1. मेष	सक्रिय, बुद्धिमान्, प्रसिद्ध, अल्प-धनी
2. वृष	गाने आदि का शौक़ीन
3. मिथुन	विद्याधनी, क्लेशयुक्त
4. कर्क	निर्धन, नादान बुद्धि
5. सिंह	कलाओं का रसिक
6. कन्या	स्वर्ण का संग्रहकर्ता
7. तुला	साहसी, गलत आचरण वाला
8. वृश्चिक	पूजनीय, हठी, असावधान
9. धनु	लोकप्रिय, निष्ठावान्, व्यापार-हानि
10. मकर	कार्य-कुशल, परिश्रमी, विवेकी, कंजूस
11. कुम्भ	पुत्र एवं भाग्य से पीड़ित
12. मीन	जल एवं कृषि से धनी

- चन्द्रमा का राशिफल पूर्व में ही विस्तार से बताया जा चुका है |

सदाऽग्निरोगज्वरवृद्धिदीपनक्षयातिसारादिकरोगसङ्कुलम् |
नृपालदेवावनिदेवकिङ्करैः करोति चित्तव्यसनं दिवाकरः || (जातक पारिजात)
सूर्य अशुभ हो तो जातक सदा अग्निरोग, ज्वरवृद्धि, शारीरिक जलन, क्षय, अतिसार आदि रोगों से ग्रस्त रहता है | राजा, देवता, ब्राह्मण और सेवकों के कारण उसके चित्त में दुःख उत्पन्न होते रहता है |

मंगल का राशिफल

राशि	मंगल का राशिफल
1. मेष	राजकीय कार्य, कृषि कार्य, भ्रमणशील कार्य से धनी
2. वृष	कामुक स्वभाव, विलासी स्वभाव
3. मिथुन	दीन-हीन वचन बोलने वाला
4. कर्क	राजा का प्रिय, धनी
5. सिंह	निर्भय, धनी, ज्योतिष् शास्त्र की ओर झुकाव
6. कन्या	दुर्बल पाचन शक्ति, दुःखी दाम्पत्य जीवन
7. तुला	लम्बा कद, सुन्दर शरीर, धनी
8. वृश्चिक	मेधावी, नीतिकुशल, ईर्ष्यालु
9. धनु	शत्रुओं को जीतने वाला, सुखी
10. मकर	राजा या राजतुल्य
11. कुम्भ	दुर्जनों की संगति में रहने वाला
12. मीन	दुःखी, कामुक, अस्थिर जीवन

पाण्डुदोषजलदोषकामलापीनसादिरमणीकृतामयैः |
कालिकासुरसुवासिनीगणैराकुलं च कुरुते तु चन्द्रमा ॥ (जातक पारिजात)
चन्द्रमा यदि जन्मकुण्डली में अशुभ हो तो जातक पीलिया, जलोदर रोग, कामला, पीनस, आदि रोगों से ग्रस्त रहता है | वह स्त्रीजन्य रोग और कालिका, असुर तथा स्त्रीगण के कारण व्याकुल रहता है |

शिशिरकिरणशत्रुर्लग्नपश्चन्द्रदृष्टः सहजरिपुमदस्था भानुभूपुत्रमन्दाः |
शुभविरहितकेन्द्रैरस्तगैर्वापि सौम्यै नृपतिजननयोगा यान्ति नाशं क्षणेन || (सारावली)
चन्द्रमा का शत्रु (राहु) लग्न में हो तथा उसपर चन्द्रमा की दृष्टि हो, लग्नेश राहु के साथ हो या लग्नेश पर चन्द्रमा की दृष्टि हो, तीसरे-छठे-सातवें भाव में सूर्य, मंगल या शनि हों, केन्द्र में कोई शुभग्रह न हों, अथवा बुध-गुरु-शुक्र अस्तंगत हों तो राजयोग का तत्काल नाश हो जाता है |

बुध का राशिफल

राशि	बुध का राशिफल
1. मेष	निर्धन, चतुर, मिलनसार
2. वृष	विद्वान्, कुशाग्र बुद्धि, प्रदर्शन प्रिय
3. मिथुन	सुखी, धनी, सुन्दर
4. कर्क	अपना धन स्वयं नष्ट करने वाला
5. सिंह	स्त्री जाति से तिरस्कार पाने वाला
6. कन्या	गुणवान्, निर्भय
7. तुला	विद्वान्, स्वामिभक्त, विनीत
8. वृश्चिक	निर्धन, स्वार्थी, अधार्मिक आचरण
9. धनु	राजा का प्रिय
10. मकर	शिल्पी या दूसरों की नौकरी करने वाला
11. कुम्भ	प्रसिद्ध, प्रगतिशील, क्षीण स्वास्थ्य
12. मीन	कुशल, अच्छा स्वामी (मुखिया)

पीनबीजकफशस्त्रपावकग्रन्थिरुग्व्रणदरिद्रजामयैः |
वीरशैवगणभैरवादिभिर्भीतिमाशु कुरुते धरासुतः ॥ (जातक पारिजात)
जन्मकुण्डली में मंगल यदि अशुभ हो तो जातक वीर्यदोष से युक्त, कफ, ग्रन्थिरोग, घाव, कुपोषण से ग्रस्त रहता है | उसे अग्नि एवं शस्त्र का भय बना रहता है | साथ ही वह वीरशैवादि भैरवों से शीघ्र भय प्राप्त करता है |

गुरु का राशिफल

राशि	गुरु का राशिफल
1. मेष	सेना, धन एवं पुत्र से युक्त, गुणी, धनी, दानी
2. वृष	तेजस्वी, विद्वान्, दृढनिश्चयी
3. मिथुन	मित्रों एवं जायदाद से युक्त
4. कर्क	विद्वान, पुत्रवान्, धनी
5. सिंह	यशस्वी, उच्च पद की प्राप्ति
6. कन्या	स्वार्थी, भाग्यवान्, संतोषी
7. तुला	उदार, निष्पक्ष, धार्मिक
8. वृश्चिक	सेना, धन व पुत्र से युक्त, गुणी, धनी, दानी
9. धनु	राजा या राजतुल्य
10. मकर	नीच, भ्रमणशील व क्लेश पाने वाला, क्षुब्ध चित्त वाला
11. कुम्भ	भोगवान्, लोकप्रिय, मिलनसार
12. मीन	राजा या राजतुल्य

गुह्योदरादृश्यसमीरकुष्ठमन्दाग्निशूलग्रहणीरुगाद्यैः |
बुधादिविष्णुप्रियदासभूतैरतीव दुःखं शशिजः करोति ॥ (जातक पारिजात)
जन्मकुण्डली में यदि बुध अशुभ हो तो जातक गुप्तरोग, उदररोग, वात रोग, नेत्ररोग, कुष्ठ, मन्दाग्नि, शूलरोग, और संग्रहणी आदि रोगों से पीड़ित रहता है | वह वैष्णव, तपस्वी, तथा प्रेतादि से बहुत दुःख प्राप्त करता है |

शुक्र का राशिफल

राशि	शुक्र का राशिफल
1. मेष	परस्त्रीगामी
2. वृष	धन, मित्र, बंधु एवं वैभव वाला
3. मिथुन	विद्याधनी, ज्ञानी
4. कर्क	भीरु (भयाक्रांत)
5. सिंह	कम पुत्रों वाला
6. कन्या	नीच आचरण करने वाला
7. तुला	राजप्रिय
8. वृश्चिक	दुष्ट स्त्रियों की संगति वाला
9. धनु	जनपति या नेता
10. मकर	भोगवान्
11. कुम्भ	कुमारी कन्याओं से प्रेम करने वाला
12. मीन	धन, विद्या, गुण व शील संपन्न

आचार्यदेवगुरुभूसुरशापदोषैः शोकं च गुल्मरुजमिन्द्रगुरुः करोति |
कान्ताविकारजनिमेहरुजासुराद्यैः स्वेष्टाङ्गनाजनकृतैर्भयमासुरेज्यः ॥ (जातक पारिजात)
बृहस्पति यदि जन्मकुण्डली में दोषयुक्त हो तो आचार्य, देवता, गुरु, ब्राह्मण आदि के श्राप से उत्पन्न दुःख, शोक एवं गुल्म सम्बन्धित रोगों को भोगता है | शुक्र यदि अनिष्टकारी हो तो स्त्रीसंसर्गजन्य प्रमेह आदि रोग एवं आसुरी शक्तियों से उत्पन्न कष्ट को भोगता है | साथ ही, उसे अपनी प्रिया स्त्री एवं स्त्रीपरिजनों से भी भय की प्राप्ति होती है |

शनि का राशिफल

राशि	शनि का राशिफल
1. मेष	मूर्ख
2. वृष	साधारण धनी
3. मिथुन	पुत्र एवं धन से रहित
4. कर्क	माता का कम सुख पाने वाला
5. सिंह	खराब चरित्र वाला
6. कन्या	कम धन व पुत्र वाला
7. तुला	गुणी, ग्राम या नगर का मुख्य
8. वृश्चिक	उग्र स्वभाव वाला
9. धनु	स्त्री पुत्र एवं धन से युक्त
10. मकर	राजा का प्रिय
11. कुम्भ	धनी
12. मीन	तेजस्वी, राजा के समान गुणों एवं स्वभाव वाला

दारिद्र्यदोषनिजकर्मपिशाचचौरैः क्लेशं करोति रविजः सह सन्धिरोगैः |
कण्डूमसूरिरिपुकृत्रिमकर्मरोगैः स्वाचारहीनलघुजातिगणैश्च केतुः ॥ (जातक पारिजात)
यदि जन्मकुण्डली में शनि अशुभ हो तो वह जातक के लिए अपने कर्म के फलस्वरूप उत्पन्न दरिद्रता, पिशाच एवं चोरों के द्वारा उत्पन्न कष्ट की परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है | अशुभ अवस्था में स्थित केतु सन्धिरोग, खुजली, चेचक, दाद, शत्रुओं के कुचक्र से उत्पन्न कृत्रिम रोग एवं अपने आचार से हीन तथा निम्नस्तरीय जातियों से जन्य कष्ट प्रदान करता है |

राहु का राशिफल

राशि	राहु का राशिफल
1. मेष	साहसहीन, आलसी, अनैतिक-चरित्र
2. वृष	सुखी ,कुरूप, आवेशपूर्ण-स्वभाव, धनी
3. मिथुन	गायक, साधु, साहसी, दीर्घायु
4. कर्क	उदर-रोगी, चतुर, धोखेबाज, अनेक शत्रु वाला
5. सिंह	चतुर, नीति-दक्ष, सज्जन, विचारक
6. कन्या	लोकप्रिय, नम्रभाषी, कवि, लेखक, गायक, धनी
7. तुला	अल्पायु , दंतरोगी, विरासत में धन पाने वाला
8. वृश्चिक	धोखेबाज, अनैतिक चरित्र, रोगी, अतिव्ययी
9. धनु	प्रारंभिक जीवन में सुखी, स्वयं लोगों के लिए बुरा मित्र
10. मकर	मितव्ययी, कुटुम्बहीन, दांत का रोगी
11. कुम्भ	विद्वान, लेखक, मितभाषी
12. मीन	आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय, दक्ष

करोत्यपस्मारमसूरिरज्जूक्षुदृदक्कृमिप्रेतपिशाचभूतैः |
उद्वन्धनेनारुचिकुष्ठरोगैर्विधुन्तुदश्चातिभयं नराणाम् ॥ (जातक पारिजात)
यदि जन्मकुण्डली में राहु अशुभ हो तो जातक को मिर्गी, चेचक, फांसी, संक्रामक रोग, नेत्ररोग, कृमिरोग, अरुचि, कुष्ठरोग, प्रेत-पिशाचों से भय होता है | उसे कारागार आदि का कष्ट भी भोगना पड़ता है |

केतु का राशिफल

राशि	केतु का राशिफल
1. मेष	अस्थिर स्वभाव वाला, बातूनी, सुखी
2. वृष	दुःखी, आलसी, बातूनी, कामुक
3. मिथुन	वात-रोगी, अभिमानी, संतोषी, अल्पायु, क्रोधी
4. कर्क	दुःखी, भूत-प्रेत का भय
5. सिंह	बातूनी, डरपोक, असंतोषी, सर्प के काटने का भय
6. कन्या	रोगी, मुर्ख, पाचन शक्ति की खराबी
7. तुला	कोढ़ से पीड़ित, कामुक, शीघ्र क्रोध करने वाला , दुःखी
8. वृश्चिक	क्रोधी, कोढ़ से पीड़ित, चतुर, बातूनी धोखेबाज, निर्धन
9. धनु	असत्यवादी, धोखेबाज
10. मकर	जन्म स्थान छोड़ने वाला, परिश्रमी, साहसी प्रसिद्ध
11. कुम्भ	दुःखी, अवारा, अतिव्ययी, सामान्य धन
12. मीन	विदेश यात्रा, आवेशपूर्ण, परिश्रमी, धार्मिक, आध्यात्मिक

आद्यन्तमध्यभवनोपगता नभोगाश्चादित्यभूमितनयौ शनिशीतरश्मी |
जीवासुरेन्द्रसचिवौ फलदाः क्रमेण तारासुतः सकलकालफलप्रदः स्यात् ॥

(जातक पारिजात)

सूर्य और मंगल राशि के आदि में (0 से 10 अंश तक), शनि एवं चन्द्रमा राशि के मध्य में (11 से 20 अंश तक) एवं बृहस्पति तथा शुक्र राशि के अन्त में (21 से 30 अंश तक) विशेष रूप से फलप्रद होते हैं, जबकि बुध राशि के सम्पूर्ण अंशों में समान रूप से फलदायी होता है |

ग्यारहवाँ दिन

भाव परिचय

इस विषय को ठीक से जानना और समझना अत्यधिक आवश्यक है, क्योंकि इसे जाने या समझे बिना कुण्डली देखना सम्भव ही नहीं है | कुण्डली शब्द से मुख्यतया 12 भावों के लग्नचक्र का ही बोध समझा जाता है | अब तक आपने जो भी पढ़ा है अथवा आगे भी आप जो कुछ पढ़ेंगे उन सभी नियमों का सबसे ज्यादा प्रयोग इन्हीं 12 भावों में होता है | इसे समझना बहुत कठिन है, ऐसी बात तो नहीं है किन्तु ठीक से न समझने के कारण लोग इसमें भ्रमित हो जाते हैं |

आईये, सबसे पहले इन 12 भावों की गिनती का क्रम सीखते हैं !

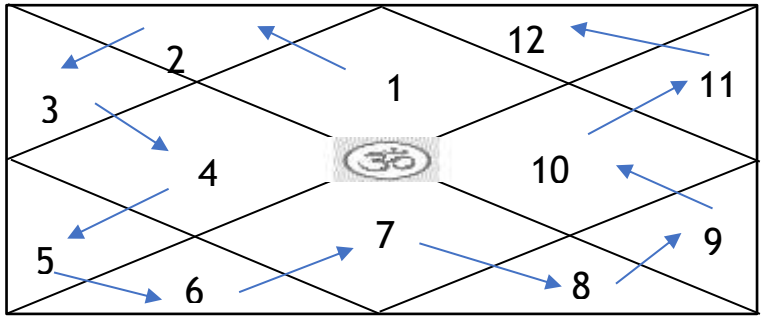

अब इस द्वादश चक्र में 12 भावों में से पहले, दूसरे आदि भावों का ज्ञान प्राप्त करें |

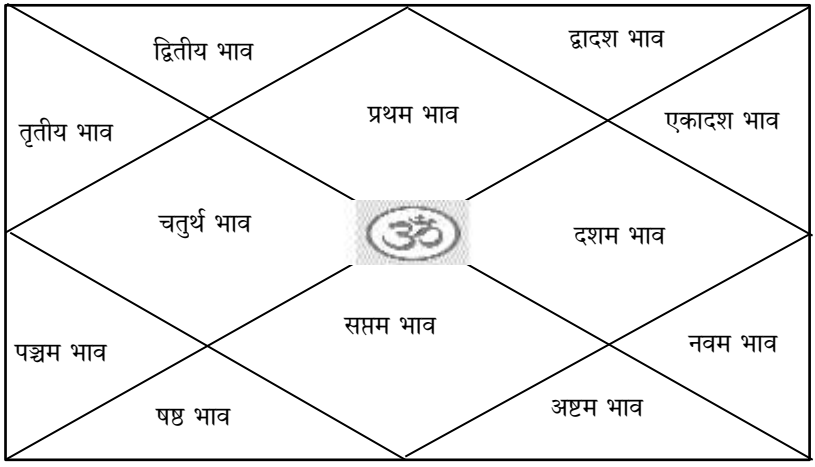

• द्वादश चक्र में तीन सूचनायें होती हैं - ग्रह, भाववृत्त और राशियाँ | एक बात का ध्यान रखें कि इस द्वादश चक्र में राशिवृत्त और भाववृत्त दोनों ही वृत्त एक साथ उपस्थित रहते हैं | इन दोनों को आपस में कभी मिलाना नहीं चाहिए | दोनों को अलग-अलग समझना चाहिए | अधिकांश लोग यहीं पर भूल कर बैठते हैं, यहाँ पर सशंकित एवं भ्रमित होते रहते हैं |

• इस द्वादश चक्र में भावों की संख्या बताने के लिए किसी चिन्ह का प्रयोग नहीं किया जाता, क्योंकि भावसंख्या सभी कुण्डलियों में समान ही रहती है | अर्थात् ऊपर जिस भाव को प्रथम भाव बताया गया है, संसार की सभी कुंडलियों में वही भाव पहला भाव रहेगा, चाहे उसमें कोई भी संख्या लिखी हुई क्यों न हो | ऐसे ही जिस भाव का नाम द्वितीय भाव है वही भाव सभी कुण्डलियों में दूसरा भाव कहलायेगा | इसी प्रकार सभी भावों के लिए जानना चाहिए |

• द्वादश चक्र में राशियों को दिखाने के लिए संख्याओं का प्रयोग किया जाता है | जैसे मेष के लिए 1, वृष के लिए 2, मिथुन के लिए 3, कर्क के लिए 4, इसी प्रकार क्रमशः 12 राशियों के लिए समझना चाहिए |

• ग्रहों को दर्शाने के लिए उनके लघु नामों का प्रयोग किया जाता है | जैसे- सूर्य के लिए सू., चन्द्रमा के लिए चं., मंगल के लिए मं. आदि |

कुण्डली क्या है ?

यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है | कुण्डली (द्वादश-चक्र) हमारे या किसी जातक के जन्म समय का वह आकाशीय मानचित्र (नक्शा) है जो उसके जन्मस्थान से दृष्टिगोचर होता है | सीधे शब्दों में ऐसे समझिये कि जब किसी का जन्म होता है ठीक उसी समय जातक के पास खड़े होकर आकाश का चित्र ले लिया जाए, बस ! यही है कुण्डली | आवश्यक नहीं कि उस समय हमारे नेत्रों से ही आकाश के सभी ग्रह नक्षत्र दिख रहे हों, किन्तु वैज्ञानिक संसाधन एवं दृष्टिकोण के सहयोग से आकाश की दर्शिता वैसी ही होती है |

इसी चित्र का ठीक तरह से दस्तावेजीकरण (Proper Documentation) करना कुण्डली बनाना कहलाता है | यहाँ हम कुण्डली बनाना तो नहीं सीख रहे हैं किन्तु यह जानना आवश्यक है कि द्वादशभाव-चक्र में भाव, राशि और ग्रह का लेखन (Fill-up) कैसे किया जाता है |

लग्न क्या है ?

द्वादशभाव-चक्र तैयार करने के लिए लग्न का ज्ञान होना बहुत ज्यादा जरुरी है, यह भी बहुत सरल है | हमारी पृथ्वी की दो प्रकार की गतियों से आप अच्छी तरह से परिचित हैं ही | यह गति है अक्षीय-गति (पृथ्वी का अपने अक्ष पर घूमना) और कक्षीय गति (पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर घूमना) ये दोनों गतियाँ एक-एक वृत्त बनाती हैं और एक दूसरे को दो स्थानों पर काटती हैं | इन दोनों वृत्तों का कटान बिन्दु हमारे पूर्वीय क्षितिज और पश्चिमी क्षितिज पर पड़ता है | जन्म के समय पूर्वी क्षितिज पर जो राशि उदीयमान रहती है, उसे ही लग्न कहा जाता है | सरल शब्दों में कहें तो जन्म के समय पूर्व दिशा में सूर्योदय वाले स्थान पर जो भी उदीयमान राशि नजर आए बस उसे ही लग्न कहते हैं |

मेष, वृष आदि 12 राशियाँ ही जन्म के समय पूर्वी क्षितिज पर उदीयमान होने से लग्न कहलाती हैं |

एक ही वस्तु कभी राशि तो कभी लग्न कैसे ? इसको ऐसे समझिये कि जब मैं विश्वविद्यालय में हूँ तो छात्र हूँ, घर पर हूँ तो सम्बन्धी हूँ | परिस्थितिवश एक ही तत्व अलग-अलग नाम से जाना जाता है और उसी नाम के हिसाब से उसका अधिकार एवं कर्तव्य भी बदल जाया करता है |

जन्मराशि

लग्नकुण्डली में चन्द्रमा जिस राशि में स्थित हो उसे ही जन्मराशि (कुण्डली की राशि) कहा जाता है | सभी ग्रह किसी न किसी राशि में ही स्थित होते हैं, किन्तु पृथ्वी पर सबसे ज्यादा प्रभाव चन्द्रमा का पड़ता है | आप सब जानते ही हैं कि सभी ग्रहों में चन्द्रमा ही पृथ्वी के सर्वाधिक निकट है, यही कारण है कि यह पृथ्वी के जन-जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करता है |

द्वादशभाव-चक्र तैयार करना

द्वादशभाव-चक्र तैयार करने के लिए प्रथम भाव में लग्न की राशि संख्या लिखी जाती है और उसी क्रम से अगले-अगले भावों में आगे की राशियाँ लिखी जाती हैं | जैसे किसी का जन्म 28 फरवरी 1991 की रात 00:45 बजे दिल्ली में हुआ | उस दिन, उस समय पर दिल्ली की पूर्वी क्षितिज पर कौन सा लग्न उदीयमान था, इसकी जानकारी हमने पञ्चांग से प्राप्त की और ज्ञात हुआ कि उस समय वृश्चिक लग्न उदीयमान था | मेष से प्रारम्भ करके वृश्चिक तक गिनने पर 8 संख्या प्राप्त हुई | अतः प्रथम भाव में 8 लिखेंगे, द्वितीय भाव में 9, तृतीय भाव में 10 इसी प्रकार आगे आगे भावों में राशियाँ भरते हुवे बारहवें भाव में 7 लिखेंगे | इसके बाद जो जो ग्रह जन्म समय में जिन-जिन राशियों में होंगे (यह जानकारी भी पञ्चांग में मिल जाएगी) उन्हें हम उन्हीं उन्हीं राशियों में भर लेंगे, बस हो गया द्वादशभाव-चक्र तैयार |

द्वादशभाव-चक्र को पढ़ना

हम एक उदाहरण से इसे समझते हैं –

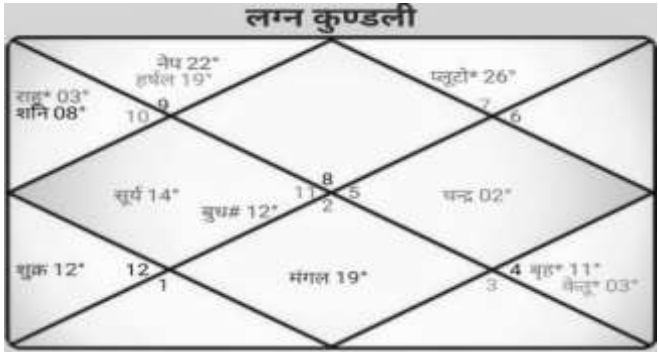

उक्त कुण्डली का विवरण –

- पहले भाव में 8 लिखा है अतः यह कुण्डली वृश्चिक लग्न की है |
- सूर्य चतुर्थ भाव या कुम्भ राशि में है |
- चन्द्रमा दशम भाव या सिंह राशि में है, अतः इसकी जन्मराशि सिंह है |
- मंगल सप्तम भाव या वृष राशि में है |
- बुध चतुर्थ भाव या कुम्भ राशि में है |
- गुरु नवम भाव या कर्क राशि में है |
- शुक्र पञ्चम भाव या मीन राशि में है |
- शनि तृतीय भाव या मकर राशि में है |
- राहु तृतीय भाव या मकर राशि में है |
- केतु नवम भाव या कर्क राशि में है |

• इस प्रकार आपको आज 10-12 कुण्डलियों का विवरण इसी प्रकार से लिख-लिख कर, समझ-समझ कर तैयार कर लेना चाहिए | आप इसका जितना अभ्यास करेंगे उतने ही अधिक निपुण कुण्डली-अध्येता बन सकेंगे |

भावेशों का ज्ञान

द्वादशभाव-चक्र को समझने के लिए उक्त ज्ञान के अतिरिक्त, भावेशों का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है | आपको मैंने राशिशील में राशियों के स्वामी का ज्ञान कराया था, यहाँ उसकी आवश्यकता होगी | एक बार पुनः उसे स्मरण कर लेते हैं |

क्रम	राशि	राशि-स्वामी	क्रम	राशि	राशि-स्वामी	क्रम	राशि	राशि-स्वामी
1.	मेष	मंगल	5.	सिंह	सूर्य	9.	धनु	गुरु
2.	वृष	शुक्र	6.	कन्या	बुध	10.	मकर	शनि
3.	मिथुन	बुध	7.	तुला	शुक्र	11.	कुम्भ	शनि
4.	कर्क	चन्द्रमा	8.	वृश्चिक	मंगल	12.	मीन	गुरु

भावेश में दो शब्द हैं, भाव+ईश, इसका अर्थ है भाव का स्वामी | जिस भाव में जो राशि है उस राशि का स्वामी ही उस भाव का भी स्वामी होता है | भाव के नाम के साथ ईश लगाते जायें और राशिस्वामी देखें - वही उस भाव का भावेश होगा | पूर्वोक्त उदाहरण कुण्डली में –

- लग्न में वृश्चिक राशि है, वृश्चिक का स्वामी मंगल होता है, अतः लग्नेश मंगल है |
- चन्द्रमा सिंह राशि में है, अतः जातक सिंह राशि का हुआ | सिंह राशि का स्वामी सूर्य होता है, अतः राशीश सूर्य हुआ |
- द्वितीय भाव में धनु राशि है, धनु का स्वामी गुरु होता है ! अतः द्वितीयेश गुरु है |
- इसी प्रकार विचार करते जायें तो तृतीयेश और चतुर्थेश शनि है |

• पंचमेश गुरु है |
• षष्ठेश मंगल है |
• सप्तमेश शुक्र है |
• अष्टमेश बुध है |
• नवमेश चन्द्रमा है |
• दशमेश सूर्य है |
• एकादशेश बुध है |
• द्वादशेश शुक्र है |

• एक कुण्डली अध्येता के लिए भावेश का ज्ञान कंठस्थ रहना बहुत आवश्यक है | आपको विचार न करना पड़े, राशि संख्या देखते ही भावेश का नाम कंठ पर हो,

इतना अभ्यास ठीक से कर लीजिए | उसके बाद ही आपको आगे की बातें समझ में आएंगी |

भावस्पष्ट

जिस प्रकार 12 राशियों में, प्रत्येक राशि का मान 30° अंश होता है | उसी प्रकार सभी भावों को भी 30° अंश का मान कर भावस्पष्ट तैयार करना चाहिए | इसमें *दशमलग्न* वाला भी मत उपस्थित होता है, किन्तु मेरी समझ से वो मत उपयुक्त नहीं है | आपको अभी इस विवाद में नहीं पड़ना है, आप प्रत्येक भाव का मान 30° अंश कल्पित कर के भावस्पष्ट तैयार करिए |

- लग्नस्पष्ट भावमध्य होता है | उसमें 15° अंश जोड़ने पर प्रथम भाव की अंतिम सन्धि मिलेगी |
- उस सन्धि में पुनः 15° जोड़ने पर द्वितीय भाव मिलेगा |
- इसी प्रकार क्रमशः 15°-15° अंश जोड़ते जाने पर अगली-अगली सन्धियाँ और अगले-अगले भाव प्राप्त होते जायेंगे |
- भावस्पष्ट और ग्रहस्पष्ट की परस्पर तुलना कर के यह जाना जाता है कि ग्रह भाव में यथार्थ रूप से कहाँ पर स्थित है, भावमध्य में है अथवा भाव की पिछली/अगली सन्धि में है |

भावस्पष्ट और ग्रहस्पष्ट के सामंजस्य से फलकथन

- सन्धिगत ग्रह निर्बल होते हैं |
- अग्रिम सन्धिमान से अधिक मान वाला ग्रह आगामी भावानुसार फल प्रदान करता है |
- पिछली सन्धिमान से कम अंशों वाला ग्रह पिछले भावानुसार फल प्रदान करता है |
- भावमध्य में विद्यमान ग्रह ही सम्बन्धित भाव का पूर्ण फल देने में सक्षम होता है |
- यदि आरम्भ या विराम सन्धि में स्थित ग्रह का मान भावसन्धि के स्पष्ट राश्यादि मान के तुल्य हो जाए, तो ग्रह चाहे कितना भी बलवान हो उसका भावफल शून्य हो जाता है |
- भावसन्धिगत ग्रह की दशा-अन्तर्दशा भी बहुत कष्टकारक होती है |

||शुभमस्तु||

बारहवाँ दिन

बारह भावों की संज्ञाएँ

द्वादशभावों के कई नाम ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं | कुछ प्रमुख नाम यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं, इन नामों को आपको ठीक से कंठस्थ कर लेना चाहिए | आगे इन नामों का वर्णन बार-बार आने वाला है |

भावसमूह संज्ञाएँ

क्र. सं.	संज्ञा	भाव
1.	उपचय	3, 6, 10, 11
2.	चतुरस्र	4, 8
3.	केंद्र/कंटक/चतुष्टय	1, 4, 7, 10
4.	त्रिक	6, 8, 12
5.	पणफर	2, 5, 8, 11
6.	आपोक्लिम	3, 6, 9, 12
7.	मांगलिक भाव	1, 4, 7, 8, 12
8.	त्रिकोण	5, 9
9.	त्रित्रिकोण	9
10.	रिःफ	12
11.	त्रिषडाय	3, 6, 11
12.	अदृश्य/पूर्वार्ध/अनुदित	1 से 6
13.	दृश्य/उत्तरार्ध/उदित	7 से 12
14.	मारक भाव	2, 7

भावसमूह संज्ञाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं | इनको स्मरण किए बिना भावशील में कुछ भी समझना कठिन है | अतः इन्हें अच्छे से याद कर लें और बारम्बार अभ्यास करते रहें |

शीर्षोदयगतः खेटः पाकादौ फलदो भवेत् | पृष्ठोदयस्थः पाकान्ते सदा चोभयराशिगः ॥
(जातक पारिजात)

शीर्षोदय राशि में स्थित ग्रह, दशा के प्रारम्भ में फलप्रद होता है | पृष्ठोदय राशि में स्थित ग्रह, दशा के अन्त में फलप्रद होता है| उभयोदय राशीस्थ ग्रह सम्पूर्ण दशा में समान रूप से फलप्रद रहते हैं |

भावपुरुष अंगविभाग

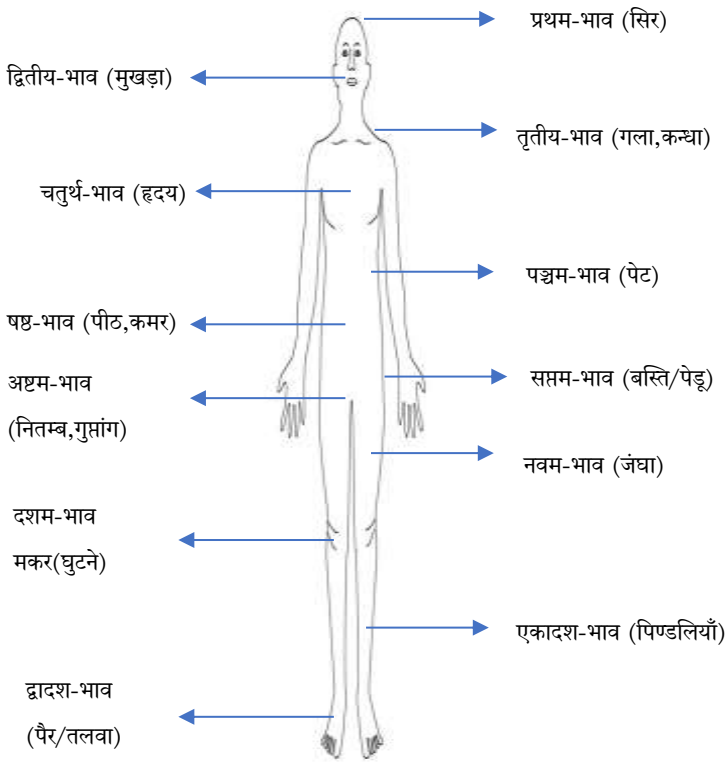
प्रथम-भाव (सिर)
द्वितीय-भाव (मुखड़ा)
तृतीय-भाव (गला,कन्धा)
चतुर्थ-भाव (हृदय)
पञ्चम-भाव (पेट)
षष्ठ-भाव (पीठ,कमर)
अष्टम-भाव
(नितम्ब,गुप्तांग)
सप्तम-भाव (बस्ति/पेडू)
नवम-भाव (जंघा)
दशम-भाव
मकर(घुटने)
एकादश-भाव (पिण्डलियाँ)
द्वादश-भाव
(पैर/तलवा)

द्रेष्काणवश अङ्गविभाग

- एक लग्न में तीन द्रेष्काण होते हैं, यदि जन्म के समय लग्न प्रथम द्रेष्काण में हो तो लग्न मुख, 2-12 भावों को नेत्र, 3-11 भावों को कान, 4-10 भावों को नाक, 5-9 भावों को कपोल, 6-8 भावों को दाढ़ी तथा सप्तम भाव को मुख कल्पित करना चाहिये |
- दूसरे द्रेष्काण में जन्म हो तो लग्न को कण्ठ, 2-12 भावों को कंधा, 3-11 भावों को बाहु, 4-10 भावों को पार्श्व, 5-9 भावों को हृदय, 6-8 भावों को पेट और सप्तम भाव को नाभि कल्पित करना चाहिये |
- जन्म के समय तीसरा द्रेष्काण हो तो लग्न को वस्ति (नाभि, लिंग के मध्य का स्थान), 2-12 भावों को लिंग और गुदा, 4-10 भावों को जंघा. 3-11 भावों को वृषण, 5-9 भावों को घुटना, 6-8 भावों को पिण्डलियाँ तथा सप्तम भाव को पैर समझना चाहिये |
- इस अङ्ग-विभाग में सप्तम से द्वादश भाव तक शरीर के वाम भाग की और लग्न से छठें भाव तक शरीर के दाहिने भाग की कल्पना करनी चाहिये |

अङ्ग-विभाग द्वारा फलकथन

- अंग के जिस भाग में पापग्रह हों वहाँ चिह्न कहना चाहिये |
- यदि बुध के साथ पापग्रह हों तो उस अंग में निश्चय ही व्रण आदि चिह्न होता है |
- यदि बुध के साथ शुभग्रह हों तो उस अंग में तिल अथवा राजयोग के लक्षण होते हैं |
- दो या दो से अधिक पापग्रह जिस अंग में हों वहाँ गम्भीर रोग बतलाना चाहिए |
- जिस अंग में पापग्रहों के साथ राहु की युति हो वहाँ शल्यक्रिया अथवा चीर फाड़ आदि का योग होता है |
- जिस अंग में अशुभपंचक ग्रह हों वहाँ तद्ग्रहजन्य (उस ग्रह से सम्बन्धित) रोग होते हैं |

भावकारक ग्रह

क्र.सं.	भाव	कारक ग्रह
1.	प्रथम भाव	सूर्य
2.	द्वितीय भाव	गुरु
3.	तृतीय भाव	मंगल
4.	चतुर्थ भाव	चन्द्र एवं बुध
5.	पञ्चम भाव	बृहस्पति
6.	षष्ठ भाव	मंगल एवं शनि
7.	सप्तम भाव	शुक्र
8.	अष्टम भाव	शनि
9.	नवम भाव	बृहस्पति एवं सूर्य
10.	दशम भाव	बुध,गुरु, रवि एवं शनि
11.	एकादश भाव	गुरु
12.	द्वादश भाव	शनि

||शुभमस्तु||

नीचभंग राजयोग - जन्मकुण्डली में किसी ग्रह का नीच हो जाना अशुभ माना गया है परन्तु कुछ ऐसी भी स्थितियाँ हैं, जिनमें नीच राशिस्थ ग्रह अच्छा प्रभाव दिखलाते हैं | इसे ही नीचभंग राजयोग कहा जाता है |

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तद्राशिनाथोऽपि तदुच्चनाथः |
स चन्द्रलग्नाद्यदि केन्द्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती ॥ (फलदीपिका)

जिस राशि में जो ग्रह नीच होकर स्थित है, उसका राशिस्वामी यदि चन्द्रमा से केन्द्र में हो अथवा उस नीच ग्रह की उच्च राशि का स्वामी यदि चन्द्रमा से केन्द्र में हो तो व्यक्ति धार्मिक एवं चक्रवर्ती राजा (राजतुल्य) होता है |

तेरहवां दिन

षोडशवर्ग विवेक

अब प्रश्न उपस्थित होता है कि कितनी कुण्डलियाँ होती हैं ? साधारणतया लग्नकुण्डली को ही सभी लोग कुण्डली समझते हैं किन्तु कुल मिलाकर 16 कुण्डलियाँ होती हैं | इन्हें षोडशवर्ग कहा जाता है | इन षोडशवर्गों के नाम एवं उनसे विचारणीय विषय निम्नलिखित हैं-

1. लग्न- शरीर एवं जीवन सम्बन्धी शुभ-अशुभ का विचार
2. होरा- धन-संपति का विचार
3. द्रेष्काण- भाई-बहन का विचार
4. चतुर्थांश- भाग्य का विचार
5. सप्तमांश- पुत्र-पौत्रादि का विचार
6. नवमांश- स्त्री का विचार, ग्रहों के बलाबल का विचार
7. दशमांश- बड़े कार्यो का विचार
8. द्वादशांश- माता-पिता का विचार
9. षोडशांश- वाहन के सुख-दुःख का विचार
10. विशांश- उपासना का विचार
11. चतुर्विंशांश- विद्या का विचार
12. सप्तविंशांश- बलाबल का विचार
13. त्रिंशांश- अरिष्ट का विचार
14. खवेदांश- शुभ-अशुभ का विचार
15. अक्षवेदांश- सब कुछ का विचार
16. षष्ट्यंश-सब कुछ का विचार

षड्वर्ग एवं उनकी संज्ञाएँ

लग्न, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश और त्रिंशांश को संयुक्त रूप से **षड्वर्ग** कहा जाता है | षड्वर्ग-कुण्डली का विचार करते समय ग्रह यदि किन्ही दो वर्गों में बलवान हो तो **किंशुक**, तीन वर्गों में **व्यंजन**, चार वर्गों में **चामर**, पांच वर्गों में **छत्र** तथा सभी छः वर्गों में बलवान रहने पर **कुंडल** कहलाता है |

सप्तवर्ग एवं उनकी संज्ञाएँ

लग्न, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिंशांश और सप्तमांश को संयुक्त रूप से **सप्तवर्ग** कहा जाता है | षड्वर्ग में ही सप्तमांश मिला लेने से सप्तवर्ग हो जाता है | सप्तवर्ग में छः वर्गों तक तो पूर्वोक्त षड्वर्ग संज्ञाएँ ही रहती हैं, यहाँ सातों वर्गों में बलवान ग्रह **मुकुट** संज्ञक होता है |

दशवर्ग एवं उनकी संज्ञाएँ

लग्न, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश, सप्तमांश, दशमांश, षोडशांश और षष्ट्यंश को संयुक्त रूप से **दशवर्ग** कहा जाता है | सप्तवर्ग में ही दशमांश, षोडशांश और षष्ट्यंश मिला लेने से दशवर्ग हो जाता है | दशवर्ग-कुण्डली का विचार करते समय ग्रह यदि किन्ही दो वर्गों में बलवान हो तो **पारिजात**, तीन वर्गों में **उत्तम**, चार वर्गों में **गोपुर**, पांच वर्गों में **सिंहासन**, छः वर्गों में बलवान रहने पर **पारावत**, सात वर्गों में **देवलोक**, आठ वर्गों में **ब्रम्हलोक**, नव वर्गों में **ऐरावत**, दश वर्गों में बलवान रहने पर **श्रीधाम** कहलाता है |

षोडशवर्ग एवं उनकी संज्ञाएँ

षोडशवर्गों के नाम एवं उनसे विचारणीय विषय ऊपर बताया जा चुका है | षोडशवर्ग-कुण्डली का विचार करते समय ग्रह यदि किन्ही दो वर्गों में बलवान हो तो **भेदक**, तीन वर्गों में **कुसुम**, चार वर्गों में **नागपुष्प**, पांच वर्गों में **कन्दुक**, छः वर्गों में बलवान रहने पर **केरल**, सात वर्गों में **कल्पवृक्ष**, आठ वर्गों में **चंदनवन**, नव वर्गों में **पूर्णचंद्र**, दश वर्गों में बलवान रहने पर **उच्चैःश्रवा**, ग्यारह वर्गों में बलवान हो तो **धन्वंतरि**, बारह वर्गों में **सूर्यकांत**, तेरह वर्गों में **विद्रुम**, चौदह वर्गों में **इन्द्रसिंहासन**, पंद्रह वर्गों में बलवान रहने पर **गौलोक** तथा सभी षोडश वर्गों में बलवान रहने पर **श्रीवल्लभ** कहलाता है |

नवमांश की उपयोगिता

सभी वर्ग-कुंडलियों में नवमांश सबसे अधिक महत्वपूर्ण है| विंशोपक बल में भी जन्म कुंडली के बाद सबसे महत्वपूर्ण नवांश ही हैं| विंशोपक बल के आनयन में लग्न-कुंडली के बाद सबसे अधिक अंक नवांश-कुण्डली को ही दिए गए हैं| जन्म कुंडली और नवांश-कुण्डली को देख कर ही आप ग्रह के शुभाशुभत्व का सही आकलन कर सकते हैं| ज्योतिषीय ग्रन्थ जैसे बृहत्पाराशर-होराशास्त्र, जातक-पारिजात, चंद्रकला नाडी, बृहज्जातक इत्यादि में नवांश-कुण्डली के उपयोग कई स्थानों पर वर्णित हैं|

नवमांश-कुण्डली से सम्बन्धित सूत्र –

- कुण्डली के विश्लेषण के लिए षोडशवर्गों का ही उपयोग करना चाहिए | यदि समयाभाव हो तो दशवर्ग देख लेना चाहिए | यदि यह भी कठिन लगे तो सप्तवर्ग विचार करना चाहिए, इसमें भी कठिनाई हो तो षड्वर्गों का विचार तो करना ही चाहिए | यदि यह भी सम्भव न हो तो कम से कम नवमांश-कुण्डली का विचार अपरिहार्य रूप से करना ही चाहिए | नवमांश कुण्डली का विचार किए बिना कभी भी फलादेश नहीं करना चाहिए | मैं कभी भी नवमांश कुण्डली के बिना फलादेश नहीं करता हूँ |

- नवांश-कुण्डली से भी लग्नवत सब बातों का विचार करना चाहिए |
- लग्न नवांश राशि के अनुसार जातक के शरीर का आकार होता है |
- चन्द्र नवांश राशि के अनुसार जातक के स्वरूप का रंग होता है |
- सारावली के अनुसार, चंद्र राशि हमारे स्वभाव को दर्शाती है परन्तु जिस नवांश में चंद्रमा है, उसका स्वामी अर्थात् चंद्र-नवांशेश यदि अधिक बली हो तो जातक का स्वभाव चन्द्र नवांश राशि के अनुसार जानना चाहिए |
- यदि ग्रह जन्म कुंडली में निर्बल, पापग्रहों से दृष्ट अथवा नीच राशिस्थ हो या अस्त हो परन्तु नवांश-कुण्डली में बली हो तो ग्रह को बलवान ही समझा जाता है |
- अस्त-ग्रह यदि नवांश-कुण्डली में सूर्य से 2 भाव आगे स्थित हो, तो वह अस्त ग्रह भी फल देने में सक्षम हो जाता है |
- कोई भी ग्रह यदि मित्र अथवा सौम्य ग्रह के नवांश में हो, उच्च नवांश या स्वनवांश में हो तो उस ग्रह का शुभफल अवश्य मिलता है |
- नवांश-कुण्डली में बलवान, उच्चादिगत ग्रह केन्द्र-त्रिकोण में हो तो उत्तम फल, 2.3.6.11 भावों में हो तो मध्यम फल, 8.12 भावों में हो तो सामान्य फल देते हैं |
- कोई भी ग्रह लग्नकुंडली में जिस राशि में है, यदि वह ग्रह नवमांश कुंडली में भी उसी राशि में रहे तो वह वर्गोत्तमी कहलाता है |वर्गोत्तमी ग्रह बहुत शुभफल प्रदान करते हैं |
- शुभ राशि में वर्गोत्तम ग्रह शुभ फल देते हैं|
- क्रूर राशि में वर्गोत्तम ग्रह संघर्षो के बाद शुभ परिणाम देते हैं |
- सर्वार्थ चिंतामणि के अनुसार चतुर्थेश का नवांशेश यदि लग्नकुंडली में केन्द्रगत हो तो ऐसे जातक को घर-सम्पदा का सुख अवश्य प्राप्त होता है | परन्तु यदि वह त्रिक भाव (6-8-12) में हो तो ऐसे जातक के घर-सम्पदा के सुख की हानि होती हैं|
- यदि किसी भावेश का नवांशेश लग्नकुंडली मे केंद्र अथवा त्रिकोण में बलवान होकर स्थित हो तो उस भाव के फल अवश्य मिलते हैं | यदि किसी भावेश का नवांश अधिपति लग्नकुण्डली में निर्बल होकर त्रिक भावो में हो तो निश्चय ही उस भाव के फल में कमी आएगी |
- लग्न-नवांशेश अच्छी राशि में हो तो अच्छी पत्नी मिलती है, नीचादि में हो तो अधम पत्नी होती है |
- लग्न-नवांशेश नवांश-कुण्डली में केन्द्र स्थानों में हो तो 23-26 वर्ष में, त्रिकोण में हो 27-31 वर्ष में, त्रिषडाय में हो तो 19-22 वर्ष में तथा 2-8-12 भावों में अनिष्ट होकर स्थित हो तो 32वें वर्ष में या बहुत विलम्ब के बाद विवाह होता है |
- ध्यान रहे उक्त नियम लग्ननवांशेश के अकेले या शुभग्रहों के साथ स्थित रहने पर ही सत्य होते हैं |
- लग्न नवांशेश पापग्रहों की युति के साथ किसी भी भाव में स्थित हो वह विवाह में अप्रत्याशित विलम्ब कराता ही है |
- लग्न-नवांशेश अष्टम भाव में हो तो स्त्री की मृत्यु शीघ्र होती है |

- यदि लग्न-नवांशेश सूर्य, राहू या मंगल के साथ स्थित हो तो रोग, दाह या विपत्ति के कारण पत्नी की मृत्यु होती है |
- लग्न-नवांशेश चन्द्रमा के साथ हो तो पत्नी प्रायः चंचला होती है |
- लग्न-नवांशेश शुक्र के साथ हो तो स्त्री कामुक होती है |

नवांश-कुण्डली में पञ्चम स्थान पर जितने ग्रहों की दृष्टि हो तत्तुल्य अथवा नवांश-कुण्डली में पंचमस्थ राशि की संख्या तुल्य या पंचमेश की नवांश राशिसंख्या तुल्य सन्तति होती है|

||शुभमस्तु||

यद्धातुकोपजनिताखिलरोगशान्त्यै तन्नाथमाशु जपतर्पणहोमदानैः|
सम्पूज्य रोगभयशोकविमुक्तचित्ताः सर्वे नराः सुखयशोबलशालिनः स्युः॥

(जातक पारिजात)

जिस धातु के कोप से रोग होते हैं, उस धातु के जो स्वामी ग्रह हैं, उनका जप, तर्पण, होम, दान एवं पूजन अविलम्ब करने से रोगों की शान्ति होती है | इस प्रकार से सभी मनुष्य रोग, शोक, भय और चिन्ता से रहित होकर सुख, यश एवं बल से युक्त होते हैं |

उच्चांशे स्वनवांशे च जागरूकं वदन्ति हि | सुहृन्नवांशकं स्वप्नं सुप्तं नीचारिभांशकम् ||

(जातक पारिजात)

विद्वान् लोग कहते हैं कि ग्रह नवमांश कुण्डली में उच्चस्थ या स्वगृही रहने पर जागृत अवस्था में, अपने मित्र के नवमांश में रहने पर स्वप्नावस्था में, और नीच या शत्रुगेही होने पर सुप्तावस्था में रहते हैं |

चौदहवाँ दिन

द्वादश भावों से विचारणीय विषय

यहाँ द्वादश भावों से विचारणीय विषय प्रस्तुत किए जा रहे हैं | इन विषयों को ठीक से मन-मस्तिष्क में स्थापित कर लें | इनके अनुसार ही कुण्डली में किसी प्रश्न का उत्तर दिया जाता है |

प्रथम भाव - रूप, वर्ण, चिह्न, जाति, अवस्था का प्रमाण, सुख-दुःख और साहस इन सब पदार्थोंका विचार तनुभाव से करना चाहिये |

द्वितीय भाव – स्वर्णादि-धातु, रत्नादि, ध्वनि, बुद्धि, भोजन, कुटुम्ब, पत्नी, क्रय-विक्रय, विरासत, मारकत्व, कोष का संग्रह (संचित धन), ये सब दूसरे (धन) भाव से विचार करना चाहिये |

तृतीय भाव – सहोदर-भाई का, नौकर का और पराक्रम का विचार तीसरे (सहज) भाव से करना चाहिये |

चतुर्थ भाव - चौथे (सुहृद) भाव से माता, वाहन, मित्र, मकान, विद्या, ग्राम, चौपाये जीव, क्षेत्र, भूमि, राजनीतिक भविष्य, इन सबका विचार करना चाहिये |

पञ्चम भाव – बुद्धि के प्रबंध, विद्या, शिक्षा, सन्तान, भक्ति, मंत्राराधना, नीति, न्याय और गर्भ की स्थिति, लाटरी, प्रेम-विवाह ये सब विचार पंचम (सुत) भावसे करना चाहिये |

षष्ठ भाव - शत्रु, व्रण (फोडा, फुंसी, तिल, मस्सा), क्रूरकर्म, रोग, अभिचार कर्म, नौकरी, शंका, मामा व शुभाशुभ विचार ये सब छठे (शत्रु) भावसे विचार करना चाहिये |

सप्तम भाव - युद्ध, स्त्री/पुरुष, पति/पत्नी, विवाह, कामसुख, व्यापार, नपुंसकता, मारकत्व, साझेदारी तथा परदेश से आने का विचार, ये सब सप्तम (जाया) भाव से विचार करना चाहिये |

अष्टम भाव - नदी के पार उतरना, रास्ता, विषमस्थान, शस्त्र-प्रहार, आयु, दुर्घटना, गम्भीर-रोग, मृत्यु, साधना, पत्नी का स्वास्थ्य, प्रवज्या (संन्यास) तथा समस्त संकटों का विचार अष्टम (रन्ध्र) भाव से करना चाहिये |

नवम भाव – धर्म-क्रिया में मन की प्रवृत्ति और निर्मल स्वभाव, तीर्थ-यात्रा, नीति, नम्रता, भाग्य, पिता, प्रवज्या, आस्था, ये सब नवम (भाग्य) भाव से विचार करना चाहिये |

दशम भाव - पिता के सुख-दुःखका विचार, महत् पद की प्राप्ति, उच्चतर शिक्षा, आजीविका, कीर्ति, प्रतिष्ठा, राजसम्मान, राज-मान्यता और राज-संबंधी प्रयोजन, ये सब दशम (पुण्य) भावसे विचार करना चाहिये |

एकादश भाव – सभी तरह के लाभ, वस्त्र-आभूषण, पालकी, आय, धनागम, बड़े-भाई, इन सब बातों का विचार ग्यारहवें (लाभ) भावसे करना चाहिये |

द्वादश भाव – सभी वस्तुओं के व्यय का विचार, धन-हानि का विचार, चिन्ता, शैय्यासुख, विदेश-यात्रा, दंड और बंधन, इन सबका विचार (व्यय) बारहवें भाव से करना चाहिये |

बारह लग्नों के लिए शुभाशुभ ग्रह

इस चक्र को ठीक से याद करना बहुत अनिवार्य है | इसके बिना फल कथन करना सम्भव नहीं है |

ग्रह → **लग्न ↓**	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मेष	शुभ	शुभ	शुभ	पापी	योगकारक	पापी/मारक	पापी
वृष	शुभ	पापी	मारक	शुभ/ मारक	पापी	पापी	शुभ
मिथुन	पापी	शुभ	पापी	शुभ	पापी/मारक	शुभ	सामान्य
कर्क	सामान्य	शुभ	योगकारक	पापी	सामान्य	पापी	मारक
सिंह	शुभ	सामान्य	शुभ	पापी	सामान्य	पापी	मारक
कन्या	सामान्य	पापी	पापी	शुभ	पापी	शुभ	पापी
तुला	पापी	योगकारक	मारक	योगकारक	पापी	सामान्य	शुभ
वृश्चिक	योगकारक	योगकारक	शुभ	पापी	शुभ	पापी	पापी
धनु	योगकारक	सामान्य	शुभ	योगकारक	सामान्य	पापी	मारक
मकर	सामान्य	पापी	पापी	सामान्य	पापी	शुभ	सामान्य
कुम्भ	सामान्य	पापी	पापी	सामान्य	पापी	योगकारक	शुभ
मीन	पापी	शुभ	शुभ	पापी	योगकारक	पापी	पापी

- इस चक्र को ठीक से समझने के लिए आपको लघुपाराशरी का अध्ययन करते रहना चाहिए |

द्वादश लग्नों के जन्मफल

मेष लग्न में जन्मफल - आपका जन्म मेष लग्न में होने से आप बहुत दयालु और जीवन्त व्यक्तित्व के स्वामी हैं | हालाँकि, बहुत आक्रामक स्वभाव होने से अनेक परेशानियों का सामना आपको करना पड़ेगा| मित्रों से, परिजनों से सामंजस्य बनाने में भी परेशानी रहेगी| किंतु,आप परिस्थितियों के अनुसार समायोजन करने की शक्ति से सम्पन्न, योजना बनाने की योग्यता रखने वाले, गतिशील व रचनात्मक, निडर, खरे, महात्वाकांक्षी, आत्मविश्वासी, दूसरों के लिए संकट उठाने वाले, वास्तविक एवं स्वतंत्र, स्वतंत्रता प्रिय, साहसी, जीवनीय शक्ति से परिपूर्ण, स्वीकारात्मक, प्रचुर उर्जापूर्ण, वीर, अग्रणी, प्रबल इच्छाशक्ति वाले, कला-भव्यता एवं सुन्दरता से प्रेम करने वाले, उद्यमी, नेता और बलशाली होंगे | मेष लग्न होने से आपको मानव सहयोगी जीव जन्तुओं से विशेष प्रेम एवं लगाव रहेगा तथा आप जिसे अपना मानेंगे उनकी प्राणपन से सेवा व रक्षा करेंगे |

वृष लग्न में जन्मफल - वृष लग्न में जन्म लेने वाले प्रसन्नता, प्रेम, सुन्दरता एवं संगीत के प्रति रुचि रखने वाले होते हैं | वे सजग, अपरिवर्तनशील दृष्टिकोण वाले, उदार, आत्मनिर्भर, शान्त एवं धैर्यवान होते हैं| वृष लग्न वाले महात्वाकांक्षी, दानशील, त्याग व क्षमा भावना से परिपूर्ण, असाधारण सहनशक्ति सम्पन्न, क्रोध को लम्बे समय तक कायम न रखने वाले, भोजन बनाने के शौकीन, प्रेममय, शिष्ट, उदार हृदय, दृढ़ इच्छाशक्ति, विश्वसनीय, सतर्क, कल्पनाशील, विस्तृत, सौम्य व शांत, स्नेहशील, भावमय, विवेकी, आंतरिक बल से परिपूर्ण, दृढ़, व्यावहारिक, विश्वासपात्र, कलात्मक और बहुत उद्यमी होते हैं |

मिथुन लग्न में जन्मफल - आपका जन्म मिथुन लग्न में होने से आप पढ़ने,-लिखने व आभ्यन्तर खेलों (इंडोर गेम्स) के शौकीन, मनमोहक, उत्तम बौद्धिक क्षमता से परिपूर्ण, गणितज्ञ, बहुमुखी प्रतिभा से युक्त, मनोरंजक, उदारबुद्धि, तीक्ष्ण बुद्धि, तार्किक, अत्यधिक बातें करने वाले, कलात्मक, उन्नतिशील, यौवन से परिपूर्ण, अन्वेषक, कामुक, विविधता खोजने वाले, जिज्ञासु, वार्तालाप में निपुण, योजना बनाने में कुशल, ऐसे व्यवसाय के लिए उत्तम जहां सक्रियता की आवश्यकता हो, समायोजक और योग्य व्यवस्थापक के गुणों से परिपूर्ण रहेंगे |

कर्क लग्न में जन्मफल - कर्क लग्न में जन्म होने से आप दयालु, संवेदनशील, कल्पनाशील, फलदायी कल्पनाएं करने वाले, जिम्मेदारी निभाने वाले, आत्म निर्भर, आध्यात्मिक प्रकृति वाले, अन्तर्ज्ञानी, कृतज्ञ, ईमानदार, न्यायप्रिय व निष्पक्ष व्यवहार करने वाले, बुद्धिमान्, समायोजक, अच्छी स्मृति वाले, वार्ता में निपुण, रक्षात्मक, बेचैन, बहुत मितव्ययी, परिवार से जुड़े हुए, गीत-संगीत में निपुण, आस- पास के वातावरण तथा दूसरों के विचारों एवं भावनाओं से आसानी से प्रभावित होने वाले, अतिथि-सत्कार में दक्ष, अनुभवी, निश्चिन्त, भावुक तथा कठोर उद्यमी व्यक्ति होंगे |

सिंह लग्न में जन्मफल - सिंह लग्न में जन्म होने से आप सत्यप्रिय, गरिमा की भावना रखने वाले, कर्तव्य की गम्भीरता समझने वाले, प्रचुर उर्जा से परिपूर्ण, विस्तृत विचार क्षमता वाले, सक्रिय, प्रसन्नचित्त, साहसी, घर के लिए गौरवशाली, संवेगशील, अत्यंत अध्ययनशील, कला, साहित्य व संगीत के प्रेमी, महत्वाकांक्षी, स्वतंत्र विचारों वाले, क्षमाशील, साहसी, रचनात्मक, अच्छे व्यवस्थापक, प्रभुत्व रखने वाले, निष्कपट, अच्छी किन्तु संवेदनशील मनोवृत्ति वाले, गतिशील, खरे, दृढ विचार रखने वाले होंगे| आपको शासन/आदेश नहीं दिया जा सकता, साथ ही आप उदार, व्यवहारकुशल, उत्साहपूर्ण, स्वागत सत्कार में कुशल, तथा समायोजक व्यक्ति होंगे|

कन्या लग्न में जन्मफल - कन्या लग्न में जन्म लेने वाले व्यवहारकुशल, दयालु, शांति व व्यवस्था से प्रेम करने वाले, सच्चे, बुद्धिमान्, अच्छी स्मृति वाले और भावनात्मक रूप से सजीव होते हैं | आप भेदमूलक एवं त्वरित प्रत्युत्तरी होंगे | साथ ही संगीत एवं ललित कलाओं के प्रेमी एवं बान्धवों तथा मित्रों के प्रति समर्पित रहेंगे | आपका स्वभाव विनोदी होगा, चेहरा आकर्षक होगा, और आप यथार्थ विश्लेषणात्मक क्षमता से सम्पन्न होंगे | आप एक रुचिकर व्यक्ति होंगे, जीवन में व्यवस्थित, अति सावधान, दूरंदेशी, मितव्ययी, धीरे बोलने वाले और विवेकी रहेंगे |

तुला लग्न में जन्मफल - तुला लग्न में जन्म होने से आप आदर्शवादी, बुद्धिमान्, त्वरित उत्तर देने वाले, रोमांचक, कलात्मक, विनम्र और स्वीकार्य व्यक्ति होंगे| साथ ही आप दूरदर्शी, स्वच्छ, आकर्षक, शांति-स्थापक, प्रेरक, सहयोगी, मानवतावादी, निर्णय लेने से पहले अच्छे/बुरे पक्ष-विपक्ष दोनों पहलुओं पर ठीक से विचार करने वाले, समायोजन की क्षमता से पूर्ण, न्यायप्रिय, शांति व व्यवस्था से प्रेम करने वाले, परिष्कृत, न्यायाधीश की भांतिनिष्पक्ष व्यवहार करने वाले और प्रेरणादायक किन्तु कामुक प्रकृति के होंगे| आप में स्तर के अनुसार अध्यक्षता करने का कौशल होगा | आप व्यवहार कुशल, सकारात्मक, मिलनसार और तीव्र तर्कशक्ति से सम्पन्न होंगे|

वृश्चिक लग्न में जन्मफल – आप में एकाग्रचित होने की दृढ़ क्षमता होगी | ललित कलाओं एवं नृत्य से लगाव होगा | आप अच्छे साहित्यकार, बातचीत में कुशल, कल्पनाशील, वचनबद्ध, भौतकवादी, रक्षात्मक, प्रेम प्रसंग में तीव्र व गतिशील होंगे | आप उदार स्वभाव, विलासिता के पक्षधर, निष्ठावान, दृढ़-इच्छाशक्ति, आकर्षक, नौकरी में अच्छा पद हासिल करने वाले, जीवन में सदा गतिशील, भावुक, बुद्धिमान, समझदार, जांच-परख कर निर्णय लेने वाले, मर्मज्ञ, दृढ़ निश्चयी, स्व-आलोचक तथा दयालु स्वभाव के होंगे |

धनु लग्न में जन्मफल - धनु लग्न में जन्म लेने वाले धार्मिक, सहानुभूतिपूर्ण, त्याग करने की प्रकृति वाले, दार्शनिक, ईश्वर से डरने वाले, संयोग-भाग्य एवं चमत्कार पर विश्वास रखने वाले, विस्तृत तथा निष्पक्ष विचारों के धनी, आशावादी, दयालु, खरे, शक्तिशाली, ईमानदार, सक्रिय, उद्यमी, गतिशील, बहुमुखी प्रतिभाशील, चतुर, बल के द्वारा काबू में नहीं किए जा सकने वाले किन्तु अनुनय-विनय से बहकाए जा सकने वाले, विनम्र, उतावले, काल्पनिक विचारों वाले, बाहरी दिखावा व आडम्बर से घृणा

करने वाले, प्रेरक, प्रसन्नचित, परम्परावादी, चुगली या शिकायत न करने वाले, स्वच्छंदी तथा हृदय के सच्चे होते हैं|

मकर लग्न में जन्मफल - मकर लग्न में जन्म होने से आप दृढ़ इच्छा शक्ति सम्पन्न, सजग, कठिन परिश्रमी, महत्वाकांक्षी, उत्तम आंतरिक बल से युक्त, सहानुभूतिपूर्ण, उदारतापूर्ण और परोपकारी होंगे| साथ ही आप धैर्यवान्, अत्यंत व्यावहारिक, विवेकी, जीवनशक्ति से पूर्ण, उत्तम संगठन कौशल, जीवन के कष्टों का वीरता से सामना करने में निपुण, सचेत, बातूनी, उदार, दूरदर्शी, विश्वसनीय, दी गई सलाह को स्वीकार करने वाले, परिस्थितियों के अनुसार समायोजन करने के गुणों से आप्लावित होंगे|

कुम्भ लग्न में जन्मफल - कुम्भ लग्न में जन्म होने से आप स्वतंत्र विचार, वार्तालाप में कुशल, उदार व्यक्तित्व, अन्वेषक, दृढ़, कठिन परिश्रम एवं यात्रा के लिए सक्षम, जीवनसाथी के प्रति सत्यपूर्ण, निष्ठावान, तत्पर, मानवतावादी, मिलनसार, कामुक, शीघ्र ही किसी को भी मित्र बना लेने वाले, भाग्यवादी, वास्तविक चरित्र वाले व्यक्ति होंगे| किन्तु आप अपने प्रबल सिद्धान्तों के कारण बारम्बार भ्रम एवं शंकाओं के शिकार होते रहेंगे| आप जहां भी जाएँगे वहां अपनी अमिट छाप छोड़ेंगे| आप तार्किक, मित्रवत् स्वभाव वाले, आदर्शवादी, उन्नत विचारधारा वाले व्यक्ति होंगे|

मीन लग्न में जन्मफल - मीन लग्न में जन्म होने से आप दयालु, सहानुभूतिपूर्ण, ईश्वर से डरने वाले, धर्म पर आस्था रखने वाले, भावनात्मक एवं आत्मिक प्रकृति के होंगे | आप अतिथियों के सत्कार में कुशल, धार्मिक, कलात्मक, दूसरे के विचारों व अनुभूतियों से तथा आस-पास के वातावरण से आसानी से प्रभावित हो जाने वाले स्वभाव से युक्त होंगे | आप समायोजक/व्यवस्था योग्य, साहसी, ग्रहणशील, विद्वान, अन्तर्ज्ञानी, पति/पत्नी व भाग्य से संतुष्ट, आभारी, अन्धविश्वासी, कृपालु, सहयोगी, परम्परावादी, शर्मीले प्रकृति के रहेंगे | आपको परिवर्तन एवं यात्रा के प्रति विशेष आकर्षण का अनुभव रहेगा |

||शुभमस्तु||

अतीतानागते काले दानहोमजपादिकम् | ऊषरे वापितं बीजं तद्वद्भवति निष्फलम् ||

(ज्योतिर्निबन्ध)

उचित समय आने से पूर्व या बाद में किया गया दान, जप, होम आदि कर्म उसी प्रकार व्यर्थ हो जाते हैं, जैसे ऊसर भूमि में बोया गया बीज |

यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम् |
स्यात् प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या || (सिद्धान्त शिरोमणि)

यात्रा, विवाह, जन्म, उत्सव आदि में ग्रह के स्पष्ट रहने पर ही फलों में भी स्पष्टता आती है | अतएव आकाशचारी ग्रहों के दृग्गणितैक्य करने की स्फुटक्रिया को बताया जा रहा है |

पंद्रहवाँ दिन

ग्रह भाव फल

सूर्य का बारह भावों में फल

प्रथम भाव में सूर्य - जिसके जन्मसमय में सूर्य प्रथम भाव में हो वह स्त्रियों से और भाई- बंधुओं से संतप्त (दुःखी) रहता है | पित्त- वायु और रक्तविकार से शरीर में कष्ट होता है तथा विदेश में व्यापार से धन- धान्य की क्षति होती है |

द्वितीय भाव में सूर्य - सूर्य जन्म समय में धन भाव में हो तो जातक बहुत भाग्यशाली होता है, लेकिन बन्धु- बान्धवों के साथ कलह रहता है | ऐसा जातक सदा शुभकार्य में धनव्यय करता है, उसके घर में कई श्रेष्ठ वाहन सुशोभित होते रहते हैं, किन्तु वह अहङ्कारवश महान कार्य नहीं कर पाता है |

तृतीय भाव में सूर्य - सूर्य तृतीय भाव में हो तो जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है | वह बलवान, संग्राम में शत्रुओं को तत्क्षण जीतने वाला होता है | वह तीर्थयात्रा करने वाला, राजा का कृपापात्र और प्रतापी होता है, परन्तु सहोदर भाइयों से उसे सदा दुःख प्राप्त होता है |

चतुर्थ भाव में सूर्य - चतुर्थ भाव में सूर्य हो तो राजकुल से धन सम्मान की प्राप्ति होती है | परन्तु भाइयों से कलह और युद्ध में अपनी पराजय होती है तथा दुर्जनों के व्यवहार से सर्वदा उसका चित्त अशान्त रहता है |

पञ्चम भाव में सूर्य - सूर्य यदि पञ्चम भाव में हो तो जातक की प्रथम सन्तति नष्ट होती है | वह कुशाग्रबुद्धि, कपटी, मन्त्र-विद्या का प्रेमी, दूसरों को ठगने में तत्पर तथा हृदय सम्बन्धित रोग के कारण मृत्यु को प्राप्त होता है |

षष्ठ भाव में सूर्य - सूर्य षष्ठ भाव में हो तो वह प्रबल शत्रुओं का नाशक होता है, किन्तु वह राजदंड तथा मित्रों के कारण अपना धनव्यय करता रहता है | उसके मातृकुल में कष्ट होते हैं, उसे हाथी-बैल-घोड़े आदि चतुष्पद जीवों से तथा वाहनों से कष्ट प्राप्त होता है | परदेश यात्रा में भी उसका निम्नजातियों से बहुत विवाद होता रहता है |

सप्तम भाव में सूर्य - जिसके जन्मसमय में सप्तमभाव में सूर्य हो तो शीघ्र ही उसे स्त्रीकष्ट प्राप्त होता है | वह दुष्टों के कारण मानसिक चिंता से घिरा रहता है तथा अधिक परिश्रम करने पर भी पूर्ण धनलाभ प्राप्त नहीं कर पाता |

अष्टम भाव में सूर्य – सूर्य अष्टमभाव में हो तो जातक चन्द्रमा के सदृश कांतिवाला, लेकिन निष्क्रिय बुद्धिवाला और धनधान्य से क्षीण रहता है | वह गुदारोगी (पाइल्स आदि रोग), परस्त्री रमणकर्ता, विदेशवासी तथा लोगों से कलह करने वाला होता है |

नवम भाव में सूर्य – जिसके जन्मसमय में सूर्य नवम भावस्थ हो तो वह सब लोगों से पूजित होता है | सहोदर भाइयों तथा दुष्ट लोगों के कारण चिन्ताधिक्य से ग्रस्त तथा प्रवास के कारण उद्विग्न मन वाला होता है |

दशम भाव में सूर्य – जिसके जन्मसमय में सूर्य दशमभाव में हो तो उसके माता-पिता को कष्ट, परिश्रम से कार्यसिद्धि, राजा की कृपा से अतुल कीर्ति-लाभ तथा स्त्री-पुत्रादि के कारण अहर्निश कलुषित बुद्धि रहती है |

एकादश भाव में सूर्य – सूर्य आय भाव में हो तो जातक को राजा की कृपा से पूर्ण धनलाभ होता है, उसके प्रतापाग्नि से शत्रुओं का संहार होता है | उसे वाहनों का विशेष सुख मिलता है परन्तु अपने ही पुत्र से कष्ट प्राप्त करता है |

द्वादश भाव में सूर्य – जिसके व्ययभाव में सूर्य हो तो जातक के नेत्र में (विशेष कर बाएँ नेत्र में) कई प्रकार से कष्ट होते हैं | उसका मार्ग में अकस्मात् धनक्षय होता है | वह अधिक चञ्चलता के कारण अस्थिर स्वभाव वाला होता है और शरीर में अनेक कष्ट भी प्राप्त करता है | वह अपने चाचा वर्ग से द्रोह और संग्राम में विजय प्राप्त करता है |

चन्द्रमा का बारह भावों में फल

प्रथमभाव में चन्द्रमा - जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा मेष, वृष, या कर्क राशि का होकर लग्न में स्थित हो तो जातक बल तथा धन से परिपूर्ण होकर विपुल आनन्द को प्राप्त करता है | यदि मिथुन-सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक-धनु-मकर-कुम्भ-मीन राशि का होकर लग्न में स्थित हो तो वह रोगी-जड़-दरिद्र-बधिर और बलहीन होता है |

द्वितीय भाव में चन्द्रमा - चन्द्रमा धनभाव में हो तो धन की वृद्धि, कमलसमान नेत्रवाली स्त्री में प्रीति, धन-धान्य का सुख, परिजनों से स्वल्प प्रेम तथा उसके घर में प्रसन्नतापूर्वक लक्ष्मी स्वयमेव आकर निवास करती है |

तृतीय भाव में चन्द्रमा - जिसके जन्मसमय मे चन्द्रमा तृतीय भाव में हो तो उसे स्वपराक्रम से धनलाभ होता है | उत्तम स्त्री के साहचर्य से सुख, पराक्रम में वृद्धि, सहोदर भाइयों से पूर्णरूपेण सुख प्राप्त करता है वह तपस्वी (जप-तप में प्रवृत्ति) और संसार में विद्वानों द्वारा सम्मानित होता है |

चतुर्थ भाव में चन्द्रमा - बली चन्द्रमा चतुर्थ भाव में हो तो जातक भण्डार का स्वामी होता है | उसे बाल्यावस्था में किञ्चित् सुख तथा युवावस्था में अलङ्कार, स्त्री-पुत्र आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है |

पञ्चम भाव में चन्द्रमा - चन्द्रमा पञ्चम भाव में हो तो उसे अलङ्कारादि से युक्त स्त्री का सुख प्राप्त होता है | वह उच्चकोटि का विद्वान होता है | राज्यकुल से भूमि-वस्त्र-धन का लाभ और कुसीद (ब्याज) आदि से भी धन का लाभ होता है |

षष्ठ भाव में चन्द्रमा - जिसके जन्मसमय मे बली चन्द्रमा षष्ठ भाव में हो तो उसकी प्रतापाग्नि से शत्रुवर्ग शीघ्र ही भस्म हो जाते हैं | वह पृथ्वी पर बलवान शत्रुओं को भी जीत लेता है | उसे अल्प मातृसुख और रोग अधिक होता है |

सप्तम भाव में चन्द्रमा - सप्तमभाव में पूर्णबली चन्द्रमा हों तो उसे किसी स्त्री-कुल से अकस्मात् धनप्राप्ति होती है | वह प्रबलकामी सुंदर स्त्रियों के साथ रति-कला में प्रवीण, अत्यंत गंभीरध्वनि और स्थिरबुद्धि वाला होता है |

अष्टम भाव में चन्द्रमा - जिसके जन्मसमय मे अष्टमभाव मे बली चन्द्रमा हो तो उसे गम्भीर रोगों का भय तथा बलवान शत्रुओं से डर बना रहता है | उसके गृह में वैद्यों के कारण काढ़ा-मूंग की दाल का रस आदि बनता रहता है तथा बड़े- बड़े वैद्यों का जमघट लगा रहता है अर्थात् उसके घर में बीमारी बनी ही रहती है |

नवम भाव में चन्द्रमा - चन्द्रमा नवम भाव में हो तो उसके बलवान शत्रुगण तथा प्रबुद्धजन भी उससे आकर्षित होते हैं | उसे धनलाभ, पूर्णचन्द्र के सदृश सुन्दरमुख और चन्द्रमा के जैसा ही शारीरिक सुख प्राप्त होता है अर्थात जिस प्रकार चन्द्रमा क्षीण तथा पूर्ण होता रहता है उसी प्रकार उसका शारीरिक सुख घटता बढ़ता रहता है |

दशम भाव में चन्द्रमा - दशम भाव में चन्द्रमा हो तो उसे अपने बन्धु- बान्धवों से सुख, राजकुल से धनलाभ तथा नित्य नयी रानियों से रतिसुख प्राप्त होता है परन्तु उसे अपने ज्येष्ठ पुत्र का सुख प्राप्त नहीं होता है |

एकादश भाव में चन्द्रमा - जन्मसमय में बली चन्द्रमा ग्यारहवें भाव में हों तो वह राजा के धन का अधिकारी होता है तथा उसके घर में प्रमुदिता लक्ष्मी एवं सुन्दरी स्त्री निवास करती है | उसे चारों ओर से प्रतिष्ठा और राजा द्वारा प्रभुत्व की प्राप्ति होती है |

द्वादश भाव में चन्द्रमा - जिस मनुष्य के जन्म समय में चन्द्रमा व्यय भाव में हों तो उसे शत्रु का भय, चिन्ता, नेत्रों में अनेक प्रकार के रोग, यज्ञादि कार्यों में अधिक व्यय, पितृकुल-मातृकुल से परेशानी और रतिक्रिया में विषाद प्राप्त होता है |

मङ्गल का बारह भावों में फल

प्रथम भाव में मंगल - जिसके जन्म समय में मंगल लग्न में हो तो उसके ऊपर लौहास्त्र का प्रहार होता है तथा आग, तीर व लाठी से भी प्रहार का भय रहता है | स्त्रीनाश, सिर और आँखों में रोग होता है तथा वह सिंह के समान पराक्रमी होता है |

द्वितीय भाव में मंगल - मंगल यदि धन भाव में हो तो उसे अपने बन्धु-बांधवों से धन मिलने पर भी लाभ नहीं होता है ! क्योंकि जिस प्रकार राजपुरुषो द्वारा पहनाई गई मोतियों की माला को वानर साधारण सूत्र समझ कर अपने से तोड़कर फ़ेंक देता है उसी प्रकार वह व्यक्ति भी उस धन का दुरुपयोग करके नष्ट कर देता है |

तृतीय भाव में मंगल - जिसके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में हो वह पूर्ण बलवान होता है अपने बाहुबल से सर्वदा लक्ष्मी को घर में स्थिर किए रहता है | वह विधिपूर्वक तपस्या-भगवदनुष्ठानादि धार्मिक कार्य आदि भी करता है |

चतुर्थ भाव में मंगल - मंगल यदि बली होकर चतुर्थ भाव में हो जातक सुखहीन होता है, उसे मित्रवर्ग और अपने घर के लोगों से कभी सुख नहीं मिलता | उसे शत्रुओं का भय रहता है परन्तु राजा की कृपा से वस्त्रादि का लाभ भी होता है |

पञ्चम भाव में मंगल - पञ्चम भाव में मंगल हो तो उसकी जठराग्नि प्रबल होती है | उनकी संतान जीवित नहीं रहती, यदि जीती भी है तो रोगी रहती है | उसका हृदय सदा संतप्त और बुद्धि विस्तृत रहती है | ऐसा जातक धनवान नहीं हो पाता, निर्धन ही रहता है |

षष्ठ भाव में मंगल - मंगल यदि षष्ठभाव में हो तो उसके शत्रुगण भयभीत होकर संग्राम से ही भाग जाते है | उसकी बुद्धि विचारशील होती है, उसे मातृकुल का सुख नहीं होता और संचित धन नष्ट होता रहता है, परन्तु पूर्व धन के नष्ट होने के बाद शीघ्र ही पुनः अन्य प्रकार से धनलाभ भी हो जाता है |

सप्तम भाव में मंगल - सप्तम भाव में मंगल हो तो वह अत्यंत लघुता को प्राप्त करता है अर्थात् वह भाग्यहीन होता है | युद्ध में प्रबल शत्रुओं से पराजित होता है | वह भार्याहीन, परविषयासक्त और दुष्टबुद्धि होता है |अपने कार्य व्यापार आदि को छोड़कर वह परस्त्री के साथ रमण करता है |

अष्टम भाव में मंगल - मंगल यदि अष्टम भाव में हो तो उस मनुष्य के शुक्र-बुध-गुरु आदि अन्य शुभग्रह शुभस्थान में होकर भी शुभ फल नहीं दे पाते | उसके अपने बन्धु- बान्धव भी शत्रु हो जाते हैं और औषध आदि का सेवन करने पर भी उसे रोगों से कष्ट होता ही है |

नवम भाव में मंगल - नवम भाव में मंगल हो तो वह उग्र बुद्धि वाला, भाग्यवान तथा धनवान होता है, उसे ज्येष्ठशाला और अपने सहोदर भाई से सुख नहीं होता | उद्योग करने पर भी उसे उत्तम फल नहीं मिलता है |

दशम भाव में मंगल - दशम भाव में मंगल हो तो उसे निरंतर सब कार्यों में सफलता और भूमि-भृत्य-ग्राम और राजकुल से धन प्राप्त होता है | वह निरन्तर प्रगतिशील और सिंह के समान पराक्रमी होता है |

एकादश भाव में मंगल - मंगल यदि आय भाव में हो तो वह अपने पराक्रम से संग्राम में शत्रुओं को जीतता है, परन्तु अपने पुत्र के विषाद से विकल रहता है | धन-ग्राम-भूमि और सुन्दर (चंचल) घोड़ा आदि वाहनों से वह आनन्द प्राप्त करता है | दूसरों के साथ व्यापार (पार्टनरशिप) करने से उसे अत्यंत ही क्षति होती है |

द्वादश भाव में मंगल - व्यय भाव में मंगल हो तो उसका धन शीघ्र ही नष्ट हो जाता है | निरन्तर चुगली करने वालों के द्वारा उसे कलंकित होना पड़ता है | चोर और शस्त्र से भी उसे भय होता है तथा शत्रुओं से दुःख होता है |

बुध का बारह भावों में फल

बुध प्रथम भाव में - बुध यदि लग्न में हो तो जातक के सकल अरिष्टों का नाश होता है | वह सुवर्ण के सदृश कान्तिमान रूप वाला और आभूषणों से सुशोभित रहता है | संसार में लोगों के बीच उसकी अच्छी प्रतिष्ठा होती है |

बुध द्वितीय भाव में - बुध धनभाव में रहे तो वह मूर्ख होते हुए भी बुद्धिमान होता है | वह सभा में सदा बृहस्पति के सदृश सुशोभित होता है | वह प्रतापी, संगीत का ज्ञाता, भ्रमर के समान भोगी, उदार, पृथ्वी पर कल्पवृक्ष के समान और धनवान होता है |

बुध तृतीय भाव में - बुध तृतीय भाव में हो तो उसके व्यापार की चतुर्दिक वृद्धि होती है | वह धन लोलुपता से दुष्ट बुद्धियों के वश में रहता है | उसे अपने सहोदर बंधुवर्गों के अनुसरण से सुख होता है और अंत में वैराग्य के कारण उसकी विषय वासनाएं लुप्त हो जाती हैं |

बुध चतुर्थ भाव में - बुध यदि चतुर्थभाव में हो तो उसे संसार में श्रेष्ठ मनुष्यों से मैत्री होती है तथा राज दरबार में अधिकार प्राप्त होता है | परिवार के लोग उसके वचनों का समादर करते हैं तथा उसे अपने पैतृक धन से सुख प्राप्त नहीं होता |

बुध पञ्चम भाव में - बुध यदि पञ्चम भाव में हो तो प्रथमवय में उसकी स्त्री का प्रथम गर्भ नष्ट हो जाता है | धनोपार्जन में उसकी चतुरबुद्धि लगी रहती है तथा दुष्टों के सहवास के कारण उसके मुख में कपट वाणी भरी रहती है |

बुध षष्ठ भाव में- बुध यदि षष्ठ भाव में हो तो बन्धु-बान्धवों से विरोध, शत्रुओं का नाश और पेट में वायु विकार होता है | संन्यासी से उसे ज्ञान प्राप्त होता है, धार्मिक कार्यों में धन का व्यय तथा उत्तम रत्नादि के कार्य-व्यापार द्वारा धन लाभ होता है|

बुध सप्तम भाव में - बुध यदि सप्तम भाव में हो तो वह स्त्री संभोग में शिथिल होता है, परन्तु वह सुन्दरी, मृगनयनी स्त्री का स्वामी होता है | यदि बुध सप्तम भाव में सूर्य के साथ नहीं हो तो उसकी कान्ति मन को मोहित करने वाली सुवर्ण के समान देदीप्यमान होती है |

बुध अष्टम भाव में - बुध यदि आयु भाव में हो तो वह दीर्घजीवी तथा देश-विदेश में प्रसिद्ध होता है | वह राजकुल से धन-लाभ प्राप्त करता है और परस्त्रियों से सतत रतिक्रीड़ा में संलग्न रहता है |

बुध नवम भाव में - बुध यदि नवम भाव में हो तो वह विद्वान, धर्मात्मा, गङ्गा का भक्त, यज्ञकर्ता, सज्जनों का संग करने वाला, राजा से भी अधिक प्रतापी, दुर्जनों को सन्ताप देने वाला तथा पूर्ण धनवान होता है |

बुध दशम भाव में - बुध यदि दशम भाव में हो तो उसे पैतृकसंपत्ति का सुख, अनेक वाहनों का सुख तथा नौकर, रत्न तथा भवन आदि का पूर्णसुख प्राप्त होता है | वह उत्तम नीतिशास्त्र को जानने वाला और राजा के माध्यम से आजीविका प्राप्त करने वाला होता है |

बुध एकादश भाव में - बुध यदि आय भाव में हो तो उसे कन्यादान का सुख, धन की प्राप्ति और ऋण से मुक्ति प्राप्त होती है | उससे विप्रगण पूर्ण रूप से संतुष्ट रहते हैं | वह दिव्य स्वरूपवाला जातक शत्रुओं से भी धनलाभ लेने में कुशल होता है |

बुध द्वादश भाव में - व्यय भाव मे बुध रहे तो उसके घर में विद्वानों तथा ब्राह्मणों का आवागमन नहीं होता है| वह नास्तिक जैसे व्यवहार वाला जातक यज्ञ, तीर्थयात्रा आदि धार्मिक कार्यों में कभी धन खर्च नहीं करता और बलवान शत्रुगणों से युद्ध में पराजित होता है |

बृहस्पति का द्वादश भावफल

प्रथम भावफल - बृहस्पति यदि लग्न में हो तो उसे अपने गुणों से लोगों में गौरव प्राप्त होता है | वह सर्वदा सुखी, मनोहरस्वरूप, विविध प्रकार के भोगों में व्यय करने वाला तथा अंत में विष्णुलोक प्राप्त करने वाला होता है |

द्वितीय भावफल - धनभाव में बृहस्पति रहे तो उसे सरस काव्य के निर्माण में पटुता होती है | श्रेष्ठ राजा के दरबार में वह दण्ड देने का अधिकारी होता है | यत्न से धन का लाभ प्राप्त करने वाला और प्रवचनकर्ता होता है, परन्तु लोगों से उसे प्रतिष्ठा तथा धन की प्राप्ति नहीं होती है |

तृतीय भावफल - बृहस्पति यदि तृतीय भाव में रहे तो वह मित्रों के प्रति कृतघ्न और छोटे हृदयवाला होता है | वह सर्वदा अपने भाइयों का सुख और कल्याण करने वाला होता है परन्तु राजा के यहाँ प्रसिद्धि पाकर भी स्वयं सुख प्राप्त नहीं कर पाता |

चतुर्थ भावफल - बृहस्पति बली होकर चतुर्थ भाव में हो तो उसके द्वार पर सर्वदा ब्राह्मणों के मुख से वेदमंत्रों का उद्घोष और हाथी- घोड़ों का कलरव सुनाई पड़ता है | इस पृथ्वी पर प्रतिस्पर्धी (शत्रु) गण भी उसकी बहुत सेवा करते हैं | ऐसा जातक बहुत समृद्ध और धन-धान्य से परिपूर्ण होता है |

पञ्चम भावफल - बृहस्पति यदि पञ्चम भाव में रहे तो वह भोगी, सभा में तर्कसङ्गत और उचित बात बोलने वाला, धन-धान्य से परिपूर्ण, श्रेष्ठ महापुरुषों से पूजित और सदा योगाभ्यासी होता है | परन्तु यह जातक पुत्र और कन्या के सुख से विमुख ही रहता है |

षष्ठ भावफल - बृहस्पति यदि षष्ठ भाव में रहे तो वह युद्ध में शत्रुओं को जीतने वाला होता है, युद्ध में उसके सम्मुख बलवान शत्रु भी नहीं ठहरता | उसकी माता सदा रोगों

से दुखी रहती है और माता के बन्धुवर्ग भी कुशल नहीं रहते | किन्तु, उसे सुन्दर स्त्री से रति सुख अवश्य प्राप्त होता है |

सप्तम भावफल - बृहस्पति यदि सप्तम भाव में हो तो वह शीघ्र ही परमोच्च स्थान को प्राप्त करता है | उसे राजपरिवार से धन का लाभ होता है तथा उसकी बुद्धि बहुत ही फलदायी होती है | उसको स्त्री से बहुत रति सुख प्राप्त होता है तथा वह अधिक कामी होता है |

अष्टम भावफल - बृहस्पति यदि अष्टम भाव में हो तो वह पितृगृह में नहीं रहता, वह दीर्घायु होता है किन्तु सदा रोगी रहता है | कुल मर्यादा का सदा अवलम्बन करने वाला, स्थिरबुद्धि, सुन्दर शरीर वाला और देहांत होने पर विष्णु-सायुज्य प्राप्त करने वाला होता है |

नवम भावफल- बृहस्पति यदि नवम भाव में हो तो उसे पीले-लाल-हरे रङ्गों से चित्रित चौकोर मकान का सुख होता है, उसे सदा राजा की कृपा प्राप्त होती है | उसके बन्धु-बान्धव गण उसके समक्ष विनीत रहते हैं | वह बहुत यज्ञ करता है परन्तु उसमें मद अधिक और तपस्या कम होती है |

दशम भावफल - बृहस्पति यदि दशम भाव में हो तो वह बहुत धार्मिक और यज्ञकर्ता होता है | उसके प्रताप की वृद्धि होती है, परन्तु संतान सुख अल्प होता है | उसके द्वार पर ब्राह्मणगण अहर्निश वेदादिमन्त्रों का उच्चारण करते रहते हैं तथा उसकी कीर्ति विपुल होती है |

एकादश भावफल - बलवान बृहस्पति यदि एकादश भाव में हो तो सभा में धनवान तथा ब्राह्मणगण उसकी स्तुति करते रहते हैं | पृथ्वी पर उसके लिए कुछ भी अलभ्य नही रहता, संग्राम में उसके शत्रुगण शीघ्र ही विमुख होकर पलायित हो जाते हैं तथा उसके अपने पक्ष के लोग सहसा उससे प्रसन्न होते रहते हैं |

द्वादश भावफल - बृहस्पति यदि द्वादश भाव में हो तो उसे कल्याण और यश की प्राप्ति नहीं होती तथा वह बहुत अहंकारी होता है | उसके व्यर्थ-व्यय की अधिकता रहती है और सदा उसकी बुद्धि दूसरे के धन अपहरण हेतु व्यग्र रहती है | वह गुरुवर्ग तथा बन्धुवर्ग का उपकार नहीं करता है |

शुक्र का बारह भावों में फल

प्रथम भाव फल- शुक्र यदि प्रथम भाव में हो तो उसका स्वरूप अति सुन्दर होता है | वह सत्पुरुषों का संग करने वाला और प्रबल शत्रुओं का नाशक होता है | वह मृगनयनी स्त्रियों से नित्य रति-क्रीडा करता है | वह उत्तम कर्म करता है और उसे सदा कल्याण की प्राप्ति होती है |

द्वितीय भाव फल- शुक्र धनभाव में हो तो उसका मुख और शरीर सुन्दर होता है | वह चंचल नेत्रवाली स्त्रियों को प्रसन्न करने हेतु मधुर वाणी बोलता है तथा वस्त्र व धनादि से उसका भंडार परिपूर्ण रहता है |

तृतीय भाव फल- शुक्र यदि तृतीयभाव में हो तो उसे कमलमुखी सुन्दरी स्त्रियों से अत्यंत प्रेम होता है, पुत्र सुख से परिपूर्ण होने पर भी उसे काम-तृप्ति नही होती | वह कंजूस, कभी दान न करने वाला और पराक्रम से रहित होता है |

चतुर्थ भाव फल- शुक्र यदि चतुर्थभाव में हो तो वह महान और पूजनीय होता है | दूसरों के रुष्ट या तुष्ट रहने पर भी वह सदा एक समान ही व्यवहार करता है | उसे माता का तथा अनेकानेक वाहनों का प्रचुर सुख प्राप्त होता है |

पञ्चम भाव फल- शुक्र यदि पंचमभाव में हो तो उसे शीघ्र ही पुत्रप्राप्ति होती है तथा सहसा प्रचुरधन का लाभ भी होता है | उसे मन्त्रजप से सभी प्रकार की सिद्धियां शीघ्र ही प्राप्त होती हैं | उसके पास कविता करने की शक्ति होती है और वह सदा मिष्टान्न भोजन प्राप्त करता है |

षष्ठ भाव फल- जिसकी जन्मकुण्डली में शुक्र षष्ठ भाव में हो, कभी भी उसके शत्रु का नाश नही हो पाता | उसका खर्च निरन्तर बढ़ता रहता है तथा उसके यत्न से संपादित कार्य भी नष्ट हो जाते हैं | कुत्सित मन्त्रों के जप से उसकी कुलप्रतिभा का नाश होता है |

सप्तम भाव फल- जाया भाव मे शुक्र हो तो उसे स्त्री से पूर्ण सुख अर्थात सुन्दरियों के साथ रति की प्राप्ति होती है | संतान सुख भी उत्तम रहता है, किन्तु उसका दाम्पत्य जीवन अच्छा नहीं रहता | वह उत्तम कलाकार होता है लेकिन उसके कमर में वायुजन्य विषम कष्ट रहता है |

अष्टम भाव फल- आयु भाव में शुक्र हो तो वह कटु वचन बोलने वाला और चिरञ्जीवी होता है | उसे अनेक वाहनों और नौकरों का सुख प्राप्त होता है | उसे धनलाभ बहुत कठिनाई से होता है, उसकी कभी धनवृद्धि तो कभी ऋणवृद्धि हो जाती है | वह शत्रुओं से परेशान रहता है और बहुत कष्ट से शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर पाता है |

नवम भाव फल- धर्म भाव में शुक्र हो तो वह बहुत धनवान होता है, अपना धन लोगों को ब्याज में देकर सतत धनवृद्धि करता रहता है | वह बहुत धार्मिक होता है और यज्ञकर्मों में प्रवृत्त रहता है | उसे भ्रातृसुख और शारीरिक सुख भी पूर्ण रूप से प्राप्त होता है |

दशम भाव फल- शुक्र यदि दशम भाव में हो तो उसके कुल का नाश होता है | धन के खर्च में अनेक भ्रम उत्पन्न होते हैं, अर्थात् भ्रमवश 2 के स्थान पर 4 देते रहने या खर्च करते रहने से उसका धन नष्ट होता रहता है | अपने द्वार से ब्राह्मणों को अपमानित करके लौटाने के कारण तथा शत्रुओं से वाद विवाद में या उनको नीचा दिखाने में उसका ज्यादातर धन नष्ट होता रहता है |

एकादश भाव फल- शुक्र यदि एकादश भाव में हो तो वह अति सुशील और देदीप्यमान मुखमण्डल वाला होता है | वह सभा में वाक्पटु होता है और धनधान्य से परिपूर्ण रहता है | वह राजपद प्राप्त कर सकता है, उसे अतुल्य कीर्ति प्राप्त होती है, उसके शत्रु हमेशा उससे भयभीत रहते हैं और ईर्ष्या करते रहते हैं |

द्वादश भाव फल- शुक्र यदि द्वादश भाव में हो तो आमदनी अठन्नी और खर्चा रुपैया जैसी स्थिति रहती है | उसमें गुणों की कमी रहती है, वह हमेशा कामक्रीड़ा के प्रति आसक्त रहता है | वह अचानक या अकारण ही मित्रों से विरोध कर लेता है | इन सब के बाद भी वह अपने जीवन में कई श्रेष्ठ कर्म भी अवश्य करता है |

शनि का बारह भावों में फल

प्रथम भाव फल- शनि यदि लग्न में हो तो वह धन से सुशोभित, विवाद से विषादग्रस्त, बलवान शत्रुओं का भी नाश करने वाला और असंतोषी होता है | वह सदा व्यग्र, क्रोधी और शनि के समान कुदृष्टि वाला होता है | वह दूसरे के उत्कर्ष को सहन नहीं कर पाता और अनेकानेक व्याधियों से ग्रस्त रहता है |

द्वितीय भाव फल- शनि यदि धनभाव मे हो तो जातक कुल परिवार से त्यक्त होता है, परन्तु परदेश में जाकर सदा अभीष्ट वस्तुओं का लाभ प्राप्त करता है | साथ ही वह मित्रों के प्रति सदा दुर्वचन बोलने वाला और परम स्वार्थी होता है |

तृतीय भाव फल - शनि यदि तृतीयभाव मे हो तो उसे व्यापार से अधिक आनन्द नहीं होता अर्थात् व्यापार से पूर्ण धन नहीं मिलता है | उसके भाग्योदय में अनेक विघ्न-बाधाएँ उपस्थित होती हैं | वह परम दुष्ट स्वभाव का होता है और सम्मान करने वालों के प्रति भी दुष्टता ही करता है |

चतुर्थ भाव फल - शनि यदि चतुर्थभाव में हो तो उसके पूर्व के (संचित) धन और गृह नष्ट हो जाते हैं | उसे अपने बन्धु वर्गो से बराबर कलह, पशुओं से भय, अपने माता-पिता को कष्ट और वात रोग की पीडा प्राप्त होती है |

पञ्चम भाव फल - जन्म समय में यदि शनि यदि पञ्चम भाव में हो तो पुत्र सुख नहीं होता | साथ ही दूषित बुद्धि, धन की कमी, मित्रों से कलह, उदर रोग तथा नास्तिक विचार जैसे फल होते हैं |

षष्ठ भाव फल - शनि यदि षष्ठ भाव में हो तो वह निर्भय रहता है, उसे किसी का भय नहीं रहता | भयंकर युद्ध में भी उसके सामने कोई नहीं ठहर सकता | उसे अनेक संपत्तियों का लाभ मिलता है और उसकी कीर्ति सभी दिशाओं में फैलती है |

सप्तम भाव फल - शनि यदि सप्तम भाव में हो तो तो उसकी पत्नी रोग से पीड़ित रहती है, वह निर्बल और धनहीन रहता है | कार्यों के प्रति अनुत्साही, कृश (दुबला) देह, रोगों की अधिकता और चंचल बुद्धि होती है |

अष्टम भाव फल - शनि यदि अष्टम भाव में हो तो उसके धन का नाश होता है, उसे अकारण ही आत्मीय जनों का वियोग प्राप्त होता है | वह बहुत चतुर और कुटिल होता है तथा रोगों से परेशान रहता है, उसे बार बार कलंक का सामना करना पड़ता है |

नवम भाव फल - शनि यदि नवम भाव में हो तो जातक कर्मठ होता है लेकिन अपने मित्रों से दुखी भी रहता है | तीर्थयात्रा तथा दान के प्रति उसकी विशेष रूचि होती है | वह अत्यन्त स्वाभिमानी होता है, किसी पर आश्रित रहना या किसी की सेवा या किसी का उपकार लेना उसे कदापि प्रिय नहीं होता | उसका स्वभाव अत्यंत निर्मल होता है तथा वह वृद्धावस्था में वैरागी होकर योगमार्ग में प्रवृत्त होता है |

दशम भाव फल - शनि यदि दशम भाव में हो तो बाल्यावस्था में ही वह मातृ-पितृ सुख से हीन हो जाता है | वह अपने पराक्रम से ही सारे वैभव अर्जित करता है | उसे

अनेक प्रकार से कल्याण की प्राप्ति होती है | वह कोषाध्यक्ष या दण्डाधिकारी होता है, किन्तु उसे पूर्वार्जित धन प्राप्त नहीं होता |

एकादश भाव फल - शनि यदि एकादश भाव में हो तो जातक धनी, शान्त-चित्त और दीर्घायु होता है | वह प्रपंची और पराक्रमी होता है | वह निरोगी तो रहता है परन्तु उसे पुत्रविहीन ही रहना पड़ता है |

द्वादश भाव फल - शनि यदि द्वादश भाव में हो तो वह कातर, निर्लज्ज तथा शुभकार्यों के प्रति निष्ठुर प्रकृति वाला होता है | शनि यदि लग्नेश होकर व्यय भाव मे रहे तो वह परविषयगामी, शत्रुनाशक और कुबेर के समान धनी और यज्ञ करने वाला होता है |

राहु का बारह भावों में फल

प्रथम भाव फल - राहु यदि लग्न में हो तो वह दूसरे के प्रताप से ही सामर्थ्यवान तथा दूसरे के प्रभाव से ही अपने और दूसरे के धन का उपभोग करता रहता है | वह शत्रुरहित होकर अपने कार्य में तत्पर रहता है | दो स्त्री वाला होकर भी अनेकानेक सुन्दरी से आवृत्त होकर रहता है तथा वाद विवाद में निरन्तर व्यस्त रहता है |

द्वितीय भाव फल – राहु यदि धनभाव में रहे तो वह कुबेर के सदृश धनी होने पर भी निर्धन हो जाता है | बन्धु-बान्धवों से विरोध के कारण वह सदा मिथ्या भाषण करने वाला होता है | उसे शत्रु तथा शास्त्र से भी भय रहता है | वह निर्भीक बुद्धि वाला और पराधीन होता है तथा दुर्जनों के संग के कारण कठोर राजदंड पाता है |

तृतीय भाव फल - तृतीय भाव में राहु हो तो उसकी संसार में सबसे मित्रता रहती है और उसका भाग्य उत्तम होता है | वह संग्राम में प्रताप की प्रबलता से सिंह के समान (पराक्रमी) होता है परन्तु परोपकार करने में आलस्य करता है |

चतुर्थ भाव फल - चतुर्थ भाव में राहु हो तो उसकी माता को कष्ट होता है | शरीर में कदाचित् बाह्य प्रसन्नता भी हो सकती है किन्तु भीतर संताप ही होता है | राहु वृष-मिथुन-कन्या-कर्क अथवा मेष राशि का होकर चतुर्थ भाव में हो तो राजाओं के द्वारा उसका हित होता रहता है |

पञ्चम भाव फल - पञ्चम भाव में राहु हो तो जातक पुत्रवान् होता है परन्तु उसकी स्त्री सदा उदर-रोग से पीड़ित रहती है | उसके चिंता और सन्ताप में वृद्धि होती रहती है | बिना दैवकृपा के अनेक यत्न करने पर भी उसे अधिक लाभ नहीं होता |

षष्ठ भाव फल - षष्ठ भाव में राहु हो तो उसकी प्रतापाग्नि से उसके शत्रुगण नित्य ही जलते हैं | वह बल, ज्ञान और धन परिपूर्ण रहता है | उसे चाचा-मामा आदि रिश्तेदारों का सुख प्राप्त नहीं होता |

सप्तम भाव फल - सप्तम भाव में राहु हो तो उसकी स्त्री रोगिणी होती है, कदाचित् रोगवृद्धि से स्त्री की मृत्यु भी हो जाती है | उसे बन्धु-बान्धवों के वियोग और कलंक का बार बार सामना करना पड़ता है |

अष्टम भाव फल - राहु अष्टम भाव हो तो उसे सज्जन लोग स्वेच्छा से अकारण ही छोड़ देते हैं | कभी राजा से प्रचुर धनलाभ तो कभी अन्यान्य विधियों से धन का नाश होता रहता है | उसके पेट में वायुगोला रोग हो सकता है |

नवम भाव फल - यदि राहु नवम भाव में हो तो वह विद्वान, दयालु एवं संसार में अपने गुणों के कारण पूज्य होता है | वह दानी, पुण्य करने वाला, अपने परिजनों के बताये मार्ग पर चलने वाला, निर्मल बुद्धि से युक्त और प्रारम्भ किए कार्य को पूरा किए बिना न छोड़ने वाला होता है |

दशम भाव फल - यदि राहु दशम भाव में हो तो असावधानी के कारण उसके धन का अधिक व्यय होता है | उसे नीच और हीन जातियों से सुख होता है, वह सदा चिंतायुक्त रहता है तथा उसे अपने परिजनों एवं पिता का सुख नहीं प्राप्त होता | वह विधवा स्त्रियों और दुर्जनों से प्रेम करता है |

एकादश भाव फल - राहु यदि एकादश भाव में हो तो उसे म्लेच्छों से सदा धन की प्राप्ति होती रहती है, बुद्धिमान मनुष्यों से मैत्री होती है और उसे शीघ्र ही पुत्र की प्राप्ति होती है | उसकी दूसरे के धन अपहरण की लालसा और अहंकार युक्त बुद्धि होती है | वह नौकरों के साथ मित्रता करने वाला होता है |

द्वादश भाव फल - व्यय भाव में राहु हो तो जातक बहुत दीन-हीन होता है | पार्श्व भाग और हृदय में उसे वायुजनित शूल होता है | प्रयत्न करने पर भी उसके किसी भी कार्य के आदि में अनिष्ट फल तथा अंत में शुभफल होता है | उसे निरन्तर दुष्टों से परममैत्री और सज्जनों से परमशत्रुता होती है |

केतु का बारह भावों में फल

प्रथम भाव फल - केतु लग्नभाव में रहे तो उसे अपने बन्धुजनों से निरन्तर क्लेश और दुर्जनों से भय होता है | उसे मानसिक चिंता, विकलता, पेट में दर्द आदि कष्ट रहता है, उसकी स्त्री को भी कष्ट होता है |

द्वितीय भाव फल - केतु धनभाव में रहे तो उसकी बुद्धि सर्वदा व्यग्र रहती है, राजा से धन हानि होती है, बन्धु- बान्धवों के साथ कलह होता रहता है, सभा में रूक्षवाणी बोलता है , उसके अपने पक्ष वालों को चतुर्दिक पीड़ा होती है | धनभाव में केतु यदि अपनी राशि (मेष) का हो अथवा शुभग्रह की राशि का हो तो उसे विपुल सुख और धन की प्राप्ति होती है |

तृतीय भाव फल - तृतीय भाव में केतु हो तो सुख, धन, भोग, बल और तेज आदि की वृद्धि करता है | भीषण संग्राम में उसके शत्रुओं का नाश होता है | उसके दोनों बाहों में व्यथा, मन में भय और चिंता की व्याप्ति और मित्रों को कष्ट होता है |

चतुर्थ भाव फल - केतु चतुर्थ भाव में रहे तो उसे माता का पूर्णसुख नहीं होता है | मित्रों के द्वारा ही पैतृक-धन का नाश होता है | उसका निवास अपने घर में कभी नहीं होता, यदि वह घर में निवास करता है तो घर में कलह होता है | केतु यदि चतुर्थ भाव में होकर अपने उच्च (धनु) या स्वगृह में हो तो बन्धुओं का पूर्णसुख प्राप्त होता है |

पञ्चम भाव फल - केतु पुत्रभाव में रहे तो उसके सहोदर भाईयों को बहुधा शस्त्राघात से कष्ट सम्भव रहता है | अपनी खराब बुद्धि के कारण उसे अत्यधिक पीड़ा भी होती है | पुत्र के साथ निरन्तर कलह होने के कारण उसे पुत्र सुख भी नहीं होता |

षष्ठ भाव फल - केतु षष्ठभाव में रहे तो उसे मातृकुल से सम्मान नहीं मिलता, गाय-बैल-भैंस-घोड़ा आदि से बहुत सुख होता है | उसे आरोग्य, व्याधिनाश, धन का ह्रास और वाद विवाद में भयंकर प्रतिवादी का भी नाश आदि फल प्राप्त होते हैं |

सप्तम भाव फल - केतु सप्तमभाव में रहे तो उसे मार्ग में तथा जल में भी अत्यधिक भय होता है | सप्तम भाव का होकर यदि वृश्चिक राशि में स्थित हो, तो गया हुआ धन भी स्थिर रहता है | स्त्री को कष्ट और खर्च में वृद्धि होती है किन्तु धन की समृद्धि के कारण सुख अवश्य प्राप्त होता है |

अष्टम भाव फल - केतु अष्टम भाव में रहे तो उसे सर्वदा गुदा में अर्श (बवासीर) आदि रोगजनित कष्ट होता है | पशुओं से भय तथा धन के आगमन से रुकावट होती है | केतु यदि अष्टम भाव का होकर मिथुन-कन्या-वृश्चिक-मेष-वृष इनमें से किसी एक राशि में रहे तो निश्चय ही उसे राजकुल से धन प्राप्त होता है |

नवम भाव फल - केतु नवम भाव में रहे तो जातक को पुत्र तथा धन का लाभ होता है | उसे सदा नीच जातियों से लाभ मिलता है, उसके सभी कष्टों का नाश होता है |

उसे तपश्चर्या तथा दान शास्त्र विधि से न करने के कारण उपहास का पात्र बनना पड़ता है |

दशम भाव फल - केतु दशमभाव में रहे तो उसके पिता को बराबर कष्ट होता है अथवा वह स्वयं कुरूप होता है, निश्चित ही उसका भाग्य खराब होता है | घोड़ा-हाथी-गाय-बैल आदि से उसे भय होता है, परन्तु यदि केतु दशम भाव का होकर वृश्चिक-वृष–कन्या- मेष इनमें से किसी भी राशि का हो तो उसके शत्रुओं का नाश होता है |

एकादश भाव फल - केतु आयभाव में रहे तो वह पूर्ण भाग्यवान होता है | उत्तम कान्ति, निर्मल बुद्धि और उत्तम वस्त्र (धारण करने) वाला होता है | उसे गुदा में निरन्तर कष्ट होता है | उसे विविध प्रकार से धन का लाभ होता रहता है, परन्तु सन्तान सुख हेतु वह अत्यन्त विकल रहता है |

द्वादश भाव फल - केतु व्ययभाव में रहे तो उसे गुदा, नेत्र और नाभि के निकट में पीड़ा होती है तथा ननिहाल पक्ष से सुख नहीं मिलता | वह वाद विवाद में सर्वदा विजयी होता है | उसका वैभव राजा के समान होता है और वह संसार के सभी सुख-संसाधन प्राप्त करता है |

||शुभमस्तु||

यद्यद्भावगतौ वापि यद्यद्भावेश संयुतौ | तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदिशेताम् तमोग्रहौ ||
(लघुपाराशरी)

राहु एवं केतु जिस किसी भी भाव में स्थित हों अथवा जिन भावेशों के साथ युति करते हैं, उन भाव एवं भावेशों के फलों को प्रबलता से प्रदान करते हैं |

केन्द्रत्रिकोणनेतारौ दोषयुक्तावपि स्वयम् | सम्बन्धमात्राद्बलिनौ भवेतां योगकारकौ ||
(लघुपाराशरी)

केन्द्र और त्रिकोण भावों के स्वामियों में परस्पर सम्बन्ध मात्र हो जाए तो शुभ फल प्रदान करने का विशेष सामर्थ्य प्राप्त हो जाता है, भले ही उनमें तृतीय, षष्ठ, एकादशादि भावों के अधिपति होने का अथवा नैसर्गिक पापग्रह होने का दोष व्याप्त हो |

सोलहवाँ दिन

भावेश भावफल

लग्नेश भावफल

1. यदि लग्नेश लग्न में ही स्थित हो तो मनुष्य निरोग, स्वस्थ, दीर्घायु, अत्यधिक बलवान् एवं भूमि का लाभ प्राप्त करनेवाला होता है |
2. यदि लग्नेश द्वितीय भाव में स्थित हो तो मनुष्य धनवान्, लम्बी आयु वाला, कुछ मोटापा-युक्त शरीर वाला, अपने स्थान पर मुख्यत्व पानेवाला, राजतुल्य भाग्य वाला, अच्छे कार्य करनेवाला होता है |
3. यदि लग्नेश जन्म समय में तृतीय भाव में हो तो जातक अच्छे बन्धु-बान्धवों वाला, मित्रों से सुशोभित, धर्माचरण में रति रखनेवाला, दानी, शूरवीर और बलवान् होता है |
4. यदि लग्नेश जन्म समय में चतुर्थ भाव में स्थित हो तो मनुष्य राजा का प्रिय-पात्र, दीर्घायु, लालची मित्रों वाला, माता-पिता का भक्त और अधिक भोजन करनेवाला होता है |
5. यदि जन्म समय मे लग्नेश पंचम भाव में गया हो तो मनुष्य सौभाग्यशाली, सुन्दर व्यक्तित्व वाला, दान-प्रवृत्ति वाला, राजावत् रहनेवाला, प्रसिद्ध, लम्बी आयु भोगनेवाला, अच्छी आवाज वाला व गानप्रिय अथवा कीर्तियुक्त अच्छे कार्य करनेवाला होता है |
6. यदि लग्नेश षष्ठ भाव में गया हो तो मनुष्य रोगरहित जीवन व्यतीत करनेवाला, अत्यधिक नम्रता वाला, बलवान्, कंजूस वृत्ति वाला, धनवान्, शत्रुनाशक, अच्छे कार्य करनेवाला और लोगों के संपर्क में रहनेवाला होता है |
7. यदि जन्म समय में लग्नेश सप्तम भाव में स्थित हो तो मनुष्य तेजस्वी, शीलवान्, सुन्दर व सुशील तथा तेजस्विनी पत्नी का पति होता है |
8. यदि जन्म समय में लग्नेश अष्टम भाव में हो तो मनुष्य कंजूस मन वाला, धन संचय करनेवाला तथा दीर्घायु होता है | लेकिन यदि लग्नेश क्रूर ग्रह हो तो जातक कड़वा बोलनेवाला और मूर्ख होता है |
9. यदि जन्म समय में लग्नेश नवम भाव में स्थित हो तो मनुष्य श्रेष्ठ व मान्य बन्धु-बान्धवों वाला, अच्छे कार्य करनेवाला, शक्तिसंपन्न, सन्तुलित शरीर व मन वाला, सुशील आचरण करनेवाला, अपने अच्छे कामों से ख्याति पानेवाला तथा तेजस्वी होता है |
10. यदि लग्नेश दशम भाव में स्थित हो तो मनुष्य राजपक्ष से लाभ कमानेवाला, विद्वान्, सुशील, गुरु व माता का भक्त तथा राज्य व प्रसिद्धि पानेवाला होता है |
11. यदि लग्नेश एकादश भाव में स्थित हो तो मनुष्य दीर्घायु, पुत्रवान्, प्रसिद्धि पानेवाला, तेजस्वी, बलवान् तथा मनुष्यों को कष्ट देनेवाला होता है |
12. यदि लग्नेश द्वादश भाव में स्थित हो तो मनुष्य कड़वा बोलनेवाला, बहस करनेवाला, घमण्डी, अपने निसर्ग सम्बन्धियों का सहयोगी, विदेश में (जन्म स्थान से दूर) निवास करनेवाला, देकर खानेवाला अर्थात मिल-जुलकर सुख भोगनेवाला होता है |

धनेश भावफल

1. यदि द्वितीयेश लग्न में हो तो मनुष्य उद्योग व परिश्रम करनेवाला, अच्छे कार्य करनेवाला, धनवान्, धनी-मानी लोगों में प्रसिद्ध तथा अत्यधिक सुख भोगनेवाला होता है |
2. यदि धनेश द्वितीय भाव में ही स्थित हो तो मनुष्य अत्यधिक धनी, अधिक सुख भोगनेवाला, अधिक लाभ कमाने का लालची लेकिन कार्य कुशल होता है |
3. यदि द्वितीयेश तृतीय भाव में हो तो मनुष्य काम में परिश्रम करनेवाला, कलात्मक दृष्टि से रहित, अपशब्द बोलनेवाला, चोर, चंचल मन वाला तथा कलाहीन होता है |
4. यदि धनेश चतुर्थ भाव में स्थित हो तो मनुष्य पिता से लाभ पानेवाला, सबका भला चाहनेवाला एवं भला करनेवाला तथा दीर्घायु होता है | लेकिन क्रूर ग्रह के धनेश होने पर जातक माता के लिए अत्यधिक कष्टकारक होता है |
5. यदि धनेश पंचम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य कंजूस वृति वाला, दुःखों से संत्रस्त, धर्माचरण करनेवाला, अत्यधिक बल व साहस वाला तथा कठोर हृदय वाला होता है |
6. यदि धनेश षष्ठ स्थान में स्थित हो तो मनुष्य धन-संचय करनेवाला, शत्रुनाशक, दुःख पानेवाला और धनहीन होता है |
7. यदि धनेश सप्तम भाव में स्थित हो तो मनुष्य श्रेष्ठ, धन-भोग प्रदान करनेवाली पत्नी का पति होता है | यदि धनेश क्रूर ग्रह हो तो मनुष्य की पत्नी सन्तानोत्पादन में असमर्थ होती है |
8. यदि धनेश अष्टम भाव में स्थित हो तो मनुष्य आत्मघात की प्रवृत्ति वाला अथवा अपने विनाश का स्वयं हेतु होता है | वह प्राप्त फल का भोग करनेवाला, दूसरों को कष्ट देनेवाला तथा भाग्यवादी होता है |
9. यदि शुभ-ग्रह धनेश होकर नवम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य दान व त्याग आदि गुणों से संसार में प्रसिद्ध होता है | यदि क्रूर ग्रह धनेश होकर नवम भाव में हो तो मनुष्य दरिद्र, भिक्षुक तुल्य तथा कपटाचरण करनेवाला होता है |
10. यदि शुभग्रह धनेश होकर दशम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य राजपक्ष से मान्यता पानेवाला और राजा से धन पानेवाला होता है | यदि क्रूरग्रह धनेश होकर दशम भाव में हो तो मनुष्य माता-पिता का पालन करनेवाला होता है |
11. यदि धनेश एकादश स्थान में हो तो मनुष्य व्यवहारकुशल, धन-धान्य से परिपूर्ण, प्रसिद्ध और बहुत से लोगों का पालन करनेवाला होता है |
12. यदि धनेश द्वादश भाव में स्थित हो तो मनुष्य विदेश में रहनेवाला, दुष्कर्म करनेवाला व भिक्षुक-वृति वाला होता है | यदि शुभ ग्रह धनेश हो तो मनुष्य धनसंग्रह करनेवाला होता है |

तृतीयेश भावफल

1. यदि तृतीयेश लग्न में गया हो तो मनुष्य विवाद करने वाला, स्त्री-लोलुप, अपने लोगों का विरोधी व फूट डालने वाला, कूट-कार्य करने वाला और बीमार होता है |
2. यदि तृतीयेश द्वितीय भाव में हो तो मनुष्य भिक्षुकवृत्ति से जीनेवाला, निर्धन, कम आयु वाला तथा बंधुओं का विरोधी होता है | यदि तृतीयेश शुभ ग्रह हो तो मनुष्य सत्ता–सुख भोगता है |
3. यदि तृतीयेश तृतीय में ही हो तो मनुष्य भाइयों से स्नेह रखनेवाला, अपने मित्रों को चाहने वाला, सज्जन, देवताओं एवं गुरुजनों की पूजा करने वाला तथा राजा से लाभ पानेवाला होता है |
4. यदि तृतीयेश चतुर्थ भाव में हो तो मनुष्य अपने पिता, बन्धु आदि को सुख देनेवाला व उनकी उन्नति करनेवाला, माता के साथ शत्रुता रखनेवाला तथा पैतृक सम्पति पाने वाला होता है |
5. यदि तृतीयेश पंचम भाव में हो तो जातक अच्छे बन्धु–बान्धवों वाला होता है, वह भाईयों व बेटों द्वारा पाला जानेवाला, दीर्घायु व परोपकारी होता है |
6. यदि तृतीयेश षष्ठ भाव में गया हो तो मनुष्य बंधुओं का विरोध करनेवाला, नेत्रों में किसी रोग से युक्त, कभी जमीन जायदाद पानेवाला एवं कभी–कभी रोग के भय से ग्रस्त होता है |
7. यदि तृतीयेश सप्तम भाव में गया हो तो उस मनुष्य की पत्नी सुन्दर, सौभाग्यवती व सच्चरित्रा होती है | यदि तृतीयेश क्रूर ग्रह हो तो मनुष्य की पत्नी अपने देवर के साथ सम्बन्ध रखती है |
8. यदि तृतीयेश अष्टम भाव में हो तो मनुष्य रोगग्रस्त, भाईयों से रहित अथवा अल्पजीवी भाइयों वाला होता है | यदि तृतीयेश क्रूर ग्रह हो और आठ वर्ष तक बालक जीवित रहे तो भुजा में विकार उत्पन्न होता है |
9. यदि क्रूर तृतीयेश नवम भाव में हो तो मनुष्य अपने बंधुओं से रहित होता है | यदि तृतीयेश शुभ ग्रह हो तो मनुष्य अच्छे बन्धु–बांधव वाला, सत्कार्य करने वाला, भाइयों का सहायक होता है |
10. यदि तृतीयेश दशम भाव में हो तो मनुष्य राजपूज्य, माता तथा बंधुओं से परित्यक्त व अपने बंधुओं में श्रेष्ठ होता है |
11. यदि तृतीयेश एकादश भाव में स्थित हो तो मनुष्य अच्छे बंधुओं वाला, सत्कार्य से लाभ कमाने वाला, प्रसिद्ध, भोगवान-अर्थवान और अपने बंधुओं की अपेक्षा अधिक प्रसिद्ध व सुखी होता है |
12. यदि तृतीयेश द्वादश भाव में गया हो तो मनुष्य मित्रों का विरोधी, अपने बंधुओं को संतप्त करने वाला, भाई–बंधुओं से दूर रहने वाला और विदेशवासी होता है |

चतुर्थेश भावफल

1. यदि चतुर्थेश लग्न में स्थित हो तो जातक का अपने पिता से एवं पिता का जातक से विशेष लगाव होता है | पितृपक्ष के लोग उससे ईर्ष्या रखते हैं तथा वह अपने पिता के नाम से जाना जाता है |

2. यदि क्रूर चतुर्थेश द्वितीय भाव में हो तो मनुष्य पिता की सेवा करने वाला और प्रसिद्ध होता है और ऐसे जातक का पिता भी इसकी लक्ष्मी की रक्षा करता है |
3. यदि चतुर्थेश तृतीय भाव में हो तो मनुष्य प्रसिद्ध व्यक्ति का पुत्र, माता व पिता को अलग करनेवाला, पिता के साथ विवाद करनेवाला और अपने पिता के बन्धुओं का नाश करनेवाला होता है |
4. यदि चतुर्थेश चतुर्थ में ही स्थित हो तो मनुष्य पिता की आज्ञा का पालन करनेवाला, सदैव प्रसन्न रहनेवाला, प्रसिद्ध, अपने पिता को लाभ पहुँचाने वाला, सत्कार्य करनेवाला, सुखी व धनपति होता है |
5. यदि चतुर्थेश पंचम भाव में हो तो मनुष्य का पिता लाभवान् एवं दीर्घायु होता है| साथ ही, जातक स्वयं भी संसार में प्रसिद्ध, अच्छे योग्य पुत्र वाला और अपने पुत्रों को विशेष सुख देने वाला होता है |
6. यदि क्रूर चतुर्थेश षष्ठ भाव में हो तो मनुष्य पिता के धन का नाश करने वाला और पिता से शत्रुता करनेवाला होता है | यदि चतुर्थेश शुभ ग्रह हो तो मनुष्य पुत्रवान् व धन-संग्रहकर्ता होता है |
7. यदि क्रूर चतुर्थेश सप्तम भाव में हो तो मनुष्य अपनी पत्नी का पालन नहीं करता है | यदि सौम्य चतुर्थेश सप्तम में हो तो मनुष्य अपनी पत्नी की समुचित देखभाल करता है | यदि मंगल व शुक्र चतुर्थेश होकर सप्तमस्थ हो तो मनुष्य की पत्नी चरित्रहीन होती है |
8. यदि चतुर्थेश अष्टम भाव में स्थित हो तो मनुष्य रोगी व दरिद्र होता है | ऐसा व्यक्ति दुष्कर्म करनेवाला अथवा क्रोधप्रिय होता है |
9. यदि चतुर्थेश नवम भाव में गया हो तो मनुष्य अपने पिता से कम मोह रखनेवाला, विविध विद्या निष्णात, पिता के धर्म का अर्थात् पैतृक धर्म का पालन करनेवाला, पिता की सहायता के बिना अपने बाहुबल से सफलता पानेवाला होता है |
10. यदि पापी चतुर्थेश दशम भाव में हो तो मनुष्य का पिता जातक व उसकी माता को त्याग देता है | उसका पिता दूसरी स्त्री से सम्बन्ध रखता है, लेकिन शुभ चतुर्थेश दशमस्थ हो तो अन्य स्त्री के प्रति सेवाभावी होता है |
11. यदि पापी चतुर्थेश एकादश भाव में हो तो मनुष्य सुकर्म करनेवाला, अपने माता-पिता का पालन पोषण करनेवाला, लम्बी आयु भोगनेवाला और पिता का भक्त होता है | यदि चतुर्थेश शुभग्रह हो तो मनुष्य राजा होता है |
12. यदि चतुर्थेश द्वादश भाव में हो तो जातक का पिता विदेशवासी होता है अथवा जल्दी ही मृत्यु को प्राप्त करता है | यदि चतुर्थेश पापी हो तो पिता के अतिरिक्त अन्य पुरुष से जातक का जन्म होता है | इसे परजात योग कहते हैं |

पंचमेश भावफल

1. यदि पंचमेश लग्न में हो तो मनुष्य प्रसिद्धि पानेवाला, अधिक पुत्रों वाला, शास्त्रवेत्ता, गीत-संगीत का जानकार और सत्कार्य करनेवाला होता है |
2. यदि क्रूर पंचमेश द्वितीय भाव में हो तो मनुष्य धनरहित होता है | यदि शुभ पंचमेश द्वितीय भाव में हो तो मनुष्य गीत-संगीत का विशेषज्ञ, कष्ट से धन

का सुख भोगनेवाला और अपने स्थान पर विख्यात अथवा प्रभूत अचल सम्पति का स्वामी होता है |

3. यदि पंचमेश तृतीय भाव में गया हो तो मनुष्य मधुर भाषण करनेवाला और अपने लोगों में मान्य होता है | उसके पुत्र भी अपने बंधुओं का पालन-पोषण व सहायता करनेवाले होते हैं |
4. यदि पंचमेश चतुर्थ भाव में हो तो मनुष्य अपने पैतृक व्यवसाय में रत तथा पिता से भरपूर सहायता पानेवाला होता है | यदि पंचमेश क्रूर ग्रह हो तो जातक का अपने पिता से विरोध रहता है |
5. यदि पंचमेश पंचम भाव में ही हो तो मनुष्य बुद्धिमान, बोलने में कुशल, मानी स्वभाव वाला, पुत्रयुक्त, श्रेष्ठतायुक्त व विख्यात होता है |
6. यदि क्रूर पंचमेश षष्ठ भाव में गया हो तो मनुष्य हीन स्तर वाला, शत्रुओं से परेशान, रोगी और धनरहित होता है | यदि शुभ पंचमेश हो तो उक्त फल नहीं होता है, ऐसा समझना चाहिए |
7. यदि पंचमेश सप्तम भाव में स्थित हो तो मनुष्य की पत्नी सुन्दर पुत्रों वाली, सौभाग्यवती, देवताओं एवं गुरुजनों की भक्त, प्रियभाषण करनेवाली और सुशीला होती है |
8. यदि पंचमेश अष्टम भाव में गया हो तो मनुष्य अभद्र भाषा का प्रयोग करनेवाला, स्त्रियों के प्रति बहुरूपिया एवं मृत या विकल भाइयों एवं पुत्रों वाला होता है |
9. यदि पंचमेश नवम भाव में गया हो तो मनुष्य विद्यावान्, कवि, गीत-संगीतवेत्ता, राजपूज्य, सुन्दर एवं नाटकादि का रसिक होता है |
10. यदि पंचमेश दशम भाव में गया हो तो मनुष्य राजतुल्य स्तर वाला, राजा से लाभ कमाने वाला, सत्कार्य करने वाला, श्रेष्ठ और माता के लिए बहुत से सुख साधन जुटाने वाला होता है |
11. यदि पंचमेश एकादश भाव में गया हो तो मनुष्य योग्य पुत्रों वाला, शूरवीर, पुण्यों का फल पाने वाला, गीतादि विद्या का रसिक और राजा से लाभ पाने वाला होता है |
12. यदि क्रूर पंचमेश द्वादश भाव में गया हो तो मनुष्य पुत्ररहित होता है शुभ ग्रह होने पर सुयोग्य पुत्र वाला होता है | पुत्र के लिए कष्टकारक और विदेशगमन का लोलुप होता है |

षष्ठेश भावफल

1. यदि षष्ठेश लग्न भाव में स्थित हो तो मनुष्य निरोग, बलवान्, अपने कुटुम्ब को कष्ट देने वाला, बहुत से लोगों की सहायता व समर्थन पाने वाला, शत्रुनाशक और पवित्र वचन बोलने वाला होता है |
2. यदि षष्ठेश द्वितीय भाव में हो तो मनुष्य दुष्ट स्वभाव वाला, चतुर, संग्रह न करने वाला, अपने स्थान पर मान्य और प्रसिद्ध होता है | यदि षष्ठेश क्रूर ग्रह हो तो जातक बीमार व धनहीन होता है |
3. यदि क्रूर षष्ठेश तृतीय भाव में गया हो तो मनुष्य सबको कष्ट देने वाला, पिता को भी कष्ट देनेवाला एवं युद्धादि में मृत्यु को प्राप्त करनेवाला होता है |

4. यदि षष्ठेश चतुर्थ भाव में हो तो मनुष्य अपने पिता से वैर भाव रखता है | उसका पिता भी रोगी होता है | जातक स्वयं पुत्रहीन एवं देर से लक्ष्मी को पाता है |
5. यदि क्रूर षष्ठेश पञ्चम भाव में गया हो तो मनुष्य व उसके पिता की शत्रुता होती है | जातक की मृत्यु भी उक्त वैर के कारण ही होती है |
6. यदि षष्ठेश षष्ठ भाव में ही हो तो मनुष्य निरोग, शत्रुता रखने वाला, सुखी, कंजूस और अनुचित स्थान पर रहने वाला होता है |
7. यदि षष्ठेश सप्तम भाव में हो तो मनुष्य की पत्नी विरोध करने वाली, भयंकर, झगडालू एवं संताप देने वाली होती है | यदि शुभ षष्ठेश सप्तम में हो तो मनुष्य की पत्नी वन्ध्या या नष्टगर्भा होती है |
8. यदि षष्ठेश अष्टम स्थान में हो तो मनुष्य को निम्न प्रकार से मृत्यु-भय होता है –
    - शनि हो तो संग्रहणी
    - मंगल से सर्प वशात्
    - बुध से विषपान द्वारा
    - चन्द्रमा से अचानक मृत्यु
    - सूर्य से सिंह द्वारा
    - गुरु हो तो राजकोप से, एवं
    - शुक्र हो तो अपने मान व धन की हानि से मृत्यु भय होता है |
9. यदि क्रूर षष्ठेश नवम भाव में हो तो मनुष्य लंगड़ा होता है | वह बन्धुओं का विरोध करने वाला, शास्त्रविरोधी एवं याचक होता है |
10. यदि षष्ठेश दशम भाव में हो तो मनुष्य दुष्ट एवं माता का शत्रु होता है | यदि शुभ ग्रह हो तो मनुष्य धर्म और पुत्र का पालन करनेवाला एवं माता के दोषों के कारण क्रूर एवं कठोर तथा वैर भाव से युक्त होता है |
11. यदि क्रूर षष्ठेश एकादश भाव में हो तो मनुष्य की मृत्यु शत्रुओं द्वारा होती है | चोरों से धन-हानि एवं चौपाये पशुओं या वस्तुओं से लाभ होता है |
12. यदि षष्ठेश द्वादश भाव में हो तो मनुष्य के चतुष्पदों व धन-धान्य का नाश होता है | उसकी लक्ष्मी चंचला होती है एवं मनुष्य भाग्यवादी होता है |

सप्तमेश भावफल

1. यदि सप्तमेश लग्न में गया हो तो मनुष्य शोकरहित, एक पत्नी वाला, भोग भोगनेवाला, रूपवान् एवं स्त्री द्वारा नष्ट धन वाला होता है |
2. यदि सप्तमेश द्वितीय भाव में गया हो तो मनुष्य की पत्नी दुष्ट पुत्रों द्वारा परित्यक्त, धन कमानेवाली एवं पुरुष को मोहित करने मे सक्षम होती है |
3. यदि सप्तमेश तृतीय भाव में गया हो तो मनुष्य आत्मबल युक्त, बंधुओं से स्नेह करनेवाला और दुखी होता है | उसकी पत्नी सुन्दर किन्तु पतिव्रता नहीं होती है | यदि सप्तमेश क्रूर ग्रह हो तो पत्नी अपने पति को छोड़कर कर चली जाती है |
4. यदि सप्तमेश चतुर्थ भाव में हो तो मनुष्य चंचल मन वाला, पिता से शत्रुता रखनेवाला और स्नेह रहित होता है | ऐसे जातक का पिता भी दुष्ट वचन

बोलनेवाला होता है | वह जातक की पत्नी का पालन करता है, अर्थात जातक विधवा पत्नी को छोड़ कर चला जाता है |

5. यदि सप्तमेश पंचम भाव में हो तो मनुष्य सौभाग्यशाली, पुत्रवान्, अपनी पत्नी से दुष्ट व्यवहार करने वाला होता है एवं उसकी पत्नी का पालन-पोषण उसका पुत्र करता है, अर्थात पुत्र के नवयौवन में ही जातक का देहान्त हो जाता है |
6. यदि सप्तमेश षष्ठ भाव में हो तो मनुष्य की पत्नी रोगिणी होती है | वह अपनी पत्नी से शत्रुता रखता है | स्त्री के अत्यंत प्रसंग से वह कमजोर हो जाता है एवं सप्तमेश क्रूर ग्रह हो तो मरण कारक होता है |
7. यदि सप्तमेश सप्तम भाव में ही स्थित हो तो मनुष्य बहुत लम्बी आयु वाला, प्रेममय स्वभाव वाला, निर्मल चरित्र वाला और तेजस्वी होता है |
8. यदि सप्तमेश अष्टम में हो तो मनुष्य का विवाह बाधित होता है | वह वेश्याओं में अनुरक्त रहनेवाला, देवताओं व ब्राह्मणों के प्रति भक्ति रखनेवाला और स्त्री की सेवा करनेवाला होता है |
9. यदि सप्तमेश नवम भाव में हो तो मनुष्य तेजस्वी, शीलवान् और प्रियस्वभाव वाला होता है | यदि सप्तमेश क्रूर ग्रह हो तो नपुंसकवत् दिखनेवाला होता है | यदि सप्तमेश को नवम में लग्नेश देखता हो तो मनुष्य तपस्वी होता है |
10. यदि सप्तमेश दशम भाव में हो तो राजा का अपराधी, लम्पट, दुष्टवचन भाषक, कूट-कपट में निपुण होता है | यदि सप्तमेश क्रूर ग्रह हो तो मनुष्य दुखी एवं अपनी सास के वश में रहनेवाला होता है |
11. यदि सप्तमेश एकादश भाव में हो तो मनुष्य की पत्नी श्रद्धालु, रूपवती, शीलवती, विवाह द्वारा प्राप्त की हुई, लेकिन प्रसव के समय शरीर नाश को प्राप्त करनेवाली होती है |
12. यदि सप्तमेश द्वादश भाव में हो तो मनुष्य की पत्नी घरेलू बन्धनों में न बंधी हुई, नास्तिक, चंचल, दुष्ट स्वभाव वाली एवं बीमार होती है |

अष्टमेश भावफल

1. यदि अष्टमेश लग्न में गया हो तो मनुष्य अत्यधिक विघ्न झेलनेवाला, लम्बे रोग से पीडित, खोई हुई वस्तु का पश्चाताप करते रहनेवाला और राजा के आदेश से धन पाने वाला (राज कर्मचारी) होता है |
2. यदि क्रूर अष्टमेश द्वितीय भाव में हो तो शुभफल मिलते है लेकिन राजपक्ष से मृत्यु होती है |
3. यदि अष्टमेश तृतीय स्थान में हो तो मनुष्य बन्धुओं से विरोध करनेवाला, मित्रों के विरुद्ध आचरण करनेवाला, विकल अंग वाला, दुर्वचन बोलनेवाला और भाई से रहित होता है |
4. यदि अष्टमेश चतुर्थ स्थान में हो तो मनुष्य अपने पिता का शत्रु और पैतृक सम्पति को हड़पने वाला होता है | उन दोनों पिता पुत्र में उग्र विवाद रहता है एवं पिता रोगी होता है |

5. यदि क्रूर अष्टमेश पंचम स्थान में हो तो मनुष्य पुत्रहीन एवं शुभ अष्टमेश होने से पुत्र युक्त होता है | प्रायः जातक स्वयं भी अल्पजीवी होता है एवं ठगी आदि से युक्त कार्य करता है |
6. यदि अष्टमेश षष्ठ में हो तो प्रत्येक ग्रह का फल इस प्रकार होता है –
    - अष्टमेश सूर्य से राजा से विरोध,
    - उच्चस्थ गुरु से नेत्र रोगी,
    - शुक्र से रोगी,
    - मंगल से छाती पर प्रहार पाने वाला,
    - शनि से भयंकर सर्प-पीड़ा पाने वाला,
    - बुध से व्याधिभय ग्रस्त, और
    - चन्द्रमा से मृत्युग्रस्त होता है |
    - यदि षष्ठस्थ अष्टमेश शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो उक्त फल विशेषता से घटित होगा |
7. यदि अष्टमेश सप्तम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य गुप्तांगों का रोगी, दुष्ट स्त्री का पति और स्वयं भी दुष्ट स्वभाव वाला होता है | यदि अष्टमेश क्रूर ग्रह हो तो जातक स्त्री से द्वेष रखने वाला होता है एवं अपनी स्त्री के दोष से ही मृत्यु को प्राप्त करता है |
8. यदि अष्टमेश अष्टम स्थान में ही हो तो मनुष्य परिश्रमी, व्यवसायी अर्थात् लगन से काम करने वाला, रोगरहित, मानसिक, शारीरिक कष्ट से मुक्त, धोखा देने या दूसरों को प्रभावित कर कार्य सिद्ध करने में कुशल एवं प्रसिद्ध होता है |
9. यदि अष्टमेश नवम भाव हो तो मनुष्य मोह से रहित, पापकर्मरत, जीवघातक, भाईयो से रहित, स्नेहरहित और मुखविकार से युक्त होता है |
10. यदि अष्टमेश दशम भाव में हो तो मनुष्य राजकार्य करनेवाला, नीच कर्म या व्यवसाय के प्रति आकृष्ट और आलसी स्वभाव वाला होता है | यदि अष्टमेश क्रूर ग्रह हो तो मनुष्य का पुत्र कदाचित् जारज होता है अथवा उसकी माता की मृत्यु शीघ्र ही संभावित होती है |
11. यदि अष्टमेश एकादश स्थान में हो तो मनुष्य बचपन में दुख एवं बाद में सुख पाता है | ऐसा व्यक्ति दीर्घायु होता है लेकिन पापी अष्टमेश लाभ में हो तो मनुष्य अल्पजीवी होता है |
12. यदि अष्टमेश द्वादश भाव में स्थित हो तो मनुष्य क्रूर मन वाला, तस्कर, शठ, निर्दयी, अपने आप में मस्त व व्यस्त रहनेवाला, विकल शरीरवाला एवं मरणोपरान्त शव की समुचित गति न पाने वाला होता है |

नवमेश भावफल

1. यदि नवमेश लग्न में गया हो तो मनुष्य देवताओं तथा गुरुओं के प्रति श्रद्धा भाव रखने वाला, शूर, कृपणवृत्ति, राजकार्यकर्ता, कम खाने वाला एवं बुद्धिमान् होता है |
2. यदि नवमेश द्वितीय भाव में हो तो मनुष्य श्रेष्ठ, प्रसिद्ध, सुशीलतायुक्त, सत्यवादी, सत्कार्य करनेवाला, मुख में कुछ विकलतायुक्त और चतुष्पदों से पीड़ा पाने वाला होता है |

3. यदि नवमेश तृतीय भाव में हो तो मनुष्य रूपवान्, स्त्री व बन्धुओं से प्रेम करनेवाला, अपने भाई की पत्नी का उत्तरदायित्व निभाने वाला एवं जीवित भाईयों से रहित होता है | उसके भाई अल्पायु होते हैं|
4. यदि नवमेश चतुर्थ भाव में हो तो मनुष्य पिता का भक्त, पिता के कार्यो के प्रति श्रद्धावान्, प्रसिद्ध, सत्कार्य करनेवाला एवं अपने मित्रों के कार्यो में गम्भीरतापूर्वक रुचि लेने वाला होता है |
5. यदि नवमेश पञ्चम भाव में हो तो मनुष्य सुकृति, गुरुओं एवं देवताओं का भक्त, सुंदर शरीर एवं व्यक्तित्व वाला तथा पुण्यशाली पुत्रों का पिता होता है |
6. यदि नवमेश षष्ठ स्थान में हो तो मनुष्य शत्रुओं के प्रति झुकने वाला, धर्म में रति रखनेवाला, कला-प्रदर्शनादि से विकल शरीर वाला और अन्य जनों की निन्दा करने में रत होता है |
7. यदि नवमेश सप्तम भाव में हो तो मनुष्य की पत्नी सत्यवती, विनयशीला, सद्भावयुक्ता, सुरूपा, शील एवं शोभा से सम्पन्न होती है |
8. यदि नवमेश अष्टम स्थान में हो तो मनुष्य दुष्ट एवं उदण्ड पराक्रम वाला, कार्यनाशक, बन्धुओं से रहित और पुण्यरहित होता है | यदि नवमेश क्रूर ग्रह हो तो मनुष्य नपुंसक होता है |
9. यदि नवमेश नवम भाव में ही स्थित हो तो मनुष्य अपने बन्धुओं का स्नेहपात्र, नम्र, दानशील, देवताओं-गुरुओं-बन्धुओं-पत्नी आदि से प्रभूत स्नेह रखनेवाला, मध्यम कद वाला एवं सत्यवादी होता है |
10. यदि नवमेश दशम भाव में हो तो मनुष्य राजतुल्य कार्य करने वाला, शूर, प्रसिद्ध, राजा से लाभ कमाने वाला, अपने व्यवसाय या कार्य में रत एवं माता के लिए विघ्न उत्पन्न करने वाला होता है |
11. यदि नवमेश एकादश भाव में स्थित हो तो मनुष्य दीर्घायु, धर्मपरायण, धनाढ्य, स्नेही स्वभाव वाला, राजपक्ष से लाभ कमाने वाला, अपने पुण्यों से प्रसिद्ध अर्थात् संसार में सत्कार्यों से प्रसिद्ध होता है |
12. यदि नवमेश द्वादश भाव में स्थित हो तो मनुष्य मानयुक्त स्वभाव वाला, स्वाभिमानी, देशांतर में निवास करने वाला, सुन्दर व्यक्तित्व वाला और विद्यावान् होता है | यदि नवमेश क्रूर ग्रह हो तो मनुष्य मूर्ख होता है |

दशमेश भावफल

1. यदि दशमेश लग्न में स्थित हो तो अपनी माता से विरोध रखने वाला, पिता का अधिक सम्मान करने वाला, सरल स्वभाव वाला, लोभी, सुखी, पिता के सुख से वंचित होता है एवं इसकी माता के अन्य पुरुष से सम्बन्ध की सम्भावना होती है |
2. यदि दशमेश द्वितीय भाव में स्थित हो तो मनुष्य को दूसरी माता पालती है| ऐसा जातक लोभी, अपनी माता से दुर्व्यवहार करने वाला, छोटा ग्रास खाने वाला या कम खाने वाला एवं स्त्री की सेवा करने वाला होता है |
3. यदि दशमेश तृतीय भाव में स्थित हो तो मनुष्य माता एवं अपने बंधुओं का विरोध करनेवाला, सेवा–कार्य करने वाला, विशेष कार्य–संपादन में असमर्थ एवं मामा द्वारा पाला गया होता है |

4. यदि दशमेश चतुर्थ भाव में स्थित हो तो मनुष्य भौतिक सुख भोगनेवाला, माता-पिता के पालन-पोषण में निरत, सभी लोगो को अत्यंत सुख देनेवाला तथा राजा से प्राप्त धन का लाभ उठाने वाला होता है |
5. यदि दशमेश पंचम भाव में स्थित हो तो मनुष्य शुभ कार्य करने वाला, सरलाचरण करने वाला, राज पक्ष से लाभ उठानेवाला, गीत-वाद्यादि में रुचि रखने वाला होता है | उसके पुत्र का पालन माता ही करती है | कदाचित् पुत्रोत्पत्ति के बाद ऐसे व्यक्ति का देशान्तरवास अथवा मरण संभावित होता है |
6. यदि क्रूर दशमेश षष्ठ स्थान में स्थित हो तो मनुष्य बाल्यावस्था में अत्यंत दुःखी व हीन होता है | लेकिन वह मनुष्य बाद में अत्यंत सुख व सुविधा पाता है परन्तु उनकी माता परपुरुषगामिनी होती है |
7. यदि दशमेश सप्तम भाव में स्थित हो तो मनुष्य की पत्नी पुत्रों से युक्त, सुन्दर रूपवती, अपनी सास के साथ अच्छा व्यवहार करने वाली होती है |
8. यदि दशमेश अष्टम भाव में स्थित हो तो मनुष्य क्रूर स्वभाव वाला, चोर, झूठा, दुष्ट स्वभाव वाला, माता को कष्ट देने वाला, अल्पजीवी व शठ होता है |
9. यदि दशमेश नवम भाव में स्थित हो तो मनुष्य के बन्धु सज्जन होते है, वह अच्छे मित्रों वाला, सुशील माता का पुत्र होता है | ऐसे जातक की माता सत्परायण एवं पुण्यवती होती है |
10. यदि दशमेश दशम भाव में ही स्थित हो तो जातक अपनी माता को भरपूर सुख देने वाला होता है | उसका मातृपक्ष (मातुलादि) प्रबल एवं सुखी होता है | वह स्वयं गठजोड़, योजना-निर्माण एवं रणनीति निर्माण में चतुर होता है |
11. यदि दशमेश एकादश भाव में स्थित हो तो मनुष्य अपनी माता का विशेष ध्यान रखने वाला, माता भी पुत्र का पक्ष लेने वाली और सुख पानेवाली होती है | जातक स्वयं दीर्घायु एवं सुखी होता है |
12. यदि दशमेश द्वादश भाव में स्थित हो तो मनुष्य मातृत्यक्त होकर स्वयं अपने सामर्थ्य से आगे बढ़ता है | वह सत्कार्य करनेवाला होता है | क्रूर ग्रह दशमेश हो तो जातक देशान्तर में निवास करने वाला होता है |

एकादशेश भावफल

1. यदि एकादशेश लग्न में स्थित हो तो मनुष्य कम आयु वाला, बलशाली, शूरवीर, दान देने वाला, लोकप्रिय, सौभाग्य व सौंदर्य से युक्त एवं साधारण दोष से ही मृत्यु को प्राप्त होता है |
2. यदि क्रूर एकादशेश द्वितीय भाव में हो तो मनुष्य कम खाने वाला, कम आयु वाला, भ्रातृविहीन, अकेले भोग भोगने वाला व बहुरुपिया होता है | यदि एकादशेश शुभ ग्रह हो तो मनुष्य धन-संपन्न होता है |
3. यदि एकादशेश तृतीय भाव में स्थित हो तो मनुष्य अपने बंधुओं व स्त्री का पालनकर्ता अथवा भाई की पत्नी की देखभाल करने वाला, अच्छे बान्धवों वाला, बन्धुजनों से प्रेम करने वाला, शत्रुओं का नाश करने वाला होता है |

4. यदि एकादशेश चतुर्थस्थ हो तो मनुष्य का पिता दीर्घायु होता है | जातक अपने पिता का भक्त, समयानुकूल कार्य करने वाला और अपने कार्यों में लाभ कमाने वाला होता है |
5. यदि लाभेश पञ्चम भाव में स्थित हो तो मनुष्य व उसका पिता दोनों परस्पर स्नेह करने वाले होते हैं | दोनों समान गुण वाले एवं समान रूप से कार्य-कुशल या प्रतिष्ठित होते हैं एवं पुत्र दीर्घजीवी होते हैं |
6. यदि लाभेश षष्ठ भाव में स्थित हो तो मनुष्य वैरियों से युक्त, लम्बे समय तक रोगी रहने वाला, सब प्रकार की सेना अथवा साधनों का संग्रहकर्ता, चोरों के हाथ से मृत्यु को प्राप्त होने वाला होता है | यदि लाभेश क्रूर ग्रह हो तो जातक विदेशवासी होता है |
7. यदि एकादशेश सप्तम भाव में स्थित हो तो मनुष्य शीलयुक्त, तेजस्वी, सम्पत्तिवान्, दीर्घायु एवं एक-पत्नीव्रती होता है |
8. यदि क्रूर लाभेश अष्टम भाव में हो तो मनुष्य अल्पायु, दीर्घरोगी, जीते जी मरे हुए के समान होता है | यदि एकादशेश शुभ ग्रह हो तो जातक दुःखी होता है |
9. यदि एकादशेश नवम भाव में स्थित हो तो मनुष्य अत्यधिक ज्ञानी, अध्ययनशील, शास्त्रवेत्ता, धर्मप्रसिद्ध एवं गुरु तथा देवताओं का भक्त होता है | यदि क्रूर लाभेश हो तो बान्धवों एवं व्रत-नियमादि से रहित होता है |
10. यदि एकादशेश दशम भाव में स्थित हो तो मनुष्य माता का भक्त, पुण्यवान, पिता से द्वेष रखने वाला, लम्बी आयु वाला, धनी एवं माता का पालन करने वाला होता है |
11. यदि एकादशेश एकादश भाव में ही स्थित हो तो मनुष्य दीर्घायु, खूब पुत्र वाला, सत्कार्य करने वाला, रूपवान्, सुशील, प्रसिद्ध एवं जनप्रिय होता है |
12. यदि एकादशेश व्यय भाव में गया हो तो मनुष्य रोगी, अस्थिर बुद्धि एवं विकार वाला, उत्पाती स्वभाव वाला, दानी, दुःखी एवं प्राप्त हुए सुखों को भोगता है अर्थात् स्वार्जित सुख नहीं होता है |

व्ययेश भावफल

1. यदि व्ययेश लग्न में गया हो तो मनुष्य विदेशवासी, सुंदर, रूपवान्, सुंदर भाषण करने वाला, कुंवारा या अल्पवीर्य एवं कुसंगति के कारण बदनाम होता है |
2. यदि व्ययेश द्वितीय भाव में गया हो तो मनुष्य कृपण, कड़वा बोलनेवाला, लाभ को खोनेवाला, यदि व्ययेश मंगल हो तो राजा, अग्नि या तस्कर आदि से भययुक्त होता है |
3. यदि क्रूर व्ययेश तृतीय भाव में गया हो तो मनुष्य के भाई गरीब होते हैं | यदि व्ययेश शुभ ग्रह हो तो मनुष्य धनी एवं उसका भाई कंजूस होता है एवं वह अपने बंधुओ से सदा दूर रहता है |
4. यदि व्ययेश चतुर्थ भाव में गया हो तो मनुष्य कृपण, रोगमुक्त, सत्कार्य करनेवाला, महान समझा जाने वाला, जीवन में दुख उठाने वाला, सरल प्रकार से मृत्यु पानेवाला होता है |

5. यदि क्रूर व्ययेश पंचम भाव में गया हो तो मनुष्य पुत्रहीन् एवं शुभ व्ययेश हो तो मनुष्य पुत्रयुक्त होता है| यह जातक पिता की सम्पत्ति का लाभ उठाने वाला तथा स्वयं अपने सामर्थ्य से रहित होता है |
6. यदि क्रूर व्ययेश षष्ठ भाव में गया हो तो मनुष्य कृपण, नेत्र रोगी, हाथी से (वाहन दुर्घटना) मृत्यु पानेवाला, यदि द्वादशेश शुक्र हो तो जातक नेत्रहीन होता है |
7. यदि क्रूर द्वादशेश सातवें स्थान में हो तो मनुष्य दुष्ट, कपटपूर्वक वचन बोलनेवाला एवं दुश्चरित्र होता है | यदि उक्त ग्रह क्रूर हो तो जातक को स्त्री-सुख नहीं होता एवं सौम्य ग्रह हो तो गणिका आदि से शरीर सुख प्राप्त होता है |
8. यदि क्रूर द्वादशेश आठवें स्थान में गया हो तो मनुष्य कार्य के प्रति लापरवाह, परिश्रम न करनेवाला, द्रोहयुक्त बुद्धि वाला होता है | यदि उक्त ग्रह शुभ हो तो मनुष्य धन-संग्रह करनेवाला होता है | ऐसा व्यक्ति विविध रूपों वाला तथा चालाक भी होता है |
9. यदि द्वादशेश नवम भाव में गया हो तो मनुष्य तीर्थ यात्रा आदि प्रसंगों पर धन व्यय करनेवाला तथा खर्चीले स्वभाव वाला होता है | यदि उक्त ग्रह पाप हो तो उसका धन व्यर्थ ही खर्च हो जाता है |
10. यदि व्ययेश दशम स्थान में स्थित हो तो मनुष्य पवित्राचरण करने वाला और पराई स्त्री से दूर रहनेवाला होता है लेकिन इस व्यक्ति की माता अपने पुत्र के धन पर कब्जा करनेवाली एवं कड़वे वचन बोलने वाली होती है |
11. यदि द्वादशेश एकादश स्थान में स्थित हो तो मनुष्य दीर्घजीवी, धन कमाने वाला, विख्यात नाम वाला, सत्य वचन बोलने वाला, दान देने वाला तथा अपने वर्ग व स्थान में श्रेष्ठता पानेवाला होता है |
12. यदि द्वादशेश द्वादश भाव में ही हो तो मनुष्य ऐश्वर्य सम्पन्न, ग्राम में निवास करने की अभिरुचि वाला, कातर बुद्धि या कंजूस और पशुधन का संग्रह करनेवाला होता है | ऐसा व्यक्ति जबतक जीवित रहे, सदैव खाने-पीने का सुख भोगता है |

*उपर्युक्त फल सामान्यतः भावेश एवं उनकी स्थिति के आधार पर वर्णित हैं | इनका सम्पूर्णता से घटित होना आवश्यक नहीं है, अन्य शुभाशुभ योग तथा बलाबल का विचार भी परम आवश्यक है | महामुनि पराशर का यह मत है –

इति ते कथितं विप्र भावेशानाञ्च यत्फलम् | बलाबलविवेकेन सर्वेषां तत्समादिशेत् ||

||शुभमस्तु||

सत्रहवां दिन

द्वादशभाव-निरीक्षण विधि

1. लग्न या चन्द्र दोनों में से जो अधिक बलवान् हो, उस से कुण्डली का विचार करना चाहिए |
2. सभी योगायोगों का परीक्षण लग्न-कुण्डली एवं चन्द्र-कुण्डली दोनों से करना चाहिए |
3. लग्न आदि द्वादशभावों में से जो-जो भाव अपने पूर्ण बली स्वामी वाला हो अथवा स्वामी से युक्त हो या देखा जाता हो अथवा शुभग्रहों की दृष्टि से युक्त हो तो क्रम से उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिये |
4. जिन भावों में शुभ ग्रह बैठे हों या जिन भावों पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो लेकिन पापग्रह की दृष्टि न हो वे भाव शुभ फल देने में सहायक होते हैं|
5. अपने भाव से केन्द्र व त्रिकोण में गया हुआ ग्रह शुभ होता है|
6. केंद्र के स्वामी तथा त्रिकोण के स्वामी के संबंध हो तो वे एक दूसरे की दशा में शुभ फल देते हैं | यह भावफल के लिए भी बहुत शुभ होता है |
7. यदि भावाधिपति उच्च, मूल त्रिकोणी, स्वक्षेत्री अथवा मित्रक्षेत्री हो तो शुभफल करता है |
8. यदि केन्द्र का स्वामी त्रिकोण में बैठा हो या त्रिकोणपति केंद्र में हो तो वह ग्रह अत्यन्त ही श्रेष्ठ फल देने में समर्थ होता है |
9. त्रिक स्थान में यदि शुभ ग्रह बैठे हों तो त्रिक स्थान का शुभ फल देते हैं, परन्तु स्वयं दूषित हो जाते हैं और अपनी शुभता खो देते हैं|
10. चाहे अशुभ या पाप ग्रह ही हो, पर यदि वह त्रिकोण भाव में स्थित हो या त्रिकोण भाव का स्वामी हो तो उसमें शुभता आ जाती है |
11. राहू या केतु जिस भाव में बैठते हैं उस भाव की राशि के स्वामी समान बन जाते हैं तथा जिस ग्रह के साथ बैठते हैं, उस ग्रह के गुण ग्रहण कर लेते हैं|
12. लग्न का स्वामी जिस भाव में भी बैठा होता है उस भाव का वह विशेष फल देता है तथा उस भाव की वृद्धि करता है |
13. लग्न से तीसरे, छठे या ग्यारहवें स्थान पर पापी ग्रह शुभ प्रभाव करता है लेकिन शुभ ग्रह हो तो मध्यम फल मिलता है|
14. छठे, आठवें और बारहवें भाव के स्वामी जिन भावों में रहते हैं, उनको बिगाड़ते हैं, किन्तु अपवाद रूप में यदि यह स्वगृही ग्रह हों तो अनिष्ट फल नहीं करते, क्योंकि स्वगृही ग्रह का फल शुभ होता है |
15. शनि यदि अष्टम भाव में हो तो उस व्यक्ति की आयु लम्बी होती है|
16. बृहस्पति यदि लग्न को देखे तो जातक दीर्घायु होता है, विशेषकर बालारिष्ट से रक्षा करता है |
17. दशम भाव में सूर्य और मंगल स्वतः ही बलवान् माने गए हैं, इसी प्रकार चतुर्थ भाव में चन्द्र और शुक्र, लग्न में बुध तथा गुरु और सप्तम भाव में शनि स्वतः ही बलवान् हो जाते हैं तथा विशेष फल देने में सहायक होते हैं|
18. ग्यारहवें भाव में सभी ग्रह अच्छा फल करते हैं |

19. यदि भावकारक ग्रह उस भाव में अकेला बैठा हो तो भावफल को बुरी तरह बिगाड़ता है |
20. छठे भाव में गुरु, आठवें भाव में शनि तथा दसवें भाव में मंगल बहुत शुभ माने जाते हैं |
21. दूसरे, पांचवें एवं सातवें स्थान में अकेला गुरु भाव की हानि करता है |
22. चतुर्थ एवं दशम स्थान में स्थित गुरु बहुत शुभफल प्रदान करता है |
23. केन्द्र स्थानों में शनि प्रायः अशुभ फल करता है जबकि अन्य स्थानों में प्रायः शुभफल करता है |
24. पंचम भाव का सूर्य प्रथम पुत्र की हानि अवश्य करता है |
25. द्वादश भाव का शनि हो तो बार बार पैर में चोट लगती रहती है |
26. बुध के साथ दो या अधिक ग्रह जहाँ स्थित हों उस राशि या भाव में तिल का निशान या चोट का निशान अवश्य रहता है |
27. लग्नेश द्वादश भाव में गया हो तो कोई गम्भीर मस्तिष्क रोग देता है | अगर मकर या कुम्भ लग्न हो तो मिर्गी या माईग्रेन रोग बताना चाहिए |
28. लग्नेश द्वितीय भाव में गया हो तो मस्तिष्क से लेकर गले तक के अंगों में कहीं न कहीं कोई गम्भीर रोग जरुर होता है |
29. सूर्य-चन्द्रमा द्वादश भाव में नेत्र विकार देते हैं |
30. शुक्र-बुध द्वादश भाव में कर्ण-रोग देते हैं |

||शुभमस्तु||

सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहाः शुभफलप्रदाः | पतयस्त्रिषडायानां यदि पापफलप्रदाः ||

(लघु पाराशरी)

सभी ग्रह त्रिकोण (5 एवं 9 भाव) के स्वामी होने पर शुभफल प्रदान करते हैं तथा त्रिषडाय (3-6-11 भाव) के स्वामी होने पर अशुभफल प्रदान करते हैं | यदि ग्रह त्रिकोणेश होने के साथ साथ त्रिषडायेश भी हो जाएँ तो अशुभफल प्रदान करेंगे |

केन्द्राधिपत्यदोषस्तु बलवान् गुरुशुक्रयोः | मारकत्वेऽपि च तयोः मारकस्थानसंस्थितिः ||

(लघु पाराशरी)

बलवान् गुरु एवं शुक्र को केन्द्राधिपति-दोष प्रबलता से लगता है | यदि ये मारकेश (द्वितीयेश या सप्तमेश) होकर मारक स्थानों में ही बैठ जायें, तो प्रबलतम मारक हो जाते हैं |

- शुभग्रह केन्द्र के स्वामी होने पर शुभफल प्रदान नहीं करते हैं और पापग्रह केंद्रस्थानों के स्वामी होने पर अशुभफल प्रदान नहीं कर पाते हैं | इसे ही केन्द्राधिपति दोष कहा जाता है |

अठारहवाँ दिन

भाव विचार

प्रथम भाव विचार

1. लग्नेश यदि केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो तो शारीरिक सुख को सूचित करता है |
2. यदि लग्नेश शुभग्रह से युत होकर केंद्र या त्रिकोण में हो तो रोगों का नाश करता है |
3. लग्न में स्थित शुभग्रह सुन्दर रूप प्रदान करता है, जबकि पापग्रह कुरूप बनाता है |
4. लग्न शुभग्रह से युत या दृष्ट हो तो शारीरिक सुख की प्राप्ति होती है |
5. लग्नेश बुध, गुरु, अथवा शुक्र यदि केंद्र या त्रिकोण में हो तो जातक दीर्घायु, धनी, बुद्धिमान और राजप्रिय बनता है |
6. लग्नेश चरराशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) में होकर शुभग्रह से दृष्ट हो तो कीर्तिमान्, धनवान्, शारीरिक रूप से सुखी आदि फल सूचित करता है |
7. बुध, गुरु अथवा शुक्र चन्द्रमा के साथ यदि केंद्र में हो तो राजलक्षण युक्त बनता है |
8. लग्नेश यदि पापग्रह के साथ 6, 8, 12 में हो तो शारीरिक कष्ट का योग बनता है |
9. लग्नेश द्वितीय, तृतीय और एकादश में स्थित होकर शुभफल प्रदाता होता है |
10. लग्नेश सदैव शुभग्रह होता है, उसकी शुभता कभी भी पूरी तरह नष्ट नहीं होती |
11. लग्नेश जिस भाव में स्थित होता है, जातक का जीवन उसी भाव से सबसे ज्यादा प्रभावित होता है |

द्वितीय भाव विचार

1. द्वितीयभाव का स्वामी यदि द्वितीय भाव में स्थित हो, केंद्र में स्थित हो या त्रिकोण में स्थित हो तो धन की वृद्धि करता है |
2. धनेश यदि त्रिक भावों (6, 8, 12) में हो तो धनहानि करता है |
3. धनभाव में शुभग्रह धन की वृद्धि करता है |
4. धनभाव में पापग्रह धन का ह्रास करता है |
5. धनेश यदि गुरु हो और धन भाव में ही हो तो अत्यंत धनी बनाता है | वहाँ यदि मंगल भी हो तो भी धनवान बनाता है | यह स्थिति केवल वृश्चिक और कुम्भ लग्न वालों के लिए बनती है |
6. धनेश यदि लाभ (ग्यारहवें) में हो और लाभेश यदि धन भाव में हो या दोनों ही केंद्र या त्रिकोण भाव में हों या युति करते हों तो धनी योग बनता है |
7. धनेश यदि केंद्र (1, 4, 7, 10) में हो, लाभेश यदि धनेश से त्रिकोण में हो और गुरु या शुक्र से युत या दृष्ट हो तो धनी योग बनता है |
8. धनेश और लाभेश यदि छठे में हो और धन तथा लाभ भाव पापग्रह से युत हो या दृष्ट हो तो निर्धन योग बनता है |

9. धनेश और लाभेश यदि अस्तंगत हों, (मोटे तौर पर सूर्य जिस अंश पर हो उससे 13 अंश तक आगे या पीछे हो) और पापग्रह से युत हो तो जन्मजात निर्धन होने का योग बनाता है |
10. धनेश और लाभेश यदि त्रिक में हो और लाभ भाव में मंगल और धन भाव में राहु हो तो राजदंड के द्वारा निर्धन होने का योग बनता है |
11. धनेश यदि स्वराशि में या उच्च राशि में हो तो जातक परोपकारी, विख्यात और प्रजापालक होता है|
12. धनेश यदि बली हो तो सुन्दर नेत्र होते हैं | यदि त्रिकभाव में स्थित हो तो नेत्रकष्ट का योग बनता है | सूर्य या चन्द्रमा यदि धनभाव में हों तो निश्चितरूप से नेत्ररोग होता है |
13. धनेश और धनभाव दोनों यदि पापग्रह से युत हों तो जातक असत्यवादी और वातरोगी होता है| इस योग का सम्बन्ध यदि बुध और शनि से हो तो नसों में दर्द होता है तथा गुरु से सम्बन्ध बनने पर वात विकार होता है |

तृतीयभाव विचार

1. तृतीयभाव यदि शुभग्रह से युत या दृष्ट हो तो जातक पराक्रमी और भ्रातृयुक्त होता है | तृतीय भाव से अनुज और एकादश भाव से अग्रज का विचार किया जाता है | मंगल अनुज और गुरु अग्रज का कारक होता है |
2. सहजेश यदि मंगल के साथ तृतीयभाव में हो या दोनों की तृतीय भाव पर दृष्टि हो तो जातक को भ्रातृसुख का योग बनता है | ये दोनों यदि पापग्रह के साथ हों या पापग्रह की राशि में हो तो भ्रातृनाशक योग बनता है |
3. सहजभाव में यदि सूर्य हो तो बड़े भाई के लिए कष्टप्रद होता है, जबकि सहज भाव में शनि की उपस्थिति से छोटे भाई या बहन को कष्ट का योग बनता है |

चतुर्थभाव विचार

1. चतुर्थभाव में यदि चतुर्थेश और लग्नेश स्थित हों और उस पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो पूर्ण गृह सुख बताना चाहिए |
2. सुखेश यदि चतुर्थ में हो या उच्च में स्थित हो तो भूमि, भवन और वाहन का पूर्ण सुख देता है |
3. सुखेश और कर्मेश युत होकर केंद्र या कोण में हों तो सभी सुविधाओं से पूर्ण भवन सुख देता है |
4. यदि चतुर्थेश शुभग्रह हो, शुभग्रह से दृष्ट हो और बुध लग्न में हो, तो वह जातक अपने सम्बन्धियों में पूज्य होता है |
5. सुखस्थान में शुभग्रह हो, सुखेश उच्च राशि में हो चतुर्थ भाव का कारक बली हो तो माता दीर्घायु होती है |
6. सुखेश और शुक्र केंद्र में हो और बुध उच्च राशि में हो तो, मातृसुख का पूर्णयोग होता है |
7. भावेश, भावकारक ग्रह और भावकारक से चतुर्थ भाव का स्वामी यदि केंद्र या त्रिकोण में उच्च का, मित्रगृही या स्वगृही हो तो भूमि, भवन, वाहन आदि का पूर्ण सुख मिलता है |

पञ्चमभाव विचार

1. लग्नेश और सुतेश पंचम में हों या केंद्र में हों, तो संतति सुख की पूर्णता रहती है |
2. सुतेश यदि त्रिक में हो, अस्त हो, पापाक्रांत हो या निर्बल हो तो संतान प्राप्ति में बाधा होती है |
3. सुतेश छठे भाव में हो और लग्नेश मंगल से युत हो तो संतान प्राप्ति में बाधा होती है |
4. सुतेश नीचराशि में हो, वह नीच राशि 6,8,12 भावों में कहीं हो और बुध तथा केतु सुत भाव में हों तो एक ही संतति होती है |
5. सुतेश यदि पंचम में ही हो, त्रिक भाव में हो, शत्रुराशि में हो या नीच में हो तो संतान प्राप्ति में बाधा होती है |
6. सुतेश बली हो और बुध, गुरु तथा शुक्र से दृष्ट हो तो अनेक सन्ततियाँ होती हैं |
7. सुतभाव में गुरु हो और पंचमेश शुक्र के साथ हो तो विलम्ब से संतान की प्राप्ति होती है |
8. सुतेश केंद्र में हो और गुरु से युत हो तो विलम्ब से संतति योग होता है |
9. लग्न से नवम में गुरु हो, गुरु से नवम में शुक्र हो या लग्नेश शुक्र के साथ हो तो विलम्ब से संतान प्राप्ति होती है |
10. सुतभाव में राहु हो, सुतेश पापग्रह से युत और गुरु नीचराशि में हो, तो विलम्ब से संतान प्राप्ति होती है |
11. पंचम भाव में यदि सूर्य हो तो प्रायः प्रथम सन्तान की मृत्यु हो जाती है या प्रथम गर्भ खराब हो जाता है |
12. यदि पञ्चम भावस्थ सूर्य शुभ राशि में हो तो एक सुयोग्य तेजस्वी पुत्र भी प्रदान करता है |

षष्ठभाव विचार

1. षष्ठेश यदि लग्न, षष्ठ या अष्टम में हो तो व्रण का योग बनाता है |
2. लग्नेश यदि मेष या वृश्चिक में हो या मिथुन अथवा कन्या राशि में हो और बुध से दृष्ट हो तो मुख सम्बन्धी रोग का योग बनाता है |
3. षष्ठ भाव में पापग्रह हो, षष्ठेश पापग्रह से युक्त हो और राहु-शनि युत हों तो जातक को सर्वदा कुछ ना कुछ रोग लगा रहता है |

सप्तमभाव विचार

1. सप्तमेश स्वराशि या उच्चराशि में हो**,** तो पूर्ण स्त्री-सुख प्राप्त होता है|
2. सप्तमेश यदि त्रिक भाव में हो तो पत्नी रोगिणी रहती है| यदि त्रिकभाव स्वराशि या उच्च का हो तो ऐसा नहीं होता है |
3. सप्तमेश उच्चराशि में हो और बली लग्नेश शुभग्रह के साथ सप्तम भाव में हो तो जातक की पत्नी सद्गुणों से युक्त और पुत्र पौत्रादि से पूर्ण होती है |
4. सप्तमेश केंद्र या त्रिकोण में हो**,** मित्रगृही हो या द्वितीय अथवा एकादश भाव में स्थित हो तो स्त्री-सुख का योग होता है |

5. सप्तमेश त्रिक भावस्थ, शत्रुगृही, नीच, अस्तंगत, पापदृष्ट या युत हो तो स्त्रीकष्ट का योग होता है |
6. सप्तमभाव में चन्द्र हो, सप्तमेश द्वादशस्थ हो और सप्तम भाव का कारक (शुक्र) बलहीन हो, तो स्त्रीकष्ट होता है |
7. सप्तम भाव में मंगल या शुक्र हो**,** अष्टम में शनि और लग्नेश हो तो स्त्रीकष्ट का योग बनता है |
8. सप्तम भाव में स्थित पापग्रह या पापग्रहों की युति वैवाहिक जीवन को बिगाड़ती है |
9. सप्तम भाव में यदि अकेला शुक्र स्थित हो तो भी वैवाहिक जीवन बहुत कष्टमय होता है |
10. सप्तमेश यदि केन्द्र स्थानों में हो तो शहर में विवाह होता है |
11. सप्तमेश यदि त्रिकोण स्थान में हो तो गाँव में विवाह होता है |
12. सप्तमेश यदि पंचम भाव में हो तो अधिक उम्र होने पर विवाह होता है |
13. मांगलिक योग बनने पर भी विवाह कष्ट से, अथवा अधिक उम्र में विवाह की बात देखी गई है |
14. सप्तम भाव का या द्वितीय भाव का किसी प्रकार से आपस में सम्बन्ध बने तो दो विवाह का योग बतलाना चाहिए | आज के समय में इस योग से अतिशय प्रेम-प्रसंग भी देखा गया है |
15. पञ्चम, सप्तम व लग्न भावों का यदि आपसी सम्बन्ध बनता हो तो प्रेमविवाह की सम्भावना बनती है |

अष्टमभाव विचार

1. अष्टमेश यदि केंद्र में हो, तो जातक दीर्घायु होता है |
2. षष्ठेश यदि व्यय में हो या षष्ठ में हो, व्ययेश षष्ठ में हो या व्यय में हो और षष्ठेश एवं व्ययेश यदि लग्न में या अष्टम में हो तो जातक दीर्घायु होता है|
3. लग्नेश बली हो और केन्द्रस्थ शुभग्रह से दृष्ट हो तो जातक को दीर्घायु और धनवान् बनाता है |
4. लग्नेश उच्चराशि में हो**,** चन्द्रमा एकादश में हो और अष्टम में गुरु हो तो भी जातक को धनवान और दीर्घायु बनाता है |
5. लग्नेश और अष्टमेश यदि स्वराशि में हों या मित्रगृही हों तो जातक दीर्घायु होता है|
6. लग्नेश, अष्टमेश, दशमेश और शनि यदि केंद्र, त्रिकोण या एकादशभाव में हों तो भी जातक दीर्घायु होता है |
7. अष्टमेश यदि पापग्रह के साथ अष्टम में हो, साथ में लग्नेश भी हो तो अल्पायु योग बनता है|
8. शनि यदि पापग्रह के साथ हो या शनि लग्नेश के साथ अष्टम में हो तो अल्पायु योग बनाता है|
9. अष्टमेश केंद्र में हो और लग्नेश बलहीन हो या अष्टमेश नीच राशि में हो**,** अष्टम में पापग्रह हो और लग्नेश बलहीन हो या अष्टमेश पापग्रह के साथ हो और अष्टम में पापग्रह हो या सभी पापग्रह केंद्र एवं त्रिकोण में हों और सभी शुभग्रह त्रिक में हों तो अल्पायु योग होता है |

10. अष्टम भावस्थ शनि जातक को दीर्घायु बनाता है तथा अष्टमस्थ चन्द्रमा जातक को रोगी बनाता है |

नवमभाव विचार

1. बली भाग्येश भाग्य में हो अथवा भाग्येश केंद्र में हो, भाग्य भाव में गुरु हो और लग्नेश बलवान हो तो जातक भाग्यवान होता है |

2. भाग्येश बली हो, भाग्य भाव में शुक्र हो और लग्न से केंद्र में गुरु हो तो जातक के पिता का भाग्योदय होता है |

3. भाग्येश भाग्यस्थान से द्वितीय या चतुर्थ में यदि मंगल से युत हो और लग्न से चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक का पिता दीर्घायु होता है |

4. भाग्येश केंद्र में हो और गुरु से दृष्ट हो तो जातक का पिता वाहनों से युक्त और राजतुल्य होता है |

5. भाग्येश यदि अपनी उच्च राशि में होकर गुरु से युत हो और लग्न से चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो पिता दीर्घायु होता है |

6. भाग्येश कर्मस्थान में हो, कर्मेश भाग्य में हो और शुभग्रह से दृष्ट हो तो पिता की कीर्ति में वृद्धि होती है |

7. सूर्य यदि परमोच्चांश में हो और भाग्येश लाभ भाव में हो तो जातक राजप्रिय और पिता का भक्त होता है |

8. लग्न से त्रिकोण में सूर्य हो, भाग्येश सप्तम भाव में हो और गुरु से युत या दृष्ट हो तो जातक पितृभक्त होता है |

9. भाग्येश द्वितीय में हो और धनेश भाग्यभाव में हो तो विलम्ब से भाग्योदय होता है |

10. भाग्य भाव में शनि की युति या दृष्टि हो तो जातक परम स्वावलम्बी, कर्मठ, ईमानदार, जुझारु, प्रचंड स्वाभिमान और आत्मसम्मान की भावना से युक्त होता है | ऐसा जातक किसी भी परिस्थिति में किसी की सहायता लेना कतई पसंद नहीं करता किन्तु समाज के लिए उपयोगी और अपने परिचितों तथा मित्रों का परम हितैषी सहयोगी होता है |

11. दशमेश के साथ बलहीन तृतीयेश हो और भाग्येश नीचराशि में हो तो निर्धन योग बनाता है |

12. इन योगों में भाग्य और पिता दोनों को अशुभ फलों की प्राप्ति होती है -

- सूर्य त्रिक में हो या अष्टम और भाग्येश की युति हो
- द्वादशेश लग्न में हो और षष्ठेश पंचम में हो
- सूर्य अष्टम में हो और अष्टमेश नवम में हो
- द्वादशेश नवमभाव में हो और भाग्येश नीच राशि में हो
- लग्नेश अष्टम में हो और अष्टमेश सूर्य के साथ हो
- भाग्यभाव से अष्टम में राहु और नवम में सूर्य हो
- राहु के साथ सूर्य हो और चन्द्रमा से नवम में शनि हो
- भाग्येश द्वादशभाव में हो और व्ययेश भाग्य भाव में हो

दशमभाव विचार

1. बली कर्मेश यदि स्वराशि या उच्चराशि में हो तो जातक सुखी व यशस्वी होता है |
2. कर्मेश शुभग्रह से युक्त हो या शुभस्थानों में हो तो राजद्वार से लाभ और व्यापार में वृद्धि होती है |
3. दशम और एकादश में पापग्रह हो तो अशुभ फल देता है |
4. दशमेश राहु से युत होकर अष्टम में हो तो अशुभ फल देता है |
5. दशमेश उच्च राशि में गुरु के साथ हो और भाग्येश दशम भाव में हो तो सम्मान, यश और ऐश्वर्य की वृद्धि करता है |
6. लग्नेश बलवान् हो, शुक्र और गुरु मीन राशि में हों तो सम्मान, यश और ऐश्वर्य की वृद्धि करते हैं |
7. दशमेश ग्यारहवें भाव में हो, लाभेश लग्न में हो और दशम भाव में शुक्र हो तो जातक धनी होता है |
8. दशमेश केन्द्र, त्रिकोण या उच्चराशि में स्थित हो और दशमेश या दशम भाव गुरु से युत या दृष्ट हो तो जातक कर्मठ होता है |
9. दशमेश लग्नेश के साथ लग्न में स्थित हो और चन्द्रमा केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो तो जातक सत्कर्म में प्रवृत होता है |
10. कर्मेश नीच में हो, कर्मभाव में पापग्रह हो और सप्तम भाव में भी पापग्रह हो तो जातक को अनुचित कर्म से जीवन यापन की सम्भावना रहती है |
11. कर्मेश अष्टम में और अष्टमेश दशम में पापग्रह के साथ स्थित हो तो जातक कर्मठ नहीं हो पाता |
12. दशमभाव में चन्द्रमा, दशमेश त्रिकोण में और लग्नेश केंद्र में हो या लाभेश दशम में, दशमेश बली और गुरु से दृष्ट हो या कर्मेश भाग्य भाव में, लग्नेश दशम में और चन्द्रमा लग्न से पंचम में हो तो जातक अपने सत्कर्मों से प्रसिद्धि को प्राप्त करता है |

एकादशभाव विचार

1. लाभेश स्वराशि, उच्च, केंद्र या त्रिकोण में हो तो प्रचुर आय का योग बनता है |
2. लाभेश दूसरे भाव में, धनेश केंद्र में और गुरु लाभ भाव में हो तो प्रचुर आय का योग बनाता है |
3. लाभेश यदि तृतीय भाव में शुभग्रह से युत हो या लाभेश लग्न में और लग्नेश लाभ भाव में हो या एकादशेश केंद्र या त्रिकोण में शुभग्रह से युत हो तो 35–40 वर्ष के उम्र में अकस्मात् अधिक धन की प्राप्ति होती है |
4. लाभभाव में गुरु हो, धनभाव में चन्द्रमा हो और भाग्य भाव में शुक्र हो तो जातक अत्यंत धनवान होता है |
5. लाभ से लाभ भाव में अर्थात नवम भाव में चन्द्र, बुध और गुरु हों तो जातक धन-धान्यादि से परिपूर्ण होता है |
6. लाभेश धनभाव में और धनेश लाभभाव में हो तो विवाह के पश्चात् भाग्योदय होता है |

7. लाभेश तृतीय में और तृतीयेश लाभ भाव में हो तो जातक को भाई के द्वारा धनप्राप्ति होता है |
8. लाभेश यदि नीच, अस्त या त्रिक में पापग्रह के साथ हो तो आय का अभाव रहता है |

द्वादशभाव विचार

1. व्ययेश व्यय भाव में हो, व्यय भाव में शुभग्रह के साथ हो या व्ययेश अपनी उच्चराशि में स्थित हो तो धन शुभकार्य में व्यय होता है |
2. चन्द्रमा व्ययेश होकर पंचम, नवम या एकादश में स्थित हो या उच्च या स्वराशि में हो तो जातक का जीवन सभी प्रकार के सुख सुविधाओं से परिपूर्ण रहता है |
3. द्वादशेश यदि छठे या आठवें भाव में हो तो जातक को स्त्रीसुख का अभाव कराता है |
4. व्ययेश यदि केंद्र या त्रिकोण में हो तो पूर्ण स्त्रीसुख का योग बनाता है |
5. द्वादश भाव में यदि राहु, मंगल, शनि और सूर्य स्थित हो तो अशुभ फल देता है |
6. व्ययस्थान में शुभग्रह हो या व्ययेश उच्चराशि में, या व्ययेश शुभग्रह से युत या दृष्ट हो तो मोक्ष की प्राप्ति होती है |
7. व्ययेश पापग्रह से युक्त हो, व्यय भाव में पापग्रह हो और पापग्रह से दृष्ट हो तो विदेश यात्रा का योग बनता है |
8. व्ययेश यदि शुभराशि में हो, व्यय भाव में शुभग्रह हो और व्ययेश या व्ययभाव पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो अपने ही देश में बहुभ्रमण का योग बनता है |
9. लग्नेश व्यय भाव में हो**,** व्ययेश लग्न में शुक्र के साथ हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है |

||शुभमस्तु||

वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्व्या विहिताश्च यज्ञाः |
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान् || (आर्चज्योतिषम्)
वेदों को यज्ञ के निमित्त प्रकाशित किया गया है | उचित कालबल की प्राप्ति होने पर ही यज्ञ करने का विधान है | इसीलिए इस कालविधानरूपी शास्त्र का प्रवर्तन किया गया है | जो ज्योतिष् को जानता है, वही यज्ञों को जानता है |

लग्नाद्व्यय द्वितीयेशौ परेषां साहचर्यतः | स्थानान्तरानुगुण्येन भवतः फलदायकौ ||
(लघु पाराशरी)
लग्न से व्ययेश एवं द्वितीयेश अन्य ग्रहों के साहचर्य से एवं अन्य भावानुरूप फल प्रदान करते हैं |

उन्नीसवाँ दिन

योगशील

बालारिष्ट योग

मंत्रेश्वर, वैद्यनाथ तथा वेंकटेश आदि श्रेष्ठ आचार्यों के मत से 12 वर्ष की आयु तक बालारिष्ट का विचार करना चाहिए, उसके बाद ही कुण्डली के राजयोगों तथा जीवन के शुभाशुभ का विचार करना चाहिए | इसलिए हम भी पूर्ववर्ती आचार्यों के आज्ञानुसार बालारिष्ट योगों से ही अपने योगशील का प्रारम्भ कर रहे हैं |
कुछ महत्त्वपूर्ण प्रभावशाली बालारिष्ट योग प्रस्तुत हैं -

1) लग्नेश यदि षष्ठ, अष्टम या द्वादश स्थान में हो तो प्रायः कष्ट होता है |
2) लग्न व चन्द्रमा दोनों पापग्रह से युक्त हों, लग्नेश कमजोर हो तथा लग्न या चन्द्रमा पर शुभग्रहों की दृष्टि न हो तो बालारिष्ट होता है |
3) क्षीण चन्द्रमा बारहवें भाव में हो तथा उस पर राहु की दृष्टि हो |
4) पापग्रह से युक्त लग्नेश सप्तम (मारक) स्थान में हो |
5) लग्नेश अष्टम में तथा अष्टमेश लग्न में हो |
6) सिंह राशि का शुक्र 6-8-12 स्थानों में स्थित हो तथा उस पर पापी ग्रहों की दृष्टि हो |
7) सिंह राशि के नवांश में शनि हो तथा उस पर राहु की दृष्टि हो | साथ ही चन्द्रमा चतुर्थ में एवं सूर्य षष्ठ में हो |
8) जन्म राशि का स्वामी पापग्रहों से युक्त होकर आठवें स्थान में हो |
9) सूर्य, चन्द्र व शनि तीनों एकत्र होकर 6-8-12 स्थानों में कहीं स्थित हों |
10) चन्द्र व बुध दोनों केन्द्र में हों, शनि या मंगल (अस्त) की उनपर दृष्टि हो तो परम बालारिष्ट होता है |

कुछ ऐसे भी योग हैं जिनके रहते बालारिष्ट योग अपना अशुभ प्रभाव नहीं दिखा पाते, इन्हें बालारिष्ट भंग योग कहा जाता है |

कुछ महत्त्वपूर्ण प्रभावशाली बालारिष्ट भंगयोग -

1) कृष्णपक्ष में दिन में तथा शुक्लपक्ष में रात्रि में जन्म हो और चन्द्रमा 6ठे या 8वें स्थान में हो तो बालारिष्ट योग भंग होता है |
2) जन्म राशि का स्वामी अथवा शुभग्रह केन्द्र स्थानों में हो |
3) बलवान चन्द्रमा सभी बालारिष्ट योगों का नाश करता है |
4) उच्च का चन्द्रमा केन्द्र भाव में स्थित हो तथा शुभग्रह उसे देखते हों तो सभी बालारिष्ट योग भंग हो जाते हैं |
5) कर्क, मेष या वृष राशि का राहु लग्न में हो तो परम रक्षक होता है |
6) लग्न व चन्द्रमा पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो |
7) मंगल, शनि या राहु 3-6-11 भावों में हों |

8) बृहस्पति केन्द्र में हो अथवा अपनी राशि या उच्च राशि में हो तो बहुत से दोषों का नाश करता है |
9) सभी ग्रह मित्र ग्रहों की राशि में हो |
10) सभी ग्रह शुभ ग्रहों के नवांश में हों |

बालारिष्ट योगों के बाद सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होता है, सूर्य योगों व चन्द्र योगों का विचार करना | तो आइये अब हम इन्हीं योगों के बारे में जानते हैं |

किसी जातक के व्यक्तित्व को समझने के लिए हमें जन्मकुण्डली में सूर्य व चन्द्रमा के संबंधों को देखना चाहिए | इसके लिए निम्नलिखित सूत्र आपकी पर्याप्त सहायता करेंगे | ये सब सूत्र जातक के प्रति समाज के व्यावहारिक दृष्टिकोण के सापेक्ष समझने चाहिये |

- यदि सूर्य स्थित भाव से चन्द्रमा केन्द्र भावों में हो तो जातक की धन, बुद्धि और निपुणता में कमी रहती है |
- यदि सूर्य स्थित भाव से चन्द्रमा पणफर (2, 5, 8, 11) भावों में हो तो जातक की धन, बुद्धि और निपुणता मध्यम होती है |
- यदि सूर्य स्थित भाव से चन्द्रमा आपोक्लिम (3,6,9,12) भावों में हो तो जातक की धन, बुद्धि और निपुणता उत्तम स्तर की होती है |
- यदि दिन में जन्म हो और चन्द्रमा गुरु से दृष्ट हो तथा अपने या अपने अधिमित्र के नवांश में हो तो जातक धनी और सुखी होता है |
- यदि रात्रि का जन्म हो और पूर्वोक्त योग बने लेकिन चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि न हो तो जातक निर्धन होता है |
- यदि रात्रि का जन्म हो और चन्द्रमा अपने अधिमित्रांश में होकर शुक्र से देखा जाता हो तो मनुष्य धनवान होता है तथा उसका वैभव राजा के समान होता है |
- यदि दिन में जन्म हो और पूर्वोक्त योग बने लेकिन चन्द्रमा पर शुक्र की दृष्टि न हो तो जातक निर्धन होता है |

सूर्य योग

सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो **वाशि योग** होता है | सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह हो तो **वेशि योग** और सूर्य से दोनों भावों में ग्रह हों तो **उभयचरी योग** होता है | सूर्य के आगे पीछे राहु, केतु एवं चन्द्रमा के अतिरिक्त कोई अन्य ग्रह न हो तो जीवन में अस्थिरता एवं अव्यवस्था रहती है | जातक में आत्मबल एवं शौर्य की कमी होती है | सूर्य के आत्मकारक होने के कारण ये योग कुण्डली में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं | बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् में कहा गया हैं कि वाशि, वेशि अथवा उभयचरी योगकर्ता ग्रह यदि अपने गृह या मित्रगृह या अपने उच्चस्थान में हों तो जातक बहुत धन और बहुत सुख से युक्त होता है | उसका वैभव राजा के समान होता है |

वाशि योगफल – वाशि योग में उत्पन्न जातक मन्द दृष्टिवाला, बहुत कार्य करने वाला, नीचे देखने वाला, ऊँचा शरीर वाला और झूठ बोलने वाला होता है |
वेशि योगफल – वेशि योग में उत्पन्न जातक दयालु, मोटे शरीर वाला, वाणी बोलने में चतुर, आलसी और तिरछी निगाहों वाला होता है |
उभयचरी योगफल - उभयचरी योग में उत्पन्न जातक सबकुछ सहन करने में सक्षम, स्थिर स्वभाव वाला, अत्यंत समृद्ध, अधिक बलवान, एक सी शरीर वाला, छोटा कद, सीधी दृष्टि और अधिक लक्ष्मी से युक्त होता है |

चन्द्र योग

चन्द्रमा से दूसरे भाव में सूर्य को छोड़कर अन्य कोई ग्रह रहे तो **सुनफा योग** होता है, चन्द्रमा से बारहवें भाव में सूर्य को छोड़कर अन्य कोई ग्रह हो तो **अनफा योग** होता है | यदि चन्द्रमा से दूसरे व बारहवें दोनों ही भावों में ग्रह हों तो **दुरुधरा योग** होगा | यदि चन्द्रमा से दूसरा व बारहवाँ, दोनों भाव ग्रहरहित हो तो **केमद्रुम योग** होता है | यदि जन्म कुण्डली में केमद्रुम योग हो और लग्न से केन्द्र स्थानों में शुभग्रह (मजबूत स्थिति में) उपस्थित हों तो **कल्पद्रुम** योग होता है |

सुनफा योगफल - सुनफा योग में उत्पन्न जातक राजमंत्री, सुन्दर, यशस्वी, अपने बाहुबल से उपार्जित धन से युक्त, प्रसिद्ध, कीर्तिमान् व बुद्धिमान् होता है |

अनफा योगफल - अनफा योग में उत्पन्न जातक समर्थ, नम्र, सुन्दर वाणी वाला, शीलवान्, गुणवान, उदार, कीर्तिमान् एवं कामी होता है |

दुरुधरा योगफल - दुरुधरा योग में उत्पन्न जातक धन, वाहन सुख से युक्त, विजित शत्रुपक्ष वाला और स्त्री से संतुष्ट होता है |
कल्पद्रुम योगफल – कल्पद्रुम योग में उत्पन्न जातक धन संग्रह करने में कुशल होता है, और सुखी जीवन व्यतीत करता है |
केमद्रुम योगफल – केमद्रुम योग में उत्पन्न जातक धन, पुत्र, स्त्री और बन्धु से रहित होता है | वह दास जीवन व्यतीत करता है और परदेसी होता है | यदि वह राजपुत्र भी हो तो भी वह नित्य मलिन रहने वाला और असभ्य वेषधारी होता है |
विद्वानों ने इसके कई भेद बताये हैं –

1. लग्न या सप्तम में चन्द्रमा हो तथा उसे गुरु न देखता हो |
2. सब ग्रह निर्बल हों |
3. शुक्र तथा शनि दोनों नीच राशि, शत्रु राशि या पाप राशि में हो तथा युति करें या परस्पर एक दूसरे को देखते हों |
4. चन्द्रमा पाप ग्रह से युक्त हो अथवा पाप ग्रह की राशि या नवांश में हो |
5. रात में जन्म हो तथा कमजोर चन्द्रमा पर दशमेश की दृष्टि हो |
6. रात में जन्म हो तथा क्षीण चन्द्रमा नीच राशिगत ग्रह से युक्त हो |

ये सब केमद्रुमयोग के ही भेद है | इन योगों में जन्म लेने वाला जातक यदि राजा के कुल में भी उत्त्पन्न हुआ हो तो भी दरिद्र होता है | सभी चन्द्रयोगों में केमद्रुम योग का विशेष विचार करना चाहिये क्योंकि केमद्रुम योग सभी शुभ योगों व राजयोगों को निष्फल कर देता है |

केमद्रुमभंग योग – केमद्रुमभंग योग राजयोग की श्रेणी में गिना जाता है | यदि जन्मकुण्डली में केमद्रुम योग बने और इसके साथ-साथ निम्नलिखित केमद्रुमभंग योग भी बनते हों तो केमद्रुम योग अपना अशुभ फल नहीं दिखा पाता है | साथ ही केमद्रुमभंग योग के प्रभाव से जातक समृद्ध जीवन व्यतीत करता है |

1. यदि कल्पद्रुम योग बनता हो |
2. केन्द्रगत चन्द्रमा गुरु से दृष्ट हो |
3. केन्द्र में शुक्र हो |
4. चन्द्रमा शुभग्रहों से युत हो तथा गुरु से दृष्ट हो |
5. चन्द्रमा के साथ कोई भी ग्रह (सूर्य को छोड़कर) हो |
6. पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तथा शुभ ग्रहों से युत हो |
7. चन्द्रमा दसवें स्थान में हो तथा गुरु उसे देखता हो |

||शुभमस्तु||

पूर्णदृष्ट्या तु यद्भावदर्शी ग्रहो लग्नतो यत्र राशिस्तदीयो भवेत् |
तन्मिताब्दे फलं तस्य वाच्यं यथाङ्गाद्यायान्तं समा द्वादशाग्रे तथा || (फलित मार्तण्ड)
जो भाव अपने अधिपति की पूर्णदृष्टि से युक्त हो तद्भावसंख्या वर्षों में उस भाव का फल प्राप्त होता है | लग्न से लेकर बारहवें भाव तक बारह वर्ष होते हैं और पुनः लग्न से तेरहवें वर्ष की गणना करते हुए यह आवृति १२० वर्षों तक चलती है |

बीसवाँ दिन

द्विग्रह योगफल

ग्रह योग	द्विग्रह योगों का फल
सूर्य-चन्द्र	स्त्री के वशीभूत, कार्य कुशल
सूर्य-मंगल	तेजस्वी, बली, सत्त्वयुक्त, झूठा, पापी
सूर्य-बुध	विद्वान, रूपवान, बलवान, चंचल
सूर्य-गुरु	श्रद्धालु, कर्मठ, राजा का प्रिय
सूर्य-शुक्र	स्त्री की सहायता से जीविका कमाने वाला, बन्धुजनों के द्वारा मान्य, बुद्धिमान
सूर्य-शनि	मंदबुद्धि जैसा, शत्रुओं द्वारा पीड़ित
चन्द्र-मंगल	शूर, सत्कुलीन, धार्मिक, धनी, गुणी
चन्द्र-बुध	धार्मिक, विचित्र गुणों वाला
चन्द्र-गुरु	साधु संगति, सज्जन संगति, अधिक बुद्धिमान
चन्द्र-शुक्र	पाप विचारों वाला, क्रय-विक्रय में कुशल
चन्द्र-शनि	खराब स्त्री से उत्पन्न, पिता को विशेष दोष देने वाला, धनहीन
मंगल-बुध	वाचाल, दवा एवं शिल्पकला में चतुर
मंगल-गुरु	कामुक, पूजनीय गुणों वाला, गणितज्ञ
मंगल-शुक्र	धातुवादी (सोना चांदी से सम्बंधित बातों को जानने वाला), दिखावा करने वाला, दिखावटी रसिक, धूर्त
मंगल-शनि	वाद विवाद करने वाला, गान करने वाला, जड़बुद्धि
बुध-गुरु	वाचाल, रूपवान, गुणी, बहुत धनी
बुध-शुक्र	शास्त्रवेत्ता, गीत-संगीत में रूचि रखने वाला, हास्यप्रिय
बुध-शनि	विद्यावान्, धनी, धार्मिक, गुणी
गुरु-शुक्र	तेजस्वी, राजाओं का प्रिय पात्र, बुद्धिमान, शूर
गुरु-शनि	शिल्पी
शुक्र-शनि	चौपायों का स्वामी, पहलवान

त्रिग्रह योगफल

ग्रह योग	त्रिग्रह योगों का फल
सूर्य-चन्द्र-मंगल	शत्रुनाशक, धनी, नीति कुशल
सूर्य-चन्द्र-बुध	राजा के समान, यशस्वी, विद्वान
सूर्य-चन्द्र-गुरु	गुणवान, विद्वान, राजप्रिय
सूर्य-चन्द्र-शुक्र	परस्त्री में रत, क्रूर, बहुत डरपोक
सूर्य-चन्द्र-शनि	दुष्ट बुद्धि, मायावी, विदेश के प्रति आकर्षण
सूर्य-मंगल-बुध	सुखहीन, पुत्र स्त्रीयुक्त, धनी
सूर्य-मंगल-गुरु	प्रिय कार्य करने वाला, सचिव, सेनापति
सूर्य-मंगल-शुक्र	नेत्ररोगी, भोगवान, कुलीन, धनी
सूर्य-मंगल-शनि	बंधु बांधवों से रहित, मूर्ख, निर्धन, रोगी
सूर्य-बुध-गुरु	चतुर बुद्धि, विद्यावान, यशस्वी, धनी
सूर्य-बुध-शुक्र	कोमल शरीर, विद्यावान, यशस्वी, सुखी
सूर्य-बुध-शनि	बंधुहीन, निर्धन, द्वेषभाव रखने वाला, दुराचारी
सूर्य-गुरु-शुक्र	स्त्री-पुत्रों से युक्त, बुद्धिमान, नेत्ररोगी, धनी
सूर्य-गुरु-शनि	निडर, राजा का प्रिय, सात्विक बुद्धि
सूर्य-शुक्र-शनि	दुश्चरित्र, गर्व व अभिमान से युक्त,
चन्द्र-मंगल-बुध	सदा खाने में मन लगाने वाला, दुष्कर्मकर्ता, कमियाँ निकालने वाला
चन्द्र-मंगल-गुरु	क्रोधपूर्ण बोलने वाला, कामातुर, रूपवान
चन्द्र-मंगल-शुक्र	चरित्रहीन, पुत्रवान्, भ्रमणशील,
चन्द्र-मंगल-शनि	चंचल बुद्धि, दुष्ट विचारों वाला, माता को विशेष कष्ट देने वाला
चन्द्र-गुरु-बुध	बहुत धनी, प्रसिद्ध, राजप्रिय
चन्द्र-बुध-शुक्र	विद्यावान, नीच कर्म करने वाला, बहुत सहयोगियों वाला
चन्द्र-बुध-शनि	त्यागी, राजपूज्य, गुणी
चन्द्र-गुरु-शुक्र	बुद्धिमान, अच्छी संतान वाला, कला कुशल
चन्द्र-गुरु-शनि	शास्त्रवेत्ता, उम्र में बड़ी स्त्री से प्रेम करने वाला, राजतुल्य
चन्द्र-शुक्र-शनि	वेदज्ञ, राजपुरोहित, बहुत सौभाग्यशाली
मंगल-बुध-गुरु	गीत संगीत, नाट्य-काव्य में रुचि रखने वाला
मंगल-बुध-शुक्र	हीनांग, खराब वंश में उत्पन्न, चंचल बुद्धि
मंगल-बुध-शनि	सेवक, नेत्र-रोगी, भ्रमणशील
मंगल-गुरु-शुक्र	राजा का प्रिय, पुत्रवान, सुखी
मंगल-शुक्र-शनि	खराब पुत्र वाला, सदा प्रवास में रहने वाला
बुध-गुरु-शुक्र	शत्रुजेता, कीर्तिमान, प्रतापी
बुध-गुरु-शनि	सुखी, श्रीमान, पत्नी का प्रिय
बुध-शुक्र-शनि	झूठ बोलने वाला, दुष्ट, परस्त्री रत
गुरु-शुक्र-शनि	निर्मल बुद्धि, प्रसिद्ध, सुखी

चतुर्ग्रह योगफल

ग्रह योग	चतुर्ग्रह योगों का फल
सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध	मायावी, ढोंग करने में निपुण, लिपिकार, रोगी
सूर्य-चन्द्र-मंगल-गुरु	धनवान, यशस्वी, बुद्धिमान, राजा का प्रिय, कार्यकुशल, रोग-शोक से हीन
सूर्य-चन्द्र-मंगल-शुक्र	स्त्री-पुत्र-संपत्ति से युक्त, विद्वान, कम भोजन करने वाला, सुखी, चतुर, कृपालु
सूर्य-चन्द्र-मंगल-शनि	अशांत, घबराई सी आँखों वाला, दुश्चरित्र स्त्री वाला, धनहीन
सूर्य-चन्द्र-बुध-गुरु	गुणी पुत्र वाला, धनी, गुणी, यशस्वी, उदार, सामर्थ्यशाली
सूर्य-चन्द्र-बुध-शुक्र	बेचैन, बेहाल, वाचाल
सूर्य-चन्द्र-बुध-शनि	निर्धन, कृतघ्न
सूर्य-चन्द्र-गुरु-शुक्र	जलप्रदेश, वनप्रदेश में काम करने वाला, राजा द्वारा मान्य, सुखभोगी
सूर्य-चन्द्र-गुरु-शनि	बड़ी आँखों वाला, बहुत धनी, पुत्रवान, दुःशीला पत्नी वाला
सूर्य-चन्द्र-शुक्र-शनि	बलहीन, डरपोक, कन्या जनों का साथ लेकर धन हड़पने वाला
सूर्य-मंगल-बुध-गुरु	बलवान, विपत्तियाँ झेलने वाला, स्त्री पुत्र धन संपन्न, नेत्ररोगी, अनुचर, अनुयायी
सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र	परस्त्री में रत, नेत्रदोष से युक्त, अटपटे कपडे पहनने वाला, चोर बुद्धि, सत्त्वहीन
सूर्य-मंगल-बुध-शनि	सेनापति, राजा का सलाहकार, नीच कार्य करने वाला, भोगविलास में तत्पर
सूर्य-मंगल-गुरु-शुक्र	राजा के समान जीवन वाला, प्रसिद्ध, पूजनीय, धनी
सूर्य-मंगल-गुरु-शनि	धनहीन, दिग्भ्रमित, मित्रों व बंधुओं से युक्त
सूर्य-मंगल-शुक्र-शनि	पराजय एवं अपमान झेलने वाला, गुणहीन
सूर्य-बुध-गुरु-शुक्र	धनी, यशस्वी, प्रधानता पाने वाला

सूर्य-बुध-गुरु-शनि	कलह प्रेमी, स्वाभिमानी, दुराचारी,
सूर्य-बुध-शुक्र-शनि	सुन्दर मुखमंडल, सत्यव्रती, सदाचारी
चन्द्र-मंगल-बुध-गुरु	राजा का विश्वासपात्र, मंत्री, कवि या राजा
चन्द्र-मंगल-बुध-शुक्र	उत्तम स्त्री पुत्रों वाला, विद्वान्, रूपहीन, सुखी
चन्द्र-मंगल-बुध-शनि	दो माता-पिताओं वाला, शूरवीर, बहुत स्त्री पुत्रों वाला
चन्द्र-मंगल-गुरु-शुक्र	अधर्मी, अधिक सोने वाला, धन का लोभी
चन्द्र-मंगल-गुरु-शनि	स्थिर विचारों वाला, शूर, सुखी व विद्वान
चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र	कम सुनने वाला, विद्वान, यशस्वी, धनी
चन्द्र-बुध-शुक्र-शनि	बहुत से लोगों से द्वेष करने वाला, अनेक जनों का द्वेष पात्र, परायी स्त्री को घर में रखने वाला
चन्द्र-गुरु-शुक्र-शनि	सुखहीन, श्रद्धा भाव एवं दया से रहित
मंगल-बुध-गुरु-शुक्र	धनी, प्रायः निन्दित
मंगल-बुध-गुरु-शनि	रोगयुक्त, धनहीन
बुध-गुरु-शुक्र-शनि	धनी, विद्यावान्, शीलवान्

पञ्चग्रह योगफल

ग्रह योग	पञ्चग्रह योगों का फल
सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-गुरु	युद्धकौशल से युक्त, चुगलखोर, सामर्थ्यशाली
सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-शुक्र	स्वधर्महीन, पराये धर्म में रुचि, दूसरों की नौकरी करने वाला
सूर्य-चन्द्र-मंगल-गुरु-शनि	आशावान, अभिमत स्त्री के विरह से व्याकुल
सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-शनि	अल्पायु, धन कमाने में तत्पर, स्त्री पुत्र से हीन
सूर्य-चन्द्र-मंगल-गुरु-शुक्र	निर्दयी, आततायी, माता-पिता व बंधुओं द्वारा उपेक्षित, नेत्रहीन
सूर्य-चन्द्र-मंगल-शुक्र-शनि	धनी, प्रभावशाली, मलिन, परस्त्री में अनुरक्त
सूर्य-चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र	मंत्री, धनी, बलवान, यशस्वी, स्वयं दण्ड देने में समर्थ
सूर्य-चन्द्र-बुध-गुरु-शनि	दूसरों का अन्न खाने वाला, डरपोक, बहुत पापाचारी, प्रशंसित व पूज्य, महत्वपूर्ण जीविका करने वाला
सूर्य-चन्द्र-बुध-शुक्र-शनि	धनहीन, लम्बे चौड़े शरीर, पुत्रहीन, बहुत रोगी
सूर्य-चन्द्र-गुरु-शुक्र-शनि	स्त्रीयुक्त, वाचाल, माया जादू आदि में निपुण, निडर, शत्रुयुक्त
सूर्य-चन्द्र-गुरु-शुक्र-मंगल	शोकरहित, सेना आदि से एवं वाहनों से युक्त, स्त्रियों के प्रति चंचल मन वाला
सूर्य-मंगल-बुध-गुरु-शनि	भिक्षा मांगकर जीवन बिताने वाला, मैले व फटे पुराने कपडे पहनने वाला
मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि	पूजनीय, कला कुशल, वध-बंधन पाने वाला एवं रोगी
सूर्य-मंगल-बुध-शनि-गुरु	श्रेष्ठ, दुखी, भूख एवं भय के कारणों से पीड़ित
चन्द्र-मंगल-गुरु-शुक्र-शनि	नौकर, निर्धन, मलिन वेषधारी, अति मूर्ख व चोर
चन्द्र-मंगल-बुध-गुरु-शनि	मंत्रक्रिया में कुशल, रति विशेषज्ञ, धातुविशेषज्ञ, प्रसिद्ध कार्य करने वाला
सूर्य-बुध-गुरु-शुक्र-शनि	ज्ञानवान, देवों एवं गुरुजनों के प्रति सद्बुद्धि रखने वाला, धर्माचारी, शास्त्रज्ञ
चन्द्र-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र	सज्जन, सुखी, बहुत धनी, सामर्थ्यशाली, विद्वान्
चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र-शनि	सर्वत्र आदर पाने वाला, पुरुषार्थ में कमी, राजा के समान वैभवसम्पन्न, मंत्री

षड्ग्रह योगफल

ग्रह योग	षड्ग्रह योगों का फल
सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र	शास्त्रकार, धर्मप्रवर्तक, वन–पर्वतवासी, स्त्री पुत्र व धन से युक्त
सूर्य-चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र-शनि	सिर में रोग, उन्मादी स्वभाव, निर्जन प्रदेश में रहने वाला, विदेशवासी
सूर्य-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि	भ्रमणशील, विद्वान, बुद्धिमान
चन्द्र-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि	तीर्थयात्रा करने वाला, व्रती
सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-गुरु-शनि	चोर, परस्त्रीरत, त्वचा रोगी, बांधवों द्वारा निन्दित, पुत्रहीन, मूर्ख, विदेशवासी
सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-शुक्र-शनि	नीच, पराया काम करने वाला, यक्ष्मा या कफ से पीड़ित, निन्दित
सूर्य-चन्द्र-मंगल-गुरू-शुक्र-शनि	मंत्री, धन स्त्री पुत्र व प्रसन्नता से रहित, शांतचित्त

सप्तग्रह योगफल

सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि सातों ग्रह यदि एक साथ हों तो जातक सूर्य के समान तेजस्वी, राजमान्य, शिवभक्त, दानी और धनवान होता है |

*प्राचीन शास्त्रों में राहु केतु की युति के योगों का अलग से वर्णन नहीं है | इनकी युति से अन्य ग्रहों के दुर्गुणों में वृद्धि होती है |

||शुभमस्तु||

स्वप्नो निमित्तं शकुनं स्वकर्मशरीरभोगं तु किमदृभुतानि |
दोषाभिचारग्रहचारकालाः काम्यानि दैवविविधफलानि || (बृहद्दैवज्ञरंजन)
स्वप्न, निमित्त, शकुन, स्वकर्म, शरीरभोग, दोष, अभिचार, ग्रहचार, काल तथा विविध काम्यफल भाग्यवश घटित होते हैं |

इक्कीसवाँ दिन

राजयोग

राजयोग का अर्थ है- ऐसे योग जो मनुष्य को जीवन में धन, सम्पत्ति, पद व यश प्रदान करते हैं | परन्तु यह सब किसे कितना मिलेगा, इसका निर्णय कुण्डली के बल तथा व्यक्ति की परिस्थिति एवं वातावरण से ही जाना जा सकेगा | समान राजयोग होने पर भी प्रायः लोग अलग-अलग जीवन स्तर के देखे गए हैं | कहने का तात्पर्य यह है कि कुण्डली में यदि राजयोग है, तो उसका मतलब यह नहीं लगाना चाहिए कि अमुक व्यक्ति राजा हो जाएगा | इन योगों का वास्तविक प्रभाव दूसरी बातों से भी प्रभावित होगा | यही कारण है कि राजयोग वाले सरकारी नौकरी या अच्छे व्यापारी अथवा बड़े नामी भी देखे जाते हैं और सामान्य जीवन गुजारने वाले भी |

कुछ महत्वपूर्ण राजयोग

1. केन्द्र के स्वामी ग्रह का त्रिकोण के स्वामी ग्रह से सम्बन्ध राजयोग कारक है |
2. नवमेश दशम में, दशमेश नवम में हो तो राजयोग कारक है |
3. नवमेश व दशमेश नवम या दशम में एकत्र हो तो राजयोग कारक है |
4. नवम में नवमेश या दशम में दशमेश अथवा दोनों में एक ग्रह अपने स्थान में हो तो राजयोग कारक है |
5. लग्नेश व दशमेश का किसी शुभ स्थान में एकत्र होने पर राजयोग बनता है |
6. दशमेश व लग्नेश का स्थान सम्बन्ध हो तो राजयोग कारक है |
7. दो या तीन ग्रह उच्च राशि, स्वराशि, मित्र राशि या नवांश में शुभ स्थान में हो तो राजयोग कारक हैं |
8. नीच राशि का वक्री ग्रह शुभ स्थान हो तो राजयोग कारक है |
9. बलवान ग्रह केन्द्र व त्रिकोण में स्थित हो तो राजयोग कारक है |
10. एकादशेश का लग्नेश, पंचमेश, धनेश या चतुर्थेश से सम्बन्ध हो तो राजयोग कारक है |
11. लग्न या चन्द्रमा से 6-7-8 भावों में बुध, गुरु, शुक्र तीनों हों तो शुभ राजयोग (अधियोग) बनता है |
12. चतुर्थेश व नवमेश एक दूसरे से केन्द्र स्थानों (1-4-7-10) में स्थित हों तो राजयोग कारक हैं |
13. तीन या चार ग्रहों को दिग्बल प्राप्त हो तो राजयोग होता है |
14. चन्द्रमा केन्द्र में हो और बृहस्पति की उस पर दृष्टि हो तो राजयोग कारक होता है |
15. द्वितीय, नवम और एकादश के स्वामियों में से कोई एक चन्द्र से केन्द्र में हो और बृहस्पति द्वितीय, पंचम या एकादश का स्वामी हो तो राजयोग कारक होता है |
16. नवमेश लग्न में हो तो राजयोग कारक होता है |
17. दशमेश यदि चतुर्थ भाव में हो तो राजयोग कारक होता है |
18. दशमेश यदि द्वितीय भाव में हो तो राजयोग कारक होता है |
19. मध्यान्ह या मध्यरात्रि का जन्म हो तो राजयोग होता है |

20. मेष या कर्क लग्न में जन्म हो तथा शुक्र स्वगृही होकर पंचमेश के साथ हो तो राजयोग होता है |

नीचभंग राजयोग

मैं नीचभंग राजयोग का अपने फलादेश में अवश्य प्रयोग करता हूँ | यह राजयोग बहुत आश्चर्यजनक परिणाम देता है | ऐसा कभी नहीं हो सकता कि एक कुंडली में नीचभंग राजयोग अपना प्रभाव दिखाए और दूसरे में न दिखाए | ऐसा अगर होता है तो निश्चित ही हमारे विश्लेषण में कहीं न कहीं चूक हो रही है |

वैसे नीचभंग रोजयोग के संबंध में एक सबसे बड़ा भ्रम जो लोगों को होता है वो यह है कि लोग नीचभंग राजयोग बनने पर यह मान लेते हैं कि यह ग्रह नीच होने का अपना फल अब नहीं देगा परन्तु ऐसा बिल्कुल नहीं होता | नीचभंग होने का यह अर्थ कथमपि नहीं होता है कि ग्रह अपना नीचत्व खो देगा | नीचभंग राजयोग का तात्पर्य होता है, दशा परिपाक के समय ग्रह राजयोग का फल प्रदान करेगा | अप्रत्याशित रूप से पद, प्रतिष्ठा या वैभव की प्राप्ति होगी | लेकिन हाँ, ग्रह का नीचत्व सदैव बना रहेगा | उस ग्रह के नीच होने का जो भी फल शास्त्रों में बताया गया है वह फल उसे अवश्य प्राप्त होगा |

नीचभंग राजयोग के कुछ महत्वपूर्ण सूत्र -

1. जन्म कुण्डली की जिस राशि में ग्रह नीच का होकर बैठा हो उस राशि का स्वामी उसे देख रहा हो या फिर जिस राशि में ग्रह नीच होकर बैठा हो उस राशि का स्वामी स्वगृही होकर युति संबंध बना रहा हो तो नीचभंग राजयोग होता है|
2. अगर कोई ग्रह नवमांश कुण्डली में अपनी उच्च राशि में बैठा हो तो ऐसी स्थिति में उसका नीचभंग होकर वह राजयोग कारक हो जाता है|
3. जिस राशि में ग्रह नीच होकर बैठा हो उस राशि का स्वामी अपनी उच्च राशि में बैठा हो तो भी नीचभंग राजयोग होता है |
4. अपनी नीच राशि में बैठा ग्रह अगर अपने से सातवें भाव में बैठे नीच ग्रह को देख रहा हो तो दोनों ग्रहों का नीचभंग हो जाता है| ये महान योगकारक स्थिति का द्योतक है|
5. जिस राशि में ग्रह नीच का होकर बैठा हो उस राशि का स्वामी केन्द्र में उपस्थित हो एवं जिस राशि में नीच ग्रह उच्च का होता है उस राशि का स्वामी भी केन्द्र में बैठा हो तो निश्चित ही नीचभंग राजयोग होता है|
6. जिस राशि में ग्रह नीच का होकर बैठा हो उस राशि का स्वामी एवं जिस राशि में नीच ग्रह उच्च का होता है उसका स्वामी लग्न से कहीं भी केन्द्र में स्थित हों तो ऐसी अवस्था में भी नीचभंग राजयोग का होता है|

विपरीत राजयोग

कुण्डली के 12 भावों में से तीन भाव 6-8-12 के भावेश जब इन्हीं भावों में स्थित हो जाते हैं तो यह विपरीत राजयोग कहलाता है | उत्तर कालामृत में कालिदास जी ने विपरीत राजयोग का फल कहा है, कि विपरीत राजयोग वाले जातक बहुत समृद्ध और राजराजेश्वर होते हैं | भाव तीन होने से इनके भेद भी तीन कहे गए हैं |

हर्ष योग - यदि षष्ठेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में उपस्थित हो तो हर्ष नामक विपरीत राजयोग बनता है| इस योग में उत्पन्न जातक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है, समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती है | उसे अच्छे मित्रों, परिवार, जीवन साथी तथा बच्चों का वरदान मिलता है | वह धनी और प्रसिद्ध बनता है| उसके भाग्य में सारी सुख-सुविधाएं होती हैं|

सरल योग – यदि जन्मकुंडली के छठे, आठवें या बारहवें भाव में अष्टमेश की उपस्थिति हो तो सरल नामक विपरीत राजयोग बनता है| इस योग में उत्पन्न जातक प्रतिकूल परिस्थितियों से नहीं घबराता अपितु उनसे लड़ने की क्षमता रखता है | यह जातक अपने सामर्थ्य और साहस से सम्पदा अर्जित करता है और प्रसिद्ध होता है |

विमल योग - छठे, आठवें या बारहवें भाव में द्वादशेश की उपस्थिति से विमल नामक विपरीत राजयोग बनता है| इस योग के बनने के कारण व्यक्ति स्वतंत्रता पसंद करता है| उसे जीवन में प्रसन्न रहना अच्छा लगता है एवं वह न्यायप्रिय होता है| वह समाज में अपने अच्छे आचरण और व्यवहार के लिए जाना जाता है| ऐसा जातक धन संग्रह करने मे प्रवीण होता है| इनकी कीर्ति देश-विदेश तक फैलती है, यह योग विदेश वास भी कराता है |

• मैंने अनुभव किया है कि विपरीत राजयोग का फल आयु के उत्तरार्ध में (35 वर्ष की अवस्था के बाद) अधिक मिलता है |

• मैंने अनुभव किया है कि विपरीत राजयोग कारक ग्रह की दशा-अन्तर्दशा भी अच्छा फल देती है |

||शुभमस्तु||

बाईसवाँ दिन

कुछ शुभ योग

राजयोगों के अतिरिक्त कुछ और भी महत्वपूर्ण योग ज्योतिष् शास्त्र में कहे गए हैं | आज हम उन्हीं में से कुछ अति महत्वपूर्ण योगों की चर्चा यहाँ करेंगे, जिनका ज्ञान होना एक ज्योतिषी के लिए परम आवश्यक है |

शशि-मंगल योग – चन्द्र-मंगल योग **धनयोग** के नाम से प्रसिद्ध है | ऐसा व्यक्ति जीवन में धनी और समृद्ध होता है | हालाँकि इसके अशुभ फलों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए |

लग्नाधि योग - यदि लग्न से छठे, सातवें और आठवें भाव में शुभग्रह स्थित हों और वे शुभग्रह किसी पापग्रह से युत या दृष्ट न हों तथा चतुर्थ भाव में पापग्रह न हो तो **लग्नाधि योग** होता है | लग्नाधि योग में उत्पन्न जातक ग्रन्थकार, विद्वान्, नम्र, निष्कपट, महात्मा और संसार में यश, धन तथा गुण से प्रसिद्ध होता है |

चन्द्राधियोग - चन्द्रमा से 6ठे, 7वें और 8वें भाव में शुभग्रह स्थित हों और वे शुभग्रह किसी पापग्रह से युत या दृष्ट न हों तो **चन्द्राधियोग** होता है | यदि शुभग्रह बली हों तो चन्द्राधियोग में उत्पन्न जातक राजा होता है | मध्यम बली हों तो मन्त्री, अधम बली हों तो सेनानायक होता है |

अमला योग – जन्मलग्न से या चन्द्रमा से दशम स्थान में केवल शुभग्रह स्थित हों तो **अमला योग** होता है | अमलायोग में उत्पन्न जातक की कीर्ति अतुल्य होती है और वह राजा से पूज्य, महाभोगी, दाता और बंधुओं का प्रिय होता है |

काहल योग – गुरु एवं चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों और लग्नेश बली हो तो **काहल योग** होता है | यदि सुखेश अपने उच्च या अपनी राशि का होकर कर्मेश से युत हो तो भी **काहल योग** होता है | इस योग में उत्पन्न जातक तेजस्वी, साहसी, मूर्ख, सेना के बल से युक्त और कुछ ग्रामों का स्वामी होता है |

गजकेसरी योग – चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो **गजकेसरी योग** होता है और चन्द्रमा नीच, अस्तादि में न गए हुए शुक्र, गुरु और बुध से दृष्ट हो तो भी **गजकेसरी योग** होता है | गजकेसरी योग एक उच्च स्तर का राजयोग माना जाता है| गजकेसरी योग में उत्पन्न जातक शत्रुहन्ता, वाक्पटु, राजसी सुख एवं गुणों से युक्त, दीर्घजीवी, कुशाग्रबुद्धि, तेजस्वी एवं यशस्वी होता है | गजकेसरी योगोत्पन्न जातक हर कठिन परिस्थितियों में तदनुरूप स्वयं को ढ़ालने तथा सही युक्तिपूर्वक उनका सामना करने में भी कुशल होता है | गजकेसरी योग राजयोग की श्रेणी में आता है इसलिए इस योग में उत्पन्न जातक सुख समृद्धि और ऊँचे जीवनस्तर को प्राप्त करता है |

पुष्कल योग – चन्द्रमा लग्न के स्वामी से युक्त हो और जिस राशि में चन्द्र हो उसका स्वामी केन्द्र में होकर या किसी अधिमित्र के भाव में होकर लग्न को देखता हो और लग्न में कोई बलवान ग्रह स्थित हो, तो यह योग बनता है | इस योग में उत्पन्न जातक धनी, नम्रभाषी, प्रसिद्ध, ईमानदार और सरकार द्वारा प्रतिष्ठित होता है |

लक्ष्मी योग – जब लग्न का स्वामी बलवान हो और नवम का स्वामी केन्द्र त्रिकोण में अपनी स्वराशि या उच्च राशि में हो तो यह योग बनता है | इस योग में उत्पन्न जातक सज्जन, धनी, विद्वान, रूपवान, प्रसिद्ध, ईमानदार और सब तरह से सुखों को भोगने वाला होता है |

कलानिधि योग – दूसरे या पांचवें भाव में गुरु हो, बुध शुक्र से युत या दृष्ट हो अथवा इन्हीं की राशि में हो तो **कलानिधि योग** होता है | इस योग में उत्पन्न जातक कामी, सुन्दर गुणों से युक्त, राजाओं में पूज्य चरण वाला, सेना, घोड़ा, मतवाले हाथी, शंख, भेरी आदि बाजाओं से युक्त, रोग भय और शत्रु से रहित होता है |

कुसुम योग – स्थिर लग्न (2,5,8,11) में जन्म हो और शुक्र केन्द्र में हो, चन्द्रमा 5वें भाव में हो और 10वें स्थान में शनि हो तो **कुसुम योग** होता है | इस योग में उत्पन्न जातक दाता, राजाओं से वन्दनीय, भोगी, उत्तम कुल में उत्पन्न, राजाओं में मुख्य, संसार में कीर्तियुक्त, प्रतापी और राजा होता है |

पारिजात योग – लग्नेश जिस राशि में हो, उसका स्वामी जिस राशि में हो, उसका स्वामी या उसके नवांश का स्वामी यदि केन्द्र, त्रिकोण लाभ स्थान में अथवा अपनी उच्चराशि में हो तो **पारिजात योग** होता है | इस योग में उत्पन्न जातक मध्य और अंतिम अवस्था में सुखी, राजाओं से वन्दनीय, युद्धप्रिय, हाथी-घोड़े से युक्त, अपने धर्म-कर्म में रत एवं दयालु होता है |

पर्वत योग – यदि सातवें या आठवें भाव में कोई ग्रह न हों अथवा शुभग्रह से युत हो और केन्द्रों में शुभग्रह हो तो **पर्वत योग** होता है | लग्नेश और व्ययेश परस्पर केन्द्र में हों और मित्रग्रह से दृष्ट हों तो भी **पर्वत योग** होता है | इस योग में उत्पन्न जातक भाग्यवान, विद्वान और दाता होता है |

श्रीनाथयोग – सप्तमेश दशमस्थान में हो, अपनी उच्चराशि में कर्मेश भाग्येश के साथ हो तो **श्रीनाथयोग** होता है | इस योग में उत्पन्न जातक इंद्र के समान राजा होता है |

महाभाग्य योग – यह योग जातक को अत्यंत भाग्यवान बनाता है | यदि दिन में जन्म हुआ हो और कुण्डली में लग्न, चन्द्र और सूर्य सब विषम राशि में हों तो **महाभाग्य योग** होता है | इसी तरह रात्रि में जन्म हो और लग्न, चन्द्र और सूर्य सम राशि में हों तो भी **महाभाग्य योग** होता है |

रज्जु योग – सभी ग्रह चर राशियों में हों तो रज्जु योग होता है | इस योग में उत्पन्न जातक सुन्दर व्यक्तिव वाला और भ्रमणप्रिय होता है | यह जातक जन्म स्थान से दूर जाकर उन्नति करता है |

मुसल योग - यदि सभी ग्रह स्थिर राशियों में हों तो मुसल योग होता है | मुसल योग में जन्मा जातक धनी, प्रसिद्ध, पुत्र सन्तति से युक्त, बड़ा पदाधिकारी और राज सम्मान पाने वाला होता है |

नल योग - यदि सभी ग्रह द्विस्वभाव राशियों में हों तो नल योग होता है | नल योग में उत्पन्न जातक धनाढ्य, लोकचतुर और सफल राजनीतिज्ञ होता है |

माला योग – यदि 4-7-10 भावों में बुध, गुरु व शुक्र हों तथा अन्य सभी ग्रह केन्द्र के अतिरिक्त भावों में हों तो माला योग होता है | माला योग में उत्पन्न जातक शौक़ीन, धनी, सुखी, अनेक स्त्रियों से प्रेम रखने वाला और शासनाधिकारी होता है |

श्रृंगाटक योग – यदि सारे ग्रह लग्न एवं त्रिकोण स्थानों में हों तो श्रृंगाटक योग बनता है | ऐसा व्यक्ति कर्मवीर सैनिक, रणकुशल तथा वीरता के कामों से सम्मानित होता है |

कमल योग – सारे ग्रह यदि केन्द्र स्थानों में हों तो कमल योग होता है | इस योग में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति परम भाग्यशाली, राजा, दीर्घायु, यशस्वी, धनी तथा बहुत प्रभावशाली होता है |

वापी योग – यदि केन्द्र में कोई ग्रह न हो, सारे ग्रह अन्यान्य भावों में हों तो वापी योग बनता है | इस योग में उत्पन्न जातक चतुर, कुशल-वक्ता, सद्गृहस्थ, कलाप्रिय होता है | यह एक प्रकार का राजयोग है |

नौका योग – लग्न स्थान से लगातार सातवें स्थान तक यदि सभी ग्रह हों, तो नौका योग होता है | ऐसा व्यक्ति समुद्र यात्रा करने वाला, नौसैनिक, गोताखोर, धनी लेकिन कंजूस होता है |

छत्र योग – यदि सातवें भाव से लगातार लग्न तक सभी ग्रह स्थित हों तो छत्र योग होता है |इसमें जन्म लेने वाला जातक लोकप्रिय, उच्च-पदासीन, ईमानदार तथा बड़े परिवार वाला होता है |

चक्र योग – यदि लग्न से वैकल्पिक स्थानों अर्थात् 1-3-5-7-9-11 स्थानों में सभी ग्रह स्थित हों तो चक्र योग होता है | यह जातक प्रखर राजनीतिज्ञ, राष्ट्रपति या राज्यपाल अर्थात् सर्वोच्च अधिकारी (प्रभुसत्ता सम्पन्न) होता है |

केदार योग - चार राशियों में सभी ग्रह होने से केदार योग होता है | यह बहुत ही शुभयोग माना गया है| जिस जातक के जन्मकुंड़ली में यह योग होता है वह कृषिकार्य में निपुण, बलवान, बहुत मनुष्यों का पालनकर्ता, आलस्य-रहित, धनवान्, श्रेष्ठ, भाग्यवान्, सत्यवादी और बंधुओं पर उपकार करने वाला होता है|

दाम योग – छः राशियों में सभी ग्रह होने से दाम योग होता है | दाम योग में उत्पन्न जातक प्रसिद्ध, परोपकारी, ऐश्वर्यवान् और पुत्रवान् होता है |

वीणा योग – सात राशियों में सभी ग्रह होने से वीणा योग होता है | वीणा योग में उत्पन्न जातक धनी, नेतृत्व कुशल व संगीत प्रेमी होता है |

बुधादित्य योग - जन्मकुंडली के किसी भी भाव में सूर्य-बुध एक साथ हों तो बुधादित्य योग बनता है| बुधादित्य योग की गिनती राजयोगों में होती है, बुधादित्य योग में जन्मा जातक भाग्यशाली होता है और राजसी जीवन प्राप्त करता है| बुधादित्य योग वाले जातक बुद्धिमान, दूरदर्शी एवं चतुर होते हैं| वह प्रत्येक समस्या का समाधान अपने मस्तिष्क से निकालते हैं| साथ ही वे बोलने में भी वाचाल एवं निपुण होते हैं|

पञ्च महापुरुषयोग – यदि मंगल अपनी स्वराशि मेष या वृश्चिक या उच्चराशि मकर में हो और चन्द्र या लग्न से केन्द्र में हो तो **रुचक योग** बनता है | यदि बुध अपनी स्वराशि मिथुन या कन्या (उच्चराशि) में होकर लग्न या चन्द्र से केन्द्र में हो तो **भद्र योग** बनता है | यदि बृहस्पति अपनी स्वराशि धनु, मीन या उच्चराशि कर्क में होकर चन्द्र या लग्न से केन्द्र में हो तो **हंस योग** बनता है | यदि शुक्र अपनी स्वराशि वृष, तुला या उच्चराशि मीन में होकर चन्द्र या लग्न से केन्द्र में हो तो **मालव्य योग** होगा | यदि शनि अपनी स्वराशि मकर, कुम्भ या उच्चराशि तुला में होकर लग्न या चन्द्र से केन्द्र में हो तो **शश नामक** पंच महापुरुष योग बनता है |

1. जो व्यक्ति **रुचक योग** में जन्म लेता है उसका दीर्घ मुख होता है और वह बहुत साहस से धन प्राप्त करता है | वह शूर और बली होता है, शत्रुओं को मारने वाला और अभिमानी होता है | वह सेनापति बनता है और अपने गुणों के कारण प्रसिद्ध व कीर्तिमान होता है और प्रत्येक उद्योग में विजयी होता है |

2. जो व्यक्ति **भद्र योग** में जन्म लेता है वह कुशाग्र-बुद्धि वाला और शुद्ध होता है | विद्वान उसकी प्रशंसा करते हैं | भाषण देने में चतुर अत्यंत वैभवशाली और उच्चाधिकारी होता है |
3. जो व्यक्ति **हंस योग** में जन्म लेता है उसके हाथ-पैरों में शंख, कमल, मत्स्य और अंकुश के चिह्न होते हैं | वह सौम्य रूपवाला, उत्तम भोजन करने वाला और सज्जनों द्वारा प्रशंसनीय होता है |
4. जो व्यक्ति **मालव्य योग** में जन्म लेता है वह धैर्यवान और पुष्ट अंग वाला होता है, उत्तम भोजन करने वाला, विद्वान, प्रसन्नमुख, शान्तचित्त, पुत्र व स्त्रियों के सुखों से युक्त, सदैव वृद्धि को प्राप्त, यशस्वी और अच्छी सवारियों का भोक्ता होता है |
5. जो व्यक्ति **शश योग** में जन्म लेता है वह किसी गाँव का स्वामी या उच्च पदाधिकारी होता है | वह स्वयं बलवान होता है और उसके नीचे अच्छे-अच्छे लोग काम करते हैं | ऐसा व्यक्ति उत्तम आचरण का नहीं होता है और परस्त्रियों पर आसक्त होता है | वह धनी और सुखी होता है |

||शुभमस्तु||

लग्ननवांशपतुल्यतनुः स्याद्वीर्ययुतग्रहतुल्यतनुर्वा |
चन्द्रसमेतनवांशपवर्णः कादिविलग्नविभक्तभगात्रः || (बृहज्जातक)
लग्न के नवांशाधिपति ग्रह के समान जातक का शारीरिक वर्ण होता है अथवा जन्मकुण्डली के बलवान् ग्रह के अनुरूप जातक का रंग-रूप होता है | साथ ही, चन्द्रमा के नवांशेश के अनुरूप भी जातक के शारीरिक स्वरूप का विचार करना चाहिए | लग्न से आरम्भ करके विभिन्न भावों में कालपुरुष के अंगों के अनुरूप जातक के अंगों का विचार करना चाहिए |

धर्मकर्माधिनेतारौ रन्ध्रलाभाधिपौ यदि | तयोः सम्बन्धमात्रेण न योगं लभते नरः ||

(लघुपाराशरी)

धर्मेश और कर्मेश यदि लाभेश या अष्टमेश भी हो जाएँ तो सम्बन्ध करने पर वे योगकारक नहीं माने जाते हैं, अर्थात् उनके योगकारक होने का शुभफल जातक को प्राप्त नहीं होता है |

केन्द्रत्रिकोणाधिपयोरेकत्वे योगकारकौ | अन्यत्रिकोणपतिना सम्बन्धो यदि किं परम् ||

(लघुपाराशरी)

केन्द्रेश एवं त्रिकोणेश परस्पर सम्बन्ध करने पर योगकारक हो जाते हैं | यदि इनका सम्बन्ध अन्य त्रिकोणपति से भी हो जाए तो फिर कहना ही क्या है !!

तेईसवाँ दिन

कुछ अशुभ योग

जन्मकुण्डली का फलादेश केवल शुभयोगों या राजयोगों के ही आधार पर नहीं देखा जाता बल्कि अशुभ योगों का परीक्षण करना भी बहुत अनिवार्य होता है | इसलिए आज कुछ महत्वपूर्ण अशुभ योगों का परिचय प्राप्त करेंगे |

महत्वपूर्ण अशुभ योग

1) **युग योग** – किन्हीं दो स्थानों में ही सभी ग्रह हों तो युग नामक योग बनता है | इस योग में जन्म लेने वाला जातक पाखण्डी, निर्धन, जाति अथवा समाज से बहिष्कृत, भिक्षुक तथा पुत्र-सम्मान एवं धर्म आदि से रहित होता है |
2) **शूल योग** – यदि सभी ग्रह तीन ही राशियों में स्थित हों तो यह योग बनता है | ऐसा व्यक्ति हिंसक, आलसी, दरिद्र, उग्र स्वभाव वाला तथा साहसी होता है | यह बहुत अशुभ योग है, इस योग में उत्पन्न जातक के जीवन में जेल जाने तक की स्थिति आ जाती है |
3) **पाश योग** – पांच ही राशियों में सभी ग्रहों के स्थित होने से पाश योग होता है | इस योग में उत्पन्न व्यक्ति दुःखी, बड़े परिवार वाला, गुप्तचर तथा ढोंगी होता है |
4) **केमद्रुम योग** – चन्द्रमा से बारहवें तथा दूसरे स्थानों में यदि सूर्य को छोड़कर कोई अन्य ग्रह न हो तो केमद्रुम योग होता है | ऐसा व्यक्ति दरिद्र होता है |
5) **ह्रद योग** - यदि जन्मकुंडली में सब ग्रह नीच राशि में हों तो उक्त योग होता है | ऐसा व्यक्ति निर्धन, दुर्भाग्य से घिरा हुआ व दुःखी होता है |
6) **विशेष कष्ट योग** - मंगल, शनि, चन्द्र व बुध के नीच होने पर विशेष कष्ट योग होता है | ऐसे जातक के जीवन में कुछ अपरिहार्य घटनाएँ घटती हैं | इनका जीवन संघर्षमय होता है |
7) **फणि योग** - जन्म कुंडली में कुम्भ में सूर्य, मेष में शनि, कन्या में शुक्र तथा वृश्चिक में चन्द्रमा हो तो उक्त योग होता है | इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति विकल, परेशान तथा निर्धन होता है |
8) **गुरु-चांड़ाल योग** – गुरु के साथ यदि राहु/केतु की युति हो तो इसे गुरुचांडाल योग कहते हैं | इस योग में उत्पन्न जातक का चारित्रिक पतन हो सकता है तथा वह भ्रष्ट कार्यो में संलग्न हो सकता है | राहु/केतु का गुरु के साथ संबंध बन रहा हो तो वह व्यक्ति बहुत अधिक भौतिकवादी होता है | वह अधिक से अधिक धन कमाकर अपनी इच्छा को मूर्त रूप देना चाहता है | यदि गुरु के साथ केतु हो तथा गुरु शुभ स्थिति में हो तो जातक सामाजिक तथा आध्यात्मिक होता है| कभी कभी तो ऐसा जातक मानव कल्याण में ही अपना पूरा जीवन निकाल देता है |
9) **शनि-राहु योग** – शनि-राहु की युति बहत अशुभ है | जन्मकुंडली में इस योग के रहने पर व्यक्ति कई प्रकार के मानसिक व शारीरिक व्याधियों से घिरा रहता है |
10) **पापकर्तरी योग** – यदि किसी ग्रह या भाव के आगे पीछे एक-एक वक्री व मार्गी पापग्रह स्थित हों तो पापकर्तरी योग होता है | इस योग में उत्पन्न जातक सम्बद्ध भाव या ग्रह जनित अशुभता से परेशान रहता है |

11) **ज्वालामुखी योग** - प्रतिपदा तिथि को मूल, पञ्चमी तिथि को भरणी, अष्टमी तिथि को कृतिका, नवमी तिथि को रोहिणी, दशमी तिथि को श्लेषा नक्षत्र होने पर ज्वालामुखी योग होता है | इस योग में जातक की मृत्यु निश्चित है, यदि सौभाग्यवश बच भी जाए तो जीवन संघर्षों से घिरा रहता है |

*पूर्वोक्त शुभाशुभ योगों में सर्वत्र राहु एवं केतु को सम्मिलित नहीं किया गया है | योगविचार में मुख्यतः सूर्य से शनि पर्यन्त सात ही ग्रहों की गणना होती है |

मांगलिक विचार

जन्म कुण्डली में यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश (1-4-7-8-12) भावों में मंगल स्थित हो तो लड़का या लड़की मंगल दोष से युक्त (मांगलिक) समझे जाते हैं | इसीलिये विवाह के समय मांगलिक लड़के/लड़की का सम्बन्ध मांगलिक लड़के/लड़की से ही करने का आग्रह लोगों में देखा जाता है | वर-कन्या दोनों यदि मंगल दोष से युक्त हों तो उनका सम्बन्ध शुभ होता है, जैसे ऋण × ऋण = धन हो जाता है|

इसी तरह मांगलिक विचार चन्द्र कुण्डली से भी करना आवश्यक है | यदि लग्न में मंगल उक्त स्थानों में नहीं हो; किन्तु चन्द्र लग्न में इन्ही स्थानों में हो तो भी मंगल दोष माना जाएगा |

<u>मांगलिक दोष के परिहार</u>

1) किसी एक कुण्डली में 1-4-7-8-12 भावों में मंगल स्थित हो तथा दूसरी कुण्डली में इन्हीं भावों में यदि शनि, राहु या स्वयं मंगल उपस्थित हो तो मांगलिक दोष का परिहार हो जाता है |
2) यदि बलवान गुरु या शुक्र लग्न में अथवा सप्तम स्थान में हो तो मंगल दोष नहीं होता |
3) यदि मंगल नीच राशि में हो, शत्रुराशि में हो, अस्त हो या वक्री हो तो उक्त दोष नहीं होता |
4) केंद्र व त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह तथा 3-6-11 स्थानों में पापग्रह स्थित हों तो मांगलिक दोष नहीं होता |
5) यदि सप्तमेश सातवें स्थान में ही हो तो भी मंगल दोष नहीं होता |

कालसर्प दोष

यदि सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य में आ जायें, कोई भी ग्रह अंशात्मक रूप से भी राहु या केतु से बाहर न हो कालसर्प योग बनता है | कुंडली के 12 भावों में राहु और केतु की उपस्थिति क्रम से कुल 12 प्रकार के कालसर्प योग होते हैं |

1- **अनंत कालसर्प योग** - यदि लग्न में राहु एवं सप्तम में केतु हो, तो यह योग बनता है | इसके कारण जातक कभी शांत नहीं रहता, झूठ बोलता है एवं षड्यंत्रों में फंस कर न्यायालय का चक्कर लगाता रहता है |

2- **कुलिक कालसर्प योग** - यदि राहु धन भाव में एवं केतु अष्टम में हो, तो यह योग बनता है | इस योग में जातक को पुत्र एवं जीवन साथी का सुख, गुर्दे की बीमारी, पितृ सुख का अभाव एवं कदम कदम पर अपमान सहना पड़ सकता है |

3- **वासुकी कालसर्प योग** - यदि कुंडली के तृतीय भाव में राहु एवं नवम भाव में केतु हो एवं इसके मध्य सारे ग्रह हों, तो यह योग बनता है | इस योग में जन्म होने पर भाई-बहन को कष्ट, पराक्रम में कमी, भाग्योदय में बाधा, नौकरी में कष्ट, विदेश प्रवास में कष्ट उठाने पड़ते हैं |

4- **शंखपाल कालसर्प योग** - यदि राहु चतुर्थ में एवं केतु दशम में हो, तो यह योग बनता है | जातक भाग्यहीन होकर अपमानित होता है, उसे पिता का सुख नहीं मिलता | तथा वह नौकरी में बार-बार निलंबित होता रहता है |

5- **पद्म कालसर्प योग** - अगर पंचम भाव में राहु एवं एकादश में केतु हो तो यह योग बनता है | इस योग में जन्म हो तो संतान सुख का अभाव एवं वृद्धावस्था में दुःख होता है | इस जातक के बहुत शत्रु होते हैं तथा उसे सट्टे में भारी हानि होती है |

6- **महापद्म कालसर्प योग** - यदि राहु छठें भाव में एवं केतु व्यय भाव में हो, तो यह योग बनता है | इसमें उत्पन्न जातक को पत्नी-विरह, आय में कमी तथा चरित्र-हनन का कष्ट भोगना पड़ता है |

7- **तक्षक कालसर्प योग** - यदि राहु सप्तम में एवं केतु लग्न में हो तो यह योग बनता है, ऐसे जातक की पैतृक संपत्ति नष्ट होती है, पत्नी सुख नहीं मिलता, बार-बार जेल यात्रा करनी पड़ती है |

8- **कर्कोटक कालसर्प योग** - यदि राहु अष्टम में एवं केतु धन भाव में हो, तो यह योग बनता है | इस योग में जन्म होने पर भाग्य को लेकर जातक को परेशानी होती है | नौकरी की संभावनाएं कम रहती हैं, व्यापार नहीं चलता, पैतृक संपत्ति नहीं मिलती और नाना प्रकार की बीमारियां घेर लेती हैं |

9- **शंखचूड़ कालसर्प योग** - यदि राहु नवम भाव में एवं केतु तृतीय भाव में हो, तो यह योग बनता है | इस योग में उत्पन्न जातक के व्यवसाय में बार-बार उतार-चढ़ाव देखने को मिलता है एवं उसका स्वास्थ्य खराब रहता है |

10- **घातक कालसर्प योग** - यदि राहु दशम भाव में एवं केतु सुख भाव में हो तो यह योग बनता है | ऐसे जातक संतान के रोग से परेशान रहते हैं तथा उनको माता-पिता के वियोग का सामना भी करना पडता है |

11- **विषधर कालसर्प योग** - यदि राहु लाभ में एवं केतु पुत्र भाव में हो तो यह योग बनता है | ऐसा जातक घर से दूर रहता है, भाईयों से विवाद रहता है | उसे हृदय रोग होता है एवं रोगों के कारण उसका शरीर जर्जर हो जाता है |

12- **शेषनाग कालसर्प योग** - यदि राहु व्यय में एवं केतु रोग भाव में हो, तो यह योग बनता है | ऐसे जातक शत्रुओं से पीड़ित रहते हैं | उनका शरीर स्वस्थ नहीं रहता, आँखों में विशेष रोग होते हैं | उन्हें बार-बार न्यायालय का चक्कर भी लगाना पड़ता है |

||शुभमस्तु||

लग्नात्पापावृज्वनृजू व्ययार्थस्थौ यदा तदा | कर्तरी नाम सा ज्ञेया मृत्युदारिद्यशोकदा ||

(मुहूर्त चिन्तामणि)

लग्न से व्यय (द्वादश) तथा अर्थ (द्वितीय) भाव में पापग्रह हों जिनमें एक मार्गी तथा दूसरा वक्री हो तो (पाप)कर्तरी योग बनता है | यह योग मृत्यु. दरिद्रता एवं शोक प्रदान करने वाला होता है |

चन्द्रे सूर्यादिसंयुक्ते दारिद्यं मरणं शुभम् | सौख्यं सापत्नवैराग्ये पापद्वययुते मृतिः ||

(मुहूर्त चिन्तामणि)

लग्नकुण्डली में चन्द्रमा यदि सूर्य से सम्बन्ध करे तो दरिद्रता, मंगल से सम्बन्ध करे तो मृत्युप्रद, बुध से सम्बन्ध करे तो शुभ, गुरु से सम्बन्ध करे तो सुख, शुक्र से सम्बन्ध करने पर शत्रुवृद्धि करने वाला, शनि से सम्बन्ध करे तो वैराग्यप्रद होता है | साथ ही, यदि दो पापग्रह से युत हो तो मृत्युप्रद (विशेषकर बाल्यकाल में) होता है |

चौबीसवाँ दिन

विंशोत्तरी दशा का फल

सभी दशाओं में विंशोत्तरी दशा प्रधान होती है और ग्रहों के फल परिपाक का समय दशा से ही जाना जा सकता है | इसलिए विंशोत्तरी दशा पर आधारित नियमों को जानना बहुत महत्त्वपूर्ण है | विंशोत्तरी दशाफल के प्रसंग में निम्नलिखित सूत्रों का सावधानी से परीक्षण करना चाहिए |

दशाफल के महत्त्वपूर्ण सूत्र

1) ग्रह जिस भाव में स्थित है उस भाव से सम्बन्धित फल देगा |
2) जिस स्थान का स्वामी या कारक होगा उससे सम्बन्धित फल देगा |
3) जिन स्थानों पर जिस अनुपात से दृष्टि रखेगा उन भावों का भी उसी अनुपात से फल देगा |
4) जिन ग्रहों की राशि में होगा, जो ग्रह उसे देखते होंगे, जिनके साथ या जिनके बीच में ग्रह घिरा होगा उन सब ग्रहों के शील व स्वभाव से अपने शुभाशुभ फल में न्यूनता अथवा वृद्धि करेगा |
5) ग्रह स्वभावतः शुभ या अशुभ है, किन्तु लग्नकुण्डली में अपनी राशि, उच्च राशि, मित्र राशि में हो या नवांश कुण्डली में स्व, उच्च या मित्र के नवांश में अथवा वर्गोत्तमांश में हो तथा वक्री या अस्त न हो तो सदा ऊपर बताये गए नियमों के अनुसार सम्बन्धित भावों के फल की वृद्धि ही करेगा | उदाहरणार्थ, लग्नेश की दशा नियमतः शुभ होनी चाहिए, लेकिन वह नीच, अस्तंगत, अशुभवर्गी आदि होकर पाप पीड़ित हो तो कुछ भी विशेष शुभ फल अपनी दशा में नहीं दे सकेगा |
6) यदि ग्रह शत्रु राशि, नीच राशि, अशुभ ग्रहों से ग्रस्त तथा निर्बल होगा तो अपनी दशा में सम्बन्धित भावों के फल की हानि करेगा |
7) कोई भी ग्रह अपनी महादशा में अपनी ही अन्तर्दशा में अपना पूरा फल नहीं देता |
8) सभी ग्रह अपने समानधर्मी या सम्बन्धी ग्रह की अन्तर्दशा में अपना पूरा फल देते है | शुभ ग्रह का शुभ गहों से तथा पाप ग्रहों का पाप ग्रहों से समान धर्मत्व होता है |
9) पाराशरीय मत से केन्द्रेशों व त्रिकोणेशों के सम्बन्ध पर आधारित सभी कारक ग्रहों की दशाएँ उत्कृष्ट फल देती है |
10) कारकों के सम्बन्धी ग्रहों की दशा में भी कारक ग्रहों का फल मिलता है | जैसे कर्क लग्न का कारक मंगल यदि शनि से योग करता हो तो शनि की दशा में भी उत्कृष्ट फल मिलेंगे |
11) जो दशापति बलवान हों वे अपनी दशा में अपना पूरा फल देते हैं लेकिन बलहीन दशापति कुछ भी फल देने में समर्थ नहीं होते | मध्यम बली ग्रह का फल मध्यम समझना चाहिए |

अन्तर्दशा फल के कुछ विशेष सूत्र

1. पापग्रह की महादशा में यदि पापग्रह की ही अन्तर्दशा होती है, तो जातक को भीषण धननाश का सामना करना पड़ता है | उसे शत्रुओं से हानि मिलती है और रोगों से जूझते- जूझते वह परेशान हो जाता है |
2. पापग्रह की महादशा में शुभग्रह की अन्तर्दशा चल रही हो तो जातक पूर्वार्ध में कष्ट पाता है और उत्तरार्ध में शुभ ग्रह के फलों को भोगता है |
3. शुभग्रह की महादशा में शुभग्रह की अन्तर्दशा के समय जातक की सम्मानवृद्धि होती है, नौकरी में पदोन्नति और शारीरिक सुख मिलता है |
4. शुभग्रह की महादशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो, तो जातक पूर्वार्ध में उत्तम फल प्राप्त करता है, परंतु उत्तरार्ध में कुफल भोगने पड़ते हैं |
5. पापग्रह की महादशा में अस्त ग्रह की अन्तर्दशा चल रही होती है, तो जातक को व्यर्थ ही कलंकित होना पड़ता है |
6. वक्री ग्रह की दशा में व्यक्ति धन, सुख और सम्मान की हानि अवश्य उठाता है और कई नये-नये रोगों से पीड़ित होता है | हालाँकि वक्रीग्रह जन्य शुभफल व राजयोग भी उसे मिलते हैं |
7. मार्गी ग्रह की दशा में जातक सम्मान, सुख और द्रव्य- प्राप्ति करता है | ऐसा ग्रह राजयोग कारक हो तो वह चुनाव में जीतकर नेता बनता है तथा उसके प्रत्येक कार्य सिद्ध होते हैं |
8. नीच और शत्रुक्षेत्री ग्रह की दशा में व्यक्ति परदेश में निवास करता है | उसे व्यापार में हानि और मुकदमे में हार होती है, परन्तु इस दशा में जातक नीच कार्यों से धन भी प्राप्त करता है |
9. यदि राहु या केतु 3, 6 या 11 वें स्थान में हों तो जातक इन ग्रहों की दशाओं में दुःख उठाता है और द्रव्य-हानि सहता है |
10. महादशेश जिस स्थान में बैठा हो, उस स्थान से जो ग्रह 3.10.11 उपचय भावों में, 4.10 केन्द्रों में या 5.9 त्रिकोणों में बैठा हो वह अपनी अन्तर्दशा में शुभ फल देता है |
11. इसके विपरीत अन्तर्दशेश यदि महादशेश से 1.6.7.8.12 भावों में बैठा हो, तो अपनी दशा में अच्छा फल नहीं देता |
12. दशानाथ से द्वितीय भाव गत अन्तर्दशेश मिला-जुला फल देता है |
13. कारक महादशा में मारक अन्तर्दशा या मारक दशा में कारक अन्तर्दशा हो तो मिश्रित फल होता है |
14. परस्पर मित्र ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा शुभ, एवं शत्रु ग्रहों की दशा-अन्तर्दशा अशुभ फल देती है |
15. निसर्ग पाप ग्रहों की या अशुभ ग्रहों की या 6.8.12 भावेशों की दशा अशुभ फल देती है |
16. सारी अंतर्दशा को तीन बराबर भागों में बाँट लें | ग्रह प्रथम त्रिभाग में भावजन्य, द्वितीय त्रिभाग में राशि स्थिति का फल तथा तृतीय त्रिभाग में दृष्टि का फल विशेषतया देते हैं |

कुछ विशेष अनुभूत नियम

1. शनि-राहु की युति हो या ये किसी योगकारक ग्रह से संबंध करें तो अपनी दशान्तर्दशा में विशेष उन्नति देते हैं |
2. किसी भी राशि के 29वें या 30वें अंश में स्थित ग्रह, चाहे अन्य नियमों से शुभ सिद्ध होता हो, तब भी अपनी दशान्तर्दशा में सहसा दुर्घटना, कार्यहानि तथा कष्ट अवश्य ही प्रदान करता है |
3. नीचगत ग्रह या राहु के साथ स्थित ग्रह अपने शुभ फलों को देने में बहुत संकोच करता है |
4. राहु तथा गुलिक की राशि का स्वामी ग्रह अपने शुभ फलों को देने में बहुत संकोच करता हैं |
5. गुलिक के साथ स्थित ग्रह भी अशुभ होता है |
6. दशा प्रवेश के समय यदि चन्द्रमा बलवान हो तथा अपनी जन्म राशि से शुभ गोचर भावों में हो तो महादशा का फल बहुत अशुभ होते हुए भी कुछ कम हो जाता है | इसके विपरीत दशा प्रवेशकालीन चन्द्रमा की अशुभता व निर्बलता शुभ दशा के शुभ फल में कमी करेगी |
7. सामान्यतः राहुयुक्त ग्रह की दशा (यदि भावेश न हो) कष्टप्रद होती है तथा अंत में विशेष शोक देती है, इसके विपरीत यदि राहु किसी योगकारक ग्रह के साथ बैठा हो अथवा उसी ग्रह की राशि में हो तो अरिष्ट नहीं होता |
8. अपने उच्च से आगे की राशियों में स्थित ग्रह सामान्यतः नीच राशि की ओर बढ़ने (नीचाभिलाषी) के कारण शुभ फल में क्रमिक कमी लाता है, लेकिन यदि वह शुभ नवांश में स्थित हो तो वह अच्छे फल भी देता है |
9. इसी प्रकार उच्च राशि की ओर बढ़ता ग्रह (उच्चाभिलाषी) सामान्यतः अच्छा फल देता है किन्तु नवांश में शत्रुक्षेत्री या नीच आदि होने पर उसकी शुभता कम हो जाएगी |
10. शुभ ग्रहों के मध्य में विद्यमान पाप ग्रह अशुभ फल नहीं देता तथा अशुभ ग्रहों के मध्य में स्थित शुभ ग्रह शुभ फल नहीं देता |
11. दशा प्रवेश के समय यदि दशेश या अन्तर्दशेश गोचर में उच्च, त्रिकोण, स्वराशि में हो तो दशाफल शुभ होता है | विपरीत रहने पर अशुभ होता है |
12. सभी पाप ग्रह दशा के शुरू में अपनी उच्चादि राशि के अनुसार तथा लगभग दशा काल के मध्य में स्थान या भावानुसार फल देते हैं एवं अंत में प्रायः सभी पाप दशाएं उपद्रव करती हैं |

राहु-केतु की विशेषता

1. राहु-केतु की परस्पर दशान्तर्दशा में बाधाएँ स्वयमेव आती हैं |
2. त्रिकोणस्थ राहु-केतु यदि 2.7 भावेशों के साथ हो तो मारक होते हैं |
3. त्रिकोणेशों से युत या दृष्ट राहु-केतु यदि 2.7 भावों में हो तो आयु व धनवर्धक होते हैं |

4. द्विस्वभाव राशिगत राहु-केतु यदि त्रिकोणेशों से युक्त हों या राहु-केतु की अधिष्ठित राशियों के स्वामी त्रिकोणेशों से युक्त हों तो वे सदैव राज्य व धन देते हैं |
5. चर या स्थिर राशिगत राहु-केतु केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हों और कारक ग्रहों से युक्त हों तो अपनी दशा में विशेष वृद्धि करते हैं |
6. राहु-केतु अशुभ स्थानों में बैठकर भी कारक ग्रहों से युक्त हों तो शुभ फल एवं शुभ भावों में बैठकर भी मारक ग्रहों से युक्त हों तो मारक फल ही देते हैं |
7. राहु-केतु यदि 1.2.3.4.8.9.12 राशियों में कहीं भी स्थित हों तो कुछ न कुछ अच्छे फल अवश्य देते हैं |

शनि, शुक्र एवं गुरु का विशेष नियम

1. शनि एवं शुक्र दोनों शुभ या अशुभ स्थानों में बैठे हों, दोनों बलवान हों या दोनों अशुभ हों तो प्रायः अपनी अन्तर्दशा में स्थान भंग, प्रतिष्ठा में हानि देते हैं |
2. यदि दोनों में से एक शुभ स्थान में व दूसरा अशुभ स्थान में हो, अथवा एक बली एवं दूसरा निर्बल हो तो बहुत अच्छा फल, लाभ व प्रतिष्ठा देते हैं |
3. यदि गुरु शुक्र दोनों भावानुसार या राशि के अनुसार बलवान हों तो अच्छा फल, राजयोग देते हैं |
4. इसके विपरीत इनमें कोई एक अशुभ भाव में हो या अशुभ भावेश से दृष्ट हो या पापयुक्त दृष्ट हो तो तो परिवार में कलह, स्त्री से तथा पुत्र से वियोग तथा अपमान आदि देते हैं |

||शुभमस्तु||

भावस्य यस्यैव फलं विचिन्त्यं भावं च तं लग्नमिति प्रकल्प्य |
तस्माद्वदेद्द्वादशभावजानि फलानि तद्रूपधनादिकानि || (फलदीपिका)
जिस भाव के फल का विचार करना हो, उसे लग्न मानकर लग्न कुण्डली की भांति उस भाव से सम्बन्धित रूप धन इत्यादि का विचार बारह भावों से करना चाहिए |

पच्चीसवाँ दिन

विंशोत्तरी दशाफल

यदि ग्रह अपनी उच्च राशि, मित्र राशि अथवा स्वराशि में स्थित होते हैं, तो अपनी दशा में अच्छा फल देते हैं, परन्तु यदि नीच राशि तथा शत्रु राशि में स्थित हों तो उनकी दशा में जातक दुःखी एवं पीड़ित होता है |

• ग्रहों का फल अपने दशाकाल में सदा एक समान नहीं रहता | बृहत्पाराशर के दशाफलाध्याय में कहा गया है कि ग्रह यदि राशि के प्रथम द्रेष्काण में हो तो दशा के आरम्भ में, मध्य द्रेष्काण में दशा के मध्य भाग में तथा अंतिम द्रेष्काण में होने पर अंतिम भाग में फल होता है | यदि ग्रह वक्री हो तो फल प्राप्ति का क्रम विपरीत होगा अर्थात अंतिम द्रेष्काण में होने पर दशा के आरम्भ में, मध्यम द्रेष्काण में होने पर दशामध्य में तथा प्रथम द्रेष्काण में होने पर दशा के अंत में फल मिलेगा |

ग्रहानुसार दशाफल

सूर्य दशाफल - सूर्य की महादशा में जातक की पदवृद्धि होती है | उसके विदेश जाने के योग भी बनते हैं | व्यापारादि कार्यों में सफ़ेद वस्तु से अच्छा लाभ होता है | इस दशा में जातक धर्मादि कार्यों में रुचि लेता है तथा समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती है | परन्तु यदि जातक की कुण्डली में सूर्य नीचादि अशुभ राशि का हो तो उसकी दशा में जातक का धन व्यय होता है और उसपर ऋण चढ़ा रहता है | उसे अनेक प्रकार की व्याधियां सताती रहती हैं और परिवार वाले एक-एक कर बिछुड़ते रहते हैं | साथ ही अशुभ सूर्य की महादशा में राजपक्ष से जातक की अवनति होती है और अपने पुत्रादि से कलह होता है |

चन्द्र दशाफल - चन्द्रमा उच्च या स्वराशिस्थ हो तो उसकी दशा में जातक को अनेक प्रकार का सम्मान मिलता है | मंत्री होने का योग बनता है तथा वह चुनाव में विजयी होता है | मुकदमे आदि में भी जातक की निश्चित विजय होती है | इस दशा में जातक को छात्रवृत्ति मिल सकती है तथा विद्या का उत्तम योग बनता है | यदि जातक की कुण्डली में चन्द्रमा नीच राशि या अशुभ राशियों मे स्थित हो तो जातक चन्द्रमा की दशा में घोर दुःख प्राप्त करता है | उसके घर में हर समय कलह का वातावरण रहता है तथा सिर में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं | विभिन्न नीच कृत्यों में उसका धन व्यय होता है तथा मारक योग रहने पर वाहनादि से शारीरिक क्षति होने की भी संभावना होती है |

मंगल दशाफल - जिस जातक की कुण्डली में मंगल उच्च का, स्वराशि का हो या मूलत्रिकोण में स्थित हो, तो जातक उसकी दशा में स्त्री-पुत्र का विशेष सुख प्राप्त करता है | इस दशा में जातक को भूमि से विशेष लाभ होता है | मकान बनवाने, जमीन खरीदने या गड़ा हुआ धन प्राप्त होने का योग बनता है |

ऐसा व्यक्ति समाज में सम्मान प्राप्त करता है और अपने जाति या कुल का सिरमौर बनता है | इस दशा में अतिरिक्त धन-प्राप्ति भी होती है | यदि मंगल नीच राशि में या शत्रु राशि में हो, तो इस दशा में व्यक्ति अग्निपीड़ा से पीड़ित होता है | उसका संचित धन रोगों से जूझने में व्यय हो जाता है, वह पित्त-वायु आदि रोगों से कष्ट पाता है तथा स्त्री- पुत्रादि से दूर रहने को विवश होता है | इन दिनों उसकी शक्ति झगड़ों में भी लग सकती है तथा कर्ज दिनों दिन चढ़ सकता है |

बुध दशाफल - उच्च, बलवान या स्वराशिस्थ बुध की दशा में जातक विज्ञान-विद्या में निपुण होता है | नये- नये आविष्कार, हल और उपाय सोचता है | कृषि में जातक को विशेष लाभ होता है | पुत्रों से उसे विशष सुख मिलता है और वह पुत्र की कीर्ति से सम्मानित होता है | नीच राशिस्थ बुध अपनी दशा में जातक को कफ, वात, पित्तादि रोगों से पीड़ित करता है | जातक धन-हानि के साथ-साथ मानसिक चिन्ता से भी व्यथित होता है एवं कपटयुक्त कार्यो में लिप्त रहने को विवश हो जाता है | उसे गुप्तरोग होने की सम्भावना रहती है तथा वह शस्त्र आदि से घायल, पीड़ित अथवा परेशान हो सकता है |

गुरु दशाफल - गुरु यदि उच्च का हो, स्वराशिस्थ हो अथवा मूलत्रिकोण में बैठा हुआ हो, तो जातक गुरु की दशा में ज्ञान-लाभ करता है, नए-नए ग्रन्थों का निर्माण करता है | गुरु की दशा शुभ रहने पर द्रव्य प्राप्ति के विशेष-योग बनते हैं तथा नौकरी में पदोन्नति होती है | गुरु की शुभ दशा मेंजातक ख्याति-लाभ आदि प्राप्त करता है | उच्चाधिकारी वर्ग से उसके मित्रता पूर्ण सम्बन्ध स्थापित होते हैं एवं विदेश जाने का अवसर बनता है | चुनाव में विजयी होकर उच्च पद भी प्राप्त कर सकता है | परन्तु यदि जातक की कुण्डली में गुरु नीच राशि में हो या अशुभ हो तो जातक प्लीहा, गुल्मरोग, कंठरोग आदि से पीड़ित होता है | सम्बन्धियों से उसका विरोध बढ़ता है तथा मतिभ्रम से प्रत्येक कार्य में असफलता ही उसके हाथ लगती है | गुप्त स्थानों पर रोग होने से व्यक्ति पीड़ित होता है एवं खर्च आय से अधिक बढ़ जाता है |

शुक्र दशाफल - यदि जातक की कुण्डली में शुक्र उच्च राशिस्थ हो, स्वराशिस्थ हो या बलवान हो तो शुक्र की दशा में जातक विदेश भ्रमण करता है | संतान में कन्या-रत्न की प्राप्ति होती है और काव्य की नयी पुस्तक रचने में सफल होता है | उसके व्यवसाय में उन्नति होती है तथा व्यापारियों में साख जमती है | इस दशा में जातक को पशुओं से विशेष लाभ होता है | नेता, सांसद, मन्त्री या विधायक बनने का भी योग इस दशा में बनता है | यदि शुक्र नीच राशि में, पापग्रहों के साथ या अशुभ प्रभाव वाला हो, तो जातक शुक्र की दशा में कई नये प्रकार के व्यसन पाल लेता है | काम-पीड़ा से सदैव पीड़ित रहता हुआ ऐसा जातक स्त्री से विशेष हानि उठाता है | शुक्र की दशा में स्त्री से भी धन-लाभ होता है तथा बंधुओं से झगड़े होने के कारण

मुकदमेबाजी में संचित द्रव्य व्यय होता रहता है | स्त्री–पुरूषों से विरोध होता रहता है तथा वात, कफ आदि के कारण जातक को कई नई व्याधियाँ घेर लेती हैं | इस दशा में जातक को शस्त्र भय भी रहता है और स्वयं की चिन्ता से उसके हृदय पर भी विशेष बुरा प्रभाव पड़ता है |

शनि दशाफल - शनि यदि स्वराशिस्थ या उच्च राशिस्थ हो तो जातक को द्रव्य की विशेष प्राप्ति होती है | विदेश भ्रमण के भी योग बनते है परन्तु इनसे लाभ नहीं होता | दशा के समय शनि सम्बन्धी कार्यों की जीत होती है | जातक विलास और भौतिकता का अधिक सुख भोगता है, भोगोपभोग की कई वस्तुओं का भी संग्रह करता है | जनता में व्यक्ति की ख्याति फैलती है और स्त्री–लाभ होता है | व्यक्ति की उन्नति तीव्रता से अग्रसर होती है | नीच राशि में बैठे शनि की दशा में जातक को मर्मस्थान की पीड़ा से दु:ख भोगना पड़ता है | चर्मरोग होने के अतिरिक्त उसे बन्धु-बांधवों का वियोग भी सहन करना पड़ता है | कई प्रकार की विपत्तियां उस पर आती हैं और उस पर दिनों-दिन ऋण बढ़ता ही जाता है | उसे अपने मित्रों, पुत्रों या स्त्री द्वारा विश्वासघात भी सहना होता है, जिससे उसका हृदय सदैव चिन्ता से ग्रस्त रहता है |

राहु दशाफल - उच्च के राहु की दशा में व्यक्ति को अर्थ-लाभ होता है, अधिकार-प्राप्ति के योग बनते हैं तथा पुत्र-लाभ भी होता है | जातक के नये-नये कार्यों का प्रारम्भ होता है तथा उसे मध्यम वर्ग के लोगों से विशेष सुख पहुंचता है | नीच राशिगत राहु की दशा में जातक को घरेलू झगड़ों से परेशान होना पड़ता है | भाइयों से उसका विरोध बढ़ता है तथा नये-नये रोगों के कारण जीवन व्यतीत करना कठिन हो जाता है | प्रेम के क्षेत्र में वह समाज में अपमानित होता है तथा व्यसनों से उसे हानि पहुंचती है | नीच कार्यों से जातक को प्रेम होता है और उससे साधारण आय भी करता है | सिर में रोग, वातरोग तथा अन्य रोग होते हैं | आर्थिक संकट से वह तथा उसके परिवार के लोग पीड़ित होते हैं और समाज से विरोध तथा झगड़े बढ़ते हैं |

केतु दशाफल - केतु की दशा में जातक को अचानक द्रव्य- प्राप्ति होती है, पुत्र-लाभ एवं धन- लाभ होता है तथा साधारण रूप से आय बढ़ती है | लेकिन नीच राशिस्थ या अशुभ केतु की दशा में जातक बहुत कष्ट उठाता है एवं बंधुओं का विरोध सहने को विवश हो जाता है | वह अपने आपको व्यसनों से पतित कर लेता है | उसके सिर तथा नेत्रों में रोग उत्पन्न होते हैं एवं साधारण व्यापार से उसे लाभ पहुंचता है | नवीन कार्य आरम्भ करने पर उसे असफलता का मुंह देखना पड़ता है एवं स्त्री से हानि पहुँचती है |

भावेशों के अनुसार दशाफल

1. प्रथम भाव के स्वामी ग्रह की दशा शारीरिक सुख एवं धनागम देती है |
2. द्वितीयेश की दशा से धन लाभ लेकिन शारीरिक कष्ट होता है |
3. तृतीयेश की दशा धन की कमी तथा शारीरिक कष्ट प्रदान करने वाली होती है |
4. चतुर्थेश की दशा धन, सम्पति, वाहन, यश व विद्या की वृद्धि करती है |
5. पंचमेश की दशा में धन, विद्या का लाभ तथा संतान लाभ होता है |
6. षष्ठेश की दशा में रोग, चोट तथा शत्रुभय होता है |
7. सप्तमेश की दशा कष्टकारक, अवनति देने वाली तथा आर्थिक कष्ट देने वाली होती है |
8. अष्टमेश की दशा में मृत्यु भय होता है, अष्टमेश पाप ग्रह हो तथा शनि राहु से युत-दृष्ट हो तो मृत्यु होती है |
9. नवमेश की दशा भाग्योदय कारक, समृद्धि देने वाली तथा रुके कार्यो में सफलता देती है |
10. दशमेश की दशा में राज्य से लाभ, सम्मान व पद की प्राप्ति होती है | यह दशा प्रायः माता के लिए कष्टकारक होती है |
11. एकादशेश की दशा धन लाभ, ख्याति तथा व्यापारिक उन्नति देती है | सामान्य रूप से ये दशा अच्छी होती है, हालाँकि बारम्बार व्यवधान आते रहते हैं |
12. द्वादशेश की दशा में हानि, नेत्र रोग, चिंताएं, यात्रा तथा शरीर में कष्ट होता है |

||शुभमस्तु||

यदि केन्द्रत्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ | नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद्योगकारकौ ||

(लघुपाराशरी)

यदि राहु एवं केतु केन्द्र में होकर त्रिकोणेश से सम्बन्ध करें अथवा त्रिकोण में स्थित होकर केन्द्रेश से सम्बन्ध करें तो योगकारक होकर शुभफल प्रदान करते हैं |

तेषां दशाविपाकेषु सम्भवे निधनं नृणाम् | तेषामसम्भवे साक्षाद् व्ययाधीशदशास्वपि ||

(लघुपाराशरी)

द्वितीयेश अथवा सप्तमेश की दशा आने पर मनुष्य की मृत्यु सम्भव होती है | यदि उनकी दशा प्राप्त न हो रही हो और कुण्डली में अल्पायु योग बनते हों तो द्वादशेश की दशा-अन्तर्दशा भी मृत्युप्रद हो जाती है |

छब्बीसवाँ दिन

अंतर्दशाओं का फल

सभी ग्रहों की महादशा में क्रमशः सभी ग्रहों की अन्तर्दशा आती है | अन्तर्दशा का विशेषफल तो पूर्वोक्त नियमानुसार ही मिलता है किन्तु सभी ग्रहों की महादशा में अन्यान्य ग्रहों की अन्तर्दशा के सामान्य फलों का विस्तृत ज्ञान होना आवश्यक है | इसी उद्देश्य से सभी ग्रहों की महादशा में अन्यान्य ग्रहों की अन्तर्दशाओं का फल प्रस्तुत किया जा रहा है |

सूर्य की महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

सूर्य महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा का फल - सूर्य की दशा में सूर्य की अंतर्दशा हो तो ब्राह्मण, राजा, शास्त्र आदि से धनलाभ, मन में सन्ताप और विदेश भ्रमण या वन्य क्षेत्रों की यात्रा होती है |

सूर्य महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा का फल - सूर्य की दशा में चंद्रमा की अंतर्दशा प्राप्त होने पर बंधु व मित्रजनों की सहायता से धनप्राप्ति होती है | किन्तु मित्र या सज्जन से प्रमाद और पीलिया आदि रोगों से कष्ट भी होता है |

सूर्य महादशा में मंगल की अन्तर्दशा का फल - सूर्य की दशा में मंगल की अंतर्दशा प्राप्त हो तो रत्न, सोना आदि धन की प्राप्ति, राजप्रीति, शुभफल और पित्तरोग की वृद्धि होती है |

सूर्य महादशा में राहु की अन्तर्दशा का फल - सूर्य की दशा में राहु की अंतर्दशा हो तो अकाल-मृत्यु, संताप, बंधुवर्ग व शत्रुओं द्वारा उत्पीड़न और मानसिक दुःख होता है |

सूर्य महादशा में गुरु की अन्तर्दशा का फल - सूर्य की दशा में वृहस्पति की अंतर्दशा हो तो जातक सर्वपूज्य होता है | पुत्र से धन प्राप्ति, देव-ब्राह्मण आदि के पूजन करने की प्रवृत्ति, सत्कर्म आचरण, और अच्छी संगति होती है |

सूर्य महादशा में शनि की अन्तर्दशा का फल - सूर्य की दशा में शनि की अंतर्दशा हो तो सब लोगों से शत्रुता, आलस्य, हीन आजीविका, मानसिक रोग तथा राजा और चोर से भय होता है |

सूर्य महादशा में बुध की अन्तर्दशा का फल - सूर्य की अंतर्दशा में बुध की अंतर्दशा हो तो बन्धुपीड़ा, मानसिक सन्ताप, उत्साहहीनता, धन नाश और साधारण ही सुख मिलता है |

सूर्य महादशा में केतु की अन्तर्दशा का फल - सूर्य की दशा में केतु की अंतर्दशा हो तो कण्ठ रोग, मन में संताप, नेत्र रोग और अकाल-मृत्यु आदि फल होते हैं |

सूर्य महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा का फल - सूर्य की दशा में शुक्र की अंतर्दशा हो तो जल से द्रव्यप्राप्ति, परिश्रम की अधिकता, दुष्ट स्त्री का संग और लोगों से रूखे संवाद होते हैं |

• सूर्य की दशा के आदि में माता-पिता को रोग व धन का नाश, मध्य में सब तरह की बाधाएँ व दशा के अंत में सुख होता है |
• उच्चगत सूर्य यदि नीच नवांश में हो तो उसकी दशा में बदनामी, भय, पुत्र, स्त्री, रोजगार, पितृवर्ग व बन्धुओं की हानि होती है |
• नीचगत सूर्य यदि उच्च नवांश में हो तो राजकीय शोभा व लक्ष्मी का सुख, लेकिन दशा के अंत में धनहानि या शरीरहानि होती है |

चन्द्रमा की महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

चन्द्र महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा का फल - चंद्रमा की दशा में चंद्रमा की अंतर्दशा हो तो विद्या, स्त्री-गीत-वाद्य में प्रीति, उत्तम वस्त्रादि की प्राप्ति, सत्संग, शरीर-सुख, राजा-मंत्री-सेनापति आदि से मान सम्मान की प्राप्ति, सत्कीर्ति, तीर्थयात्रा, पुत्र एवं मित्र आदि से प्रेम, भूमि-गौ-अश्व आदि सम्पदाओं का लाभ, वैभव तथा जनसमर्थन में वृद्धि होती है |

चन्द्र महादशा में मंगल की अन्तर्दशा का फल - चंद्रमा की दशा में मंगल की अंतर्दशा हो तो रोग, विरोध भावना की प्रबलता, स्थानहानि, धनहानि और मित्र तथा भाईयों से क्लेश होता है |

चन्द्र महादशा में राहु की अन्तर्दशा का फल - चंद्रमा की दशा में राहु की अंतर्दशा हो तो शत्रुओं से क्लेश, रोगवृद्धि, बंधुनाश और धनहानि होती है तथा कुछ भी सुख नहीं होता है |

चन्द्र महादशा में गुरु की अन्तर्दशा का फल - चंद्रमा की दशा में वृहस्पति की अंतर्दशा हो तो वाहन आदि विविध सम्पत्तियों की प्राप्ति, वस्त्र–आभरण संपदा की वृद्धि और यत्न से कार्य सिद्धि होती है |

चन्द्र महादशा में शनि की अन्तर्दशा का फल - चंद्रमा की दशा में शनि की अंतर्दशा हो तो मातृ-पीड़ा, मन में क्लेश, वात-पित्त जन्य रोग, वाणी में दोष तथा शत्रुओं से विवाद होता है |

चन्द्र महादशा में बुध की अन्तर्दशा का फल - चंद्रमा की दशा में बुध की अंतर्दशा हो तो मातृवर्ग से धन लाभ, विद्वानों का सम्पर्क तथा वस्त्राभूषण आदि की प्राप्ति होती है |

चन्द्र महादशा में केतु की अन्तर्दशा का फल - चंद्रमा की दशा में केतु की अंतर्दशा हो तो स्त्रीरोग या पत्नी को रोग, बान्धवों का नाश, उदर रोग और द्रव्य का नाश होता है |

चन्द्र महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा का फल - चंद्रमा की दशा में शुक्र की अंतर्दशा हो तो स्त्री से धन प्राप्ति, कृषि-पशु आदि की वृद्धि, जल के साधन की प्राप्ति तथा वस्त्रलाभ एवं सुख होता है | परन्तु माता रोगिणी रहती है |

चन्द्र महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा का फल - चंद्रमा की दशा में सूर्य की अंतर्दशा हो तो राज-ऐश्वर्य की प्राप्ति, व्याधि का नाश, शत्रु का क्षय, सौख्य और शुभता की प्राप्त होती है |

• चन्द्र के दशारम्भ में भावजन्य फल, दशामध्य में राशिफल व दशान्त में पक्षबल व दृष्टि का फल होता है |

मंगल की महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

मंगल महादशा में मंगल की अन्तर्दशा का फल - मंगल की दशा में मंगल की अंतर्दशा हो तो शरीर में विशेष गर्मी होती है | मित्रों से वैर, माता को कष्ट और राजभय होता है | साथ ही समस्त कार्यों व संचित-धन का नाश हो जाता है |

मंगल महादशा में राहु की अन्तर्दशा का फल - मंगल की दशा में राहु की अंतर्दशा हो तो राजा और चोर का भय रहता है | धन धन्य का नाश होता है तथा गलत या भ्रष्ट कार्यों की सिद्धि होती है |

मंगल महादशा में गुरु की अन्तर्दशा का फल - मंगल की दशा में वृहस्पति की अंतर्दशा हो तो ब्राह्मणों की सहायता या आशीर्वाद से धनलाभ, भूमि-लाभ, आरोग्य एवं मान-सम्मान की प्राप्ति होती है | साथ ही सर्वत्र विजय और सुख मिलता है |

मंगल महादशा में शनि की अन्तर्दशा का फल - मंगल की दशा में शनि की अंतर्दशा हो तो बहुत दुःख, शत्रु-चोर व राजा से भय और धन का नाश होता है |

मंगल महादशा में बुध की अन्तर्दशा का फल - मंगल की दशा में बुध की अंतर्दशा हो तो वैश्यवर्ग से धनलाभ, गृह-वाहन-गौ आदि की प्राप्ति, धन-सम्पत्ति की वृद्धि, शत्रु-बाधा और मानसिक क्लेश होता है |

मंगल महादशा में केतु की अन्तर्दशा का फल - मंगल की दशा में केतु की अंतर्दशा हो तो पेट के रोग से संतप्त, बंधु एवं सहोदर भाईयों को पीड़ा और दुष्ट मनुष्यों से शत्रुता होती है |

मंगल महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा का फल - मंगल की दशा में शुक्र की अंतर्दशा हो तो पत्नी-आभूषण-वस्त्र आदि की प्राप्ति होती है | बंधु वर्ग का सहयोग मिलता है, महिलाओं से गोष्ठी व द्वेष होता है |

मंगल महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा का फल - मंगल की दशा में सूर्य की अंतर्दशा हो तो बदनामी, गुरुजनों से द्वेष, कलह, व्याधिपीड़ा तथा आत्मवर्ग से मन में दुःख होता है |

मंगल महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा का फल - मंगल की दशा में चंद्रमा की अंतर्दशा हो तो नाना प्रकार से धन का सुख तथा वस्त्र-रत्न-आभूषण आदि की प्राप्ति होती है | परन्तु निद्रा, आलस्य और उद्वेग में वृद्धि हो जाती है |

• मंगल दशा के आदि में मानहानि एवं धनहानि तथा दशा के मध्य व अन्त में राजा-अग्नि-चोर आदि से पीड़ा होती है |
• उच्चगत मंगल यदि नीचनवांश में हो तो भाइयों व पुत्रों की हानि करता है |
• नीचगत मंगल यदि उच्चनवांश में हो तो कृषि-वृद्धि, भूमि-वृद्धि व धन-धान्यादि का सुख होता है |

राहु की महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

राहु महादशा में राहु की अन्तर्दशा का फल - राहु की दशा में राहु की अंतर्दशा हो तो जातक की पत्नी को रोग, विवाद, बुद्धिनाश, धनहानि, दूर देश की यात्रा और दुःख होता है |

राहु महादशा में गुरु की अन्तर्दशा का फल - राहु की दशा में गुरु की अंतर्दशा हो तो व्याधि व शत्रु का नाश, राजा की प्रसन्नता, धन का आगमन तथा पुत्रलाभ होता है | इस दौरान उत्साह भी खूब रहता है |

राहु महादशा में शनि की अन्तर्दशा का फल - राहु की दशा में शनि की अंतर्दशा हो तो वात-पित्त जन्य रोग, बंधु-मित्रादि को पीड़ा और दूर देश में निवास होता है |

राहु महादशा में बुध की अन्तर्दशा का फल - राहु की दशा में बुध की अंतर्दशा हो तो मित्र-बंधु-पत्नी आदि का संयोग, धन का आगमन और राजप्रीति होती है |

राहु महादशा में केतु की अन्तर्दशा का फल - राहु की दशा में केतु की अंतर्दशा हो तो चोरी, मानहानि, पुत्रनाश, पशुक्षय, और सम्पूर्ण उपद्रव होते हैं |

राहु महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा का फल - राहु की दशा में शुक्र की अंतर्दशा हो तो विदेश से वाहन-प्राप्ति व छत्र-चामर-संपदा (राजसी वैभव) की प्राप्ति होती है | लेकिन रोग, शत्रु व बन्धुजनों का भय रहता है |

राहु महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा का फल - राहु की दशा में सूर्य की अंतर्दशा हो तो दान धर्म में रूचि, प्रेम भाव का उदय, सब उपद्रवों का नाश, और संसर्ग रोग (महामारी या फैलने वाला रोग) होता है |

राहु महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा का फल - राहु की दशा में चंद्रमा की अंतर्दशा हो तो खूब सुख-भोग, धनलाभ और अन्न-वृद्धि होती है, परन्तु मित्रों तथा बान्धवों से विवाद होता रहता है | चन्द्रमा बलहीन हो या चन्द्रग्रहण के दिन जन्म हो तो राहु की दशा में चंद्रमा की अंतर्दशा प्राप्त होने पर पत्नी व परिवार में कलह, धन का नाश, वृत्ति का संहार, तथा बांधवों के साथ क्लेश होता है |

राहु महादशा में मंगल की अन्तर्दशा का फल - राहु की दशा में मंगल की अंतर्दशा हो तो सब उपद्रवों का आगमन, सब कामों में बुद्धि-भ्रम तथा विस्मृति दोष होता है |

• 1-2-4 राशि में स्थित राहु की दशा में धन-धान्य लाभ, विद्या वृद्धि, आमोद-प्रमोद, राजसम्मान तथा स्त्री-पुत्र व भृत्यों का सुख होता है |

• 6-9-12 राशिगत राहु की दशा में स्त्री पुत्रों का लाभ, देश पर शासन व नरवाहन (पालकी, ड्राइवर सहित वाहन) की प्राप्ति होती है | लेकिन राहु की दशा के अंत में सबकुछ छिन जाता है |

• 3-11 राशिगत राहु की दशा में व्यक्ति राजतुल्य या राजा होता है | उसे हाथी-घोड़े व सेना का स्वामित्व तथा सब जीवों के उपकार का सामर्थ्य मिलता है | वह बहुत धन व सुख प्राप्त करता है तथा स्त्री-पुत्र आदि में अनुरक्त रहता है |

• सामान्यतः राहु की दशा के प्रारम्भ में दुःख, मध्य में सुख तथा दशान्त में पितृहानि व पदत्याग होता है |

||शुभमस्तु||

भावेषु भावस्फुटतुल्यभागास्तद्भावजं पूर्णफलं विधत्ते |
सन्धौ फलं नास्ति तदन्तराले चिन्त्योऽनुपातः खलु खेचराणाम् || (फलदीपिका)

जो ग्रह भावमध्य में स्थित हों, वे ग्रह उस भाव से सम्बन्धित सम्पूर्ण फलों को प्रदान करने में सक्षम होते हैं | सन्धि में स्थित ग्रह शुभाशुभ फल प्रदान करने में अक्षम हो जाते हैं | भावमध्य एवं सन्धि के बीच में स्थित ग्रहों का फल अनुपात से समझना चाहिए |

तत्प्राप्तिर्धर्ममूला तदनु बुधकवी शङ्करस्याभिषेका-
च्चन्द्रश्चेत्तद्वदेव त्रिदिवपतिगुरुर्मन्त्रयन्त्रौषधीनाम् |
सिद्ध्या मन्दारसूर्या यदि शिखितमसी तत्र वंशेशपूजा,
कार्याऽऽम्नायोक्तरीत्या बुधगुरुनवपाः क्षिप्रमेवात्र सिद्धिः || (जातकालङ्कार)

सन्तान की प्राप्ति धर्माचरण से होती है | धर्मचारी व्यक्तियों में सन्तानहीनता होने पर यदि बुध, शुक्र या चन्द्रमा सन्तान प्रतिबन्धक योग बनाते हों तो भगवान् शिव का अभिषेक[2] करना चाहिए | यदि बृहस्पति सन्तान-प्रतिबन्धक योग बनाता हो, तो मन्त्र-यन्त्र[3] (सन्तानगोपाल आदि) एवं औषधि[4] (अश्वगंधा, लक्ष्मणा, शिवलिंगी, पलाश आदि) के प्रयोग से सन्तान की प्राप्ति होती है | यदि पापग्रह (मंगल, सूर्य, शनि, राहु एवं केतु) के कारण सन्तान प्राप्ति में बाधा आ रही हो तो अपनी कुलपरम्परा के अनुसार कुलदेव की आराधना करे | पुनश्च, यदि बुध, गुरु अथवा नवमेश सन्तान-प्रतिबन्धक हों तो उपर्युक्त उपायों से शीघ्र की सन्तान सिद्धि हो जाती है |

---

[2] **पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति पयसा चाभिषेचनात्,** दूध से अभिषेक करने पर पुत्र की प्राप्ति होती है | मतान्तर से शर्करामिश्रित जल भी पुत्रार्थी के लिए ग्राह्य है, **पुत्रार्थी शर्करापास्तु रसेनार्चेत् शिवं तथा** | किन्तु दुग्धाभिषेक का विशेष प्रभाव वर्णित है – **सद्यः पुत्रमवाप्नोति पयसा चाभिषेचनात्** |

[3] **ज्ञशुक्रदोषे शिवपूजनात् सुतः शशीज्ययोरौषधयन्त्रमन्त्रतः |**
अगोः सुतां गां शिखिनश्च यच्छतो यमारयोस्स्यात् गिरिशाभिषेचनात् || (सङ्केतनिधि)

[4] **पुष्योद्धृतं लक्ष्मणाया मूलं दुग्धेन कन्यया | पिष्टं पीत्वा ऋतुस्नाता गर्भं धत्ते न संशयः** || (भावप्रकाशसंहिता)

सत्ताईसवाँ दिन

गुरु की महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

गुरु महादशा में गुरु की अन्तर्दशा का फल - बृहस्पति की दशा में बृहस्पति की अंतर्दशा हो तो राजा से प्रीति तथा उत्साह, सब कार्यों में सफलता तथा विद्या और विज्ञान की प्राप्ति होती है |

गुरु महादशा में शनि की अन्तर्दशा का फल - बृहस्पति की दशा में शनि की अंतर्दशा हो तो द्वेषबुद्धि, मन में सन्ताप, पुत्र के कारण धन व्यय और कर्म का नाश होता है |

गुरु महादशा में बुध की अन्तर्दशा का फल - बृहस्पति की दशा में बुध की अंतर्दशा हो तो वैश्य वर्ग से धन प्राप्ति, राजा की प्रीति, सुख प्राप्ति और सत्कर्म की सिद्धि होती है |

गुरु महादशा में केतु की अन्तर्दशा का फल - बृहस्पति की दशा में केतु की अंतर्दशा हो तो रत्नादि आभूषणों की प्राप्ति, तीर्थयात्रा, धनप्राप्ति और गुरु तथा राजा द्वारा आय होती है |

गुरु महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा का फल - बृहस्पति की दशा में शुक्र की अंतर्दशा हो तो वाहनादि धनों की प्राप्ति तथा छत्र-चामर आदि वैभवों की वृद्धि होती है | पत्नी को रोग होता है साथ ही जनविरोध का सामना भी करना पड़ता है |

गुरु महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा का फल - बृहस्पति की दशा में सूर्य की अंतर्दशा हो तो शत्रु का नाश, विजय, सुख, मन में उत्साह, धनागमन, राजसम्मान व वैभव की प्राप्ति और आरोग्यता होती है |

गुरु महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा का फल - बृहस्पति की दशा में चंद्रमा की अंतर्दशा हो तो स्त्री-कृत उत्साह, ऐश्वर्य, राज-प्रीति, सुख की प्राप्ति, दिव्य वस्त्र एवं आभूषणों की प्राप्ति होती है |

गुरु महादशा में मंगल की अन्तर्दशा का फल - बृहस्पति की दशा में मंगल की अंतर्दशा हो तो कर्म का नाश, भाग-दौड़, ज्वर-ताप, महान् भय आदि फल होते हैं | व्यक्ति का धननाश होता रहता है और वह निरुत्साही हो जाता है |

गुरु महादशा में राहु की अन्तर्दशा का फल - बृहस्पति की दशा में राहु की अंतर्दशा हो तो सब तरह के क्लेश होते हैं | यह दशा सभी प्रकार के उपद्रवों का कारण होती है | इस दशा में भय, रोग, और धन का नाश लगा रहता है |

• उच्चगत गुरु यदि नीच नवांश में हो तो चोरों एवं शत्रुओं का भय, स्त्री-पुत्र आदि से द्वेष तथा मान-प्रतिष्ठा में कमी होती है |
• नीचगत गुरु यदि उच्च नवांश में हो तो बड़े राजा महाराजा की प्रसन्नता, सुख, विद्या, यश, धन, वैभव एवं देशाधिपति होने के योग होते हैं |

शनि की महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

शनि महादशा में शनि की अन्तर्दशा का फल - शनि की दशा में शनि की अंतर्दशा हो तो बहुत से दुःख की प्राप्ति, व्याधियों से उत्पीडन, अभिमान व ईर्ष्या के कारण शोक-संताप तथा राजा और चोरों के द्वारा धन-धान्य का हरण होता है | जनविरोध, राजा का कोप, नौकरों व वृद्धा स्त्री की प्राप्ति, पशुगण तथा विष का भय, पुत्र स्त्री आदि की पीड़ा, ज्वर-वात-कफ आदि से पीड़ा तथा शूल-रोग होता है |

शनि महादशा में बुध की अन्तर्दशा का फल - शनि की दशा में बुध की अंतर्दशा प्राप्त होने पर सुख-धन-यश की वृद्धि, सत्कर्म एवं संपदा की वृद्धि, कृषि-वाणिज्य आदि से लाभ होता है |

शनि महादशा में केतु की अन्तर्दशा का फल - शनि की दशा में केतु की अंतर्दशा प्राप्त होने पर वात-पित्त कृत रोग, नीच और दुर्जन से कलह, दुस्स्वप्न तथा भय प्राप्त होता है |

शनि महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा का फल - शनि की दशा में शुक्र की अंतर्दशा प्राप्त होने पर बंधु-प्रीति, जन-प्रीति, पत्नी व धन की प्राप्ति तथा कृषि आदि का सुख प्राप्त होता है |

शनि महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा का फल - शनि की दशा में सूर्य की अंतर्दशा हो तो स्त्री-पुत्रादि का विनाश, राजा एवं चोर आदि से पीड़ा तथा मन में भय प्राप्त होता है |

शनि महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा का फल - शनि की दशा में चंद्रमा की अंतर्दशा हो तो गुरु तथा स्त्री की मृत्यु, दुःख, बंधु-वैर, धन प्राप्ति और वात रोग होता है |

शनि महादशा में मंगल की अन्तर्दशा का फल - शनि की दशा में मंगल की अंतर्दशा हो तो स्थानच्युति, महारोग, नानाविध मानसिक भय, सहोदर भाई और मित्र को पीड़ा होती है |

शनि महादशा में राहु की अन्तर्दशा का फल - शनि की दशा में राहु की अंतर्दशा प्राप्त होने पर सारे शरीर में रोग, संताप, चोर-शत्रु व राजा से पीड़ा और धननाश होता है |

शनि महादशा में गुरु की अन्तर्दशा का फल - शनि की दशा में गुरु की अंतर्दशा हो तो देव-ब्राह्मण में भक्ति, राज-प्रीति, महत्सुख और स्थान का लाभ होता है |

• उच्चगत शनि यदि नीच नवांश में हो तो अपनी दशा में सुख ही करता है | शनि दशा आरम्भ में व अंत में प्रायः कष्ट ही करती है |
• शनि नीचगत लेकिन उच्च नवांश में हो तो दशा के अंत में सुख करता है | दशारम्भ में शत्रु भय, चोर भय, दुःख व विदेश भ्रमण कराता है |

बुध की महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

बुध महादशा में बुध की अन्तर्दशा का फल - बुध की दशा में बुध की अंतर्दशा हो तो विचित्र (चित्ताकर्षक) गृह की प्राप्ति, धनलाभ, राजा की प्रसन्नता, बहुत सुख और सब कार्यों में सफलता प्राप्त होती है |

बुध महादशा में केतु की अन्तर्दशा का फल - बुध की दशा में केतु की अंतर्दशा हो तो बंधुओं को या बंधुओं से पीड़ा, मन में संताप, सुख-हानि और कार्य का नाश होता है |

बुध महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा का फल - बुध की दशा में शुक्र की अंतर्दशा हो तो गुरु-देवता-अग्नि तथा ब्राह्मणों के लिए दान-प्रवृत्ति, धर्मप्रियता, तपोवृद्धि तथा धन-वस्त्र व आभूषणों की प्राप्ति होती है |

बुध महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा का फल - बुध की दशा में सूर्य की अंतर्दशा हो तो वस्त्र-आभूषण-धन की प्राप्ति, राजप्रीति, महान् सुख और धर्मकथा श्रवण लाभ मिलता है |

बुध महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा का फल - बुध की दशा में चंद्रमा की अंतर्दशा हो तो रोग, शत्रुजन से वैर, सभी कार्य व धन का नाश तथा चतुष्पद या वाहन से भय प्राप्त होता है |

बुध महादशा में मंगल की अन्तर्दशा का फल - बुध की दशा में मंगल की अंतर्दशा हो तो रोगनाश व शत्रुनाश, पुण्य का उदय, कर्मफल की प्राप्ति, यशवृद्धि तथा राजप्रीति होती है |

बुध महादशा में राहु की अन्तर्दशा का फल - बुध की दशा में राहु की अंतर्दशा हो तो मित्र-प्राप्ति, बंधुओं का सहयोग, धनलाभ, सुख-प्राप्ति, विद्या प्राप्ति, विभूषण या पदवी लाभ और राजप्रीति की प्राप्ति होती है |

बुध महादशा में गुरु की अन्तर्दशा का फल - बुध की दशा में वृहस्पति की अंतर्दशा हो तो इष्ट-बंधु व गुरु से द्वेष, धनलाभ, पुत्र-प्राप्ति और रोग आदि का भय होता है |

बुध महादशा में शनि की अन्तर्दशा का फल - बुध की दशा में शनि की अंतर्दशा हो तो धर्मवृद्धि, सत्कर्म, वित्त की प्राप्ति, छोटे स्थानों के जनाधीशों (प्रमुख लोगों) से सुख, और कृषि आदि का नाश होता है |

• उच्चगत बुध यदि नीच नवांश में हो तो कार्यों में बाधाएँ उत्पन्न करता है लेकिन अपनी अन्तर्दशा में अच्छे फल ही देता है |
• बुध नीचगत लेकिन उच्च नवांश में हो तो दशा के शुरू में सब निष्फलता व अंत में शुभ फल देता है |

केतु की महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

केतु महादशा में केतु की अन्तर्दशा का फल - केतु की दशा में केतु की अंतर्दशा हो तो स्त्री-पुत्र का मरण, सुखनाश, वित्तनाश और शत्रु का भय होता है |

केतु महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा का फल - केतु की दशा में शुक्र की अंतर्दशा हो तो स्त्री और पुत्र को रोग, व्यर्थ कलह, बंधुनाश व मित्रनाश तथा ज्वर-अतिसार आदि रोग होते हैं |

केतु महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा का फल – केतु की दशा में सूर्य की अंतर्दशा हो तो मन में निराशा (दिल टूटना), शरीर में रोग, विदेश-यात्रा, भय और सब कार्यों में विरोध होता है |

केतु महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा का फल - केतु की दशा में चंद्रमा की अंतर्दशा हो तो स्त्रीपुत्रादिकों में आलस्यवृद्धि, धन-धान्य का नाश और मानसिक सन्ताप होता है |

केतु महादशा में मंगल की अन्तर्दशा का फल - केतु की दशा में मंगल की अंतर्दशा हो तो पुत्र-स्त्री एवं छोटे भाइयों से वैर, रोग-शत्रु तथा राजा से पीड़ा और बन्धु-बान्धवों का नाश करता है |

केतु महादशा में राहु की अन्तर्दशा का फल - केतु की दशा में राहु की अंतर्दशा हो तो राजा और चोर का भय, दुःख, सब कार्य का विनाश तथा दुष्ट मनुष्यों से विवाद होता है |

केतु महादशा में गुरु की अन्तर्दशा का फल - केतु की दशा में गुरु की अंतर्दशा हो तो ब्राह्मण-गुरु-देवता में प्रीति, राजा के स्नेह की प्राप्ति, रोग से रहित शरीर और भूमि व पुत्र का लाभ होता है |

केतु महादशा में शनि की अन्तर्दशा का फल - केतु की दशा में शनि की अंतर्दशा हो तो मन में भय, मानसिक संताप, अपने परिवार जनों से विग्रह होता है, देश का त्याग करना पड़ता है |

केतु महादशा में बुध की अन्तर्दशा का फल - केतु की दशा में बुध की अंतर्दशा हो तो बंधु-मित्र आदि का संयोग, पत्नी-पुत्र व धन का आगमन और विद्या संबंधी सुख होता है |

• शुभग्रह से युक्त केतु उत्तम फल अपनी दशा में देता है |
• केतु शुभदृष्ट हो तो दशा में खूब धन देता है |
• केतु पापयुक्त हो तो दुष्टों से भय, धनहानि व अटपटे रोगों से शरीर कष्ट होता है |
• केतु अपनी दशा के प्रारम्भ में सदा गुरुजनों व बन्धुजनों को कष्ट, दशा के मध्य में धन-वृद्धि और दशा के अन्त में सुख देता है |

शुक्र की महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

शुक्र महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा का फल - शुक्र की दशा में शुक्र की अंतर्दशा हो तो शैय्या-सुख, स्त्री–धन व वस्त्र की प्राप्ति, धर्मादि सुख-संपदा की प्राप्ति, शत्रुनाश और यशलाभ होता है |

शुक्र महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा का फल - शुक्र की दशा में सूर्य की अंतर्दशा हो तो सिर-पेट और नेत्र रोग, कृषि-गौ व धन का नाश (व्यवसाय में हानि आदि) होता है और राजा का कोपभाजन बनना पड़ता है |

शुक्र महादशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा का फल - शुक्र की दशा में चंद्रमा की अंतर्दशा हो तो सिर में गर्मी के रोग (कठिन रोग या भारीपन) संताप, कामचेष्टा, शत्रु से पीड़ा और अल्पसुख होता है |

शुक्र महादशा में मंगल की अन्तर्दशा का फल - शुक्र की दशा में मंगल की अंतर्दशा हो तो पित्त-रोग, रक्त विकार, नेत्र-रोग, चित्त में उत्साह, धन का आगमन, स्त्री-सुख और भूमि-लाभ होता है |

शुक्र महादशा में राहु की अन्तर्दशा का फल - शुक्र की दशा में राहु की अंतर्दशा हो तो नीले-वस्तु तथा धन की प्राप्ति, बंधुओं से वैर, मित्रों से भय और अग्निबाधा होती है |

शुक्र महादशा में गुरु की अन्तर्दशा का फल - शुक्र की दशा में गुरु की अंतर्दशा हो तो धन-वस्त्र-आभूषण आदि की प्राप्ति, धर्म का आचरण, सुख-प्राप्ति, स्त्री व पुत्र को कष्ट और जीवन में विषमता प्राप्त होती है |

शुक्र महादशा में शनि की अन्तर्दशा का फल - शुक्र की दशा में शनि की अंतर्दशा हो तो अपनी आयु से बड़ी अथवा वृद्धा स्त्री से संभोग, गृह-भूमि व धन की प्राप्ति और शत्रुनाश होता है |

शुक्र महादशा में बुध की अन्तर्दशा का फल - शुक्र की दशा में बुध की अंतर्दशा हो तो पुत्र-सुख, मित्र-सुख व धन की प्राप्ति, राजा (समृद्ध लोग) से प्रीति, विशेष-सुख, शुभता और आरोग्यता की प्राप्ति होती है |

शुक्र महादशा में केतु की अन्तर्दशा का फल - शुक्र की दशा में केतु की अंतर्दशा हो तो कलह, बंधुनाश, शत्रुपीड़ा, मन में भय और धन का नाश होता है |

• उच्चगत शुक्र यदि नीच नवांश में हो तो अपनी दशान्तर्दशा में धनहानि व पद त्याग करता है |
• शुक्र नीचगत लेकिन उच्चनवांश में हो तो धन-धान्य का लाभ तथा व्यापार की वृद्धि करता है |

||शुभमस्तु||

अट्ठाईसवाँ दिन

संक्षिप्त गोचर विचार

जन्म कुण्डली के विचार के समय गोचर ग्रहों का विचार करना भी परम आवश्यक है | गो का अर्थ होता है ग्रह और चर का अर्थ होता है चलायमान | अर्थात् ग्रह की वर्तमान राशिस्थिति का विचार करना ही गोचर विचार कहलाता है | गोचर में गुरु, शनि व चन्द्रमा का विचार करना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है |

- दुर्घटना, रोग, विनाश आदि के लिए मुख्य रूप से शनि का गोचर देखना चाहिए |
- विवाह, गृह, पुत्र, समृद्धि आदि के लिए मुख्य रूप से वृहस्पति के गोचर का विचार करना चाहिए |
- यात्रा व मुहूर्त आदि के लिए चंद्रमा का गोचर मुख्यरूप से विचारणीय है |

"गोचर विचार" ज्योतिष् शास्त्र का एक बृहत् अध्याय है, यहाँ पर हमलोग इस विषय को अति संक्षेप में समझने का प्रयास करते हैं | जो लोग इसे विस्तार से पढना चाहते हैं वे लोग मुहूर्त चिन्तामणि, ताजिक नीलकंठी, फलदीपिका आदि ग्रन्थों का गम्भीरता से अध्ययन करें |

> *जन्म राशि से जब गोचर में भ्रमण करते-करते शुभ ग्रह अच्छे शुभ स्थानों पर आयेंगे तो वृद्धिकारक होंगे तथा अशुभ ग्रह अशुभ फल प्रदान करेंगे | अर्थात् माना कि शनि जन्म राशि से आठवीं राशि में इस समय भ्रमण कर रहा है तो अपने राशि काल में अशुभ फल (भय, रोग, वध, बंधन) देगा | इसी तरह बृहस्पति जन्म राशि से नवीं राशि में भाग्योदय कारक तथा सम्मान दिलाने वाला सिद्ध होगा |*

गोचर से शुभाशुभ समय का विचार करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए –

1. जन्म कुंडली में निर्बल तथा दुष्ट स्थानों (6-8-12) का स्वामी गोचर में शुभ राशियों एवं स्थानों में जाने पर भी कम शुभ फल देगा |
2. कुंडली में बलवान होकर तथा शुभ स्थानों का स्वामी होकर जो ग्रह स्थित होगा, वह गोचर में जब–जब शुभ स्थानों (मित्र, उच्च या स्वराशि) में आकर मित्र ग्रहों से युक्त या दृष्ट होगा तो अवश्य शुभ फल देगा |
3. जन्म कुंडली का शुभ व बलवान ग्रह गोचर में अशुभ होने पर भी कोई विशेष अशुभ फल से जातक को सुरक्षा देता रहता है |
4. जन्मराशि से ग्यारहवें स्थान में सभी ग्रहों का गोचर शुभ होता है |
5. सामान्यतः क्रूर ग्रह 3-6-11 भाव में एवं शुभग्रह अन्य स्थानों में शुभफलप्रद होते हैं |

6. गोचर में ग्रह जब अपनी गति बदलता है, अर्थात मार्गी से वक्री तथा वक्री से मार्गी होगा तो उन दिनों अपना शुभ या अशुभ फल विशेष रूप से दिखाएगा |
7. गोचर के दौरान ग्रह के वक्री होने पर ग्रह से सम्बन्धित भाव एवं राशिजन्य अशुभ फल की अधिकता होने लगती है |
8. अष्टकवर्ग में 4 से अधिक रेखाओं से युक्त ग्रह का गोचरफल शुभ होता है |
9. राशिभोग के समय कौन-सा ग्रह कब अपना विशेष फल दिखाएगा ? इसके लिए अनेक फलित ग्रन्थों के कथनानुसार यह सिद्धान्त प्रचलित है कि सूर्य व मंगल राशि के पहले द्रेष्काण में, बृहस्पति व शुक्र मध्य द्रेष्काण में तथा चन्द्रमा व शनि अंतिम द्रेष्काण में अपना फल दिखाते हैं | राहु व बुध सारी राशि में समान फल देते हैं |

ढैया एवं साढ़ेसाती का विचार

शास्त्रों में साढ़ेसाती को बृहत्कल्याणी तथा ढैया को लघुकल्याणी कहा गया है | ये दोनों ही नाम शनि गोचर के हैं | शनि स्थित राशि से यदि जन्मराशि छठी या दसवीं हो तो इसे ढैया कहा जाता है | ढैया 2.5 वर्षों की होती है, क्योंकि शनि को एक राशि पार करने में 2.5 वर्षों का समय लगता है और यहाँ शनि के एक राशिचार का ही विचार किया गया है |

शनि यदि जन्मराशि से 1-2-12 राशियों में गोचर करता है तो इसे साढ़ेसाती कहा जाता है | साढ़ेसाती 7.5 वर्षों का होता है, क्योंकि शनि को एक राशि पार करने में 2.5 वर्षों का समय लगता है और यहाँ शनि के तीन राशिचार का विचार कर रहे हैं, अतः – 2.5 × 3 = 7.5 |

सामान्यतः यह समझा जाता है कि शनि की साढ़ेसाती व ढैया बहुत अशुभ फल देने वाली होती है | विशेषतया इनको तो मृत्युकारक भी समझा जाता है किन्तु वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है | साढ़ेसाती व ढैया के अन्तराल में शनि सुख-समृद्धि देने वाला भी होता है, हालाँकि परेशानियाँ तो बनी ही रहती हैं | यह इस बात पर अधिक निर्भर करता है कि जन्म कुण्डली में शनि किस स्थिति में है ?

- यदि शनि जन्म के समय त्रिकोणेश, लग्नेश अथवा 3-6-11 स्थानों का स्वामी होकर, मित्र ग्रहों से दृष्ट होकर 5-9-3-6-11 में ही बैठा हो तो, साढ़ेसाती व ढैया के समय शनि धन-सम्पत्ति बढ़ाने वाला होगा अतएव साढ़ेसाती/ढैया के समय वह मनुष्य आर्थिक उन्नति भी प्राप्त करेगा |
- यदि शुभद शनि की साढ़ेसाती एवं ढैया के समय दशा अन्तर्दशा भी अच्छी चल रही हो तो जातक को अधिक शुभ फल मिलेगा |

- इसके विपरीत यदि कुण्डली में शनि 2-7-8-12 स्थानों का स्वामी होकर अशुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो अत्यंत कष्टकारक साढ़ेसाती होती है |
- आशय यह है कि जन्मकुण्डली में शनि योगकारक होगा तो साढ़ेसाती व ढैया में अच्छे शुभफल भी मिलेंगे तथा जन्मकुण्डली में शनि के अशुभ होने पर साढ़ेसाती व ढैया केवल बुरा फल ही प्रदान करेगी |

अतः साढ़ेसाती एवं ढैया को सदा अशुभ समझने का भ्रम नहीं रखना चाहिए |

साढ़ेसाती एवं ढैया का अशुभ फल यह बताया गया है –

> व्यर्थ भटकाव, व्यर्थ धननाश, चोरी, अवसाद, अपमान, किसी भी कार्य का एक प्रयास में पूरा न होना, रोग, बंधुओ से विरोध, झूठी बदनामी, मृत्यु, बन्धन, लोहे से भय, देश त्याग, अधिक चिन्ता, व्यवसाय हानि, आग का डर, पुत्र, स्त्री व पशु को पीड़ा तथा धन नाश आदि |

||शुभमस्तु||

मारकैः सह सम्बन्धान्निहन्ता पापकृच्छनिः| अतिक्रम्येतरान् सर्वान् भवत्येव न संशयः||

(लघुपाराशरी)

अशुभ फलप्रद शनि मारक ग्रहों के साथ सम्बन्ध करने पर अन्य सभी मारक ग्रहों का अतिक्रमण करके स्वयं ही प्रबल मारक बन जाता है |

ये ये ग्रहाः धर्मपबुद्धिपाभ्यां युक्ता न दृष्टा बहुदुःखदास्ते |
रन्ध्रेश्वरारिर्व्ययपैर्युता ये व्ययप्रदा मारकनाथकेन || (मध्यपाराशरी)

जो जो ग्रह त्रिकोणेशों से युक्त न हों और न ही उनके द्वारा दृष्ट हों, वे ग्रह बहुत दुःखदायक होते हैं | त्रिकेश (6-8-12 भावों के स्वामी) एवं मारकेश (2 एवं 7 भावों के स्वामी) के साथ सम्बन्ध करने वाले ग्रह व्ययप्रद होते हैं |

निःशेषदोषहरणे शुभवर्द्धने च वीर्यं गुरोरधिकमस्त्यखिलग्रहेभ्यः |
तद्वीर्यपाददलशक्तिभृतौ ज्ञशुक्रौ चान्द्रं बलं तु निखिलग्रहवीर्यबीजम् || (फलदीपिका)
सभी दोषों को दूर करने में एवं शुभ फलों की वृद्धि करने में बृहस्पति सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं सशक्त भूमिका निभाता है | जितनी शुभता का सामर्थ्य बृहस्पति के पास है, उसका आधा सामर्थ्य शुक्र के पास होता है | इसी प्रकार से शुक्र के बल का आधा सामर्थ्य बुध का कहा गया है, किन्तु चंद्रमा का बल सभी ग्रहों के सामर्थ्य का मूल है |

उनतीसवाँ दिन

ग्रहदोष निवारण के उपाय

संसार में घटने वाली प्रत्येक घटना प्रकृति के अधीन है | ग्रह नक्षत्र आदि सभी प्रकृति के ही अंग हैं | संसार में कोई भी शुभ या अशुभ घटना उनके सामर्थ्य से ही घटित होती है | हमारे जीवन की भी सभी शुभाशुभ घटनाएँ ग्रहों से ही प्रभावित होती हैं |

कहा भी गया है –
ग्रहा राज्यं प्रयच्छन्ति ग्रहा प्राणान् हरन्ति च |
ग्रहैर्व्याप्तमिदं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ||
ग्रह कृपा करके राज्य आदि प्रदान करते हैं एवं ग्रह अपने प्रकोप से प्राणहरण भी करते हैं | यह संपूर्ण चराचरमयी त्रिलोकी ग्रहों के प्रभाव से ही व्याप्त है |

जिस प्रकार प्राकृतिक घटनाओं के पूर्वानुमान को जानकार हम उनसे सुरक्षा के पर्याप्त प्रबन्ध करते हैं | उस आपदा से होने वाली क्षति को यथासंभव कम से कम करने का प्रयास करते हैं| वैसे ही अपने जीवन में प्रारब्ध कर्मवशात् घटने वाली घटनाओं को ज्योतिष् विज्ञान के माध्यम से जानकार हम यथाशक्ति शुभ घटनाओं की शुभताओं को बढ़ाने और अशुभ घटनाओं की अशुभता को कम करने के लिए प्रयासरूप में जप-दान-पाठ-रत्नधारण आदि उपाय करते हैं |

नवग्रहों से संबंधित उपाय

सूर्य के उपाय

दान सामग्री- सूर्य के लिए गेहूँ, ताँबा, घी, गुड़, लाल कपड़ा, कनेर के फूल, सोना, गाय-बछड़ा आदि का दान किया जाता है|
मन्त्र- ॐ घृणि: सूर्याय नम: | **जपसंख्या-** 7000
हवन समिधा- अकवन
रत्न- माणिक्य **उपरत्न-** गार्नेट, स्पाइनल
रत्न धारण विधि- 3 रत्ती से बड़े आकार का माणिक्य रत्न किसी शुभ मुहुर्त में या रविवार के दिन सोने या तांबे में मढ़वाकर अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए |

चन्द्रमा के उपाय

दान सामग्री- चंद्रमा के लिए सफेद कपड़ा, मोती, चाँदी, चावल, चीनी, दही, शंख, सफेद फूल, साँड आदि का दान किया जाता है|
मन्त्र- ॐ सों सोमाय नम:| **जपसंख्या-** 11,000

हवन समिधा- पलाश
रत्न- मोती **उपरत्न-** मून स्टोन
रत्न धारण विधि- 5 रत्ती से बड़े आकार का मोती रत्न किसी शुभ मुहुर्त में या सोमवार के दिन चाँदी में मढ़वाकर कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए |

मंगल के उपाय

दान सामग्री- मंगल के लिए मसूर, घी, गुड़, लाल कपड़ा, गेहूँ, केसर, ताँबा, लाल फूल का दान किया जाता है|
मन्त्र- ॐ अं अंगारकाय नम:| **जपसंख्या-** 10000
हवन समिधा- खैर
रत्न- मूंगा **उपरत्न-** लाल हकीक
रत्न धारण विधि- 4 या 4 रत्ती से बड़े आकार का मूंगा रत्न किसी शुभ मुहुर्त में या मंगलवार के दिन सोने में या तांबे मढ़वाकर अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए |

बुध के उपाय

दान सामग्री- बुध के लिए मूँग, घी, हरा कपड़ा, चाँदी, फूल, काँसे का बर्तन, हाथी दाँत और कपूर का दान किया जाता है|
मन्त्र- ॐ बुं बुधाय नम | **जपसंख्या-** 9000
हवन समिधा- अपामार्ग
रत्न- पन्ना **उपरत्न-** ओनेक्स, मरगज
रत्न धारण विधि- 2 रत्ती से बड़े आकार का पन्ना रत्न किसी शुभ मुहुर्त में या बुधवार के दिन सोने में या किसी पीली धातु में मढ़वाकर कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए |

गुरु के उपाय

दान सामग्री- चने की दाल, हल्दी, पीला कपड़ा, गुड़, पीला फूल, घी और सोने की वस्तुओं का गुरु के लिए दान किया जाता है|
मन्त्र- ॐ बृं बृहस्पतये नम: | **जपसंख्या-** 19000
हवन समिधा- पीपल
रत्न- पुखराज **उपरत्न-** सुनहला, टोपाज

रत्न धारण विधि- 2 रत्ती से बड़े आकार का पुखराज रत्न किसी शुभ मुहुर्त में या गुरुवार के दिन सोने में या किसी पीली धातु में मढ़वाकर तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिए |

शुक्र के उपाय

दान सामग्री- शुक्र के लिए चाँदी, चावल, दूध, सफेद कपड़ा, घी, सफेद फूल, धूप, अगरबत्ती, इत्र, सफेद चंदन का दान किया जाता है|
मन्त्र- ॐ शुं शुक्राय नम: | **जपसंख्या-** 16000
हवन समिधा- गूलर
रत्न- हीरा **उपरत्न-** जरकन, अमेरिकन डायमंड और ओपल
रत्न धारण विधि- 20 सेन्ट या उससे बड़े आकार का हीरा रत्न किसी शुभ मुहुर्त में या शुक्रवार के दिन चाँदी में मढ़वाकर तर्जनी अंगुली में धारण करना चाहिए |

शनि के उपाय

दान सामग्री- शनि के लिए काला कपड़ा, साबुत उड़द, लोहा, अलसी, तेल, काला पुष्प, कस्तूरी, काले तिल, चमड़ा, काले कंबल का दान किया जाता है|
मन्त्र- ॐ शं शनैश्चराय नम: | **जपसंख्या-** 23000
हवन समिधा- शमी
रत्न- नीलम **उपरत्न-** नीली
रत्न धारण विधि- 3 या 3 रत्ती से बड़े आकार का नीलम रत्न किसी शुभ मुहुर्त में या शनिवार के दिन चाँदी में मढ़वाकर मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए |

राहु के उपाय

दान सामग्री- राहु के लिए काला-नीला कपड़ा, कंबल, सरसों का दाना, राई, ऊनी कपड़ा, काले तिल व तेल का दान किया जाता है|
मन्त्र- ॐ रां राहवे नम: | **जपसंख्या-** 18000
हवन समिधा- दूर्वा
रत्न- गोमेद **उपरत्न-** लाजवर्त
रत्न धारण विधि- 5 रत्ती से बड़े आकार का गोमेद रत्न किसी शुभ मुहुर्त में या शनिवार के दिन चाँदी या अष्टधातु में मढ़वाकर मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए |

केतु के उपाय

दान सामग्री- केतु के लिए सात अनाज, काजल, झंडा, ऊनी कपड़ा, तिल आदि का दान किया जाता है|
मन्त्र- ॐ कें केतवे नम: | **जपसंख्या-** 17000
हवन समिधा- कुश
रत्न- लहसुनिया **उपरत्न-** हकीक
रत्न धारण विधि- 5 रत्ती से बड़े आकार का लहसुनिया रत्न किसी शुभ मुहूर्त में या मंगलवार के दिन चाँदी या अष्टधातु में मढ़वाकर मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए |

कुछ महत्वपूर्ण ध्यातव्य तथ्य

- एक अनमोल सूत्र याद रखें, जो ग्रह अनिष्टकारक हैं उनका रत्न धारण न करें, बल्कि उनके दान पदार्थों का दान करें व उनका जप कराएँ |
- शुभ और योगकारक ग्रहों का ही रत्न धारण करना चाहिए |
- ग्रहों की दान सामग्री का अपनी क्षमतानुसार व श्रद्धानुसार ग्रहों के तय वार में ब्राह्मण को दान करना चाहिए |
- दान का बखान या उल्लेख करने से पुण्य कम हो जाता है, इसका ध्यान रखें |
- उपरत्न बड़े आकार का ही पहनना उचित रहता है |
- ऊपर ग्रहों के एकाक्षरी मन्त्र बताये गए हैं | उनके स्थान पर तांत्रिक या वैदिक मन्त्रों का भी जप कराया जा सकता है | ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य पुरुष यदि उपवीती हों तो प्रणव के साथ मन्त्र का जप करें | शेष सभी लोग प्रणव के बिना ही मन्त्र का जप करें, यही शास्त्र की आज्ञा है |
- विशेष अनिष्ट से रक्षा के लिए महामृत्युंजय जप, दुर्गासप्तशती पाठ, रुद्राभिषेक, सुदर्शनानुष्ठान, श्रीमद्भागवत पाठ, रामचरित मानस पारायण आदि का आश्रय लेना ज्यादा श्रेयस्कर होता है |
- स्वयं भी दैनिक या साप्ताहिक रूप से आत्मरक्षा एवं सतोगुण के वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा, हनुमान बाहुक, सुन्दरकाण्ड, शिवमहिम्नस्तोत्र, विष्णुसहस्रनाम, नारायण कवच, शिव कवच, दुर्गा बत्तीसनाम आदि का पाठ करते रहना चाहिए |
- व्रत करना चाहें तो वर्तमान दशा-अन्तर्दशा अथवा लग्नेश या राशीश के वारानुसार व्रत करना चाहिए | साथ ही, एकादशी, प्रदोष, गणेश-चतुर्थी, पूर्णिमा आदि का व्रत करना सबसे अच्छा रहता है |

||शुभमस्तु||

तीसवाँ दिन

कुण्डली के फलादेश का वास्तविक उदाहरण

उदाहरण – एक प्रोफेसर की कुण्डली

फलादेश

आपका जन्म मकर लग्न के मेष नवमांश में हुआ है | मध्यम कद, लालिमा लिए हुए गौरवर्ण, कृश शरीर तथा पित्त प्रकृति होगी |

ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्म होने से सभी कार्यों में चतुर, बहुमित्र, संतोषी, शीतल स्वभाव, कला के शौक़ीन, क्रोधी, धर्म के अनुरूप चलने वाले लोगों पर आसक्त, सम्पूर्ण विधा का ज्ञान प्राप्त करने में दक्ष, सुन्दर व्यक्तित्व वाले, अपने कार्य में कुशल, अच्छी संतान प्राप्त करने वाले, गृहस्थ जीवन का सुख विलम्ब एवं बाधाओं के साथ प्राप्त करने वाले, कवि, लेखक, पत्रकार, साहित्यकार, प्रशासक, निरीक्षक आदि हो सकते हैं | आयु के २७, ३१, ४९ वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से अनुकूल नहीं रहेंगे | क्रूर ग्रह की महादशा में शुक्र, चन्द्र, राहु की अन्तर्दशा में शत्रु कष्ट व चोरी का भय रहेगा |

सकारात्मक लक्षण / गुण

दृढ़ इच्छा शक्ति, सजग, कठिन परिश्रमी, महात्वाकांक्षी, उत्तम आंतरिक बल, सहानुभूतिपूर्ण, उदारतापूर्ण और परोपकारी, धैर्यवान्, अत्यंत व्यावहारिक, विवेकी, जीवनशक्ति से पूर्ण, उत्तम संगठन कौशल, जीवन के कष्टों का साहस से सामना करना, सचेत, उदार, दूरदर्शिता, विश्वसनीय, गप्पी, दृढ़ निश्चयी, दी गई सलाह को स्वीकार करना, परिस्थितियों के अनुसार समायोजन करने की आदत रहेगी |

नकारात्मक लक्षण / गुण

कठोर स्वभाव, वात रोग से पीड़ित, ठंड से एलर्जी, बहुत आलोचनात्मक विचार, आलसी, अत्यधिक मांग करना, निष्ठुर, दिखावा पसन्द, बातूनी, धार्मिक आडम्बर करने वाले, कर्कश, प्रतिशोधी, निराशावादी, अहंकारी, निर्लज्ज, पूर्णतावादी, सुस्त प्रकृति |

कुंडली में बनने वाले शुभ योग :

1. दाम योग
2. कल्पद्रुम योग
3. उभयचरी योग
4. धर्मकर्माधिपति योग
5. धन योग
6. बुध+शुक्र योग
7. अनेक राजयोग

कुण्ड़ली में बनने वाले अशुभ योग :

1. रज्जु योग
2. सदा संचार योग
3. गुरु चाण्डाल योग
4. राहु+गुलिक योग
5. दशम स्थानस्थ गुलिक
6. लग्न व लग्नेश के साथ अप्रकाश ग्रह
7. नीच राशिस्थ चन्द्रमा
8. केमद्रुम योग
9. लग्नेश शनि वक्री
10. भाग्येश व आत्मकारक बुध अस्त
11. नक्षत्र गण्ड़ान्त में जन्म

विशिष्ट फलादेश

- लग्नेश सप्तम भाव में विवाह के बाद भाग्योदय योग बना रहा है| लग्न पर शनि की दृष्टि, वक्री लग्नेश किसी न किसी रूप में शरीर को सदा अस्वस्थ रखेगा किन्तु लग्न पर लग्नेश की दृष्टि होने से अस्वस्थता के कारण अशक्त नहीं होंगे | शनि वात रोगों का कारक माना गया है इसलिए विशेषरूप से वात रोग परेशान करेंगे |
- रज्जु और सदा संचार योग बनने के कारण जीवन में स्थायित्व का अभाव रहेगा| भ्रमणशील, अस्थिर चित्त और बार बार स्थान परिवर्तन का सामना करना पड़ेगा |
- गुरु-चाण्डाल योग माता के सुख से हीन कर रहा है| साथ ही विचित्र हृदय वाला कभी बहुत उदार तो कभी बहुत कठोर प्रकृति वाला बना रहा है |
- राहु-गुलिक का दशम स्थान में योग पिता के सुख से हीन कर रहे हैं, साथ ही उच्च शिक्षा में अनेक बाधाएँ, यश प्रतिष्ठा पर आँच और आजीविका के क्षेत्र में लगातार बाधा और परेशानी को बढ़ा रहे हैं |
- लग्न लग्नेश के साथ अप्रकाश ग्रह, नीच चंद्रमा, नक्षत्र गण्ड़ात में जन्म बहुत कठिन कष्टों से युक्त बाल्यकाल को दर्शा रहा है साथ ही कुण्ड़ली में बनने वाले राजयोगों को निर्बल कर रहा है | भाग्येश और आत्मकारक बुध का अस्त होना भाग्यहीन योग बना रहा है |
- केमद्रुम योग धन की कमी से सदा सामना कराता रहेगा |
- लेकिन कुंड़ली में बन रहे कल्पद्रुम योग, दाम योग आदि स्थितियों को सम्भाले रहेंगे| बुध-शुक्र का योग बहुत ही शुभफल प्रदान कर रहा है |

आजीविका विचार

आजीविका स्थान पर गुरु की पूर्ण दृष्टि होने से गुरु संबंधित क्षेत्र में आजीविका होगी जैसे दार्शनिक, प्राध्यापक, सम्पादक, सभासत्, कुलिन जनों का नेता आदि | लेकिन दशम भाव में राहु और गुलिक की युति होने से आजीविका संबंधी अनेक बाधाएँ लगी रहेंगी| इसमें स्थायित्व का नितांत अभाव व असंतोष बना रहेगा| कार्यस्थल बार बार बदलने की स्थिति बनेगी |

दशाफल

वर्तमान में **6-9-2017 से 7-4-2019** तक चन्द्रमा की महादशा के अन्दर लग्नेश की अन्तर्दशा चल रही है |
इस मध्य मातृकष्ट, मन में दुःख, वातपित्त की पीड़ा, स्तब्ध वाणी और कलह जैसे फल होंगे |
वर्तमान में शनि की साढ़ेसाती अपने अंतिम चरण में है और संयोग से शनि की अन्तर्दशा भी चल रही है| लग्नेश होने से शनि कई अच्छे फल प्रदान कर रहा है| वक्री होने से भ्रमणशील बना रहा है चर राशिस्थ होने से स्थान परिवर्तन का योग बना रहा है | शनि का दशम एवं दशमेश के साथ त्रिपाद दृष्टि संबंध बन रहा है, पूर्ण दृष्टि संबंध बनने पर आजीविका संबंधी कार्य शीघ्र पूरे होते | शनि साढ़ेसाती अंतिम चरण में चल रही है| 70% संभावना है कि शनि की अन्तर्दशा में नौकरी संबंधी मनोनुकूल कार्य हो | बुध की अन्तर्दशा के दौरान 100% स्थायी नौकरी होगी | वर्तमान में चल रही शनि व बुध की अन्तर्दशा बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण है | ये अन्तर्दशाएँ जीवन को नई दिशा व दशा प्रदान करने वाली हैं |

यद्यपि शनि का क्षेत्र परिस्थितियों का निर्माण करने तक सीमित है और बुध सफलता और उन्नति की गारन्टी है | फिर भी प्रारब्ध यदि प्रबल हो तो शनि की दशा में भी सफलता मिल सकती है | किसी के प्रारब्ध पर ज्योतिष् का कोई वैयक्तिक वश नहीं चलता| अभी चन्द्रमा की दशा चल रही है, कहा गया है सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं... अर्थात् चन्द्रमा उच्च-पदवी प्रदान करता है | आपकी कुंडली में चन्द्रमा नीच राशि में है, केमद्रुम योग भी बना रहा है इसलिए आपको चन्द्रमा को मजबूती प्रदान करने वाला उपाय अवश्य ही करना चाहिए |

उपाय

1. पन्ना पहनें + नीलम धारण करें |
2. शनि दशनाम का 10 पाठ रोज सुबह उठते ही करें |
3. शिव मन्दिर में शाम के समय गौ के घी का दीपक, रुई बत्ती के साथ नियमित रूप से अवश्य जलाएँ, इससे गुलिक के दुष्प्रभाव कम होंगे और और नौकरी संबंधी शुभ सूचना मिलेगी |
4. ज्येष्ठा नक्षत्र के वैदिक मन्त्र का हर महीने ज्येष्ठा नक्षत्र आने पर 1008 बार जप और चीड़ (Pinus roxburghii) की समिधा में घी+तिल के शाकल्य से 108 बार हवन करें | इससे दुर्भाग्य का नाश होगा एवं बहुत शीघ्रता से उन्नति होगी |
5. प्रत्येक शनिवार को सायंकाल में पीपल वृक्ष के नीचे आटे के दीपक में काली बत्ती के साथ तिल तेल का दीपक जलाएँ और बिना किसी से बात किए वापस घर चले

आएँ, पीछे मुड़कर न देखें | घर आकर संभव हो तो नहा लें अथवा पैर हाथ धोकर कपड़े बदल लें |
6. दशरथकृत शनिस्तोत्र का रोज पाठ करें |
7. शिव जी को रोज प्रातःकाल दूध चढ़ाएँ |
8. आजीविका संबंधी विघ्नों को दूर करने के लिए लगातार 7 शनिवार कुश की चटाई, 5 की संख्या में अलग अलग मन्दिरों में दान करें |
9. पारद श्रीयंत्र की स्थापना कराएँ और रोज उनके समक्ष लाल बत्ती में चमेली का तेल दीपक जलाकर अन्नपूर्णा स्तोत्र, कनकधारा स्तोत्र और अर्गला स्तोत्र का पाठ करके एक चुटकी पीला सिन्दूर चढ़ाएँ| धन की अभिलषित वृद्धि होगी| केमद्रुम की शान्ति होगी और बच्चों का विकास होगा |
इन उपायों से सर्वविध कल्याण और सार्वभौमिक उन्नति प्राप्त होगी |

अब यह ग्रन्थ पूर्ण होता है, ग्रन्थ के अंत में अध्येताओं से बस इतना ही कहना है –

इमं फलितराजेन्द्रं योऽधीते प्रत्यगात्मवान्|
ज्योतिर्योगेषु दक्षश्चेद्ब्रूतेऽप्रत्यक्षभाविनम्॥
||शुभमस्तु||

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मंङ्गलः,
सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः |
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं,
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः ||

सूर्य आपको शौर्य प्रदान करें, चन्द्रमा उच्चपद की प्राप्ति कराएँ, मंगल शुभता एवं मंगलाचार प्रदान करें तथा बुध सद्बुद्धि दें | गुरु जीवन में गुरुता एवं श्रेष्ठता प्रदान करें, शुक्र सुखी करें तथा शनि कल्याण करें | राहु सदैव आपके बाहुबल की वृद्धि करें एवं केतु कुल का वर्द्धन करें | इस प्रकार से सभी ग्रह अनुकूल होकर आपकी प्रसन्नता को बढ़ाने वाले हों |

||... हरिः ॐ ...||

लेखक परिचय

नाम- पं. ब्रजेश पाठक "ज्यौतिषाचार्य"
(लब्धस्वर्णपदक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, 2019 बैच)
पता- हरिहर ज्योतिर्विज्ञान संस्थान, लोहरदगा, झारखण्ड |

शैक्षिक योग्यता -

* आचार्य- काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ।
* शास्त्री- राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, लखनऊ ।
* I.Sc & 10th - झारखंड अधिविद्य परिषद, राँची ।

उपलब्धियाँ~

* बाल्यकाल से कई प्रतियोगिताओं में अनेकों पुरस्कार ।
* बाल विज्ञान काँग्रेस द्वारा दो बार राज्यस्तर का पुरस्कार ।
* बाल अधिकार काँग्रेस द्वारा एक बार राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार ।
* स्काउटिंग में राज्यस्तर का पुरस्कार।
* स्वनिर्मित टेलिस्कोप के लिए "विज्ञान प्रसार नेटवर्क, भारत सरकार" के वैज्ञानिकों द्वारा पुरस्कार ।
* वर्ष 2014 में भोजराज-पंचांगम् भोपाल के लिए पंचांग निर्माण कार्य में सहयोग । वर्ष 2015 व 2016 में जगन्नाथ-पंचांगम् लखनऊ के लिए पंचांग निर्माण कार्य में सहयोग ।

* वर्ष 2009 से भास्कर एस्ट्रो एसोसिएशन के सह-सचिव के पद पर रहते हुए अनेकों विज्ञान के प्रति सामाजिक जागरुकता लाने संबंधी कार्य अनवरत जारी ।

* विभिन्न पत्रिकाओं में अनेकों शोध लेख प्रकाशित ।

* गणित ज्यौतिष के अलावा फलित ज्यौतिष, सामुद्रिक शास्त्र, वास्तुशास्त्र, अंक ज्यौतिष, मुहूर्त शास्त्र, वैदिक विज्ञान, जेमोलोजी, धर्मशास्त्र, प्राकृतिक चिकित्सा, मनश्चिकित्सा, अध्यात्म विद्या, पौरोहित्य, तन्त्रागम आदि विषयों पर सतत स्वाध्याय व अनुशीलन।